लोकविजय-यन्त्र

[सानुवाद और विस्तृत विवेचन सहित]

देश, नगर, ग्राम और राष्ट्रका फलबोधक ग्रन्थ

सम्पादक

डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री

ज्योतिषाचार्य (वाराणसी), न्याय-काव्य-ज्योतिष तीर्थ (कलकत्ता),
एम० ए० (सस्कृत, हिन्दी और प्राकृत एव जैनालॉजी), पी-एच० डी० (भागलपुर)
डी० लिट्० (मगध), साहित्यरत्न (इलाहाबाद)
अध्यक्ष, सस्कृत-प्राकृत विभाग,
एच० डी० जैन कालेज, आरा (मगध विश्वविद्यालय)

प्रकाशक '
मत्री, वीर सेवामन्दिर-ट्रस्ट,
ट्रस्ट-सस्थापक-प्रवर्त्तक
आचार्य जुगलकिशोर मुख्तार 'युगवीर'

प्राप्ति स्थान
मत्री, वीर सेवामन्दिर-ट्रस्ट,
चमेली-कुटीर, १/१२८, डुमरांव कॉलोनी,
अस्सी, वाराणसी-५ (उ० प्र०)

प्रथम सस्करण ११०० प्रति
फाल्गुन शुक्ला , वीर निर्वाण स० २४९७,
चैत्र शुक्ला १३ , महावीर-जयन्ती
मूल्य दस रुपए

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी-१

जिनके जीवनका क्षण-क्षण ज्ञानाराधनमे व्यतीत हुआ और जिनकी
प्रबल प्रेरणासे इस ग्रन्थका सम्पादन पूर्ण हुआ, उन ज्ञान-
तपस्वी, साहित्यमहारथी आचार्य स्वर्गीय पण्डित
श्री जुगलकिशोरजी मुख्तारकी पावनस्मृतिमे
यह प्रयास
सविनय
सर्मपित
है

श्रद्धावनत
नेमिचन्द्र शास्त्री

ग्रन्थानुक्रम

प्रकाशकीय

इत पूर्व वीरसेवामन्दिर ट्रस्टसे सात महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोका प्रकाशन हो चुका है। सन् १९६३ में **युगवीर-निबन्धावली प्रथम भाग'** और 'तत्त्वानुशासन', सन् १९६४ में **'समाधिमरणोत्साहदीपक'**, १९६७ में **'देवागम'** (आप्तमीमासा) सानुवाद और **'युगवीर-निबन्धावली द्वितीय भाग'**, १९६९ में **'जैन तर्कशास्त्रमें अनुमानविचार'** तथा गत दिसम्बर १९७० में **'प्रमाण-नय-निक्षेप प्रकाश'** ये सात कृतियाँ प्रकट हो चुकी हैं और जिन्हें पाठकोने विशेष आदृत किया है।

हमें प्रसन्नता है कि आज उसी क्रममें एक अन्य—बिलकुल नये और दुर्लभ ग्रन्थका प्रकाशन हो रहा है। यह ग्रन्थ है **'लोकविजय यन्त्र'**। यह ज्योतिषकी अत्यन्त प्राचीन एव महत्त्वपूर्ण अप्रकाशित कृति है। यह ट्रस्ट-सस्थापक स्वर्गीय आचार्य जुगलकिशोर मुख्तार 'युगवीर' को कैसे और कहाँसे प्राप्त हुई, इसका पूरा परिचय तथा इतिहास इसके सुयोग्य सम्पादकने अपनी विस्तृत प्रस्तावनामें दिया है।

इसके सम्पादक, अनुवादक और विवेचक विश्रुत विद्वान् **डाक्टर नेमिचन्द्र शास्त्री** ज्योतिषाचार्य, न्याय-काव्य-ज्योतिष तीर्थ, एम ए (सस्कृत, हिन्दी और प्राकृत), पी एच. डी , डी. लिट् अध्यक्ष, सस्कृत-प्राकृत विभाग एच डी जैन कालेज आरा (मगध विश्वविद्यालय) हैं। आपने एकमात्र प्राप्त प्रतिके आधारसे इसका सम्पादन, अनुवाद और विवेचन जिस विद्वत्ता, योग्यता और परिश्रमके साथ किया है वह अत्यन्त प्रशसनीय है। ग्रन्थपर लिखी आपकी विद्वत्तापूर्ण एव विस्तृत प्रस्तावना 'मन्दिरपर कलश' की उक्तिको चरितार्थ करती और बहुमुखी अध्ययन तथा शास्त्रज्ञताको सूचित करती है। निश्चय ही उनकी यह अनुपम कृति सब ओरसे समादृत एव अभिनन्दनीय होगी। हम इस महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय कृतिको समुपस्थित करनेके लिए डाक्टर शास्त्रीको ट्रस्टकी ओरसे हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

आदरणीय पद्मभूषण श्री प० **सूर्यनारायण** व्यासने अपना प्राक्कथन लिखकर प्रस्तुत ग्रन्थका महत्त्व बढाया है। इसके लिए हम उनके भी हृदयसे आभारी हैं।

२ मार्च १९७१,
वाराणसी—५,

(डा०) दरबारीलाल कोठिया
एम. ए , पी एच डी न्यायाचार्य
मत्री, वीरसेवामन्दिर-ट्रस्ट,

प्राक्कथनम्

प्राय वृष्टिकी विपुलता और अनावृष्टिके कारण देशके विभिन्न भागोकी जनताको कष्टका सामना करना पडता है, इसी प्रकार अवर्षण तथा वर्षाके खिच जानेपर भी जनता और कृषकोको चिंतित, व्यथित हो जाना पडता है। यह सर्वविदित है कि मेट्रो लाजिकल रिपोर्टपर जो समाज, और सरकार आधार रखती है वह कितनी निरर्थक तथा सत्य-तथ्यसे दूर होती है यह अनुभव करनेका सभीको प्राय. अवसर मिलता रहता है।

इसके विपरीत भारतके विभिन्न भागोमें ऐसे लोग भी है जो साक्षर कम रहते हुए भी आकाशको देखकर, प्राकृतिक-लक्षणोके परीक्षणके आधारपर वर्षा होनेके सही समयको सहज बतलाते है, उनका पारप-रिक-अनुभवजन्य ज्ञान ही सहायक होता है। अनेक जानकार वर्षाके कई मास पूर्व आनेवाली वर्षाके मास, दिन, समय आदि भी सफलतापूर्वक बतला सकते हैं, जो बात यात्रिक साधनोसे सुलभ नही हो पाती वह अनुभवके आधारपर जान ली जाती है। आजके युगमे समाज और सरकारका विशिष्ट-वर्ग ऐसे अनुभवोकी अवहेलना करता जा रहा है, धीरे-धीरे यह पारपरिक-ज्ञान देशसे विलुप्त होता जा रहा है। घाघ, और भड्डुरीके अनुभव आज मखौलके विषय बन गए हैं, अधश्रद्धाकी सीमामें सिमिटते जा रहे है, जबकि किसान उनपर आस्था रखकर लाभ उठाता है।

ज्योति शास्त्रमे वर्षा और वायु-प्रयोग-परीक्षणके अनेक उदाहरण हैं। प्राकृतिक-तत्त्वोका गहराईसे अध्ययन कर उनसे परिणाम प्राप्त करनेके प्रयास किए है। और उनमे तथ्यानुभूति की है, किंतु हमारा शासन अभिनव-विज्ञान और उनके प्रयोगोको प्रश्रय देता है, अपने सभी पुराने प्रयोगो, विचारो एव अनुभवोको एकात उपेक्षावृत्तिसे ही देखता है।

अवती नगरीमें विक्रमके शासनकालमे कर्पूर नामक एक विद्वान् रहा है, उसकी निर्मित 'कर्पूर-चक्र' नामक रचनासे विदित होता है कि वह आनेवाले, सुकाल-दुष्कालका विवरण सही प्रकारसे बतला सकता था, आज यह रचना उपलब्ध नही है। अन्य ग्रथोमें प्राप्त सदर्भोसे उसकी विशेषताओंका पता चलता है। वैसे ज्योतिषमें वृष्टि और वायु-विज्ञानपर कई ग्रथ प्राप्त हैं, उनमें अनेक अनुभूत प्रयोग और लक्षण बतलाए हुए हैं, गगनचांदी बादलोके रूप-रग, जातियाँ और सचरणका गवेषणात्मक वर्णन उपलब्ध है, कादम्बिनी, और वराहमिहिरकी बृहत्सहिताके वायु-वृष्टि-विज्ञानको देखकर आधुनिक-प्रकृति-विज्ञानियोको भी दाँतो तले अगुलि दबाना पडेगा, कितनी गहराईमें उतरकर इन आचार्योने प्राकृतिक-तत्वोका विवेचन-अध्ययन-अन्वेषण किया हैं।

जिन लोगोने वैदिक मण्डूक-सूक्ति या पर्जन्य सूक्त पढा होगा, उसके मर्मको समझनेका प्रयत्न किया होगा, वे अनुभव करेगे कि प्रकृतिके तत्त्वो—लक्षणोको देखकर सद्योवृष्टिका गहन विचार वैदिक समाजने भी किया था, इसी तरह गर्ग, पराशर, कश्यप आदिसे लेकर वराहमिहिरतक यह परम्परा रही है।

ज्योतिर्विज्ञानके अनुसार कार्तिक पूर्णिमासे ही वायु-वर्षा, सुभिक्ष-दुर्भिक्षका पूर्व परीक्षण किया जाता था, वर्षाके विषयमे स्पष्ट रूपसे स्थिति समझ ली जाती थी। और सावधानीके उपाय योजित किये जाते थे, आकाशीय लक्षण, प्रकृति पर्यवेक्षण तथा ग्रहोके अनुकूल या प्रतिकूल सचार तथा उनसे उत्पन्न होनेवाले प्रभावोको सही रूपमे समझनेका प्रयास किया जाता था, आजका वायुशास्त्री केवल वायुके सचार एव उससे

उत्पन्न प्रभावको पकडनेका प्रयत्न करता है। ग्रहोकी गति-विधि, और उनसे उत्पन्न होनेवाली वातावरणीय स्थितिका एक सफल गणना-शास्त्री बहुत समय पूर्व ही परिवर्तनोके परिणामों—प्राकृतिक-प्रभावोंको प्रस्तुत करता रहा है। आजका ऋतुविज्ञानी मेघमालाके शतश भेदो-विभेदो, प्रभावो-परिवर्तनोका ज्ञान शायद ही उतना रखता हो, जितना पुरातन आचार्योंने गहन अध्ययन एव अनुभवोसे जाना था, जिन्हें अनुराग हो वे कादम्बिनीका एक बार परिशीलन करें। मेट्रोलॉजीके समक्ष हमारा यह प्रकृतिविज्ञान उपेक्षित हो गया है।

हजारो वर्ष पूर्व वेदमें बतलाया गया है कि सागरसे सूर्य अपनी किरणोंसे पानी ऊपर खींचता है। मेघोको प्रदान करता है, सौर तेजसे जलके परमाणु सूक्ष्मरूप लेकर ऊपर आकर्षित होते हैं, और आकाशीय-वायुके परमाणुसे मिलकर मेघरूप ले लेते है। दो हजार वर्ष पूर्व महाकवि कालिदासने भी यही बतलाया है कि "धूमज्योति सलिलमरुता सन्निपात क्व मेघ"। ये मेघ वायुसे प्रेरित होकर जिस प्रदेश या देशमें प्रवाहित होते हैं, वहाँ उतनी मात्रामें वर्षण कर देते हैं। कालिदासके 'मेघदूत' का मार्ग ही 'मानसून' का निर्धारित पथ है। इस जलको कब, कितनी मात्रामे वर्षण कर देते हैं, इसे निमित्तज्ञान कहा गया है। वृष्टिप्रबोधमें बतलाया है कि यह निमित्त-ज्ञान भौम, अन्तरिक्ष और दिव्यके भेदसे तीन प्रकारका होता है। देश-मानव, पशु-पक्षि, कीट-पतग वृक्ष-लता आदिके द्वारा जो वर्षा-ज्ञान किया जाता है वह 'भौम' होता है। वात-पित्त-कफ-प्रकृतिके मानवकी चेष्टाओंसे, कीट-पतग-भृग-पशु-पक्षियोंकी विशिष्ट चेष्टाओंसे वर्षाका ज्ञान हो जाता है, ये अन्ध-श्रद्धाके विषय नही हैं, वर्षाकी निकटताका आभास इनकी चेष्टाओसे सही होता है। ये सवेदनशील हो उठते हैं, बृहत्सहिता, मयूरचित्रक, वसतराजशाकुन आदि ग्रथोंमें इनका विस्तारसे वर्णन है। जब वर्षाकी वायु न आती हो तब मछलियाँ पानीमें नीचे बैठती जाती है, मेंढक शोर करने लगते हैं, तब वर्षा रुक जाती है। इसीप्रकार जब वर्षा आने लग जाती है तब बिल्ली अपने नाखूनोंसे जमीन खुतरने लगती है, जग लगे बर्तनोमें बदबू आने लगती हैं, बच्चे जमीनपर पुल बनाने लगते हैं, गुफाओंमें भाप भरने लगती है, चीटियाँ अण्डे लेकर निकल पडती हैं, चिडियाँ धून्दमें नहाने लगती हैं, जुगनू जमीनपर उडने लगते हैं, सर्प पेडोपर चढने लगते हैं, कुत्ते बाहर भागते दिखाई देते हैं, गाएँ मकानमें न जाने लगें, आदमीको अधिक निद्रा आने लगे, इत्यादि लक्षण वर्षाके आगमनके होते हैं, इसतरह भौम-लक्षण उत्पन्न होते हैं।

अन्तरिक्ष-लक्षण भी इसीप्रकार होते हैं। वायु जोरसे प्रवाहित होने लगे, मेघोका छाए रहना, सध्या-को सिन्दूरी रगके बादल बनना, दिशाएँ धूमिल या जलती-सी प्रतीत हो, इन्द्रधनुष दिखाई देने लगे, वैशाख शुक्ला ५ को आकाश मेघाच्छन्न हो जाए, (और यदि गर्जनके साथ बरस जाए तो आगेके लिए अन्नका सग्रह कर ले), सूर्यके उदयास्तके समय चारों ओर मण्डल बन जाए, बिजली भी मण्डल बनाने लगे, तो वर्षा पर्याप्त होती है, इसतरह वात-चक्रके विस्तारपूर्वक अध्ययनसे वर्षाका व्यवस्थित निर्णय विदित होता है। वर्षाके 'गर्भका भी वर्णन है, विद्युत्-शक्ति और मेघके ससर्गसे वर्षाका गर्भ होता है, और ६॥ मासके पश्चात् वर्षा-का प्रसव होता है। जिस नक्षत्रपर गर्भ होता है ६॥ मास बाद जब वही नक्षत्र आए तब वर्षा आ जाती है।

सावधानीपूर्वक इसका अध्ययन किया जाए तो पूरी वर्षाके मास, दिन, समयका भी महीनो पूर्व पता चल जाता है। अतरिक्ष-अध्ययनके और भी अनेक विधान हैं, जिसे दिव्य-ज्ञान कहते हैं, यह ग्रहोंके सचार, उदयास्त—वक्र-मार्ग आदि ग्रहोकी गति-विधिसे सम्बन्धित रहते हैं, शुक्रास्त-गुरुके उदय, अगस्त्यके उदय, शनि-भौमके राशि-चार आदिसे भी गणना की जाती है। ग्रहण सूर्यके चिन्होपर नाडिके क्रमसे भी यह विचार किया जाता है। ज्योतिषका जानकार जानता है कि बुध-शुक्र समीपमें आ जाएँ तो समस्त भूमिको जलमय बना देते हैं, और इनके बीचमें अगर सूर्य पहुँच जाए तो सागरका जल भी सोंस लेता है। मगलके राशि-चारमें वर्षा होती है, सूर्यके पीछे रहनेवाले आगे बढ जाएँ तो अधिक वृष्टि करते हैं, यदि मगल आगे जा

रहा हो, और सूर्य पीछे रहता हो तो वर्षा रुक जाती है, या कम होती है, यदि शनि अतिचारी हो, मगल-शनि वक्र हो गए हो तो हाहाकार मच जाता है। वर्षमें कुछ महीनोकी पूर्णिमाका वायु-परीक्षण किया जाए तो उससे भी वर्षाका ज्ञान प्राप्त होता है। भौम ज्ञानसे एक क्षेत्र-विशेषकी वर्षाका पता लग सकता है, और अतरिक्ष लक्षणोंसे विशेष भाग-मण्डलका तथा दिव्य-लक्षणोंसे प्रदेश भरका पता मिल जाता है, यह वैज्ञानिक है। इसका जितनी गहराई—सूक्ष्मतासे अध्ययन किया जाए वायु और वर्षाका सही ज्ञान मिल जाता है। हमारे देशमें इसी विज्ञानके आधारपर शताब्दियोसे प्रयोग किए गए है, और सफल सिद्ध हुए हैं।

हमारे समक्ष ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण रचना 'लोकविजय यत्र' प्रस्तुत है। उसमें अक-सख्याके निर्धारण द्वारा मानवके सुख-दु ख समर्घ-महर्घ, वर्षा-वायु, सुभिक्ष-दुर्भिक्ष, रोग, धन-धान्य-रस निष्पत्ति, समृद्धि आदिकी सही जानकारी प्राप्त करनेका प्रयास किया गया है, इसमें ग्रहोके ध्रुवाङ्कोके माध्यमसे निर्णय प्राप्त किए गए हैं। अवश्य ही यह यात्रिक प्रक्रिया उपयोगी एव मौलिक है। इसमें देशको—मेघ महोदयके अनुसार तीन भागोमें विभाजित किया गया है—जलमय, जगलमय, एव मिश्र। इस प्रकार देश और कालका पर्यालोचनकर तथ्य प्राप्त किए है। लोकविजय यत्रकी कल्पना जैन गणना-क्रमसे है, यह बहुत सुदर और महत्त्वपूर्ण होते हुए भी इसका निर्माण कूर्मपद्धतिसे है, और यह पद्धति वैज्ञानिक है। दिशाके साथ देशके ध्रुवाक लेकर यत्रका निर्माण किया गया है। और सवत्सरके राजासे लेकर दशाक्रमसे परिगणितकर परिणाम प्राप्त करनेका प्रयास किया गया है। इसमें दिशाक, देशाक, और नगराककी बहुत व्यापक सारिणी दी गई है। ध्रुवाक प्राप्त करनेको पद्धति भी है। इनकी नक्षत्रानुरूप दशा-अन्तर-प्रत्यतर और सूक्ष्म दशा प्राप्तकर उनके फलाफलका व्यवस्थित विवेचन किया गया है। यह ग्रथ यत्रके तथा ध्रुवाकोंके माध्यमसे ससस्त देश-दिशाओ और समयका सुव्यवस्थित निरूपण करता है। वृष्टि और सुभिक्ष-दुर्भिक्ष—सुख-दु ख रोग-भय आदिका निदान प्रस्तुत करता है। वास्तवमें यह बहुत उपयोगी है। इसकी विस्तृत व्याख्या और सुन्दर-विवेचन कर, सहृदय-विद्वान् गणना-विचक्षण श्री डॉ० नेमीचद्रजी शास्त्रीने एक उत्तम ग्रथको जनोपयोगी बना दिया है। अवश्य ही इस विज्ञानमें अनुराग रखने वाले विद्वज्जन इसके प्रयोग-परीक्षण द्वारा देश और समाजको सही पथ-प्रदर्शनकर सकेंगे, डॉ० शास्त्रीजीके साथ ही ग्रथ-प्रकाशकोको भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होने इस मौलिक रचनाको समाजके लिए सुलभ बना दिया है।

सू ना व्यास

१५–२–७१
भारती भवन
उज्जैन, म० प्र०

प्रस्तावना

ज्योतिषशास्त्रकी व्युत्पत्ति—"ज्योतिषा सूर्यादिग्रहाणा बोधक शास्त्रम्" अर्थात् सूर्यादि ग्रह और कालबोधकशास्त्रके रूपमे की गयी है। इसमें प्रधानत ग्रह, नक्षत्र, धूमकेतु आदि ज्योति पदार्थोका स्वरूप, सचार, परिभ्रमणकाल, ग्रहण और ग्रहस्थिति प्रभृति समस्त सिद्धान्तोका निरूपण एव ग्रह-नक्षत्रोकी गति, स्थिति और संचारानुसार शुभाशुभ सूचक फलोका प्रतिपादन किया जाता है। कुछ मनीषियोका अभिमत है कि नभोमण्डलमें स्थित ज्योति सम्बन्धी—विषयक विद्या ज्योतिर्विद्या है। इस विद्याका विश्लेषण और विवेचन जिस शास्त्रमे निबद्ध रहता है, वह ज्योतिषशास्त्र है। इस ज्योतिषशास्त्रका विकास इस देशमें क्रमश हुआ है। अत 'लोकविजययन्त्र' का वर्ण्य विषय, उसका महत्त्व एव उसके रचनाकालपर विचार करनेके पूर्व ज्योतिष-सिद्धान्तोके विकासपर विचार करना आवश्यक है।

भारतीय ज्योतिष सिद्धान्तोका विकास

भारतीय ज्योतिष सिद्धान्तके अन्तर्गत स्कन्धत्रय—सिद्धान्त, सहिता और होरा अथवा स्कन्धपञ्चक—सिद्धान्त, होरा, सहिता, प्रश्न और शकुन ये पाँच अग माने गये हैं। यदि इस विराट् पञ्चस्कन्धात्मक परिभाषाका विश्लेषण किया जाय तो आजका मनोविज्ञान, जीवविज्ञान, पदार्थविज्ञान, रसायनविज्ञान, चिकित्साविज्ञान, भूगर्भविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान इत्यादि इसके अन्तर्गत समाविष्ट हो जाते हैं।

आरम्भमें ज्योति पदार्थों—ग्रह, नक्षत्र, तारो आदिके स्वरूप-विज्ञान तक ही ज्योतिषकी विषय-सीमा निर्धारित थी। जब सृष्टिके आदिमे मनुष्यकी दृष्टि सूर्य और चन्द्रमा पर पडी तो उसने इनसे भयभीत होकर इन्हें देवत्व रूप प्रदान किया और दैवी शक्तिके रूपमें इनका अध्ययन और मनन प्रारम्भ किया। पर आगे चलकर विज्ञानके रूपमें ज्योतिषका अध्ययन प्रारम्भ हुआ।

भारतीय ज्ञान-विज्ञानका आकर-ग्रन्थ वेद है। वैदिक सहिताओमें ज्योतिष-विषयक चर्चा सूत्ररूपमें उपलब्ध होती है। सहिताओकी अपेक्षा शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, बृहदारण्यक, आदि ग्रन्थोमें ज्योतिषके सिद्धान्त अधिक विकसित रूपमें प्राप्त हैं। वेदोके पश्चात् षड्वेदाङ्गमें ज्योतिषको स्वतन्त्र स्थान प्राप्त हुआ और व्यावहारिक एव शास्त्रीय इन दोनो दृष्टिबिन्दुओंसे ज्योतिष-सिद्धान्तोका प्रतिपादन होने लगा।

दिनकी चर्चा और अन्य कालबोधक अवयव

ऋग्वेदमें दिनको केवल व्यवहार-निर्वाहके लिए समयरूपमें माना गया है, किन्तु ब्राह्मण और आरण्यकोमें दिनका विवेचन ज्योतिषकी दृष्टिसे किया गया है। दिनकी वृद्धि कैसे और कब होती है? वह कितना बडा होता है? वृद्धि-ह्रासका मध्यम मान कितना है? और स्पष्ट मान आनयनके लिए किस प्रक्रिया-विधिका उपयोग करना चाहिए? आदि विषयोका निरूपण विद्यमान है। कालबोधक अवयवोमें त्रुटि, लव, क्रान्ति आदि सूक्ष्मतर अवयवोका विवेचन भी प्राप्त होता है। दिनगणनाकी प्रक्रियाके साथ सावन, चान्द्र-सौर आदिके स्वरूप और आनयन-प्रक्रियाका कथन भी सहिताग्रन्थोमें उपलब्ध है। दैनिक कार्योके सम्पादनार्थ 'अहोरात्र'के घट्यात्मक, पलात्मक, विपलात्मक मानोकी विधियाँ भी ऋग्वेदके अनेक मन्त्रोसे ध्वनित होती हैं। यज्ञ-यागादि धार्मिक क्रियाओके सम्पादनार्थ समयके सूक्ष्म अवयवोका उपयोग किया जाता था। कुछ

विधि-विधान ऐसे थे जो वर्षो चलते थे, पर कुछ इस प्रकारके भी प्रचलित थे, जिनकी समाप्ति क्षणों या सत्रोंमें होती थी। ज्योतिषके विकासकी दृष्टिसे वैदिककालमें ग्रहोंमें सूर्य और चन्द्रके अतिरिक्त भौमादि पञ्चग्रहोंका भी निर्देश किया गया है। ऋग्वेदमें वर्षको द्वादश चान्द्रमासोमें विभक्तकर प्रत्येक तीसरे वर्ष चान्द्र और सौर वर्षका समन्वय करनेके लिए एक अधिमास जोड़नेकी परम्परा भी प्रचलित थी। यथा—

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलास ॥

ऋ० स० १।१६४।४८

अधिमासके सम्बन्धमें ऋग्वेदमें बताया है कि जो व्रतावलम्बन करके अपने-अपने फलोत्पादक बारह महीनोंको जानते हैं और उत्पन्न होनेवाले तेरहवें मासको भी जानते हैं[1]।

स्पष्ट है कि राज-काज, सभ्यता आदिकी वृद्धि होने पर लगातार चान्द्रमान गणना सदोष प्रतीत हुई और मास-व्यवस्थाको व्यवहारोपयोगी बनाये रखनेके लिए अधिमासकी कल्पना करनी पड़ी। यही कारण है कि तैत्तिरीय ब्राह्मणमें तेरह महीनोंके निम्नलिखित नाम आये हैं—(१) अरुण (२) अरुणरज (३) पुण्डरीक (४) विश्वजित् (५) अभिजित् (६) आर्द्र (७) पिन्वमान (८) उन्नवान् (९) रसवान् (१०) इरावान् (११) सर्वौषध (१२) सभर (१३) महस्वान्[2]।

संहिताओंमें सौर वर्षका प्रचार था और सावन एवं चान्द्र दिनोंका भी ग्रहण होता था। ज्योतिषके सावन, चान्द्र, सौर, नाक्षत्र और बार्हस्पत्य इन पाँच मानोंमेंसे आदिके तीन मान संहिताग्रन्थोंमें उपलब्ध हैं। एक सूर्योदयसे दूसरे सूर्योदय तकके कालको सावन दिन माना जाता है। सावन संज्ञा यज्ञोंके सम्बन्धसे उत्पन्न हुई है। सोमयागमें एक अहोरात्रमें सोमके तीन सावन होते हैं। कालमाधव और माधवाचार्यने बताया है—"सावनशब्दोऽहोरात्रोपलक्षकः सोमयागे सवनत्रयस्याहोरात्रसम्पाद्यत्वात्"। अतः सवनके सम्बन्धसे सावन निष्पन्न हुआ है। इसी प्रकार चन्द्रमा और सूर्य सम्बन्धी कालोंको क्रमशः चान्द्र और सौर कहा गया है।

अहोरात्रमें होनेवाले एक सोमयागको वेदमें 'अह' कहते हैं। छः अहोंके समूहको 'षडह' और पाँच 'षडह' समूहको मास कहते हैं। अतएव स्पष्ट है कि दिनके लिए 'अह' शब्दका प्रयोग सोमयागके सम्बन्धसे हुआ है। माधवाचार्यके उल्लेखसे सावन वर्ष और मासके दिनोंकी संख्याका भी ज्ञान होता है। लिखा है—"अहोरात्रसाध्य एकः सोमयागो वेदेष्वह शब्देनाभिधीयते तादृशानामह्विशेषाणां गणः षडहः । षडहेन पञ्चकेन एको मासः सम्पद्यते तादृशैर्द्वादशभिर्मासैः साध्यं सवत्सरसत्रम्"।

उपर्युक्त उद्धरणसे यह अवगत होता है कि वैदिक कालमें चान्द्र, सौर और सावन गणना प्रचलित थी।

ऋग्वेदमें युगशब्दका प्रयोग सतयुग[3], त्रेतादियुगके रूपमें तो मिलता ही है, पर पञ्चवर्षात्मक युगके

---

१. वेदमासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः । वेदाय उपजायते । ऋ० सं० १।२५।८

२. अरुणोरजाः पुण्डरीको विश्वजिदभिजित्।
आर्द्रः पिन्वमानोन्नवान् रसवानिरावान् ॥
सर्वौषध संभरो महस्वान् ॥ —तै० ब्रा० ३।१०।१

३. तद्युष्मे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्यं मघवा नाम बिभ्रत्।
उपप्रयन्दस्युहत्याय वज्री यद्ध सूनुः श्रवसे नाम दधे ॥ ऋ० स० १।१०३।४

इस मन्त्रकी व्याख्या करते हुए सायणाचार्यने लिखा है—"मनुष्याणां सम्बन्धीनि इमानित्रश्यमानानि युगानि अहोरात्रसंघनिष्पाद्यानि कृतत्रेतादीनि सूर्यात्मना निष्पादयतीति शेषः।"

रूपमें भी उपलब्ध होता है। ऋग्वेदके एक मन्त्रमे दीर्घतम[1] नामक ऋषिकी एक आख्यायिका आयी है। उसमें बताया है कि ममताके पुत्र दीर्घतम नामके ऋषि अश्विन्के प्रभावसे अपने दुःखोसे छूटकर स्त्री-पुत्रादि कुटुम्बियोके साथ दशयुग पर्यन्त सुखसे जीवित रहे। यहाँ 'दशयुग' शब्द विचारणीय है। यदि पाँच वर्ष युगका मान स्वीकृत किया जाय, जैसा कि वेदाङ्ग ज्योतिषमे प्रचलित था तो ऋषिकी आयु पचास वर्षकी आती है, जो बहुत थोडी प्रतीत होती है और यदि युगका मान दश वर्ष कल्पना कर लिया जाय तो सौ वर्षकी आयु आती है। वैदिक कालके अनुसार यह आयु भी सम्भव प्रतीत नही होती। दूसरी बात यह है कि युगका दश वर्ष मान कही अन्यत्र प्राप्त नही होता। सायणाचार्यने इस युग-समस्याको सुलझानेका प्रयास किया है—"दशयुगपर्यन्त जोवन् उक्तरूपेण पुरुपार्थसाधकोऽभवत् अथवा जीवन् उत्तररूपेण पुरुषार्थसाधकोऽभवत्"।

उनकी इस व्याख्यासे ज्ञात होता है कि दीर्घतम ऋषिने अश्विन्के प्रभावसे दुःखसे छुटकारा प्राप्तकर जीवनके अवशेष दश युग—५० वर्ष सुखसे व्यतीत किये। अतएव ऋग्वेदके समयमें पञ्चवर्षात्मक युगका प्रचार भी हो गया था। इसी प्रकार ऋतु, मास, तिथि, अयन आदिका व्यवहार भी वैदिक कालमें प्रचलित था। शतपथ ब्राह्मणमे उत्तरायण और दक्षिणायनके सम्बन्धमे एक नयी सूचना मिलती है। वस्तुत अयनका अर्थ चलना है। ज्योतिषमे वर्षको दो बराबर भागोमें विभाजित किया जाता है, जिनमेसे एकको उत्तरायण और दूसरेको दक्षिणायन कहते हैं। जब क्षितिजपरका सूर्योदयबिन्दु, उत्तरकी ओर दिनोदिन हटता रहता है तो उत्तरायण रहता है और जब यह बिन्दु दक्षिणकी ओर बढता है तो दक्षिणायन कहलाता है। शतपथ ब्राह्मणमें वसन्त, ग्रीष्म और वर्षा देवऋतुएँ बतायी है। शरद, हेमन्त और शिशिर पितरऋतु हैं। जब उत्तरकी ओर सूर्य रहता है तो ऋतुएँ देवोमें गिनी जाती हैं और जब दक्षिणकी ओर रहता है तो पितरोमें। इससे ध्वनित होता है कि शतपथ ब्राह्मणके अनुसार उत्तरायण तब होता था जब सूर्योदय पूर्व बिन्दुसे उत्तरकी ओर हटकर होता था[2]।

तैत्तिरीय संहिता[3]में छ-छ महीनेका उत्तरायण और दक्षिणायन बताया है।

मासगणनाका प्रचार अमान्त और पूर्णिमान्त दोनो ही रूपमें था। जब महीनेका अन्त अमावस्यासे होता है तो उसे अमान्त मास कहते हैं। पूर्णिमामे अन्त होने पर पूर्णिमान्त कहलाता है। अमान्त मासका प्रारम्भ तब माना जाता है जब सूर्य और चन्द्रमाके भोगांशोका अन्तर शून्य होता है और शून्य अन्तरसे मास प्रारम्भ करना अधिक स्वाभाविक जान पडता है। समस्त ज्योतिषमें अमान्तसे मास-गणना प्रारम्भ होती है। अधिमास भी अमावस्यासे प्रारम्भ होकर अमावस्यामे ही समाप्त होता है। तैत्तिरीय संहिताके एक मन्त्रमें दोनो प्रकारकी मास-गणनाओका उल्लेख आया है। बताया है कि अमावस्यासे मासोको समाप्त करके एक दिनको कुछ लोग छोड देते है अर्थात् अनुष्ठान नही करते, क्योकि वे अमावस्यासे ही मास-गणना करते हैं। कुछ व्यक्ति पूर्णिमासीसे मासोको समाप्त करके एक दिन व्रतानुष्ठान नही करते, क्योंकि वे पूर्णमासीसे मासोकी गणना करते है।[4]

---

१ दीर्घतमा मामेतयो जुजुर्वान् दशमे युगे ।
अपामर्थं यतीना ब्रह्मा भवति सारथि ॥—ऋ० स० १ १५८ ६

२ वसन्तो ग्रीष्मो वर्षा ते देवा ऋतव । शरद्धेमन्त शिशिरस्ते पितरो स (सूर्य) यत्रोदगावर्तते । देवेषु तर्हि भवति यत्र दक्षिणावर्तते पितृषु तर्हि भवति ॥—शत ब्रा २ १ ३.

३ तस्मादादित्य षण्मासो दक्षिणेनैति षडुत्तरेण ।। तै० सं० ६-५-३

४. अमावस्यया मासान्सपाद्याहरुत्सृजति अमावास्यया हि मासान् सपश्यति ।
पौर्णमास्या मासान्सपाद्याहरुत्सृजति पौर्णमास्या हि मासान्सपश्यति ॥—तै० सं० ७। ५। ६। १५

इस प्रकार काल-बोधक अवयवोका विकास वैदिक कालमें हो चुका था। साथ ही नक्षत्र, राशि, ग्रह-कक्षा, सप्तग्रह, सूर्य-चन्द्र गतिका अध्ययन भी वैदिककालमें प्रचलित था। नक्षत्रोंके सम्बन्धमें ऋग्वेदसहितामें तीन-चार उल्लेख प्राप्त होते हैं। एक मन्त्रमे बताया है कि सर्वशक्तिमान् सूर्यके आगमनसे नक्षत्र और अन्धकार चोरकी तरह भागते हैं, पर ऋग्वेदसहिताके ही एक दूसरे मन्त्रमें चन्द्रमार्गमें पडने वाले तारासमूहके लिए नक्षत्र शब्द आया है। बताया है—

अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहित [1] ॥

तैत्तिरीय सहिता[2] में कृत्तिकासे आरम्भ कर भरणी पर्यन्त सत्ताइस नक्षत्रोंके नामोल्लेख एवं उनके देवताओके कथन भी आये हैं। अथर्वेद सहिता[3] में बताया है कि चन्द्रमा तारोंके सापेक्ष एक भगण अर्थात् एक चक्कर २७⅓ दिनमें लगाता है। २७⅓ से निकटतम पूर्ण सख्या २७ है अतएव चन्द्रमार्ग या उसके आस-पासमें पडने वाले तारोंमेंसे २७ तारे ग्रहण कर लिये गये, जो आकाशमें चन्द्रमाके निकट पडते थे। २७ से कुछ अधिक रहनेके कारण कभी-कभी २८ तारे भी ग्रहण कर लिये जाते थे, जो चन्द्रमार्गमे पडते थे। इस प्रकार वैदिककालमें नक्षत्रोंकी पूर्ण जानकारी थी और उनका उपयोग भी व्रत-अनुष्ठानोंमें होता था।

ऋग्वेदमें सूर्य और चन्द्रके साथ गुरु, बुध, मगल, शुक्र और शनिके नाम भी प्राप्त होते हैं। ऋग्वेदमें बताया है कि महाप्रबल पाँच देव विस्तीर्ण द्युलोकके मध्यमें रहते हैं। मैं उन देवोंके सम्बन्धमें स्तोत्र रचना करता हूँ। ऋग्वेदके दशम मण्डलके ५५ वें सूक्तमें भौमादि पाँच ग्रहोंकी ओर सकेत किया है। ऋग्वेदके एक मन्त्रसे यह भी ध्वनित होता है कि प्रति वीस मासमें नौ मास शुक्र प्रात काल पूर्व दिशाकी ओर दिखलाई पडता है, जिससे ऋषिगण स्नान, पूजा आदिके समयको ज्ञातकर अपने दैनिक कार्योंको सम्पन्न करते थे। शुक्रके पास वृहस्पति भी २–३ महीने तक भ्रमण करता था। पश्चात् शुक्र अपनी शीघ्र गतिके कारण वृहस्पतिसे आगे निकल जाता था। और इसका फल यह होता कि शुक्र पूर्वकी ओर उदित होता और वृहस्पति उसी कालमें पश्चिमकी ओर अस्त होता। इस अस्त और उदयकी चर्चासे स्पष्ट है कि शुक्र और वृहस्पतिका ग्रहोंके रूपमें वैदिक कालमें अवश्य परिज्ञान था। ऋग्वेदके कई मत्रोमें[4] शुक्र और वृहस्पतिकी चर्चा आयी है। शतपथ ब्राह्मणमें तो शुक्रके सम्बन्धमें महत्त्वपूर्ण उल्लेख प्राप्त है।[5]

राशि या ग्रह-कक्षा सम्बन्धी उल्लेख भी वैदिक वाङ्मयमें उपलब्ध हैं। बताया है—

द्वादशार नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परिघामृतस्य।
आपुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थु [6] ॥

इस मत्रमें "द्वादशार" शब्द द्वादश राशियोंका बोधक है। यद्यपि स्वर्गीय डा० सम्पूर्णानन्दजीने "द्वादशार" शब्दको द्वादश मास बोधक माना है, राशिबोधक नही। हमारी दृष्टिमें उनका यह कथन तर्क-सङ्गत नही है। यत मन्त्रके आगे वाले भागमें तीन सौ साठ दिन वर्षमें माने हैं, जो द्वादश राशियोंके ही सम्भव हैं, द्वादश महीनोंके नही। चान्द्र मासमें २९½ दिन होते हैं, अत द्वादश मासमें ३५४ दिन ही सम्भव

---

१ अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहित ॥—ऋ० स० १०।८५।२, अथ० स० १४ १ २

२ कृत्तिका नक्षत्रमग्निर्देवताग्नेरूचस्थ प्रजापतेर्धातु सोमस्यर्चे त्वारुचे त्वा • देवतापभरणी—नक्षत्र यमो देवता ॥—तै० स० ४ ४.१०

३ अथर्ववेद सहिता १९ ७ २ से लेकर ५ तक

४. ऋ० सं० ४ ४.५०,५,७३,३;५,७३,१

५. शत ब्रा० ४ २ १.

६ ऋ० १.१६४.११

हैं, ३६० नही। अतएव द्वादश राशि मान लेनेसे ३६० दिन या अशसंख्या निष्पन्न हो जाती हैं। अतएव "द्वादशार" शब्दको राशिबोधक मानना उचित है। युक्तिसे भी यह सिद्ध होता है कि आकाश-मण्डलका राशि एक स्थूल अवयव है और नक्षत्र सूक्ष्म अवयव। जब सौर जगत्के सूक्ष्म अवयव नक्षत्रोका इतनी गम्भीरताके साथ ऊहापोह किया गया हो, तब स्थूलावयव राशिके सम्बन्धमे कुछ भी विचार नही किया हो, यह कैसे सम्भव है ? अतएव राशि-विचार और ग्रह-कक्षा सम्बन्धी तथ्योकी जानकारी वैदिक कालमें विद्यमान थी। तैत्तिरीय सहितामें बताया है कि सूर्य आकाशकी, चन्द्रमा नक्षत्र-मण्डलकी, वायु अन्तरिक्षकी परिक्रमा करते हैं और अग्नि देवका पृथ्वीपर निवास है[1]। इससे यह ध्वनित होता है कि सूर्य, चन्द और नक्षत्र कक्षाएँ क्रमश ऊपर-ऊपर स्थित है। तैत्तिरीय ब्राह्मण[2]के एक मन्त्रमें विश्व व्यवस्थाका वर्णन आया है, जिसमें सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदिकी कक्षाएँ भी अङ्कित हैं।

स्वतन्त्र रूपमे ज्योतिषका विकास

स्वतन्त्र रूपसे ज्योतिषका विवेवन 'वेदाङ्ग' ज्योतिषसे आरम्भ होता है। यज्ञोकी तिथि, मुहूर्त्त, शोभन-काल, नक्षत्र आदिके परिज्ञानके लिये वेदाग ज्योतिपकी रचना की गयी। इस ग्रन्थके रचना-कालके सम्बन्धमें मत-भिन्नता है। प्रो० मैक्समूलरने इसका रचनाकाल ई० पूर्व ३००, प्रो० वेवरने ई० पू० ५००, कोल ब्रुक-ने ई० पू० १४१० और प्रो० ह्विटनीने ई० पू० १३३८ बतलाया है। लोकमान्य तिलकने अपने 'ओरायन' ग्रन्थमें अयन और सम्पात नक्षत्रके गणितानुसार इसका रचना-काल ई० पू० १४०८ स्थिर किया है। पर निष्पक्ष दृष्टिसे विचार करने पर उपलब्ध वेदाङ्ग ज्योतिषका सङ्कलन ई० पू० ५०० वर्षके पहले नही हुआ है। वेदाङ्ग ज्योतिषमें ऋग्वेदाङ्ग ज्योतिष, यजुर्वेदाङ्ग ज्योतिष और अथर्ववेदाङ्ग ज्योतिष ये तीन ग्रन्थ सङ्कलित हैं। ऋग्वेदाङ्ग ज्योतिपके सङ्कलनकर्त्ता लगध नामक ऋषि हैं। इसमें ३६ कारिकाएँ हैं। किसी-किसी सङ्कलनमे ४२ से ४४ तक करिकाएँ भी उपलब्ध हैं। यजुर्वेदाङ्ग ज्योतिपमें ४९ कारिकाएँ हैं जिनमें ३६ कारिकायें तो ऋग्वेदाङ्ग ज्योतिषकी है और शेष १३ नई कारिकाये आयी है। अथर्ववेदाङ्गमें १६२ श्लोक हैं, जो फलितकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण हैं। वेदाङ्ग ज्योतिषके अध्ययनसे निम्नलिखित पांच सिद्धान्तोंकी उत्पत्ति पर प्रकाश पड़ता है। यह सत्य है कि वेदाङ्ग ज्योतिषके सङ्कलनकाल तक ज्योतिषकी विभिन्न शाखाओका विकास नही हुआ था।

(१) पञ्चवर्षात्मक युगकी मान्यता।
(२) तिथि-नक्षत्रोंका शुभाशुभत्वकी दृष्टिसे विवेचन।
(३) गणित और फलितका साध्य-साधनके रूपमें कथन।
(४) ज्योतिष-घटनाओकी गणनाका नियम।
(५) विषुव-विचार।

वेदाङ्ग ज्योतिषका अच्छा सस्करण डा० श्याम शास्त्रीने मैसूरसे प्रकाशित किया हैं, जिसमें सूर्य-प्रज्ञप्ति और ज्योतिष्करण्डककी सहायता लेकर उपर्युक्त पाँचो सिद्धान्तोका विश्लेषण किया गया है। ज्योतिषके सिद्धान्तग्रन्थोका आरम्भ वराहमिहिरके समयसे होता है। वराहमिहिरने पञ्चसिद्धान्तिका नामक एक ग्रन्थ लिखा है, जिसमें ई० सन्की छठी शताब्दीसे पूर्वमें प्रचलित पौलिश, रोमक, वाशिष्ठ, सौर और पैतामह इन पांच सिद्धान्तोका सङ्कलन किया है। गणित ज्योतिषकी दृष्टिसे आर्यभट प्रथमका नाम उल्लेख-

---

१ तै स ७५,३३,
२, तै. ब्रा, ३ ११ १

नीय है। इसने ई० सन् ४९९ में आर्यभटीय ग्रन्थ लिखा है, जिसमें अंकगणित, रेखागणित और बीजगणितके मौलिक सिद्धान्तोंके साथ काल और भगणका ज्योतिषकी शैलीमें विवेचन किया है।

उपर्युक्त कथनसे यह निष्कर्ष निकलता है कि वेदाङ्गकाल तक ज्योतिषकी समस्त शाखाओंकी उत्पत्ति नहीं हुई थी। वेद और वेदाङ्गोंमें जो सिद्धान्त समाहित हैं, उनकी गणना विषयकी दृष्टिसे सिद्धान्त और संहिताके मिश्रित रूपमें की जा सकती है। सिद्धान्त ज्योतिषके विषयका वास्तविक विकास आर्यभटसे आरम्भ होता है। भास्कर-प्रथमके निर्देशसे[1] ज्ञात होता है कि आर्यभटने दो ग्रन्थ लिखे थे। इन्होंने एक ग्रन्थमें युगकी गणना अर्धरात्रिक निश्चय कर ग्रहाङ्कोंको पठित किया था। द्वितीय ग्रन्थमें युग-गणना औदयिक प्रतिपादित की है तथा इसी आधार पर भुजाङ्क, भगण आदि पठित किये हैं। आज आर्यभटका एक आर्यभटीय ग्रन्थ ही उपलब्ध है जिसमें १२१ पद्य हैं, जिन्हें चार खण्डोंमें विभक्त किया गया है। सिद्धान्त ज्योतिषकी परिभाषाकी स्थापना सर्वप्रथम आर्यभटीयमें ही मिलती है। सृष्ट्यादिसे इष्ट दिन पर्यन्त अहर्गण बनाकर ग्रहानयनकी प्रक्रियाके प्रसंगमें ग्रहोंकी मध्यमा और स्पष्टा गतियोंके विवेचन आये हैं तथा उपयोगी ज्या, परिधि, व्यास, वर्ग, वर्गक्षेत्र, घन, घनफल, वर्गमूल, घनमूल, त्रिभुज-क्षेत्रफल, त्रिभुजाकार शङ्कुका घनफल, वृत्तका क्षेत्रफल, गोलका घनफल, विषम चतुर्भुज क्षेत्रके कर्णोंके सम्पातसे भुजकी दूरी और क्षेत्रफल तथा सभी प्रकारके क्षेत्रोंकी मध्यम लम्बाई और चौड़ाई ज्ञात कर क्षेत्रफलानयनकी विधियोंका प्रतिपादन किया है। संख्या लिखनेकी अक्षर-विधि तो अद्भुत है ही, पर परिधिके षष्ठांशकी ज्या उसकी त्रिज्याके समान होती है, यह कथन उस युगकी अपेक्षा विशेष महत्त्वपूर्ण है। आर्यभटने परीक्षणविधि द्वारा बतलाया कि व्यासार्धको छ से गुणा करने पर त्रिगुण व्यास होगा, उससे वृत्त-परिधि-मान बड़ा रहता है, क्योंकि पूर्ण ज्यासे चापमान बड़ा होता है। पूर्ण ज्या सरल रेखा है और उसका चाप वक्र रेखा है, जो सरल रेखासे अधिक है। अतएव बीस हजार व्यासमें बासठ हजार आठ सौ बत्तीस परिधि होती है। इस विधिसे परिधि और व्यासका सम्बन्ध चतुर्थ दशमलव अङ्क तक शुद्ध आ जाता है।

ग्रहगणितको अवगत करनेके लिए वृत्त, त्रिभुज और चतुर्भुजकी रचना-विधि, समतलके परखनेकी विधि, लम्बक-प्रयोगविधि, शङ्कु और छायासे छायाकरणानयनकी रीति, दीपक और उससे बनी हुई शङ्कुकी छायासे दीपककी ऊँचाई और दूरी जाननेकी विधि, एक ही रेखापर स्थित दीपक और दो शङ्कुओंके सम्बन्धविशेषका परिज्ञान, समकोण त्रिभुजके भुजों और कर्णके वर्गोंका सम्बन्ध एवं शर-जीवा गणित आदि भी विवेचित हैं। श्रेणिव्यवहारके नियमोंमें एक-एक बढ़ती हुई संख्याओंके वर्गों और घनोंका योगफल आनयनसम्बन्धी सिद्धान्त विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

आर्यभट और ब्रह्मगुप्तने शुद्ध गणितके विकासके साथ ग्रहगणितके नियमोंका भी प्रतिपादन किया। षष्ठी शताब्दीमें पञ्चसिद्धान्तिकामें संकलित रोमक और पौलिश सिद्धान्तोंसे अनेक महत्त्वपूर्ण नियमोंपर प्रकाश पड़ता है। इसके अतिरिक्त सूर्यसिद्धान्त, ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त, खण्डखाद्यक, शिष्यधीवृद्धितन्त्र आदि सिद्धान्त ग्रन्थ भी मौलिक तथ्योंपर प्रकाश डालते हैं।

ग्रहगणितके आनयनमें बीजगणितके सिद्धान्तोंका उपयोग आवश्यक है। अतएव आर्यभट, पद्मनाभ, श्रीधर एवं भास्कर द्वितीयने स्वतन्त्र ग्रन्थ तो लिखे हैं, किन्तु सिद्धान्त ग्रन्थोंमें भी बीजगणितके एकवर्णसमीकरण, अनेकवर्ण समीकरण, करणी, कल्पित राशियाँ, समानान्तर गणित, गुणोत्तरगणित, व्युत्क्रम, घाताक और

---

१ निबन्ध कर्म्मणा भोक्तो योऽसावौदयिको विधि ।
अर्द्धरात्रेऽस्त्ययं सर्वो यो विशेष. स कथ्यते ॥—भास्कर प्रथम पद्य २१ ।

लघुगणकोके सिद्धान्त आदि भी निबद्ध हैं। बारहवी शताब्दीमे भास्कर द्वितीयने सिद्धान्तशिरोमणि जैसे उच्चकोटिके ग्रन्थका निर्माणकर ज्योतिशास्त्रकी अपूर्व सेवा की। यह ग्रन्थ दो भागोमें विभक्त है—(१) गणिताध्याय और (२) गोलाध्याय, गणिताध्यायमे अर्हगण, भगण और मध्यम, स्पष्ट गतियोके साधनके साथ शृङ्गोन्नति ग्रहयुति, ग्रहण, उदयास्त, आदिका आनयन किया गया है। भास्करने उदयान्तर, चरान्तर और भुजान्तर सस्कारोकी व्यवस्था प्रतिपादित कर ग्रहगणितकी दिशामें सूक्ष्मताका समावेश किया। भास्कराचार्यने ही करणकुतूहलकी रचनाकर तन्त्रकी दिशाकी ओर एक नया कदम उठागा। कल्पित वर्षका युग मानकर उस युगके भीतर ही किसी अभीष्ट दिनका अहर्गण लाकर ग्रहानयन किया गया है।

फलित ज्योतिषका विकास

फलित ज्योतिपकी दृष्टिमे वेदागज्योतिप आदि ग्रन्थोके अतिरिक्त वाराहमिहिरने वाराहीसहिता और वृहज्जातक ग्रन्थोका प्रणयनकर सहिता और जातक ग्रन्थोका प्रारम्भ किया। इन दोनो ग्रन्थोमे पूर्वाचार्योंके जो तद्विषयक सिद्धान्त अकित किये गये है, उनसे यह ज्ञात होता है कि जातकसम्बन्धी अनेक ग्रन्थ षष्ठशतीके पहले भी लिखे जा चुके है। सत्याचार्यके मतको वाराहमिहिरने पूर्ण मान्यता प्रदान की है। इस शास्त्रका अन्य नाम होराशास्त्र है। इसमें जन्मकालीन ग्रहोकी स्थिति, क्रिया, गति एव युतिके अनुसार व्यक्तिके भविष्य का निरूपण किया जाता है। यह कर्मफल सूचक शास्त्र है। वाराहमिहिरने होराकी व्युत्पत्ति अकित करते हुए लिखा है—

> होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके,
> वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात्।
> कर्मार्जित पूर्वभवे सदादि,
> यत्तस्य पक्ति समभिव्यनक्ति[१] ॥

अर्थात्—लग्न, होरा और जातक ये तीनो एक दृष्टिसे पर्यायवाची है। दिन या रात्रिमें क्रान्तिवृत्तके किसी विशेप प्रदेशके क्षितिजमें लगनेके कारण लग्न-स्थानकी सज्ञा भी होरा या जातक मानी गयी है। जातकशास्त्र व्यक्तिके कर्म-फलोका प्रतिपादन करता है। इस शास्त्रमें व्यक्तिकी गति, क्रिया और शीलता इन तीनोका विशेप विचार किया जाता है। गतिका अभिप्राय जातककी गतिविधियो, जीवनके उन्नत-अवनत आरोह-अवरोहो एव भविष्णुताके सम्बन्धमें विवेचन करना है। क्रियाशब्द पुरुपार्थका सूचक है। व्यक्ति अपने जीवनमें किस समय कैसा पुरुषार्थ कर सकेगा तथा उसके पुरुपार्थमें कब कैसी विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होगी आदिका विचार क्रिया द्वारा किया जाता है। शीलसे तात्पर्य वाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्वसे है। अत शरीराकृति, रूप-रग, सस्थान, रोग, व्याधियाँ, शारीरिक सुख, पारिवारिक सुख, मानसिक सुख, सतोष, शान्ति, आर्थिक स्थिति, शिक्षा, प्रतिभा आदिका कथन अपेक्षित है।

भारतीय ज्योतिप परम्पराकी दृष्टिसे जातक-जीवन एक भचक्र है और चक्रवत् ही इसका समुचित अध्ययन सम्भव है। भचक्रके गणितीय अध्ययनकी प्रक्रियामे पिण्ड और ब्रह्माण्डीय सौर मण्डलकी विद्यमान समता और सन्तुलनको ध्यानमे रखकर भारतीय आचार्योंने बारह राशियोके समान जीवनको भी द्वादशात्मक वृत्तमे बाँटा है। इसी द्वादशात्मक भचक्रके पूर्ण और अशात्मक नाभिरूप विन्दुओपर ग्रहोके तात्त्विक भोगो के परिणाम जीवनके भिन्न-भिन्न समयोमें कौन-कौनसे परिवर्तन ला सकेंगे, यह जाननेकी प्रक्रिया जातकशास्त्र है।

---

१ वृहज्जातक १।३

जातक-शास्त्रको अवगत करनेके हेतु आत्मा और कर्मके सम्बन्धको जान लेना आवश्यक है। जातक-तत्त्वका सम्यक् ज्ञान कर्मसम्बन्धी मान्यताको अवगत किये बिना सम्भव नही। श्री के० एस० कृष्णमूर्तिने ज्योतिषको कर्म-फल द्योतक शास्त्र बतलाते हुए लिखा है—

"Karma is a Sanskrit word, "Kri" means 'action' or 'deed' Any mental or physical action is called Karma, every action produces its reaction or result which is known as Karma. Thus Karma includes both the action and the result governed by the irresistible law of "Causation"

So under the law of Karma, there is nothing as a chance or an accident The so-called chances and accidents are in reality the products of some definite causes which we may not be aware of before hand That which appears to be accidental or providential to a non-astrological mind is a natural aud incuitable incident to an astrologer Hence, chances, luck or misfortune are governed absolutely by the law of causation or Karma" [1]

अर्थात् 'कर्म' सस्कृत शब्द है और यह कृञ् धातुसे निष्पन्न है, जिसका अर्थ क्रिया करना या कार्य करना है। कोई भी मानसिक या शारीरिक क्रिया कर्म कही जाती है। पुरातन कर्मकी सज्ञा प्रारब्ध है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि समस्त सञ्चितका नामप्रारब्ध नही। किन्तु जितने भागका भोगना आरम्भ हो गया है, प्रारब्ध है, जो अभी हो रहा है या जो अभी किया जा रहा है, वह क्रियमाण है। इस प्रकार इन तीन तरहके कर्मोंके कारण आत्मा अनेक जन्मो, पर्यायोको धारणकर सस्कारोका अर्जन करता चला आ रहा है।

आत्माके साथ अनादिकालीन कर्मप्रवाहके कारण लिंगशरीर और भौतिक स्थूलशरीरका सम्बन्ध है। जब एक स्थानसे आत्मा इस भौतिक शरोरका त्याग करता है, तो लिंगशरीर या सूक्ष्मशरीर उसे अन्य स्थूल शरीरकी प्राप्तिमें सहायक होता है। इस स्थूल भौतिक शरीरमें यह विशेषता है कि इसमें प्रवेश करते ही आत्मा जन्म-जन्मान्तरोके सस्कारोकी निश्चित स्मृतिको खो देता है। यही कारण है कि ज्योतिषमें प्राकृत ज्योतिषके आधार पर बताया गया है कि यह आत्मा मनुष्यके वर्तमान स्थूल शरीरमें रहते हुए भी एकसे अधिक जगतके साथ सम्बन्ध रखता है। मानवका भौतिक शरीर प्रधानत ज्योति, मानसिक और पौद्गलिक इन तीन उपशरीरोमें विभक्त है। यह ज्योति उपशरीर द्वारा नाक्षत्र जगतसे, मानसिक उपशरीर द्वारा मानसिक जगत्से और पौदगलिक उपशरीर द्वारा भौतिक जगत्से सम्बद्ध है। अत मनुष्य प्रत्येक जगत्से प्रभावित होता है और अपने भाव, विचार और क्रिया द्वारा प्रत्येक जगत्को प्रभावित करता है। अतएव कर्मसस्कारोके कारण घटित होने वाली घटनाओ एव अन्य सम्भावनाओका अध्ययन करनेके लिए जातक शास्त्रमें व्यक्तिके व्यक्तित्वको बाह्य और आन्तरिक दो भागोमें विभक्त किया गया है। बाह्य व्यक्तित्वके अन्तर्गत शरीर, शारीरिक रोग, शरीरजन्य प्रभाव आदि परिगणित हैं। यह व्यक्तित्व भौतिकताके साथ सम्बद्ध होने पर भी आत्माकी चैतन्य क्रियाके साथ इस प्रकार सम्बद्ध है जिससे पूर्व जन्ममें किये गये सस्कारो-के फलस्वरूप विचार, भाव, और क्रियाओकी अभिव्यक्ति होती है तथा वर्तमान जीवनके अनुभवो और क्रिया-प्रतिक्रियाओ द्वारा घटित होने वाले सयोग और घटनाओकी सूचना प्राप्त होती है। शनै शनै यह व्यक्तित्व विकसित होकर आन्तरिक व्यक्तित्वमें मिलनेका प्रयास करता है। आन्तरिक व्यक्तित्वमें अनेक बाह्य व्य-

---

१. कृष्णमूर्ति, पद्धति, मद्रास संस्करण, पृ० १७।

वितत्वोकी स्मृतियो, अनुभवो और प्रवृत्तियोका सश्लेषण रहता है, जिससे विभिन्न प्रकारके सयोग, घटनाएँ एव फलोपभोग प्राप्त होते है ।

मनुष्यका अन्त करण इन दोनो व्यक्तित्वोके मिलानेका कार्य करता है । जातकमे वाह्य व्यक्तित्वके तीन भेद माने गये हैं--विचार, भाव और क्रिया। इसी प्रकार आन्तरिक व्यक्तित्वके भी ये तीन भेद स्वीकार किये गये हैं । वाह्य व्यक्तित्वके उक्त तीन भेद और आन्तरिक व्यक्तित्वके उक्त तीनो भेदोको सन्तुलित रूप देनेका कार्य अन्त करणके द्वारा होता है । दूसरे शब्दोंमें यो कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्तित्वके तीनो रूप एक मौलिक अवस्थामे आकर्षण और विकर्षणकी प्रकृति द्वारा अन्त करणकी सहायतामे सन्तुलित रूपको प्राप्त होते हैं । मनुष्यकी उन्नति और अवनति इस सन्तुलनके आधार पर ही निर्णीत की जाती हैं । जातक-शास्त्रके अनुसार मानव जीवनके वाह्य व्यक्तित्वके तीन रूप और आन्तरिक व्यक्तित्वके तीन रूप और एक अन्त करण इन सातके प्रतीक निम्नलिखित सात ग्रह हैं—

(१) वृहस्पति (२) मगल (३) चन्द्रमा (४) शुक्र (५) वुध (६) सूर्य (७) शनि

उक्त ग्रहोके अनुसार मनुष्योके भावी फल भिन्न-भिन्न रूपमे अभिव्यक्त होते है । यत प्रत्येक प्राणीके जन्म-जन्मान्तरोंके सञ्चित, प्रारब्ध और क्रियमाण कर्म विभिन्न प्रकारके है । अत प्रतीक रूप ग्रह अपने-अपने प्रतिरूप्यके सम्बन्धमे विभिन्न प्रकारके तथ्य प्रकट करते हैं । प्रतिरूप्योकी सच्ची अवस्था वीजगणितकी अव्यक्त मानकल्पना द्वारा निष्पन्न अङ्कोके समान प्रकट हो जाती है ।

वाह्य व्यक्तित्वके प्रथम रूप विचारका प्रतीक वृहस्पति है । यह प्राणीमात्रके शरीरका प्रतिनिधित्व करता है और शरीरसञ्चालनके लिए रक्त प्रदान करता है । जीवित प्राणीके रक्तमे रहनेवाले कीटाणुओकी चेतनासे इसका सम्बन्ध है । गुरु द्वारा मनुष्यकी आत्मिक, अनात्मिक और शारीरिक कार्यगतियोका विश्लेषण किया जाता है, क्योकि मनुष्यके व्यक्तित्वके किसी भी रूपका प्रभाव शरीर, आत्मा और वाह्य जड चेतन पदार्थ पर, जो शरीरसे भिन्न है, पडता है । उदाहरणार्थ वाह्य व्यक्तित्वके प्रथमरूप विचारको लिया जा सकता है । मनुष्यके विचारका प्रभाव शरीरके साथ उसकी चेतन-शक्तियोपर भी पडता है । इतना ही नही उसके विचारसे गृह, कार्यालय, व्यवसाय, शिक्षालय भी प्रभावित हुए विना नही रहते हैं । अतएव प्रथम रूपके प्रतीक वृहस्पतिसे निम्नलिखित तथ्योकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए ।

अनात्मा—इस दृष्टि-विन्दुसे वृहस्पति व्यापार, कार्य, वे स्थान और व्यक्ति, जिनका सम्बन्ध धर्म और कानूनसे है—मन्दिर, पुजारी, मन्त्री, न्यायालय, न्यायाधीश, विश्वविद्यालय, धारासभाएँ, जनताके उत्सव, दान, सहानुभूति आदिका प्रतिनिधित्व करता है । अतएव जातकशास्त्रमे सामान्यत वृहस्पतिसे उक्त तथ्योका विचार किया जाता है ।

आत्मा—इस दृष्टिकोणसे यह ग्रह विचार, मनोभाव और इन दोनोंके मिश्रित रूप उदारता, स्वभाव, सौन्दर्य-प्रेम, भक्ति, शक्ति एव व्यवस्था-बुद्धि इत्यादि आत्मिक भावोका प्रतिनिधित्व करता है ।

शारीरिक दृष्टिसे वृहस्पतिके प्रभाव द्वारा पैर, जँघा, जिगर, पाचन-क्रिया, रक्त, स्नायु-सस्थान आदिका विचार किया जाता है । सामान्यत जठराग्निका विचार भी गुरु द्वारा होता है ।

वाह्य व्यक्तित्वके द्वितीय रूपका प्रतीक मङ्गल है । यह इन्द्रियज्ञान और आनन्द-इच्छाका प्रतिनिधित्व करता है । जितने भी उत्तेजक और सवेदनाजन्य आवेग है उनका यह प्रधान केन्द्र है । वाह्य आनन्ददायक वस्तुओं द्वारा यह क्रियाशील होता है और आनन्ददायक अनुभवोंकी स्मृतियोको जागृत करता है । वाञ्छित

वस्तुओकी प्राप्ति तथा उन वस्तुओकी प्राप्तिके उपाया—कारणोकी क्रियाका सूचक है। प्रधानरूपसे मङ्गलकी इच्छाओका प्रतीक माना गया है।

अनात्मिक दृष्टिकोणसे यह सैनिक, डाक्टर, रसायनशास्त्री, नाई, वढई, लोहार मशीनका कार्य करनेवाले, मकान वनानेवाले राज और मजदूर, खेल एव खेलके सामान आदिका प्रतिनिधि है।

आत्मिक दृष्टिकोणसे यह वहादुरी, दृढता, आत्मविश्वास, क्रोध, युद्ध-वृत्ति एव प्रभुत्व प्रभृति भावो और विचारोका प्रतिनिधि है।

शारीरिक दृष्टिकोणसे यह वाहरी सिर—खोपडी, नाक एव कपोलका प्रतीक है। इसके द्वारा सक्रामक रोग, घाव, खरोच, ऑप्रेशन, रक्तदोप उदर पीडा आदि अभिव्यक्त होते हैं। वाह्य व्यक्तित्वके तृतीय रूपका प्रतीक चन्द्रमा है। यह मानवपर शारीरिक प्रभाव डालता है और विभिन्न अङ्गो तथा उनके कार्योमें सुधार करता है। मानसिक विकास और चरित्रगत विशेपताओकी सूचना भी इसीके द्वारा प्राप्त होती है।

अनात्मिक दृष्टिकोणकी अपेक्षासे यह श्वेत रग, जहाज, वन्दरगाह, मछली, जल, तरल पदार्थ, मुक्ता, पापाण, नर्स, दासी, भोजन, रजत एव वैंगनी रगके पदार्थों पर प्रभाव डालता है।

आत्मिक दृष्टिकोणकी अपेक्षासे—यह सवेदन, आन्तरिक इच्छा, उतावलापन, भावना, विशेपत गृह-जीवन सम्बन्धी भावना, कल्पना, सतर्कता एव लाभ-इच्छा पर प्रभाव डालता है।

शारीरिक दृष्टिसे उदर, पाचन सस्थान, आँतें, स्तन, गर्भाशय एव गुह्य अगोपर इसका प्रभाव पडता है।

आन्तरिक व्यक्तित्वके प्रथमरूप विचारका प्रतीक शुक्र है। यह सूक्ष्म मानव चेतनाओकी विधेय क्रियाओका प्रतिनिधित्व करता है। पूर्ण वली शुक्र निस्वार्थ प्रेमके साथ प्राणीमात्रके प्रति भ्रातृत्व भावनाका विकास करता है।

अनात्मिक दृष्टिविन्दुकी अपेक्षासे सुन्दर वस्तुएँ आभूपण, मनोरञ्जनकी सामग्री, नृत्य, गान, वाद्य, शृगारिक पदार्थ, कलात्मक वस्तुएँ एव भोगोपभोगकी सामग्री आदि पर प्रभाव पडता है।

आत्मिक दृष्टिसे स्नेह, सौन्दर्य-बोध, आनन्दानुभूति, परखवुद्धि, कार्य-अर्हता एव जिज्ञासा आदिपर इसका प्रभाव पडता है।

शारीरिक दृष्टिसे गला, गुर्दा, आकृति, वर्ण, केश, वीर्य, शक्ति प्रभृतिसे सम्वद्ध है। साधारणत शरीर सचालित करनेवाले अगोपर इसका विशेप प्रभाव पडता है।

आन्तरिक व्यक्तित्वके द्वितीय रूपका प्रतिनिधि वुध है। यह प्रधानरूपसे आध्यात्मिक शक्तिका प्रतीक है। इसके द्वारा आन्तरिक प्रेरणा, सहेतुक निर्णयात्मक वुद्धि, वस्तुपरीक्षण शक्ति, ममज्ञ और वुद्धिमानी आदिका विश्लेपण किया जाता है। वुधद्वारा आन्तरिक व्यक्तित्व का गम्भीर अध्ययन किया जा सकता है।

अनात्मिक दृष्टिसे विद्यालय, महाविद्यालय सम्बन्धी शिक्षण, विज्ञान, वैज्ञानिक और साहित्यिक स्थान प्रकाशन-स्थान, सम्पादक, लेखक, प्रकाशक, पोस्ट-मास्टर, व्यापारी एव वुद्धिजीवियोपर इसका विशेप प्रभाव पडता है। पीत रग और पारा धातुका भी यह प्रतीक माना गया है।

आत्मिक दृष्टिसे विवेक, स्मरण-शक्ति, तार्किक प्रतिभा, कला, कला उत्पादनकी शक्ति एव मेधाका विचार किया जाता है।

शारीरिक दृष्टिसे यह मस्तक सस्थान, स्नायु क्रिया, जिह्वा, वाणी, हाथ एव अङ्गुलियोसे वे आकार प्रकारका प्रतिनिधि है।

आन्तरिक व्यक्तित्वके तृतीय रूपका प्रतीक सूर्य है। इसकी सात किरण मानी गयी हैं, जो कार्य रूपसे भिन्न-भिन्न होती हुई भी इच्छाके रूपमे पूर्ण होकर प्रकट होती हैं। मनुष्यके विकासमें सहायक तीनो प्रकारकी चेतनाओके सन्तुलित रूपका यह प्रतिनिधि है। पूर्ण इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, सदाचार, विश्राम, शान्ति, जीवनकी उन्नति एव विकासका द्योतक है।

अनात्मिक दृष्टिकोणकी अपेक्षासे प्रभावक व्यक्ति—शासक, मत्री, एम० पी०, एम० एल० ए०, सेनापति, न्यायाधीश, मण्डलाधिकारी, आविष्कारक, पुरातत्त्ववेत्ता, उच्च शिक्षाधिकारी आदिपर अपना प्रभाव डालता है।

आत्मिक दृष्टिसे यह प्रभुता, ऐश्वर्य, प्रेम, उदारता, महत्त्वाकाक्षा आत्मविश्वास, आत्मनियत्रण, विचार और भावनाओका सन्तुलन एव सहृदयताका प्रतीक है।

शारीरिक दृष्टिसे हृदय, रक्त-सचालन, नेत्र, रक्त-वाहिका छोटी-छोटी नसे, दाँत, कान, आदि अगोका प्रतिनिधि है।

अन्त करणका प्रतीक शनि है। यह वाह्य चेतना और आन्तरिक चेतनाको मिलानेमे पुलका काम करता है। प्रत्येक नवजीवनमे आन्तरिक व्यक्तित्वसे जो कुछ प्राप्त होता हैं और जो मनुष्यके व्यक्तिगत जीवनके अनुभवोंसे मिलता हैं उससे यह मनुष्यको वृद्धिगत करता है। यह प्रधान रूपसे अह भावनाका प्रतीक होता हुआ भी व्यक्तिगत जीवनके, विचार, इच्छा और कार्योंमे सन्तुलन उत्पन्न करता है।

अनात्मिक दृष्टिसे कृपक, हलवाहक, पत्रवाहक, चरवाहा, कुम्हार, माली, मठाधीश, कृपण, पुलिस अफसर, उपवास करनेवाले साधु-सन्यासी आदि व्यक्ति तथा पहाडी स्थान, चट्टानी-प्रदेश, बञ्जर-भूमि, गुफा, प्राचीन ध्वस्त स्थान, श्मसानघाट, कब्र स्थान एव चौरस मैदान आदिका प्रतिनिधि है।

आत्मिक दृष्टिसे तत्त्वज्ञान, विचार-स्वातत्र्य, अध्ययन, मनन-चिन्तन, कर्त्तव्य-बुद्धि, आत्म-सयम, धैर्य, दृढता, गम्भीरता, निर्मलता, सतर्कता एव विचारशीलताका प्रतीक है।

शारीरिक दृष्टिसे अस्थि-समूह, वडी आँते, मास-पेशियाँ, घुटनेसे नीचेके अग आदिपर इसका प्रभाव पडता है।

इस प्रकार जातकपद्धतिमें सौर जगत्के उक्त सात ग्रहोको मानव-जीवनके विभिन्न अगोका प्रतीक माना गया है। इन ग्रहोमें सूर्य और चन्द्रकी प्रधानता है। ये दोनो मन और शरीरके विकास पर प्रभाव डालते है।

सूर्यसिद्धान्त और वराहमिहिरके सिद्धान्तोमे ज्ञात होता है कि शरीर कक्षा-वृत्तके द्वादश भाग—मस्तक, मुख, वक्ष- स्थल, हृदय, उदर, कटि, वस्ति, लिंग, जघा, घुटना, पिंडली और पैर क्रमश मेप, वृष, मिथुन, कर्क, सिह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन सज्ञक है। इन १२ राशियोमें भ्रमण करने वाले ग्रहोमें आत्मा रवि, मन चन्द्रमा, धैर्य मगल, वाणी बुध, विवेक गुरु, वीर्य शुक्र और सवेदन शनि है। इस प्रकार वराहमिहिरके अनुसार सप्त ग्रह और द्वादश राशियोकी स्थिति देहधारी प्राणियोके शरीरके भीतर ही पायी जाती है। शरीर स्थित इस सौर-चक्रका भ्रमण आकाश स्थित सौर मण्डलके समान ही होता है। अतएव व्यक्त सौर जगतके ग्रहोकी गति, स्थिति, क्रिया आदिके अनुसार अव्यक्त शरीर स्थित सौर जगतके ग्रहोकी गति, स्थिति, क्रिया आदिको अभिव्यक्त करते है। बताया है—

"एते ग्रहा बलिष्ठा प्रसूतिकाले नृणा स्वमूर्त्तिसमम्।
कुर्युर्देह नियत बहवश्च समागता मिश्रम्॥

ग्रहरश्मियोका प्रभाव

जातक शास्त्रमें काल—समयको पुरुप या ब्रह्म माना गया है और ग्रहरश्मियोवश इस पुरुपके उत्तम, मध्यम, उदासीन एव अधम ये चार अङ्ग-विभाग किये हैं। त्रिगुणात्मक प्रकृतिके द्वारा निर्मित समस्त जगत सत्त्व, रजस् और तमोमय है। जिन ग्रहोमें सत्त्व गुण अधिक रहता है उनकी किरणे अमृतमय हैं, जिनमें तमोगुण अधिक रहता है उनकी विपमय, जिनमे रजोगुण अधिक रहता है उनकी किरणे उभयगुण मिश्रित एव जिनमें तीनो गुणोकी अल्पता रहती है उन ग्रहोकी गुणहीन किरणे मानी गयी हैं। ग्रहोंके शुभाशुभत्वका विभाजन भी किरणोके गुणोके आधारपर ही हुआ है। आकाशमे प्रतिक्षण अमृतरश्मि सौम्य ग्रह अपनी गतिसे जहाँ-जहाँ गमन करते हैं उनकी किरणे भूमण्डलके उन-उन प्रदेशो पर पडकर वहाँके निवासियोके स्वास्थ्य, वृद्धि आदि पर अपना सौम्य प्रभाव डालती हैं। विपमय किरणो वाले क्रूर ग्रह अपनी गतिसे जहाँ विचरण करते है वहाँ वे अपने दुष्ट भावसे वहाँके निवासियोके स्वास्थ्य और वृद्धि पर अपना कुप्रभाव डालते हैं। मिश्रितरश्मि ग्रहोके प्रभाव मिश्रित एव गुणहीन रश्मि गहोंके प्रभाव अकिञ्चित्कर होते हैं। जन्मके समय जिन-जिन रश्मि ग्रहोंकी प्रधानता होती है, जातकका मूल स्वभाव वैसा ही वन जाता है।

आचार्य वराहमिहिरने वताया है कि जिन व्यक्तियोका जन्म कालपुरुपके उत्तमाङ्ग—अमृतमय रश्मियोके प्रभावसे होता है, वे बुद्धिमान, सत्यवादी, अप्रमादी, स्वाध्यायशील, जितेन्द्रिय, मनस्वी एव सच्चरित्र होते है, जिनका जन्म काल-पुरुपके मध्यभाग—रजोगुणाधिक्य मिश्रित, रश्मियोंके प्रभावसे होता है, वे मध्यम वुद्धि, तेजस्वी, शूरवीर, प्रतापी, निर्भय, स्वाध्यायशील, साधु अनुग्राहक एव दुष्ट निग्राहक होते हैं। जिनका जन्म उदासीन अग गुणत्रयकी अल्पतावाली ग्रह-रश्मियोंके प्रभावसे होता है वे उदासीन वुद्धि, व्यवसायकुशल, पुरुपार्थी, स्वाध्यायरत एव सम्पत्तिशाली होते है, एव जिनका जन्म अधमाग—तमोगुणधिक्य रश्मि वाले ग्रहोके प्रभावसे होता है वे विवेकशून्य, दुर्बुद्धि, व्यसनी, सेवाव्रती एव हीनाचरण वाले होते हैं। अतएव स्पष्ट है कि मनुष्यके गुण-स्वभावका अकन पूर्वोपार्जित कर्मसस्कारके अनुसार ग्रहरश्मियोके प्रभावसे घटित होता है। जिस ग्रहनक्षत्रके वातावरकी प्रधानता रहती है अथवा जिनके तत्त्वविशेपके प्रभावमें व्यक्ति उत्पन्न होता है उस व्यक्तिमें ग्रहके अनुसार उसी तत्त्वकी प्रमुखता समाविष्ट हो जाती है। देशकृत और कालकृत ग्रहोके सस्कार इस वातके सूचक हैं कि काल या किसी स्थान विशेपके वातावरणमें उत्पन्न एव पुष्ट होने वाला प्राणी उस काल या उस स्थान पर पडने वाली ग्रहरश्मियोकी अपनी निजी विशेपता रखता है। अतएव व्यक्तित्वमें समाविष्ट ग्रहविशेष वैयक्तिक विशेपताओको स्पष्ट करते हैं।

ग्रहरश्मियोका प्रभाव केवल मनुष्यपर ही नही पडता, किन्तु वन्य, स्थलज एव उद्भिज आदि पर भी पडता है। अमृतरश्मियोके प्रभावसे जडी-वूटियोमें रोगनिवारणकी शक्ति उत्पन्न होती है तथा मुक्ता आदिकी उत्पत्तिका कारण भी ग्रहरश्मियाँ हैं। अतएव जातक पद्धतिमें कालपुरुपके विचारके अन्तर्गत ग्रहरश्मियो और भचक्रका विश्लेपण किया जाता है।

जातक तत्त्वके सिद्धान्त

१. लग्न—नवाशादि षोडश वर्ग या षड् वर्ग।

२ ग्रहयोग—ग्रहोकी विभिन्न स्थितियोसे उत्पन्न योगविशेप।

३ ग्रह-युति—ग्रहोंके द्विसयोगी, त्रिसयोगी, चतु सयोगी आदि भेद और उनका फल।

४ दृष्टि—ग्रहदृष्टिके अनुसार फलादेश।

५ वलावल—पड्वल विचार।

६. महादशाविचार
७, अन्तर्भुक्तिविचार ।

लग्न—नवाशादिके विचारके पूर्व राशि और ग्रहोका स्वरूप, उनकी विभिन्न सज्ञाएँ एव लग्नादि द्वादश भावोंके स्वरूपका परिज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। अतएव जातकतत्त्वको अवगत करनेके लिए केन्द्र, पणफर, आयोक्लिम, त्रिकोण उपचय, चतुरस्र, मारक, एव नेत्रत्रिक सज्ञाओको समझना आवश्यक है। फलप्रतिपादनके लिए अथवा जातक सिद्धान्तोको ज्ञात करनेके लिए प्रारम्भिक बातोकी जानकारी अपेक्षित है।

कुण्डलीको दृष्टिसे ग्रहोका शुभाशुभत्व

जिस भावमें जो राशि हो, उस राशिका स्वामी ही, उस भावका स्वामी या भावेश कहलाता है। षष्ठ, अष्टम और द्वादश भावके स्वामी जिन भावो—स्थानोमें रहते हैं, अनिष्टकारक होते हैं। किसी भाव का स्वामी स्वग्रही हो तो उस स्थानका फल अच्छा होता है। ग्यारहवे भावमे सभी फल शुभदायक होते है। किसी भावका स्वामी पापग्रह हो और वह लग्नसे तृतीय स्थानमें स्थित हो तो शुभफल कारक होता है। किन्तु जिस भावका स्वामी शुभग्रह हो और वह तृतीय स्थानमें स्थित हो तो मध्यमफल देता है। जिस भावमें शुभग्रह रहता है उस भावका फल उत्तम और जिसमे पापग्रह रहता है उस भावके फलका ह्रास होता है।

१।४।५।७।९।१०। स्थानोमें शुभग्रहोका रहना शुभ है। जो भाव अपने स्वामी शुक्र, बुध और गुरु द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा अन्य किसी ग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट न हो तो वह शुभफल देता है। जिस भावका भावेश शुभग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा जिस भावमें शुभग्रह स्थित हो या जिस भावको शुभग्रह देखता हो उस भावका शुभफल होता है। जिस भावका स्वामी पापग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट हो या पापग्रह स्थित हो तो उस भावके फलका ह्रास होता है।

भावाधिपति मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्रगत मित्रग्रही और उच्चका हो तो उस भावका फल शुभ होता है। किसी भावके फलविशेषको ज्ञात करनेके लिए यह देखना आवश्यक है कि उस भावका भावेश किस भावमे स्थित है। और किस भावके भावेशका किस भावमें स्थित रहनेसे क्या फल होता है। सूर्य, मगल, शनि और राहु क्रमश अधिक-अधिक पापग्रह है। ये ग्रह अपनी—पापग्रहोकी राशियो पर रहनेसे विशेष अनिष्टकर एव शुभग्रह और मित्रग्रहोकी राशियोमें रहनेसे अल्प-अनिष्टकारक तथा अपनी उच्च राशियोमें स्थित रहनेसे सामान्यत. शुभफलदायक होते है। चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु और गुरु ये क्रमश अधिक-अधिक शुभग्रह माने गये हैं। ये शुभग्रहोकी राशियोमें रहनेसे अधिक शुभ तथा पापग्रहोकी राशियोमें रहनेसे अल्प शुभफलकी सूचना देते हैं। केतु फल-विचार करनेमें प्राय पापग्रह माना गया है। अष्टम और द्वादश भावोमें सभी ग्रह अनिष्ट-कारक होते है।

गुरु षष्ठ भावमें शत्रुनाशक, शनि अष्टम भावमें दीर्घायुकारक एव मगल दशम स्थानमें उत्तम भाग्यका सूचक होता है। राहु, केतु, और अष्टमेश जिस भावमे रहते हैं उस भावको विगाडते है। गुरु अकेला, द्वितीय, पचम और सप्तम भावमें स्थित हो तो धन, पुत्र और स्त्रीके लिए सर्वथा अनिष्टकारक होता है। जिस भावका जो गृह कारक माना जाता है यदि वह अकेला उस भावमे स्थित हो तो उस भावको नष्ट करता है। जातकतत्त्वके परिज्ञानार्थ गणित-मान द्वारा देशान्तर और कालान्तर सस्कार कर सर्वप्रथम लग्न-का साधन करना चाहिए। एक लग्न उतने कालखण्डका नाम है जितनेमे किसी एक राशिका उदय होता है। अहोरात्रमे वारह राशियोका उदय होता है। अतएव एक दिन-रातमें वारह लग्नोकी कल्पना की गई है। लग्न-साधनके हेतु सर्वप्रथम अपने स्थानका उदयमान निकालना आवश्यक है।

सहिता साहित्य

ज्योतिषका तीसरा स्कन्ध सहिता है। सहितामें राष्ट्र और देश विषयक शुभाशुभ फलको अवगत करनेकी विधि लिखी रहती है। इसके विषयका सम्बन्ध राष्ट्र या देशके साथ है, किसी व्यक्तिके साथ नही। सहिता-ग्रन्थ लोककल्याणकी दृष्टिसे विशेष महत्त्वपूर्ण है। इन ग्रन्थोंमें भूशोधन, दिक्शोधन, शल्योद्धार, मेलापक, आयाद्यानयन, गृहोपकरण, इष्टिकाद्वार, गेहारम्भ, गृह-प्रवेश, जलाशय-निर्माण, उल्कापात एव ग्रहोंके उदयास्तका फल आदि अनेक बातोंका वर्णन रहता है। सहितास्कन्धका प्रादुर्भाव वैदिककालमें ही हो चुका था। इस स्कन्धके अनेक प्रमेयोका वर्णन वैदिक साहित्यमें मिलता है। वेदाङ्ग ज्योतिषका प्रमुख वर्ण्य विषय तो सहिता ही है। सहितामें मुहूर्त्त, प्रश्न, स्वप्न, शकुन एव निमित्तोंका वर्णन भी है।

सहिता-ग्रन्थोंमें उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ वाराही-सहिता है। भट्टोत्पलने इस ग्रन्थ पर जो टीका लिखी है, उससे गर्ग-सहिता, पराशर-सहिता, देवल-सहिता, काश्यप-सहिता, भृगु-सहिता, वशिष्ठ-सहिता, वृहस्पति-सहिता, मय-सहिता, ऋषिपुत्र-सहिता आदिके निर्देश प्राप्त होते हैं। इतना ही नही भट्टोत्पलने व्यास, भानुभट्ट, विष्णुगुप्त, विष्णुचन्द्र, यवन, रोम, सिद्धसेन, नन्दी, नग्नजित और भद्रबाहुके अनेक निर्वचन दिये हैं, जिससे सहितास्कन्धकी समृद्धिका परिज्ञान प्राप्त होता है।

सहिता-ग्रन्थोमें प्रमुख रूपसे आये हुए प्रमेय, सूर्य, चन्द्र, राहु, भौम, गुरु, शुक्र, शनि और केतुके गमनफल, अगस्त्य और सप्त ऋषियोंके उदयादि फल, नक्षत्र व्यूह, ग्रहोंके युद्ध और समागम फल, शृगाटक—सूर्य या किसी नक्षत्रके पास एक ही समयमें सब या कुछ ग्रहोंके एकत्र होनेसे निष्पन्न धनुष अथवा शृगाटिक आकृतियोके फल, मार्गशीर्षादि मासोमें पर्जन्योके गर्भधारण और तदनुसार पर्जन्यवृष्टिके फल, चन्द्रमासे रोहिणी, स्वाती, आषाढ और भाद्रपदाके योगसे फल, सद्योवर्षण, कुसुमफल-लक्षण, सन्ध्या दिग्दाह, भूकम्प, उल्का, परिवेष, इन्द्रधनुष, गन्धर्व नगर, प्रतिसूर्य और निर्घात आदिका विवेचन-विश्लेषण पाया जाता है। धान्यादिकोंके मूल्य, इन्द्रध्वज और नीराजनका कथन, खञ्जन पक्षीके दर्शनका फल तथा दिव्य, भौम और अन्तरिक्ष उत्पातोका वर्णन भी समाहित रहता है।

राजोपयोगी पुष्यस्नान, पट्टलक्षण, खड्ग लक्षण, वृक्षायुर्वेद, प्रासादलक्षण, वज्रलेप, वास्तुप्रतिष्ठा, गो, कुक्कुर, कुक्कुट, कूर्म, अज, पद्मराग आदिकी परीक्षा, दीपलक्षण, शकुन विचार आदिका वर्णन भी किया जाता है।

सहिता-साहित्यका विकास ई० सन्की चतुर्थ शताब्दीसे लेकर १४वी शताब्दी तक निरन्तर होता रहा है। इन ग्रन्थोंमें वर्षा और कृषि उत्पत्तिके साथ सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, उद्योग, वाणिज्य, कल-कारखाने, वैज्ञानिक अनुसन्धान आदि प्रमेय भी विवेचित होने लगे और सहिता-स्कन्धमें जीवनका आवश्यक प्रत्येक प्रमेय समविष्ट हो गया। यात्रा, शकुन, स्वप्न, अष्टाङ्गनिमित्त, उत्पात, उल्का, परिवेश, मेघाकृति, सन्ध्या-कृति, प्रभञ्जन, मेघगर्भ, ग्रहाचार, ग्रह-युद्ध, ग्रह-अस्त, ग्रहोदय, ग्रहवक्र प्रभृति विषय भी सहिताके वर्ण्य विषय बन गये। यो तो इस स्कन्धका मूल रूप ज्योतिष-विषयक यन्त्रोंमें पाया जाता है। ज्योतिषके ये यन्त्र तन्त्रप्रणाली द्वारा निर्मित यन्त्रोकी अपेक्षा भिन्न हैं। इस प्रणालीका वास्तविक रहस्य प्राणियोकी कार्य सिद्धिको अवगत करना है। वर्षा विचार और फसल उत्पत्तिके सम्बन्धमें विभिन्न प्रणालियो द्वारा निष्कर्ष प्रस्तुत करना भी यन्त्रोका लक्ष्य है। छठी शताब्दीमें यन्त्र-प्रणाली विकसित होकर सहिताके रूपमें परिणत हो गयी है, यह अध्ययनसे स्पष्ट है। यन्त्रोका वर्ण्य-विषय निम्न प्रकार है—

(१) अकाल—समय पर वर्षाका न होना।

(२) सुकाल—समय पर वर्षाका होना ।
(३) यथोचित मात्रामे धान्य-अनाजका उत्पन्न होना ।
(४) रोग एव महामारियोका सद्भाव एव अभाव ।
(५) शान्ति और वैर-विरोधका सद्भाव एव अभाव ।
(६) अनुकूल रूप
(७) अनुकूल रस
(८) अनुकूल गन्ध
(९) अनुकूल स्पर्श
(१०) अनुकूल शब्द

यहाँ अनुकूल शब्दका तात्पर्य समृद्धि-शान्ति एव परराष्ट्र भयके अभावसे है। सहिता ग्रन्थोमें वर्षाके हेतु देश, वायु और देव ये तीन माने गये है। जिस देशमे जब जलयोनिके जीवोके पुद्गलोका विनाश एव उत्पत्ति हो उस समय वहाँ वर्षा होती है। वर्षा कालमें अनुकूल वायुका रहना भी अच्छी वर्षाके लिए आवश्यक है। वर्षाके समय प्रचण्ड पवनके चलनेसे वर्षा नष्ट हो जाती है। अत 'सर्वतोभद्र' कुलालचक्र, तोरणचक्र आदि, यन्त्रों द्वारा वर्षाकी स्थितिका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। कुम्भचक्रके रचयिताने उक्त परिज्ञानके लिए ग्रहोके ध्रुवाङ्क भी पठित किये है तथा अन्य निमित्तो द्वारा वर्षाकी स्थितिका परिज्ञान प्राप्त किया है।

अक्षय तृतीयाके दिन छाया प्राप्तकर उसकी गणितविधिसे राष्ट्रके शुभाशुभत्व पर विचार किया है। इस प्रकार वाराही-सहिताके समानान्तर ही प्राचीन समयमें ध्रुवाङ्क बोधक कुछ सारणियाँ प्रचलित थी, जिनके आधार पर कृषि-उत्पत्ति, वर्षा-ज्ञान, राष्ट्र-शान्ति, राष्ट्र-उपद्रव आदिका विचार किया जाता था। इन विषयोमें प्रामाणिकता लानेके लिए गणित-क्रियाका अवलम्बन भी ग्रहण किया गया है।

सहितामे प्रतिपाद्य विषयोका निर्देश करते हुए लिखा है कि उल्का, परिवेष, विद्युत्, अभ्र, सन्ध्या, मेघ, वात, प्रवर्षण, गन्धर्व नगर, गर्भ-लक्षण, यात्रा, उत्पात, ग्रहचार, ग्रहयुद्ध, स्वप्न, मुहूर्त्त, तिथि, करण, शकुन, पाक, ज्योतिष, वास्तु, इन्द्र सम्पदा, लक्षण, व्यञ्जन, चिह्न, लग्न, विद्या, औषध, प्रश्न, गहोके बला-बल, विरोध, उनके वर्ण, स्थितियाँ एव अरिष्ट आदिका विचार किया गया है। उल्कासे तात्पर्य आकाशसे पतित होनेवाले अग्निकणोसे है। कुछ मनीषी आकाशसे पतित होनेवाले उल्का-काण्डोको टूटे ताराके नामसे अभिहित करते हैं। सहिता स्कन्धमें बताया है कि उल्का एक उपग्रह है। इसके आनयनका प्रकार यह है कि सूर्याक्रान्त नक्षत्रमे पञ्चम विद्युन्मुख, अष्टम शून्य, चतुर्दश सन्निपात, अष्टादश केतु, एकविंशति उल्का, द्वाविंशति कल्प, त्रयोविंशति वज्र और चतुर्विंशति निघात सज्ञक है। अतएव विद्युन्मुख, शून्य, सन्निपात, केतु, उल्का, कल्प, वज्र और निघात ये आठ उपग्रह माने जाते हैं। इन उपग्रहोके अनुसार राष्ट्रके शुभाशुभ फलका निर्देश किया है। वस्तुत उल्काएँ ऐसा उपगह है, जो सूर्यके चारो ओर अपने-अपने कक्षमे परिभ्रमण करती है। इनमे सूर्य जैसा आलोक रहता है। पवनसे अभिभूत होकर उल्काएँ पृथ्वी पर पतित होती हैं। सहिताशास्त्र उल्कापतनके आकार, प्रकार, दीप्ति, दिशा आदिमे शुभाशुभका विचार करता है।

परिवेष—'परितो विष्यते व्याप्यतेऽनेन' अर्थात् चारो ओरसे व्याप्त होकर मण्डलाकार हो जाना परिवेष है। इसका वास्तविक आशय यह है कि सूर्य या चन्द्रकी किरणे जब वायु द्वारा मण्डलीभूत हो जाती है तब आकाशमे नाना वर्णकी आकृति विशिष्ट मण्डालाकार बन जाती है। इसीको परिवेष कहते हैं। यह

परिवेष रक्त, नील, पीत, कृष्ण, हरित आदि विभिन्न रंगोंका होता है और इन रंगोंके अनुसार ही फल निरूपण किया जाता है।

विद्युत्का अर्थ है बिजली, तड़ित्, चपला, सौदामिनी आदि। विद्युत्के वर्णकी अपेक्षा चार भेद हैं—कपिला, अति लोहिता, सिता और पीता। कपिल वर्णकी विद्युत् होनेसे वायु, लोहित वर्णकी होनेसे आतप, पीत वर्णकी होनेसे वर्षा और सिता वर्णकी होनेसे दुर्भिक्ष होता है।

अभ्र—आकाशके रूप, रंग, आकृति प्रभृतिके द्वारा फलादेशका निर्देश भी आया है। आकाश—तिथि, नक्षत्र और अन्य विशेषमें जिस रूप रंगकी आकृतिका दिखलाई पड़ता है उसीके अनुसार भावी शुभा-शुभ फल होते हैं। सन्ध्याके रूप रंगका वर्णन भी संहिता ग्रन्थोंमें आया है। अर्धअस्तमित और अर्ध उदित सूर्य जिस समय होता है वही प्रकृत सन्ध्याकाल है। साधारणतः दिवा और रात्रिके संधिकालका एक एक दण्ड सन्धि-काल माना गया है। इस सन्ध्याके रूप, रंग, आकृतिका शुभाशुभ फलके साथ सम्बन्ध बतलाया है।

संहिता-ग्रन्थोंमें गर्भका आशय है कि ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमीसे चार दिन तक मेघ वायुसे गर्भ धारण करते हैं। इन दिनों यदि मन्द वायु प्रवाहित हो और आकाशमें तरल मेघ दिखलाई पड़ें तो शुभ फल होता है। मतान्तरसे कार्तिक मासके शुक्ल पक्षके उपरान्त गर्भ दिवस माना जाता है। गर्ग ऋषिका मत है कि मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाके उपरान्त जिस दिन चन्द्रमा और पूर्वाषाढ़ाका योग होता है उसी दिन गर्भ लक्षण समझना चाहिए। इन दिनों होने वाली वर्षा, चलने वाला पवन एवं सूर्यका तेज शुभाशुभ फलका द्योतक है

यात्रा-प्रकरणमें मुख्यरूपसे राजाकी विजय-यात्राका निरूपण किया गया है। यात्राके समयमें होने वाले शकुन-अपशकुनों द्वारा शुभाशुभ फल प्रतिपादित है। दिग्विजयके हेतु यात्रा करने के लिए तिथि, नक्षत्र वार, योग और करणका भी विधान है।

स्वभावसे विपरीत घटित होने वाली घटनाओंको उत्पात कहा है। उत्पात तीन प्रकारके हैं—दिव्य, अन्तरिक्ष और भौम। नक्षत्रोंका विकार, उल्का निर्घात, पवन आदि दिव्य उत्पातके अन्तर्गत हैं। गन्धर्व-नगर, इन्द्र-धनुष आदि अन्तरिक्ष उत्पात हैं। चर वस्तुओंका स्थिररूपमें दिखलाई पड़ना और स्थिर वस्तुओंका चररूपमें दर्शन होना भौम उत्पात है। उत्पातोंका विस्तारपूर्वक वर्णन संहिताग्रंथोंमें आया है।

ग्रहाचारमें सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु इन ग्रहोंके गमन द्वारा शुभाशुभ फल अवगत करनेकी प्रक्रिया वर्णित है। समस्त नक्षत्रों और राशियोंमें ग्रहोंकी उदय अस्त, वक्री, मार्गी आदि अवस्थाएँ वर्णित कर राष्ट्रव्यापी फलोंका कथन किया गया है।

ग्रह-युद्धके चार भेद बतलाये हैं—भेद, उल्लेख, अंश-मर्दन और अपसव्य। भेद युद्धमें वर्षाका नाश, नेताओंमें संघर्ष और राष्ट्रमें अशान्ति होती है। उल्लेख युद्धमें शस्त्र-भय, मंत्री-विरोध और दुर्भिक्ष होता है। अंश-मर्दन युद्धमें आन्तरिक कलह, संक्रामक रोग, अन्न-कष्ट एवं परराष्ट्रभय रहता है। अपसव्य युद्धमें शासकोंमें संघर्ष, मतभेद, महँगाई, अन्न-वस्त्र कष्ट एवं रसादि पदार्थोंकी उत्पत्तिका अभाव होता है। इस सन्दर्भमें प्रत्येक ग्रहके आक्रन्द और यायी भेद बतलाकर पूर्वाह्न, अपराह्न, मध्याह्नके आधार पर ग्रह-युद्धोंका फलादेश वर्णित है। इसी प्रकार संयोगी ग्रहों द्वारा फल-निर्देशपर प्रकाश डाला गया है। जब बुधके आगे शुक्र रहता है तो महावृष्टि और शुक्रके आगे बुधके रहनेसे अल्प वृष्टि होती है। बुध, शुक्रके मध्यमें सूर्य या अन्य ग्रह आ जाये तो वर्षा नहीं होती। बुध, बृहस्पति और शुक्र ये तीनों ग्रह एक ही राशि पर स्थित हों और इन पर गुरुकी दृष्टि पड़ती हो तो अच्छी वर्षा होती है और सुभिक्ष होता है। सूर्य, शुक्र और बुधके एक

राशि पर रहनेसे अल्पवृष्टि, सूर्य, शुक्र और बृहस्पतिके एक राशि पर रहनेसे अतिवृष्टि, शनि, शुक्र और मगलके एक राशि पर रहनेसे साधारण वृष्टि एव शनि, राहु और मगलके एक राशि पर रहनेसे अनावृष्टि अथवा ओलोकी वृष्टि होती है। शुक्र, मगल, शनि और बृहस्पति ये चारो ग्रह एक राशि पर स्थित हो तो वर्षाकी कमी रहती है और अन्नका सङ्कट रहता है। इस ग्रह स्थितिसे कई स्थानोमे भूकम्प आता है तथा राजनीतिक स्थिति बिगडती है। इस प्रकार ग्रह युद्ध और ग्रह स्थितिके फलका विस्तारपूर्वक विवेचन सहिता-ग्रन्थोमे किया गया है।

मुहूर्तका विचार भी सहिताके अन्तर्गत है। व्रत, पूजा, उपवास, अनुष्ठान, विवाह आदि सस्कार सभी कार्योंके लिए शुभ मुहूर्तोंका विवेचन किया गया है। शुभ मुहूर्तके अभावमें किसी भी मागलिक कृत्यका सम्पादन करना उचित नही, क्योकि समयका प्रभाव प्रत्येक जड एव चेतन पदार्थ पर पड़ता है। अतएव गर्भाधानादि षोडश सस्कार, प्रतिष्ठान, गृहारम्भ, गृह-प्रवेश, यात्रा प्रभृति, व्यावहारिक कार्योंके लिए मुहूर्त्तोंका विचार करना आवश्यक बताया है। प्राचीन कालमे मुहूर्त-विचार सहिता-ग्रन्थोका एक अग था। परन्तु उत्तर कालमे सहितोक्त अन्य विषयोका लोप और मुहूर्तका प्राधान्य हो गया, जिससे मुहूर्त-विषयक ग्रथोको लोग मुहूर्त-ग्रथ कहने लगे। मुहूर्त-ग्रथोके प्रमुख विषय निम्न लिखित है—

(१) त्याज्य प्रकरण—शुभ कार्योंमे वर्जित तिथि, नक्षत्रादि।

(२) तिथि, वार, नक्षत्र, योग और सक्रान्तिका शुभाशुभत्व।

(३) सस्कारोके मुहूर्त।

(४) विवाहमे वधू-वरकी कुण्डलियोके मिलान।

(५) वास्तु प्रकरण—गृह-निर्माणार्थ भूमि शुद्धि, भूमिका शुभाशुभत्व, ग्रहनिर्माणमे सस्थान-सरचना मुहूर्त आदि।

(६) यात्रा-प्रकरण—यात्राके हेतु नक्षत्र, तिथि आदिके विचारके साथ चन्द्रमाका शुभाशुभत्व।

(७) नक्षत्र-प्रकरण—कृषि आरम्भ करनेके हेतु नक्षत्र-शुद्धि, बुआई, कटाई, दँवाई आदिके नक्षत्र हल चलानेके लिए शुभ नक्षत्र तथा राज्याभिषेक आदिके मुहूर्त्त।

नक्षत्रोके नाम और उनके देवता, अश्विन्यादि नक्षत्रोकी अश्वादि कल्पित योनियाँ और स्थिर, चरादि सज्ञाएँ राशियोकी मेषादि सज्ञाओसे बोधित होने वाले मेषादि प्राणी और राशियोके भौमादि स्वामी, तिथियोंकी नन्दादि सज्ञाएँ और तिथियोके स्वामी इत्यादि बातोके आधारपर भिन्न-भिन्न कार्योंमें नक्षत्रोका सुभाशुभत्व माना गया है। यथा—चर नक्षत्रोमें स्थिर कार्य करना और स्थिर नक्षत्रोमें चर कार्य करना अशुभ है। वधू-वरके नक्षत्र रोहिणी और उत्तराषाढा हो तो उनकी सर्प और नकुल योनि होनेसे परस्पर शत्रुत्व रहता है।

मुहूर्त्त-विषयक साहित्य

मुहूर्त्त-विषयक साहित्यका विकास वाराही सहिताके कालसे होने लगता है। शक सवत् ५६० मे लल्लने रत्नकोषकी रचना की है, जिसके आधारपर श्रीपतिने शक सवत् ९६१ में रत्नमाला नामक ग्रथ लिखा है। इस ग्रन्थकी शक सवत् ११८५ में माधवने एक टीका लिखी है, जिस टीकामें ब्रह्मशम्भु, योगेश्वर, श्रीधर आदि ग्रन्थकारोंके नामोके अतिरिक्त 'भास्कर,' 'व्यवहार,' 'भीम पराक्रम,' दैवज्ञवल्लभ,' 'आचारसार,' 'त्रिक्रिमशत,' 'केशव व्यवहार', 'तिलक व्यवहार', 'योग मात्रा,' विद्याधरीविलास,' 'विवाह पटल', 'विश्वकर्मशास्त्र' आदि अनेक ग्रन्थोंके उल्लेख प्रस्तुत किये है, जिनसे मुहूर्त्त विषयक शास्त्रकी समृद्धिका अनुमान लगाया जा सकता है। स्वतन्त्ररूपसे भोजके 'राजमार्त्तण्ड', विद्वज्जनवल्लभ', कालिदास चतुर्थके 'ज्योतिर्वि-

दाभरण', केशवके 'विवाहवृन्दावन', शारङ्गधरके 'विवाह पटल', नारायणके 'मुहूर्त मार्त्तण्ड', रामभटके 'मुहूर्त चिन्तामणि', विट्ठलदीक्षितके 'मुहूर्त कल्पद्रुम' एव रघुनाथके' मुहूर्तमाला' आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

विपयकी दृष्टिसे सहिता स्कन्धका विस्तार विक्रम सवत्की दशवी शतीके आसपास विशेष रूपसे हुआ है। शकुन और निमित्त भी इस शास्त्रके अग बन गये। नरपति ज्योतिर्विदने शक सवत् १०९७ मे 'नर-पतिजयचर्या' नामक एक बृहद् ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थमे स्वरोदय, सारोद्वार तथा विभिन्न प्रकारके शकुनोका कथन आया है।

वसन्तराजने 'वसन्तराजशाकुन' नामक एक स्वतन्त्र ग्रन्थ रचा है। इसी प्रकार वल्लालसेनके अद्भुत-सागरमें शकुन और निमित्त विपयक प्रभूत सामग्री आयी है।

ज्योतिष विद्याका विकास क्रमश हुआ है और अग विद्या भी इस शास्त्रमें समाविष्ट हो गयी। शारी-रिक लक्षणोंको ज्ञातकर मानसिक और आध्यात्मिक विकासका परिज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। जिस प्रकार मनोविज्ञानका सम्बन्ध चित्तवृत्तियो और सवेदनाओंके विकाससे है, सृष्टिविज्ञानका सम्बन्ध मन, बुद्धि और शरीरके निर्माणक तत्त्वोंके विश्लेपण और विवेचनसे है, उसी प्रकार अगविद्याका सम्बन्ध मनुष्यके आन्तरिक और बाह्य व्यक्तित्वके अध्ययनसे है। यो तो सभी प्राणियोके शरीरका निर्माण पौद्गलिक परमाणुओंसे होता है और सभीकी आकृति एक समान दिखलायी पडती है, परन्तु इस एकताके बीच भी विविधता और विपमताका समवाय रहता है। अत जो विभिन्न जन्म-जन्मान्तरोंके सस्कारोंमे अर्जित इस विविधताको अव-गत कर लेता है, वही अगविद्याका ज्ञाताभावी शुभाशुभफलोको निरूपण करनेमे समर्थ होता है। वस्तुत वराहमिहिरके पूर्वसे ही अगविद्याका विकास आरम्भ हो गया था और अठारहवी शती तक इस विद्याका पूर्ण विकास होता गया। इस प्रकार ज्योतिपकी विभिन्न शाखाओंका विकास उत्तरोत्तर होता गया और वर्षा-विज्ञान तथा कृपि सम्बन्धी ज्ञान भी सहिताशास्त्रके अन्तर्गत सकलित किया गया है।

जैनाचार्योंका ज्योतिपके विकासमे योगदान

ज्योतिपकी प्रत्येक शाखाके विकासमें जैनाचार्योने अपूर्व योगदान दिया है। जैन परम्परा बतलाती है कि आज्से लाखो वर्प पूर्व कर्मभूमिके प्रारम्भमे प्रथम कुलकर प्रतिश्रुतिके समयमें जब मनुष्योको सर्वप्रथम सूर्य और चन्द्रमा दिखलायी पडे तो वे सशकित हुए और अपनी उत्कठा शान्त करनेके लिए उक्त प्रतिश्रुति नामक कुलकर-मनुके पास गये। कुलकरने जिज्ञासा शान्त करते हुए सूर्य, चन्द्रादि ग्रहोकी शिक्षा दी और तभीसे ज्योतिपका विकास आरम्भ हुआ।

आगमिक दृष्टिसे ज्योतिप शास्त्रका विकास विद्यानुवादाग और परिकर्मोसे माना जाता है। समस्त गणित सिद्धान्त ज्योतिप परिकर्मोमें अकित था और अष्टाग निमित्तका विवेचन विद्यानुवादागमें समाहित था। पटखण्डागम धवलाटीकामें रौद्र, श्वेत, मैत्र, सारभट, दैत्य वैरोचन, वैश्वदेव, आभिजित, रोहण, बल, विजय, नैर्ऋत्य, वरुण, अर्यमान् और भाग्य ये पन्द्रह मुहूर्त आये हैं। मुहूर्तोंकी नामावली वीरसेन स्वामीकी अपनी नही है, किन्तु पूर्व परम्परासे प्राप्त पद्योको उन्होंने उद्धृत किया है। यह मुहूर्त्त चर्चा पर्याप्त प्राचीन है, इसका विचार ई० पूर्व प्रथम शतीके साहित्यमे भी उपलब्ध है।

प्रश्नव्याकरणमें नक्षत्रोकी मीमासा की गयी है। समस्त नक्षत्र कुल, उपकुल और कुलोपकुलो में विभक्त उपलब्ध होते हैं। यह वर्णन-प्रणाली ज्योतिपके विकासपर यथेष्ट प्रकाश डालती है। यत नक्षत्रोंके नामोके साथ उनके स्वभाव, गुण और आकृति आदिका भी बोध होता है। यहाँ धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, विशाख, मूल एव उत्तरापाढा ये नक्षत्र कुलसंज्ञक,

श्रवण, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, भरणी, रोहिणी, पुनर्वसु, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी,-हस्त, ज्येष्ठा एव पूर्वा-पाढा ये नक्षत्र उपलकुल सज्ञक एव अभिजित्, शतभिषा, आर्द्रा और अनुराधा कुलोपकुल सज्ञक हैं। इस वर्णनका मुख्य प्रयोजन मासफल निरूपण है।

समवायाङ्गमें नक्षत्रोकी ताराएँ, उनके दिशा द्वार आदिका कथन आया है। वताया है—"कत्ति-आइया सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिआ। महाइया सत्तणक्खत्ता दाहिणदारिआ। अणुएहा-इया सत्तणक्खत्ता अवरदारिआ। धणिट्ठाइया सत्तणक्खत्ता उत्तरदारिआ" अर्थात् कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा ये सात नक्षत्र पूर्वद्वार, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी हस्त, चित्रा, स्वाति और विशाखा ये सात नक्षत्र दक्षिणद्वार, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित् और श्रवण ये सात नक्षत्र पश्चिमद्वार एव धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, अश्विनी और भरणी ये सात नक्षत्र उत्तरद्वारवाले हैं। समवायाग १/५, २/४, ३/२, ४/३, ५/९ में आयी हुई ज्योतिष चर्चाएँ भी महत्त्वपूर्ण हैं।

ठाणागमे चन्द्रमाके साथ स्पर्श योग करनेवाले नक्षत्रोका कथन आया है। कृत्तिका, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा ये आठ नक्षत्र चन्द्रमाके साथ स्पर्श योग करते हैं। इस योग-का फल विभिन्न तिथियोंके अनुसार विभिन्न प्रकारका घटित होता है। इसी प्रकार नक्षत्रोकी विभिन्न सज्ञाओ द्वारा भी राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के फलोका परिज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। ठाणागमें अगारक, काल, लोहिताक्ष, शनैश्चर, कनक, कनक-कनक कनक वितान, कनक मन्तानक, सोमहित, आश्वासन, कज्जीवग, कर्वट, अयस्कार, दुंदुयन, शख, शखवर्ण, इन्द्राग्नि, धूमकेतु, हरि, पिंगल, वुध, शुक्र, वृहस्पति, राहु, अगस्त, भानवक, काश, स्पर्श, धुर, प्रमुख, विकट, विसन्धि, विमल, पीपल, जटिलक, अरुण, अगिल, काल, महाकाल स्वस्तिक, सौवास्तिक, वर्द्धमान आदि ८८ ग्रहोके नाम वताये गये हैं। समवायागमें भी ८८ ग्रहोके नाम प्राप्त होते हैं। प्रश्नव्याकरणमें सूर्य, चन्द्र, मगल, वुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु या धूमकेतु इन नौ ग्रहोके सम्बन्धमे प्रकाश डाला गया है।

समवायागमें ग्रहणके कारणोका भी निर्देश मिलता है। इसमे राहुके दो भेद वताये गये है—नित्य-राहु और पर्वराहु। 'नित्यराहुको कृष्णपक्ष और शुक्लपक्षका कारण तथा पर्वराहुको चन्द्रग्रहणका कारण माना गया है। सूर्यके ध्वजदण्डसे केतुका ध्वजदण्ड उन्नत होनेके कारण यही सूर्यग्रहणका कारण वनता है। दिनवृद्धि और दिनह्रासके सम्बन्धमें भी समवायागमें विचार उपलब्ध होता है। सूर्य जव दक्षिणायनमें निषधपर्वतके आभ्यान्तर मण्डलसे निकलता हुआ ४४वें मण्डल—गमनमार्गमें आता है, उस समय ६१/६२ मुहूर्त दिन कम होकर रात वढती है—उस समय २४ घटी का दिन और ३६ घटीकी रात होती है। उत्तर दिशामे ४४ वें मण्डल—गमन मार्ग पर जव सूर्य आता है तव ६१/६२ मुहूर्त्त दिन वढने लगता है और इस प्रकार जव सूर्य ९३वे मण्डल पर पहुँचता है तो दिन परमाधिक ३६ घटीका होता है। यह स्थिति आषाढी पूर्णिमाको आती है।

इस प्रकार आगमिक साहित्यमें ज्योतिष सम्बन्धी सिद्धान्तोका कथन प्राप्त होता है। ऋतु, अयन, दिनमान, दिनवृद्धि, दिनह्रास, नक्षत्रमान, नक्षत्रोकी विविध सज्ञाएँ, ग्रहोंके मण्डल, विमानोंके स्वरूप, विस्तार ग्रहोंकी आकृतियाँ आदि सिद्धान्त समाविष्ट हैं।

गणित-ज्योतिषकी चर्चाओंके समान ही फलित-ज्योतिषकी चर्चाएँ भी प्राप्त होती हैं। ऐतिहासिक विद्वान् गणित-ज्योतिषसे भी फलितको भी प्राचीन मानते हैं। अत अपने कार्योकी सिद्धिके लिए समयशुद्धिकी आवश्यकता आदिकालसे ही मानवको रही होगी। यही कारण है कि आगम ग्रन्थोंमें फलित-ज्योतिषके प्रमुख सिद्धान्त तिथि, नक्षत्र, योग, करण, वार आदिका शुभाशुभत्व उपलब्ध है।

जैन ज्योतिष-साहित्यका सांगोपांग परिचय प्राप्त करनेके लिए इसे निम्नांकित चार कालखण्डोंमें विभाजित किया जा सकता है—

१ आदिकाल—ई० पू० ३००–६०० ई० तक। २ पूर्व मध्यकाल—६०१ई०–१००० ई० तक। ३ उत्तरमध्यकाल—१००१ ई०–१७८० ई० सन् तक। ४ अर्वाचीनकाल—१७०१ ई०—१९६० ई० तक।

आदिकालकी जैन ज्योतिष रचनाएँ

आदिकालकी रचनाओंमें सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, अंगविज्जा, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, त्रिलोकप्रज्ञप्ति, एवं ज्योतिष्करण्डक आदि उल्लेखनीय हैं।

सूर्यप्रज्ञप्ति प्राकृतभाषामें लिखित एक प्राचीन रचना है। इसपर मलयगिरिकी संस्कृत टीका है। इस रचनामें उपलब्ध होनेवाले ज्योतिषसिद्धान्त ई० पू० ३०० के लगभगके हैं। इसमें पञ्चवर्षात्मक युग मानकर तिथि, नक्षत्रादिका साधन किया गया है। युगारम्भ भगवान् महावीरकी शासनतिथि श्रावण कृष्ण प्रतिपदा अभिजित् नक्षत्रसे माना गया है। वेदांग ज्योतिष के समान पञ्चांगकी व्यवस्था भी प्रतिपादित है।

चन्द्रप्रज्ञप्तिमें सूर्यके गमन मार्ग, आयु, परिवार आदिके कथनके साथ पञ्चवर्षात्मक अयनों, नक्षत्र, तिथि और मास आदिकी आनयन प्रक्रिया भी अंकित है। यह ग्रन्थ गणित-ज्योतिषके सिद्धान्तोंकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें श्रेणी-व्यवहार गणितके अनेक उपयोगी सिद्धान्त आये हैं। सर्वधन, आदिधन, मध्यधन और चयानयनकी विधि भी निरूपित है। पाटीगणित और रेखागणितके नियमोंके साथ वृत्त, दीर्घ-वृत्त और वर्त्तुल क्षेत्रोंका भी कथन आया है। ग्रहोंकी मध्यमा और स्पष्ट गतियाँ भी अंकित हैं। मध्यमा गति-से ग्रहका जो स्थान मालूम होता है, वह वास्तविक ग्रहस्थानसे दूर रहता है। अतः इस ग्रन्थमें वास्तविक ग्रहस्थानका आनयन भी किया गया है। इस ग्रन्थका विषय साधारणतः सूर्यप्रज्ञप्तिके समान है। विषयकी अपेक्षा यह सूर्यप्रज्ञप्तिसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसमें सूर्यकी प्रतिदिनकी योजनात्मिका गति निकाली गई है तथा उत्तरायण और दक्षिणायनकी वीथियोंका अलग-अलग विस्तार निकालकर सूर्य और चन्द्रकी गति निश्चित की गई है। इसके चतुर्थ प्राभृतमें चन्द्र और सूर्यका संस्थान तथा तापक्षेत्रका संस्थान विस्तारसे बताया गया है। इसमें समचतुस्र, विषमचतुस्र आदि विभिन्न आकारोंका खंडन कर सोलह वीथियोंमें चन्द्रमाको समचतुस्र गोल आकार बताया गया है। इसका कारण यह है कि सुषमा-सुषमाकालके आदिमें श्रावणकृष्ण प्रतिपदाके दिन जम्बूद्वीपका प्रथम सूर्य पूर्व दक्षिण-अग्निकोणमें और द्वितीय सूर्य पश्चिमोत्तर वायव्यकोणमें चला। इसी प्रकार प्रथम चन्द्रमा पूर्वोत्तर-ईशान कोणमें और द्वितीय चन्द्रमा पश्चिम दक्षिण नैर्ऋत्य कोणमें चला। अतएव युगादिमें सूर्य और चन्द्रमाका समचतुस्र संस्थान था, पर उदय होते समय ये ग्रह वर्तुलाकार निकले, अतः चन्द्रमा और सूर्यका आकार अर्धकपीठ—अर्ध समचतुस्र गोल बताया गया है।

चन्द्रप्रज्ञप्तिमें छाया साधन किया गया है और छायाप्रमाणपरसे दिनमान भी निकाला गया है। ज्योतिषकी दृष्टिसे यह विषय बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यहाँ प्रश्न किया गया है कि जब अर्धपुरुष प्रमाण छाया हो, उस समय कितना दिन व्यतीत हुआ और कितना शेष रहा। इसका उत्तर देते हुए कहा है कि ऐसी छायाकी स्थितिमें दिनमानका तृतीयांश व्यतीत हुआ समझना चाहिए। यहाँ विशेषता इतनी है कि यदि दोपहरके पहले अर्धपुरुष प्रमाण छाया हो तो दिनका तृतीय भाग गत और दो तिहाई भाग अवशेष तथा दोप-हरके बाद अर्धपुरुष प्रमाण छाया हो तो दो तिहाई भाग प्रमाण दिन गत और एक भाग प्रमाण दिन शेष समझना चाहिए। पुरुष प्रमाण छाया होने पर दिनका चौथाई भाग गत और तीन चौथाई भाग शेष, डेढ़

पुरुष प्रमाण छाया होने पर दिनका पचम भाग गत और चार पंचम भाग (⅘ भाग) अवशेप दिन समझना चाहिए।[1]

इस ग्रन्यमें गोल, त्रिकोण, लम्बी, चौकोर वस्तुओकी छाया परसे दिनमानका आनयन किया गया है। चन्द्रमाके साथ तीस मुहूर्त तक योग करनेवाले श्रवण, घनिष्ठा, पूर्वा—भाद्रपद, रेवती, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल और पूर्वापाढ ये पन्द्रह नक्षत्र वताए गए है। पैंतालीस मुहूर्त्त तक चन्द्रमाके साथ योग करनेवाले उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, पुनर्वसु, मुहूर्ततक चन्द्रमाके साथ योग करनेवाले शतभिपा, भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, स्वाति और ज्येष्ठ ये छ नक्षत्र वताये गये हैं।

चन्द्रप्रज्ञप्तिके १९वे प्राभृतमे चन्द्रमाको स्वत प्रकाशमान वतलाया है तथा इसके घटने-बढनेका कारण भी स्पष्ट किया गया है। १८ वे प्राभृतमें पृथ्वीतलसे सूर्यादि ग्रहोकी ऊँचाई बतलाई गयी है।

ज्योतिष्करण्डक एक महत्वपूर्ण ग्रथ है। इसमें अयनादिके कथनके साथ नक्षत्र-लग्नका भी निरूपण किया गया है। यह लग्न-निरूपणकी प्रणाली सर्वथा नवीन और मौलिक है—

लग्ग च दक्खिणाय विसुवे सुवि अस्स उत्तर अयणे।
लग्ग साई विसुवेसु पचसु वि दक्खिणे अयणे॥

अर्थात् अश्विनी और स्वाति ये नक्षत्र विपुवके लग्न वताये गये हैं। जिस प्रकार नक्षत्रोकी विशिष्ट अवस्थाको राशि कहा जाता है, उसी प्रकार यहाँ नक्षत्रोकी विशिष्ट अवस्थाको लग्न वताया गया है।

इस ग्रथमें कृत्तिकादि, घनिष्ठादि, भरण्यादि, श्रवणादि, एव अभिजित् आदि नक्षत्र-गणनाओकी विवेचना की गयी है। ज्योतिष्करण्डका रचनाकाल ई० पू० ३०० के लगभग है। विषय और भाषा दोनो ही दृष्टियोसे यह ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।

अगविज्जाका रचनाकाल कुपाण-गुप्त युगका सन्धिकाल माना गया है। शरीरके लक्षणोसे अथवा अन्य प्रकारके निमित्त या चिन्होसे किसीके लिये शुभाशुभ फलका कथन करना ही इस ग्रथका वर्ण्य विषय है। इस ग्रथमें कुल साठ अध्याय हैं। लम्बे अध्यायोका पटलोमें विभाजन किया गया है। आरम्भमें अध्यायोमे अगविद्याकी उत्पत्ति, स्वरूप, शिष्यके गुण-दोप, अगविद्याका माहात्म्य प्रभृति विषयोका विवेचन किया है। गृहप्रवेश, यात्रारम्भ, वस्त्र, यान, धान्य, चर्या, चेष्टा आदिके द्वारा शुभाशुभ फलका कथन किया गया है। प्रवासी घर कव और कैसी स्थितिमें लौटकर आयेगा, इसका विचार ४५ वे अध्यायमें किया गया है। ५२वें अध्यायमें इन्द्रधनुप, विद्युत, चन्द्रग्रह, नक्षत्र, तारा, उदय, अस्त, अमावस्या, पूर्णमासी, मडल, वीथी, युग, सवत्सर, ऋतु, मास, पक्ष, क्षण, लव, मुहूर्त्त, उल्कापात, दिशादाह आदि निमित्तोसे फलकथन किया गया है। सत्ताईश नक्षत्र और उनसे होनेवाले शुभाशुभ फलका भी विस्तारसे उल्लेख है। सक्षेपमें इस ग्रथमे अष्टाग निमित्तका विस्तारपूर्वक विभिन्न दृष्टियोसे कथन किया गया है।[2]

लोकविजय-यन्त्र भी एक प्राचीन ज्योतिपकी रचना है। यह प्राकृतभापामें ३० गाथाओमे लिखा गया है। इसमें प्रधानरूपसे सुभिक्ष, दुर्भिक्षकी जानकारी वतलायी गयी है। आरम्भमें मगलाचरण करते हुए कहा है—

पणमिय पयारविंदे तिलोयनाहस्स जगपईवस्स।
वुच्छामि लोयविजयं जत जतूण सिद्धिकर॥

---

१ चन्द्रप्रज्ञप्ति—९। ५

२, अगविज्जा—१० पृ० २०६-२०९।

२२ लोकविजय यन्त्र

जगत्पति नाभिराजके पुत्र त्रिलोकनाथ ऋषभदेवके चरणकमलोमें प्रणाम करके जीवोकी सिद्धिके लिये लोकविजय-यन्त्रका वर्णन करता हूँ ।

इसमें १४५ से आरम्भकर १५३ तक ध्रुवाक वतलाये गये हैं । इन ध्रुवाकोंपरसे ही अपने स्थानके शुभाशुभफलका प्रतिपादन किया गया है । कृपिशास्त्रकी दृष्टिसे भी यह ग्रथ महत्वपूर्ण है ।

कालकाचार्य—यह भी निमित्त और ज्योतिपके प्रकाण्ड विद्वान् थे । इन्होने अपनी प्रतिभासे शककुल-के साहिको स्ववश किया था तथा गर्दभिल्लको दण्ड दिया था । जैन परम्परामें ज्योतिपके प्रवर्तकोंमें इनका मुख्य स्थान है, यदि यह आचार्य निमित्त और सहिताका निर्माण न करते, तो उत्तरवर्त्ती जैन लेखक ज्योतिप-को पापश्रुत समझकर अछूता ही छोड देते ।

वराहमिहिरने वृहज्जातकमें कालकसहिताका उल्लेख किया है[1] । निशीथचूर्णि, आवश्यकचूर्णि आदि ग्रन्थोंसे इनके ज्योतिपज्ञानका पता चलता है ।

उमास्वातिने अपने तत्त्वार्थसूत्रमें जैन ज्योतिपके मूल सिद्धान्तोका निरूपण किया है । इनके मतसे ग्रहोका केन्द्र सुमेरु पर्वत है, ग्रह नित्य गतिशील होते हुए मेरुकी प्रदिक्षणा करते रहते हैं । चौथे अध्यायमें गृह, नक्षत्र प्रकीर्णक और तारोका भी वर्णन किया है । सक्षेप रूपमें आई हुई इनकी चर्चाएँ ज्योतिपकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण है ।

इस प्रकार आदिकालमें अनेक ज्योतिप ग्रथोंकी रचनाएँ हुई । स्वतत्र ग्रथोंके अतिरिक्त अन्य विपय—धार्मिक ग्रन्थो, आगम ग्रन्थोकी चूर्णियो, वृत्तियों और भाष्योंमें भी ज्योतिपकी महत्वपूर्ण वाते अकित की गयी । तिलोयपण्णत्ति में ज्योतिर्मडलका महत्वपूर्ण , वर्णन आया है । ज्योतिर्लोकाधिकारमें अयन, गमनमार्ग, नक्षत्र एव दिनमान आदिका विस्तारपूर्वक विवेचन किया है ।

पूर्वमध्यकाल

पूर्वमध्यकालमें गणित और फलित दोनो ही प्रकारके ज्योतिपका यथेष्ट विकास हुआ । इसमें ऋपि-पुत्र, महावीराचार्य, चन्द्रसेन, श्रीधर प्रभृति ज्योतिर्विदोने अपनी अमूल्य रचनाओंके द्वारा इस साहित्यकी श्रीवृद्धि की ।

भद्रवाहुके नामपर अर्हच्चूडामणिसार नामक एक प्रश्नशास्त्र सम्वन्धी ७४ प्राकृत गाथाओंमें रचना उपलब्ध है । यह रचना चतुर्दश पूर्वधर भद्रवाहुकी है, इसमें तो सन्देह है । हमें ऐसा लगता है कि यह भद्र-वाहु वराहमिहिरके भाई थे, अत सभव है कि इस कृतिके लेखक यह द्वितीय भद्रवाहु ही होगे । आरम्भमें वर्णोंकी सज्ञाएँ वतलायी गयी हैं । अ इ ए ओ, ये चार स्वर तथा क च ट त प य श ग ज ड द व ल स ये चौदह व्यजन आलिगित सज्ञक हैं । इनका सुभग उत्तर और सकट नाम भी है । आ ई ऐ औ ये चार स्वर तथा ख छ ठ थ फ र ष घ झ ढ, ध भ व ह ये चौदह व्यजन अभिधूमित सज्ञक हैं । इनका मध्य, उत्तराधर और विकट नाम भी है । उ ऊ अ अ ये चार स्वर तथा ङ ञ ण न म ये व्यजन दग्ध सज्ञक हैं । इनका विकट, सकट, अधर और अशुभ नाम भी है । प्रश्नमें सभी आलिगित अक्षर हो, तो प्रश्नकर्त्ताकी कार्य सिद्धि होती है । प्रश्नाक्षरोके दग्ध होनेपर कार्य सिद्धिका विनाश होता है । उत्तर सज्ञक स्वर उत्तर सज्ञक व्यजनो में सयुक्त होनेसे उत्तरतम और उत्तराधर तथा अधर स्वरोसे सयुक्त होनेपर उत्तर और अधर सज्ञक होते हैं। अधर सज्ञक स्वर दग्ध सज्ञक व्यजनोमें सयुक्त होनेपर उत्तराधरतर सज्ञक होते हैं । दग्ध सज्ञक स्वर दग्ध-

---

१. भारतीय ज्योतिप—११ पृ० १०७ ।

संज्ञक व्यञ्जनोमे मिलनेसे दग्धतम संज्ञक होते है।[1] इन संज्ञाओके पश्चात् फलाफल निकाला गया है। जय-पराजय, लाभालाभ, जीवन-मरण, आदिका विवेचन भी किया गया है। इस छोटी-सी कृतिमें बहुत कुछ निबद्ध कर दिया गया है। इस कृतिकी भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है। इसमे मध्यवर्ती क, ग और त के स्थान पर 'य' श्रुति पायी जाती है।

करलक्खण

यह सामुद्रिक शास्त्रका छोटा-सा ग्रथ है। इसमें रेखाओका महत्त्व स्त्री और पुरुषके हाथोके विभिन्न लक्षण अगुलियोके बीचके अन्तराल पर्वोके फल, मणिबन्ध, विद्यारेखा, कुल, धन ऊर्ध्व, सम्मान, समृद्धि. आयु धर्म, व्रतानुष्ठान आदि रेखाओका वर्णन किया है। भाई-बहन, सन्तान आदिकी द्योतक रेखाओके वर्णनके उपरान्त अगुष्ठके अधोभागमे रहनेवाले 'यव'का विभिन्न परिस्थितियोमें प्रतिपादन किया गया है। यवका यह प्रकरण नौ गाथाओमें पाया जाता है। इस ग्रथका उद्देश्य ग्रथकारने स्वय ही स्पष्ट कर दिया है।

इय करलक्खणमेय समासओ दसिअ जइजणस्स
पुव्वायरिगाहि णर परिक्खऊणं वय दिज्जा ॥६१॥

यतियोके लिये सक्षेपमे करलक्षणोका वर्णन किया गया है। इन लक्षणोके द्वारा व्रत ग्रहण करने वालेकी परीक्षा कर लेनी चाहिए। जब शिष्यमे पूरी योग्यता हो, व्रतोका निर्वाह कर सके तथा व्रती जीवन-को प्रभावक बना सके, तभी उसे व्रतोकी दीक्षा देनी चाहिए। अत स्पष्ट है कि इस ग्रथका उद्देश्य जन-कल्याणके साथ नवागत शिष्यकी परीक्षा करना ही है। इसका प्रचार भी साधुओमें रहा होगा।

ऋषिपुत्र और उनकी रचनाएँ

ऋषिपुत्रका नाम भी प्रथम श्रेणीके ज्योतिर्विदोमे परिगणित है इन्हे गर्गका पुत्र कहा गया है। गर्ग मुनि ज्योतिषके धुरन्धर विद्वान् थे, इसमें कोई सन्देह नही। इनके सम्बन्धमें लिखा मिलता है।

जैन आसीज्जगद्वन्द्यो गर्गनामा महामुनि ।
तेन स्वय निर्णीत य सत्पाशास्त्र केवली ॥
एतज्ज्ञानं महाज्ञान जैनर्षिभिरुदाहृतम् ।
प्रकाश्य शुद्धशीलाय कुलीनाय महात्मना ।

सभवत इन्ही गर्गके वशमे ऋषिपुत्र हुए होगे। इनका नाम ही इस बातका साक्षी है कि यह किसी ऋषिके वशज थे अथवा किसी मुनिके आशीर्वादसे उत्पन्न हुए थे। ऋषिपुत्रका एक निमित्तशास्त्र ही उपल-ब्ध है। इनके द्वारा रची गयी एक सहिताका भी मदनरत्न नामक ग्रथमें उल्लेख मिलता है। ऋषिपुत्रके उद्धरण बृहत्सहिताकी भट्टोत्पली टीकामे उपलब्ध है।

ऋषिपुत्रका समय वराहमिहिरके पहले होना चाहिए, यत ऋषिपुत्रका प्रभाव वराहमिहिरपर स्पष्ट है। यहाँ दो-एक उदाहरण देकर स्पष्ट किया जाता है।

ससलोहिवण्णहोवरि सकुण इत्ति होइ णायव्वो ।
सगाम पुण घोर खग्ग सूरो णिवेदेई ॥ —ऋषिपुत्र निमित्तशास्त्र
शस्त्रास्त्रधिकरोनमे भानौ नभस्थले भवन्ति सग्रामा. । —वराहमिहिर

अपने निमित्तशास्त्रमें पृथ्वीपर दिखाई देनेवाले, आकाशमें दृष्टिगोचर होनेवाले और विभिन्न प्रकारके

शब्द श्रवण द्वारा प्रकट होनेवाले इन तीन प्रकारके निमित्तों द्वारा फलाफलका अच्छा निरूपण किया है। वर्षोत्पात, देवोत्पात, राजोत्पात, उल्कोत्पात, गन्धर्वोत्पात इत्यादि अनेक उत्पातो द्वारा शुभशुभत्वकी मीमासा वडे सुन्दर ढगसे की है।

हरिभद्रकी ज्योतिष रचना

लग्नशुद्धि या लग्नकुडिका नामकी रचना हरिभद्रकी मिलती है। हरिभद्र दर्शन, कथा और आगम शास्त्रके वहुत वडे विद्वान् थे। इनका समय आठवी शती माना जाता है। इन्होने १४४० प्रकरण-ग्रन्थ रचे हैं। इनकी अवतक ८८ रचनाओका पता मुनि जिन-विजयजीने लगाया है। इनकी २६ रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। रचनाके अध्ययनसे ऐसा लगता है, यह ग्रन्थ 'समराइच्च कहा' के रचयिता हरिभद्रका नही है, अन्य कोई हरिभद्र इसके रचयिता हैं।

लग्नशुद्धि प्राकृत भाषामें लिखी गयी ज्योतिष रचना है। इसमे लग्नके फल, द्वादश भावोंके नाम, उनसे विचारणीय विषय, लग्नके सम्बन्धमें ग्रहोका फल, ग्रहोका स्वरूप, नवाश, उच्चाश आदिका कथन किया गया है। जातकशास्त्र या होराशास्त्रका यह ग्रन्थ हैं। उपयोगिताकी दृष्टिसे इसका अधिक महत्व है। ग्रहोंके वल तथा लग्नकी सभी प्रकारसे शुद्धि, पापग्रहोका अभाव, शुभग्रहोका सद्भाव वर्णित हैं।

महावीराचार्य—ये धुरन्धर गणितज्ञ थे। ये राष्ट्रकूट वशके अमोघवर्ष नृपतुगके समयमें हुए थे, अत इनका समय ई० सन् ८५० माना जाता है। इन्होने ज्योतिषपटल और गणितसार सग्रह नामके ज्योतिष ग्रन्थोकी रचना की है। ये दोनो ही ग्रन्थ गणितज्योतिषके हैं ? इन ग्रन्थोसे इनकी विद्वत्ताका ज्ञान सहज ही में किया जा सकता है। गणितसारके प्रारम्भमें गणितकी प्रशसा करते हुए वताया है कि गणितके विना ससारके किसी भी शास्त्रकी जानकारी नही हो सकती है। कामशास्त्र, गान्धर्व, नाटक, सूपशास्त्र, वास्तुविद्या, छन्द-शास्त्र, अलकार, काव्य, तर्क, व्याकरण, कलाप्रभृतिका यथार्थज्ञान गणितके विना सम्भव नही है, अत. गणित विद्या सर्वोपरि है।

इस ग्रन्थमें सज्ञाधिकार, परिकर्म व्यवहार, कलासवर्ण व्यवहार, प्रकीर्ण व्यवहार, त्रैराशिक व्यवहार, मिश्रक व्यवहार, क्षेत्र-गणित व्यवहार, खात व्यवहार, एव छाया व्यवहार नामके प्रकरण हैं। मिश्रक व्यवहार में समकुट्टीकरण, विषमकुट्टीकरण और मिश्रकुट्टीकरण आदि अनेक प्रकारके गणित हैं। पाटीगणित और रेखागणितकी दृष्टिसे इसमें अनेक विशेषताएँ हैं। इसके क्षेत्रव्यवहार प्रकरणमें आयतको वर्ग और वर्गको वृत्तमे परिणत करनेके सिद्धान्त दिये गये है। समत्रिभुज, विषमत्रिभुज, समकोण, चतुर्भुज, विषमकोण चतुर्भुज, वृत्तक्षेत्र, सूचीव्यास, पचभुजक्षेत्र एव वहुभुजक्षेत्रोका क्षेत्रफल तथा घनफल निकाला गया है।

ज्योतिष पटलमें ग्रहोंके चार क्षेत्र, सूर्यके मण्डल, नक्षत्र और ताराओंके सस्थान, गति, स्थिति और सख्या आदिका प्रतिपादन किया है।

चन्द्रसेन—के द्वारा "केवलज्ञानहोरा" नामक महत्वपूर्ण विशालकाय ग्रन्थ लिखा गया है। यह ग्रन्थ कल्याणवर्माके पीछेका रचा गया प्रतीत होता है। इसके प्रकरण सारावलीसे मिलते-जुलते हैं, पर दक्षिणमें रचना होनेके कारण कर्णाटक प्रदेशके ज्योतिषका पूर्ण प्रभाव है। इन्होने ग्रन्थके विषयको स्पष्ट करनेके लिए वीच-वीचमे कन्नड-भाषाका भी आश्रय लिया है। यह ग्रन्थ अनुमानत चार हजार श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है। ग्रन्थके प्रारम्भमें कहा है—

होरा नाम महाविद्या वक्तव्य च भवद्धितम्।
ज्योतिर्ज्ञानैकसार भूषण वुधपोषणम्॥

इन्होंने अपनी प्रशसा भी प्रचुर परिमाणमे की है—

आगम सदृशो जैन: चन्द्रसेनसमो मुनि ।
केवली सद्वशी विद्या दुर्लभा सचराचरे ।।

इस ग्रन्थमें हेमप्रकरण, दाम्यप्रकरण, शिलाप्रकरण, मृत्तिकाप्रकरण, वृक्षप्रकरण, कार्पास-गुल्म वल्कल-तृण-रोम-चर्मपटप्रकरण सख्याप्रकरण, नष्टद्रव्यप्रकरण, निर्वाहप्रकरण, अपत्यप्रकरण, लाभालाभप्रकरण, स्वरप्रकरण, स्वप्नप्रकरण, वास्तुप्रकरण, भोजनप्रकरण, दोहददीक्षाप्रकरण, अजनविद्याप्रकरण, एवं विप-विद्याप्रकरण आदि है। ग्रन्थको आद्योपान्त देखनेसे अवगत होता है कि यह सहिता-विषयक रचना है, होराविषयक नही ।

श्रीधर—ये ज्योतिषशास्त्रके मर्मज्ञ विद्वान है। इनका समय दशवी शतीका अन्तिम भाग है। ये कर्णाटक प्रान्तके निवासी थे। इनकी माताका नाम अब्बोका और पिताका नाम बलदेवशर्मा था। इन्होंने बचपनमे अपने पितासे ही सस्कृत और कन्नड-साहित्यका अध्ययन किया था। प्रारम्भमें ये शैव थे, किन्तु बादमें जैन धर्मानुयायी हो गये थे। इनकी गणितसार और ज्योतिर्ज्ञानविधि सस्कृत भाषामें तथा जातकतिलक कन्नड-भाषामें रचनाएँ है। गणितसारमें अभिन्न गुणक, भागहार, वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, भिन्न, समच्छेद, भागजाति, प्रभागजाति, भागानुबन्ध, भागमात्रजाति, त्रैराशिक, सप्तराशिक, नवराशिक, भाण्डप्रतिभाण्ड, मिश्रकव्यवहार, एकपत्रीकरण, सुवर्णगणित, प्रक्षेपकगणित, समक्रयविक्रय, श्रेणीव्यवहार, खातव्यवहार, चिति-व्यवहार, काण्ठकव्यवहार, राशिव्यवहार, एव छायाव्यवहार आदि गणितोका निरूपण किया है।

ज्योतिर्ज्ञानविधि प्रारम्भिक ज्योतिपका ग्रन्थ है। इसमे व्यवहारोपयोगी मुहूर्त्त भी दिये गये हैं। आरम्भमें सवत्सरोके नाम, नक्षत्रनाम, योग, करण, तथा उनके शुभाशुभत्व दिये गये हैं। इसमे मासशेप, मासाधिपतिशेष, दिनशेप एव दिनाधिपतिशेष आदिकी अद्भुत प्रक्रियाएँ बतायी गयी हैं।

जातकतिलक कन्नड-भाषामें लिखित होरा या जातकशास्त्र सम्बन्धी रचना है। इस ग्रन्थमे लग्न ग्रह, ग्रहयोग एव जन्मकुण्डली सम्बन्धी फलादेशका निरूपण किया गया है। दक्षिण भारतमें इस ग्रथका अधिक प्रचार है।

चन्द्रोन्मीलन

चन्द्रोन्मीलन प्रश्न भी इस कालकी एक महत्वपूर्ण प्रश्नशास्त्रकी रचना है। इस ग्रथके कर्त्ताके सबधमे भी कुछ ज्ञात नही हैं। ग्रथको देखनेसे यह अवश्य अवगत होता है कि इस प्रश्नप्रणालीका प्रचार खूब था। प्रश्नकर्त्ताके प्रश्नवर्णोका सयुक्त, असयुक्त, अभिहत, अनभिहत, अभिघातित, अभिधूमित, आलिंगित और दग्ध इन सज्ञाओमे विभाजन कर प्रश्नोका उत्तर दिया गया है। केरल प्रश्नदलमें चन्द्रोन्मीलनका खण्डन किया गया है। "प्रोक्त चन्द्रोन्मीलन शुक्लवस्त्रैस्तच्चाशुद्धम्" इससे ज्ञात होता है कि यह प्रणाली लोकप्रिय थी। चन्द्रोन्मीलन नामका जो ग्रथ उपलब्ध है, यह साधारण है। पर प्रश्नशास्त्रकी दृष्टिसे इसका पर्याप्त मूल्य है।

उत्तरमध्यकाल

उत्तरमध्यकालमें फलित ज्योतिपका बहुत विकास हुआ। मुहूर्त्तजातक, सहिता, प्रश्न, सामुद्रिकशास्त्र प्रभृति विपयोकी अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखी गयी हैं। दुर्गदेवके नामसे यो तो अनेक रचनाएँ मिलती है, पर दो रचनाएँ प्रमुख हैं—'रिट्ठसमुच्चय' और अर्घकाण्ड। दुर्गदेवका समय सन् १०३२ माना गया है।

रिट्ठसमुच्चयकी रचना अपने गुरु सयमदेवके वचनानुसार की है। ग्रन्थमें एक स्थानपर सयमदेवके गुरु संयमसेन और उनके गुरु माधवचन्द्र बताये गये हैं। रिट्ठसमुच्चय शौरसेनी प्राकृतमें २६१ गाथाओमें रचा गया है। इसमें शकुन और शुभाशुभ निमित्तोका सकलन किया गया है। लेखकने रिष्टोके पिडस्थ, पदस्थ और रूपस्थ नामक तीन भेद किये है। प्रथम श्रेणीमें अगुलियोका टूटना, नेत्रज्योतिकी हीनता, रसज्ञानकी न्यूनता, नेत्रोंसे लगातार जलप्रवाह एव जिह्वा न देख सकना आदिको परिगणित किया है। द्वितीय श्रेणीमें सूर्य और चन्द्रमाका अनेको रूपोमें दर्शन, प्रज्वलित दीपकको शीतल अनुभव करना, चन्द्रमाके त्रिभगी रूपमें देखना, चन्द्रलाछनका दर्शन न होना इत्यादिको ग्रहण किया है। तृतीयमें निजछाया, परच्छाया, तथा छायापुरुपका वर्णन है। प्रश्नाक्षर, शकुन और स्वप्न आदिका भी विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया गया है।

अर्घकाण्डमें तेजी-मदीका ग्रहयोगके अनुसार विचार किया गया है। यह ग्रथ भी १४९ प्राकृत गाथाओमें लिखा गया है।

मल्लिसेण—सस्कृत और प्राकृत दोनो भापाओके प्रकाड विद्वान् थे। इनके पिताका नाम जिनसेन था, ये दक्षिण भारतके धारवाड जिलेके अन्तर्गत गदगतालुका नामक स्थानके रहनेवाले थे। इनका समय ई० सन् १०४३ माना गया है। इनका आयसद्भाव नामक ज्योतिप ग्रथ उपलब्ध है। प्रारम्भमें ही कहा है—

सुग्रीवादिमुनीन्द्रै रचित शास्त्र यदात्रसद्भावम्।
तत्सम्प्रत्यार्थाभिर्विरच्यते मल्लिषेणेन॥
ध्वज-धूम-सिह-मण्डल-वृषखरगजवायसा भवन्त्याया।
ज्ञायन्ते ते विद्वद्भिरिहैकोत्तरगणनया चाष्टौ॥

इन उद्धरणोंसे स्पष्ट है कि इनके पूर्व भी सुग्रीव आदि जैन मुनियोंके द्वारा इस विपयकी और रचनाएँ भी हुई थी, उन्हीके साराशको लेकर आयसद्भाव की रचना की गयी है। इस कृतिमें १९५ आर्याएँ और अन्तमें एक गाथा, इस तरह कुल १९६ पद्य हैं। इसमें ध्वज, धूम, सिह, मण्डल, वृष, खर, गज और वायस इन आठो आर्योके स्वरूप और फलादेश वर्णित हैं।

भट्टवोसरि

"आयज्ञानतिलक" नामक ग्रथके रचयिता दिगम्बराचार्य दामनन्दीके शिष्य भट्टवोसरि है। यह प्रश्नशास्त्रका महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें २५ प्रकरण और ४१५ गाथाएँ हैं। ग्रथकर्त्ताकी स्वोपज्ञ वृत्ति भी है। दामनन्दीका उल्लेख श्रवणबेल्गोलके शिलालेख न० ५५ में पाया जाता है। ये प्रभाचन्द्राचार्यके सधर्मा या गुरु-भाई थे। अत इनका समय विक्रम सवत्की ११ वी शती है[1] और भट्टवोसरिका भी समय इन्ही के आसपास है।

इस ग्रन्थमें ध्वज, धूम, सिह, गज, खर, श्वान, वृज, ध्वाक्ष इन आठ आर्यों द्वारा प्रश्नोंके फलादेशका विस्तृत विवेचन किया है। इसमें कार्य-अकार्य, जय-पराजय, सिद्धि-असिद्धि आदिका विचार विस्तारपूर्वक विद्यमान है। प्रश्नशास्त्रकी दृष्टिसे यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उदयप्रभदेव—इनके गुरुका नाम विजयसेन सूरि था। इनका समय ई० सन् १२२० बताया जाता है। इन्होंने ज्योतिष विषयक "आरम्भ सिद्धि" अपरनामा "व्यवहार चर्या" ग्रन्थकी रचना की है। इस ग्रन्थ पर वि० स० १५१४में रत्नशेखर सूरिके शिष्य 'हेमहस गणि'ने एक विस्तृत टीका लिखी है। इस टीकामें इन्होंने मुहूर्त सवधी साहित्यका

१ प्रशस्तिसग्रह, प्रथम भाग, सपादक—जुगलकिशोर मुख्तार, प्रस्तावना पृ० ९५-९६ तथा पुरातन-वाक्य सूचीकी प्रस्तावना पृ० १०१-१०२।

अच्छा सकलन किया है। लेखकने ग्रन्थके प्रारम्भमें ग्रन्थोक्त अध्यायोका सक्षिप्त नामकरण निम्नप्रकार दिया है।

दैवज्ञदीपकालिका व्यवहारचर्यामारम्भसिद्धिमुदयप्रभदेवानाम् शास्तिक्रमेण तिथिवारमयोगराशिगोचर्यकार्यागमवास्तुविलग्नभि ।

हेमहंसगणिने व्यवहारचर्या नामकी सार्थकता दिखलाते हुए लिखा है—

"व्यवहारशिष्टजनसमाचार· शुभतिथिवारमादिषु शुभकार्यकरणादिरूपस्तस्यचर्या।" यह ग्रथ मुहूर्त्तचिन्तामणिके समान उपयोगी और पूर्ण है। मुहूर्त्त विपयकी जानकारी इस अकेले ग्रन्थके अध्ययन से की जा सकती है।

राजादित्य—इनके पिताका नाम श्रीपति और माताका नाम वसन्ता था। इनका जन्म कोडिमण्डल के "युविनवाग" नामक स्थानमें हुआ था। इनके नामान्तर राजवर्म, भास्कर और वाचिराज बताये जाते हैं। ये विष्णुवर्धन राजाकी सभाके प्रधान पण्डित थे, अत इनका समय सन् ११२० के लगभग है। यह कवि होनेके साथ साथ गणित और ज्योतिपके माने हुए विद्वान थे। "कर्णाटक कवि चरिते"के लेखकका कथन है कि कन्नड-साहित्यमें गणितका ग्रथ लिखनेवाला यह सबसे बडा विद्वान् था। इनके द्वारा रचित व्यवहार गणित, क्षेत्र गणित, व्यवहाररत्न तथा जैन गणित सूत्रटीकोदाहरण और लीलावती ये गणित ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

पदमप्रभसूरि—नागौरकी तपागच्छीय पट्टावलीसे पता चलता है कि ये वादिदेवसूरिके शिष्य थे। इन्होंने "भुवनदीपक" या "ग्रहभावप्रकाश" नामक ज्योतिपका ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रथ पर सिंहतिलक सूरिने वि० स० १३३६ में एक विवृति लिखी है। "जैन साहित्य नो इतिहास" नामक ग्रंथमें इनके गुरुका नाम विबुधप्रम सूरि बताया है। भुवनदीपकका रचनाकाल वि० स० १२९४ है। यह ग्रथ छोटा होते हुए भी अत्यन्त उपयोगी है। इसमें ३६ द्वार-प्रकरण हैं। राशि स्वामी, उच्चनीचत्व मित्र शत्रु, राहुका ग्रह, केतुस्थान, ग्रहोके स्वरूप, द्वादश भावोंसे विचारणीय बातें, इष्टकाल ज्ञान, लग्न सम्बन्धी विचार, विनष्टगृह, राजयोगका कथन, लाभालाभ विचार, लग्नेशकी स्थितिका फल, प्रश्न द्वारा गर्भ विचार, प्रश्न द्वारा प्रसवज्ञान, यगजविचार, मृत्युयोग, चौर्यज्ञान, द्रेष्काणादिके फलोका विचार विस्तारसे किया है। इस ग्रथमें कुल १७० श्लोक हैं। इसकी भाषा सस्कृत है।

नरचन्द्र उपाध्याय—ये कातद्रहगच्छके सिंहसूरिके शिष्य थे। इन्होंने ज्योतिपशास्त्रके कई ग्रथोकी रचना की है। वर्तमानमें इनके वेडा जातकवृत्ति, प्रश्नशतक, प्रश्न चतुर्विंशतिका, जन्मसमुद्र-टीका, लग्नविचार और ज्योतिषप्रकाश उपलब्ध हैं। नरचन्द्रने स० १३२४में माघ सुदी ८ रविवारको वेडाजातक वृत्तिकी रचना १०५० श्लोक प्रमाणमें की है। ज्ञानदीपिका नामकी एक अन्य रचना भी इनकी मानी जाती है। ज्योतिपप्रकाश सहिता और जातक सबधी महत्वपूर्ण रचना है।

अट्ठ कवि या अर्हद्दास—ये जैन ब्राह्मण थे। इनका समय ईस्वी सन् १३००के आस पास है। अर्हद्दासके पिता नागकुमार थे। अर्हद्दास कन्नड भाषाके प्रकाण्ड विद्वान थे। इन्होंने कन्नडमें अट्ठमत नामक ज्योतिपका महत्त्वपूर्ण ग्रथ लिखा है। शक् संवत्की चौदहवी शताब्दीमे भास्कर नामके आन्ध्र कविने इस ग्रथका तेलगू भाषामें अनुवाद किया था। अट्ठमतमें वर्षाके चिन्ह, आकस्मिक लक्षण, शकुन, वायुचक्र, गृहप्रवेश, भूकम्प, भूजात-फल, उत्पात लक्षण, परिवेपलक्षण, इन्द्रधनु-लक्षण, प्रथम गर्भ लक्षण, द्रोण सख्या, विद्युत लक्षण, प्रतिसूर्य लक्षण, सवत्सरफल, ग्रहद्वेष, मेघोंके नाम, कुल-वर्ण, ध्वनिविचार, देशवृष्टि, मासफल, राहुचन्द्र नक्षत्रफल, संक्रान्तिफल आदि विपयोंका निरूपण किया गया[1] है।

---

1. अभूद्भृगुपुरे वरे गणकचक्रचूडामणि, चन्द्रराज, अ० ५, श्लोक ६७।

महेन्द्रसूरि—ये भृगुपुर निवासी मदनसूरिके शिष्य फिरोजशाह तुगलकके प्रधान सभापण्डित थे। इन्होंने नाडीवृत्तके धरातलमें गोलपृष्ठस्थ सभी वृत्तोंका परिणमन करके यन्त्रराज नामक ग्रहगणितका उपयोगी ग्रन्थ लिखा है। इनके शिष्य मलयेन्दुसूरिने इसपर सोदाहरण टीका लिखी है। इस ग्रन्थमें परमाक्रान्ति २३ अंश ३५ कला मानी गयी है। इसकी रचना शक संवत् १२९२ में हुई है। इसमें गणिताध्याय, यन्त्रघटनाध्याय, यन्त्ररचनाध्याय, यन्त्रशोधनाध्याय, और यन्त्रविचारणाध्याय ये पाँच अध्याय हैं। क्रमोत्क्रमज्यानयन, भुजकोटिज्याका चापसाधन, क्रान्तिसाधक धुज्याखण्डसाधन, धुज्याफलानयन, सौम्य गणितके विभिन्न गणितोंका साधन, अक्षांशसे उन्नतांश साधन, ग्रंथके नक्षत्र ध्रुवादिकसे अभीष्टवर्षके ध्रुवादिकका साधन, नक्षत्रोंके दृक्कर्म-साधन, द्वादश राशियोंके विभिन्न वृत्तसंबंधी गणितोंका साधन, इष्ट शंकुसे छायाकरण साधन यन्त्रशोधन प्रकार और उसके अनुसार विभिन्न राशि नक्षत्रोंके गणितका साधन, द्वादशभाव और नवग्रहोंके स्पष्टीकरणका गणित एवं विभिन्न यन्त्रों द्वारा सभी ग्रहोंके साधनका गणित बहुत सुन्दर ढंगसे बताया गया है। इस ग्रन्थमें पंचांग निर्माण करनेकी विधिका निरूपण किया है।

भद्रबाहु संहिता

भद्रबाहु संहिता अष्टांग निमित्तका एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके आरम्भके २० अध्यायोंमें निमित्त और संहिता विषयका प्रतिपादन किया गया है। ३०वें अध्यायमें अरिष्टोंका वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थका निर्माण श्रुतकेवली भद्रबाहुके वचनोंके आधारपर हुआ है। विषयनिरूपण और विषयवस्तुकी दृष्टिसे इसका रचनाकाल ८-९वीं शतीके पश्चात् नहीं हो सकता है। हाँ, लोकोपयोगी रचना होनेके कारण उसमें समय-समयपर संशोधन और परिवर्तन होता रहा है। अतः इस ग्रन्थमें पीछेके आचार्योंने भी प्रक्षिप्त अंश जोड़ दिये हैं।

इस ग्रंथमें व्यंजन, अंग, स्वर, भौम, छन्न, अन्तरिक्ष, लक्षण एवं स्वप्न इन आठों निमित्तोंका फल-निरूपण सहित विवेचन किया गया है। उल्का, परिवेशप, विद्युत, अभ्र, सन्ध्या, मेघ, वात, प्रवर्षण, गन्धर्व-नगर, गर्भलक्षण, यात्रा, उत्पात, ग्रहचार, ग्रहयुद्ध, स्वप्न, मुहूर्त, तिथि, करण, शकुन, पाक, ज्योतिष, वास्तु, इन्द्रसम्पदा, लक्षण, व्यंजन, चिह्न, लग्न, विद्या, औषध, प्रभृति सभी निमित्तोंके बलाबल, विरोध और पराजय आदि विषयोंका विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। यह निमित्तशास्त्रका बहुत ही महत्वपूर्ण और उपयोगी ग्रन्थ है। इससे वर्षा, कृषि, धान्यभाव, एवं अनेक लोकोपयोगी बातोंकी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि

"केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि" के रचयिता 'समन्तभद्र'का समय १३वीं शती है। ये समन्त विजयप्पके पुत्र थे। विजयप्पके भाई नेमिचन्द्रने प्रतिष्ठातिलककी रचना आनन्द संवत्सरमें चैत्रमासकी पंचमीको की है। अतः समन्तभद्रका समय १३वीं शती है। इस ग्रन्थमें धातु, मूल, जीव, नष्ट, मुष्टि, लाभ, हानि, रोग, मृत्यु, भोजन, शयन, शकुन, जन्म, कर्म, अस्त्र, शल्य, वृष्टि, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सिद्धि, असिद्धि, आदि विषयोंका प्ररूपण किया गया है। इस ग्रन्थमें अ च ट त प य श अथवा आ ए क च ट प य श इन अक्षरोंका प्रथम वर्ग, आ, ऐ ख छ ठ थ फ र ष इन अक्षरोंका द्वितीय वर्ग, इ ओ ग ज ड द ब ल स इन अक्षरोंका तृतीय वर्ग, ई औ घ झ भ व ह, न अक्षरोंका चतुर्थ वर्ग और उ ऊ ण न म अं अः इन अक्षरोंका पंचम वर्ग बताया गया है। प्रश्नकर्त्ताके वाक्य या प्रश्नाक्षरोंको ग्रहणकर संयुक्त, असंयुक्त, अभिहित और अभिघातित इन पाँचों द्वारा तथा आलिंगित अभिधूमित और दग्ध इन तीनों क्रियाविशेषणों द्वारा प्रश्नोंके फलाफलका विचार किया

गया है। इस ग्रन्थमें मूक प्रश्नोके उत्तर भी निकाले गये हैं। यह प्रश्नशास्त्रकी दृष्टिसे अत्यन्त उपयोगी है।

हेमप्रभ—इनके गुरुका नाम देवेन्द्रसूरि था। इनका समय चौंदहवी शतीका प्रथमपाद है। सवत् १३०५ में त्रैलोक्य प्रकाशकी रचना की गयी है। इनकी दो रचनाएँ उपलब्ध हैं—"त्रैलोक्यप्रकाश" और "मेघमाला"।

"त्रैलोक्यप्रकाश" बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें ११६० श्लोक है। इस एक ग्रन्थके अध्ययनसे फलित ज्योतिषकी अच्छी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। आरभमें ११० श्लोकोमें लग्नज्ञानका निरूपण है। इस प्रकरणमें भावोके स्वामी, ग्रहोके छ प्रकारके बल, दृष्टिगोचर, शत्रु, मित्र, वक्री-मार्गी, उच्च-नीच, भावोकी सज्ञाएँ, भावराशि, ग्रहबल विचार आदिका विवेचन किया गया है। द्वितीय प्रकरणमें योग-विशेष—धनी, सुखी, दरिद्र, राज्यप्राप्ति, सन्तानप्राप्ति, विद्याप्राप्ति आदिका कथन है। तृतीय प्रकरणमे निधिप्राप्ति घर या जमीनके भीतर रखे गये धन और उस धनको निकालनेकी विधिका विवेचन है। यह प्रकरण बहुत ही महत्वपूर्ण है। इतने सरल और सीधे ढगसे इस विषयका निरूपण अन्यत्र नही है। चतुर्थ प्रकरण भोजन और पचम ग्रामपृच्छा है। इन दोनो प्रकरणोमे नामके अनुसार विभिन्न दृष्टियोंसे विभिन्न प्रकारके योगोका प्रतिपादन किया गया है। षष्ठ पुत्रप्रकरण है, इसमें सन्तानप्राप्तिका समय, सन्तान सख्या, पुत्र-पुत्रियोकी प्राप्ति आदिका कथन है। सप्तम प्रकरणमें छठे भावसे दाम्पत्य सबध और नवममें विभिन्न दृष्टियोंसे स्त्री-सुखका विचार किया गया है। दशम प्रकरण स्त्रीजातकमें स्त्रियोकी दृष्टिसे फलाफलका निरूपण किया गया है। एकादशमें परचक्रगमन, द्वादशमें गमनागमन, त्रयोदशमें युद्ध, चतुर्दशमें सन्धिविग्रह, पचदशमें वृक्षज्ञान, षोडशमें ग्रहदोष-ग्रहपीडा, सप्तदशमें आयु, अष्टादशमें प्रवहण और एकोनविंशमें प्रवज्याका विवेचन किया है। बीसवे प्रकरणमें राज्य या पदप्राप्ति, इक्कीसवेंमें वृष्टि, बाइसवेंमें अर्धकाण्ड, तेइसवेमें स्त्रीलाभ, चौबीसवेमें नष्ट वस्तुकी प्राप्ति एव पच्चीसवेमे ग्रहोके उदयास्त, सुभिक्ष-दुर्भिक्ष, महर्घ, समर्घ और विभिन्न प्रकारसे तेजी मदीकी जानकारी बतलाई गई है। इस ग्रथकी प्रशसा स्वय ही इन्होने की है।[१]

श्री मद्देवेन्द्रसूरीणा शिष्येण ज्ञानदर्पणः।
विश्वप्रकाशकश्चक्रे श्रीहेमप्रभसूरिणा॥

श्री देवेन्द्रसूरि के शिष्य श्री हेमप्रभ सूरिने विश्वप्रकाश और 'ज्ञान दर्पण' ग्रन्थको रचा।

'मेघमाला' की श्लोक सख्या १०० बतायी गयी है। प्रो० एच० डी० वेलकारने जैनग्रथावलीमें उक्त प्रकारका निर्देश किया है।

रत्नशेखर सूरिने "दिनशुद्धि दीपिका" नामक एक ज्योतिष ग्रंथ प्राकृत भाषामें लिखा है। इनका समय १५ वी शती बताया जाता है। ग्रथके अन्तमें निम्न प्रशस्ति-गाथा मिलती है।

सिरिवयरसेणगुरुपट्ट–वाहोसिरिहैमनिलयसूरीण।
पापपसाया एसा, रयणसिहरसूरिणा विहिया॥ १४४॥

वज्रसेन गुरुके पट्टधर श्री हेमतिलक सूरिके प्रसादसे रत्नशेखर सूरिने दिनशुद्धि प्रकरणकी रचना की।

इसे "मुनिमणभवणपयास" अर्थात् मुनियोके मन रूपी भवनको प्रकाशित करनेवाला कहा है। इसमे कुल १४४ गाथाएँ है। इस ग्रथमे पारद्वार, कालहोरा, वारप्रारम्भ, कुलिकादियोग, वर्ज्यप्रहार, नन्दमद्रादि

---

१ जैन ग्रथावली १५, पृ० ३५६।
त्रैलोक्य प्रकाश, १६, श्लोक० ४३०।

सज्ञाएँ, क्रूरतिथि, वर्ज्यतिथि, दग्धतिथि करण, भद्राविचार, नक्षत्रद्वार, राशिद्वार, लग्नद्वार, चन्द्रअवस्था, शुभरवियोग, कुमारवियोग, राजयोग, अनन्दादियोग, अमृतसिद्धियोग, उत्पादियोग, लग्नविचार, प्रयाणकालीन शुभाशुभविचार, वास्तुमहूर्त, पञ्चष्टकादि, राशिकूट, नक्षत्रयोनि विचार, विविध मुहूर्त, नक्षत्र दोष विचार, छाया साधन और उसके द्वारा फलादेश एव विभिन्न प्रकारके शकुनोका विवेचन किया गया है। यह ग्रथ व्यवहारोपयोगी है।

चौदहवी शताब्दीमें ठक्कुर फेरूका नाम भी उल्लेखनीय है। इन्होंने "गणितसार" और 'जो इस सार' ये दो ग्रथ महत्वपूर्ण लिखे है। 'गणितसार' में पाटीगणित और परिकर्माष्टककी मीमासा की गयी है। जोइस सारमें नक्षत्रोकी नामावलीसे लेकर ग्रहोंके विभिन्न योगोका सम्यक् विवेचन किया गया है।

उपर्युक्त ग्रथोके अतिरिक्त हर्षकीर्ति कृत 'जन्मपत्र-पद्धति', जिनवल्लभकृत 'स्वप्नसप्तिका', जय-विजयकृत शकुनदीपिका, पुण्यतिलककृत "ग्रहायुसाधन", गर्गमुनिकृत 'पासावली', समुद्रकविकृत सामुद्रिक शास्त्र, मानसागरकृत मानसागरी पद्धति, जिनसेनकृत निमित्तदीपक आदि ग्रथ भी महत्वपूर्ण हैं। ज्योतिषसार, ज्योतिषसग्रह, शकुनसग्रह, शकुनदीपिका, शकुनविचार, जन्मपद्धति, ग्रहयोग, ग्रहफलनामके अनेक ऐसे सग्रह ग्रथ उपलब्ध हैं, जिनके कर्त्ताका पता ही नही चलता है।

अर्वाचीनकालका ज्योतिष वाङ्मय

अर्वाचीनकालमें कई अच्छे ज्योतिर्विद हुए हैं। जिन्होंने जैन ज्योतिष साहित्यको वहुत आगे वढाया है।[1] यहाँ प्रमुख लेखकोका उनकी कृतियोके साथ परिचय दिया जाता है। इस युगके सवसे प्रमुख मेघविजयगीण है। ये ज्योतिषशास्त्रके प्रकाड विद्वान् थे। इनका समय वि० स० १७३० के आसपास माना गया है। इनके द्वारा रचित 'मेघमहोदय' या 'वर्षप्रवोध', 'उदयदीपिका', 'रमलशास्त्र' और 'हस्तसजीवन' आदि मुख्य हैं। 'वर्षप्रवोध' में १३ अधिकार और ३५ प्रकरण हैं। इसमें उत्पातप्रकरण, कर्पूरचक्र, पद्मिनीचक्र, मण्डलप्रकरण, सूर्य और चन्द्रग्रहणका फल, मास, वायु-विचार, सवत्सरका फल, ग्रहोंके उदयास्त और वक्री, अयन-मास-पक्ष विचार, सक्रान्तिफल, वर्षके राजा, मन्त्री, धान्येश, रसेश आदिका निरूपण, आय-व्यय विचार, सर्वतोभद्रचक्र एव शकुन आदि विषयोंका निरूपण किया है। ज्योतिष विषयकी जानकारी प्राप्त करनेके लिये यह रचना उपयोगी है।

"हस्त सजीवन" में तीन अधिकार हैं। प्रथम दर्शनाधिकारमें हाथ देखनेकी प्रक्रिया, हाथकी रेखाओ परसे ही मास, दिन, घडी, फल आदिका कथन एव हस्तरेखाओके आधारपरसे ही लग्नकुण्डली वनाना तथा उसका फलादेश निरूपण करना वर्णित है। द्वितीय स्पर्शनाधिकारमें हाथकी रेखाओके स्पर्श परसे ही समस्त शुभाशुभ फलका प्रतिपादन किया गया है। इस अधिकारमें मूल प्रश्नोके उत्तर देनेकी प्रक्रिया भी वर्णित है। तृतीय विमर्शनाधिकारमें रेखाओ परसे ही आयु, सन्तान, स्त्री, भाग्योदय, जीवनकी प्रमुख घटनाएँ, सासारिक सुख, विद्या, वुद्धि, राज्यसम्मान और पदोन्नतिका विवेचन किया गया है। यह ग्रन्थ सामुद्रिक शास्त्रकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण और पठनीय है।

उभयकुशल—का समय १८वी शतीका पूर्वार्द्ध है। ये फलित ज्योतिषके अच्छे ज्ञाता थे। इन्होने विवाहपटल और चमत्कारचिन्तामणिटवा नामक दो ग्रन्थोकी रचना की है। ये मुहूर्त्त और जातक, दोनों ही विषयोके पूर्ण पडित थे। चिन्तामणिटवामें द्वादश भावोंके अनुसार ग्रहोके फलादेशका प्रतिपादन किया गया है। विवाहपटलमें विवाहके मुहूर्त्त और कुण्डली मिलानका सागोपाग वर्णन किया गया है।

---

१. केवलज्ञानप्रश्नचूडामणिकी प्रस्तावना भाग, १७।

लब्धचन्द्रगणि—खतरगच्छीय कल्याणनिधानके शिष्य थे। इन्होने वि० स० १७५१ में कार्तिक मासमें जन्मपत्रीपद्धति नामक एक व्यवहारोपयोगी ज्योतिषका ग्रन्थ बनाया है। इस ग्रन्थमें इष्टकाल, भयात, भभोग, लग्न, नवग्रहोका स्पष्टीकरण, द्वादशभाव, तात्कालिक चक्र, दशवल, विंशोत्तरी दशा सावन आदिका विवेचन किया गया है।

वाघती मुनि—ये पार्श्वचन्द्रगच्छीय शाखाके मुनि थे। इनका प्रारभ समय वि० स० १७८३ माना जाता है। इन्होने तिथिसारिणी नामक ज्योतिषका महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा है। इसके अतिरिक्त इनके दो-तीन फलित ज्योतिषके भी मुहूर्त्त सम्बन्धी उपलब्ध ग्रन्थ हैं। इनका सारणी ग्रन्थ, मकरन्द सारणीके समान उपयोगी है।

यशस्वतसागर—इनका दूसरा नाम जसवतसागर भी वताया जाता है। ये ज्योतिष, न्याय, व्याकरण और दर्शन शास्त्रके धुरन्धर विद्वान् थे। इन्होने ग्रहलाघवके ऊपर वार्तिक नामकी टीका लिखी है। वि० स० १७६२ में जन्मकुण्डली विषयको लेकर "यशोराज-पद्धति" नामक एक व्यवहारोपयोगी ग्रथ लिखा है। यह ग्रथ जन्मकुण्डलीकी रचनाके नियमोके सम्बन्धमें विशेष प्रकाश डालता है। उतरार्द्धमे जातकपद्धतिके अनुसार सक्षिप्त फल वतलाया है।

इनके अतिरिक्त विनयकुशल, हरिकुशल, मेघगण, जिनपाल, जयरत्न, सूरचन्द्र, आदि कई ज्योतिषियोकी ज्योतिप सम्बन्धी रचनाएँ उपलब्ध हैं। जैन ज्योतिष साहित्यका विकास आज भी शोधटीकाओका निर्माण एव सग्रहग्रथोके रूपमें हो रहा है।[1] सक्षेपमें अकगणित, वीजगणित, रेखागणित, त्रिकोणमितिगणित, प्रतिभागणित, पचागनिर्माणगणित, जन्मपत्रनिर्माणगणित आदि गणित-ज्योतिपके अगोके साथ होराशास्त्र, सहिता,[2] मुहूर्त, सामुद्रिक शास्त्र, प्रश्नशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, निमित्त शास्त्र, रमणशास्त्र, पासाकेवली प्रभृति फलित अगोका विवेचन जैन साहित्यमे किया गया है। जैन ज्योतिष साहित्यके अव तक पाँच सौ ग्रथोका पता लग चुका है।[3]

लोकविजयका ज्योतिषमे स्थान

सहिता-विषयक साहित्यमें जव राष्ट्रीय फलादेशका विवेचन करना आवश्यक हो गया और वर्षा, कृषि एव राष्ट्र सम्बन्धी शुभाशुभ फलोका प्रतिपादन इस शास्त्रका विषय वन गया तो स्वतन्त्र रूपमें ऐसे ग्रथोका निर्माण होने लगा, जिनमें राष्ट्र-कल्याणकी चर्चा निवद्ध रहती थी। वाराही सहितामें राष्ट्रीय नियमोका समावेश तो है ही, पर कृपि और वर्षाका विचार भी किया गया है। सहिता-ग्रथोमें वर्षा और कृपिका विचार निम्नलिखित चार निमित्तोसे किया गया है—

१ भौतिक या भौम निमित्त—देश, मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतग प्रभृति द्वारा वर्षाके ज्ञान होनेको भौतिक निमित्त या भौम निमित्त कहते हैं।

२ आन्तरिक्ष निमित्त—वायु, वादल, विद्युत, गर्जन, तर्जन, सन्ध्या, दिग्दाह, प्रतिसूर्य, तारा, कुण्डल आँधी, गन्धर्वनगर, इन्द्र धनुष, वायु धारण, आदिसे वर्षाके ज्ञान होनेको आन्तरिक्ष निमित्त कहते है।

३ दिव्य निमित्त—सूर्य-चन्द्रग्रहण, पुच्छल तारे, सूर्यके चिन्ह, सप्तनाडीचक्र, ग्रहोके उदयास्त, सक्रान्ति आदिसे वृष्टिज्ञान प्राप्त करनेको दिव्य निमित्त कहते हैं।

---

१ भद्रवाहु-सहिताका प्रस्तावना अश, १८

२ महावीर स्मृतिग्रथके अन्तर्गत "जैन ज्योतिषकी व्यावहारिकता" शीर्षक निवन्ध, पृ० १९६—१९७, १९.

३ वर्णी अभिनन्दन ग्रंथके अन्तर्गत भारतीय ज्योतिषका पोषक जैन ज्योतिष, पृ० ४०८—४८४ २०.

४ मिश्रनिमित्त—कार्तिकसे आश्विन तक वारह महीनोंके प्रत्येक दिनके तथा विशेष रूपसे अक्षयतृतीया, आपाढीपूर्णिमा, होलिका, दीपावली, विजयादशमीके शकुनो तथा चिन्होंसे वर्षा ज्ञान करनेको मिश्रनिमित्त कहते हैं।

इन निमित्तोमें भौमनिमित्तकी अपेक्षा आन्तरिक्ष निमित्त और आन्तरिक्षकी अपेक्षा दिव्यनिमित्त इस प्रकार उत्तरोत्तर एक दूसरेसे अधिक वलवान् है। अत भौमनिमित्तका फल थोडी दूर तक, आन्तरिक्षका फल मण्डल तक, दिव्य निमित्तका फल एक प्रदेश या प्रान्त तक और मिश्र निमित्तका फल सर्वत्र होता है। भौम निमित्तोंसे वृष्टिका परिज्ञान तत्काल किया जाता है।

साधारणत सहिता-ग्रथोमें निम्नलिखित प्रमेयोका विवेचन आवश्यक माना जाता है —

१ वृष्टि-विज्ञान
२ कृपिकी उन्नति और प्रगति
३ जय-पराजय सम्वन्धी परिज्ञान
४ अष्टाङ्ग-निमित्त
५ विद्युत-उल्का, मेघ, परिवेप–दिग्दाह, सध्या-स्वरूप, गन्धर्वनगर, मेघगर्भ, उत्पातका वर्णन
६ अग-स्फुरण एव अग-विद्या
७. गहानुसार फल-विवेचन
८ उदय अस्त एव ग्रहोके मार्गानुसार फलकथन
९ स्वप्न एव उनके फलादेश
१० रोग-विज्ञान

सहिताके इन प्रमेयोंका वर्णन इतने सश्लिष्ट रूपमें किया जाता है जिससे प्रत्येक प्रमेयके विपयमें पूरी जानकारी नही हो पाती है। फलत वर्षा एव कृषिके विचारके लिए स्वतन्त्र रूपमें कुछ ग्रथ लिखे गए। लोक-विजय-यन्त्र इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिए लिखा गया है। वर्षा और कृषिके विचारके लिए ज्योतिषमें यह सवसे प्रमुख और महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। अभी तक ऐसा कोई आर्प-ग्रन्थ उपलब्ध नही हैं जो इस विपय पर अधिकारी और पूर्ण माना जा सके। सामाजिक सुख-शान्ति एव कष्ट विपत्तिको अवगत करनेके लिए यह ग्रथ विशेष सहायक है। समग्र भारतीय ज्योतिपमे इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इसके रचयिता एव रचना कालका निश्चित परिज्ञान नही है फिर भी इसकी शैली, भापा, एव वर्ण्य-विपयके आधारपर इसकी प्राचीनतामें सन्देह नही रहता। प्रयास करने पर भी लोक-विजय-यन्त्रकी कोई हस्तलिखित प्रति उपलब्ध नही हो सकी। इस ग्रथका प्रकाशन 'वृहज्ज्योतिर्पाणव' के 'मिश्र-स्कन्ध' के 'चक्रावली' सग्रहमें 'प्राचीन जैन गाथा' के नामसे उल्लिखित है। 'मेघ-महोदय' ग्रथमें भी इस चक्रकी गाथाएँ उपलब्ध होती हैं। इन्ही गाथाओंको व्यवस्थित रूप देकर इस ग्रथका सस्करण उपस्थित किया जा रहा है। यह सत्य है कि वर्षा ज्ञानके लिए ज्योतिप शास्त्रमें 'सप्तनाडी चक्र' 'समुद्र-चक्र' 'आय-चक्र' 'कुलाल चक्र' 'द्वादश-नाडी चक्र' 'शख-चक्र' आदि प्रधान हैं। इन सभी चक्रोकी अपेक्षा यह लोक-विजय-यन्त्र अधिक प्रामाणिक और महत्वपूर्ण है।

इस यन्त्रके रचयिताने अक्षय-तृतीयाके दिन प्रथम तीर्थङ्करकी पारणा-वेलासे गणित कर दिशा-विदिशाओंमें स्थापित किए गए ध्रुवाङ्कोके आधारसे फलादेशका आनयन किया है। नौ कोठोंसे शुद्ध चक्र वनाकर मध्यके कोष्टकमें एक सौ पैंतालिसका अङ्क लिखे। तत्पश्चात् उसमें दिशा-विदिशाके क्रमसे एक-एक अङ्क वढाकर प्रदक्षिणारूप एक सौ तिरेपन तकके ध्रुवाङ्क स्थापित करे। इस क्रममें देशोका विचार उज्जयिनीसे किया जाता है। क्योकि रेखाशके निकट यही नगरी पडती है। अत मध्य-प्रदेशका ध्रुवाङ्क एक सो पैंतालिस

है। पूर्व दिशाके देशोका ध्रुवाङ्क एक सौ छियालिस, अग्निकोणके देशोका ध्रुवाङ्क एक सौ सैतालिस, दक्षिणके देशोका ध्रुवाङ्क एक सौ अडतालीस, नैऋत्यकोणके देशोका ध्रुवाङ्क एक सौ उन्चास, पश्चिमके देशोका ध्रुवाङ्क एक सौ पचास, वायुकोणके देशोका ध्रुवाङ्क एक सौ इक्यावन, उत्तरके देशोका ध्रुवाङ्क एक सौ बावन, और ईशान कोणके देशोका ध्रुवाङ्क एक सौ तिरेपन है।

यन्त्र बनानेकी प्रक्रियामे देशाङ्क भी पठित किए गए हैं। पूर्व दिशाका देशाङ्क दो, अग्नि-कोण का तीन, दक्षिण दिशाका चार, नैऋत्य कोणका पाँच, पश्चिम दिशाका छ , वायु कोणका सात, उत्तर दिशाका आठ और ईशान कोणका नौ देशाङ्क है। देशाङ्क और दिशाङ्कोके सयोगसे यन्त्र बनाकर नगरोके फलादेशका ज्ञान करना चाहिए। पूर्वमें एक सौ पैतालीससे एक सौ तिरेपन तक, जो ध्रुवाङ्क पठित हैं उनकी दिशाङ्क सज्ञा है।

लोक-विजय-यन्त्रमें देश, ग्राम, नगर और दिशाके ध्रुवाङ्कोका परिज्ञान कर अपने नगरकी दशा निकाल लेनी चाहिए और इस दशाके आधारपर फलादेश अवगत कर लेना चाहिए। इसका स्पष्टीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है।

लोक-विजय यन्त्र में पठित देश, ग्राम, नगर और दिशाके ध्रुवाङ्क अवगत कर अपने नगरके ध्रुवाङ्कमें दिशाका ध्रुवाङ्क जोडकर इस योगफलमे अश्विन्यादिसे गिनकर शनि नक्षत्र सख्याको जोड देनेसे जो योगफल आवे उसमें नौका भाग देनेसे एकादि शेपमे वर्तमान सवत्सरके राजासे विंशोत्तरी दशा-क्रमसे फल ज्ञात करना चाहिए। यहाँ शनि नक्षत्र सख्याको जोड देनेका कारण यह हैं कि सवत्सर पर शनिका प्रभाव विशेष पडता है। वर्षा, सुभिक्ष, उत्पात, व्यापार, रोग, आकस्मिक भय आदिका सम्बन्ध शनि और बृहस्पतिसे अधिक है। वर्तमान सवत्सरका स्वामी बृहस्पतिसे सम्बन्ध रखता है। पर गुरु नक्षत्रको जोडा नही जाता। क्योकि भावी फलादेशके लिए शनि नक्षत्र की अपेक्षा अधिक रहती है। यदि उदाहरणार्थ आरामें वि० स० २०२७ में वर्षा, सुभिक्ष एव रोगादि की स्थिति ज्ञात करनी हो तो आराका दिशा ध्रुवाङ्क एक सौ तिरेपन, देश ध्रुवाङ्क नौ है। शनि 'भरणी' नक्षत्रमे है। अत अश्विनीसे गिनने पर दो सख्या आई। अतएव, १५३ + ९ + २ = १६४ – ९ = १८ भागफल और शेप ७। सवत्सिराधिपति भौम है। अत भौमसे विंशोत्तरी दशा के अनुसार गणना की तो राहु की दशा आई। इस दशाके अनुसार, वर्षाकी कमी एव धन-सम्पत्ति आदिका विनाश आता है। तथा प्रजाको नाना प्रकारके कष्ट भी सहन करने पडते हैं। चौपायोको सुख रहता हैं, तृणकी उत्पत्ति अधिक रहती है। व्यापारियोको कष्ट होता है। चोर और लुटेरोका उपद्रव अधिक बढता है। इस प्रकार इस ग्रन्थमें प्रत्येक नगर और ग्रामका फलादेश निकाला गया हैं, जो ज्योतिपके विषयकी दृष्टिसे पर्याप्त उपयोगी और अनुभूत है।

वर्ण्य-विषय—इस ग्रन्थमे तीस गाथाएँ हैं। प्रथम गाथामें आदि-जिनेन्द्रको नमस्कार कर 'लोक-विजय-यन्त्र'के वर्णन करनेकी प्रतिज्ञा की है। द्वितीय गाथामें ऋपिभेश्वर स्वामीके पारणा-समयसे गणित करके दिशा-विदिशाओमें स्थापित किए जाने वाले ध्रुवाङ्कोके कथनका सकल्प किया है। तृतीय गाथामें लोक-विजय-यन्त्रके निर्माणमें सहायक ध्रुवाङ्क पठित किए गए हैं। ध्रुवाङ्कोके क्रममें दिशाङ्क और देशाङ्क दोनो ही प्रकारके ध्रुवाङ्कोकी सख्या निर्धारित की गई है। अत. इस ग्रन्थकी तीसरी गाथा विशेप महत्वपूर्ण है और यही इस ग्रन्थका प्राण-तत्त्व है। यन्त्र-निर्माणकी समग्र विधि भी इसी गाथामें प्रतिपादित है। चौथी गाथामें यन्त्रसे फलादेश निकालनेकी विधिका निरूपण किया गया है। तथा विंशोत्तरी दशाक्रमानुसार देश और नगर के फलादेशका प्रतिपादन किया गया है। इस गाथामें बताया है कि लोक-विजय यन्त्रमें पठित देश और दिशाके ध्रुवाङ्कोमें अश्विनी आदि जिस नक्षत्र पर शनि हो उतनी सख्या जोडकर योगफलमें ९ का भाग देने

पर जो शेष रहे उसे वर्तमान सवत्सरके राजासे आरम्भ कर विंशोत्तरी दशा-क्रमसे गणना करने पर देश और नगरके विंशोत्तरी दशा आती हैं। इस दशाके अनुरूप ही शुभाशुभ फल, वृष्टि, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, आदि का निरूपण किया जाता है।

पञ्चम गाथामें ग्राम और नगरके ध्रुवाङ्क निकालनेकी विधि प्रतिपादित है। बताया है कि जो-जो अङ्क जिस-जिस देशके हैं वे ही उस देशके अन्तर्गत ग्राम और नगरके ध्रुवाङ्क समझने चाहिए। इन ध्रुवाङ्कोंके द्वारा ही गणितज्ञ विद्वान् सूर्यादि ग्रहोका फल अवगत करते हैं। इस पाँचवी गाथाका प्रमुख वर्ण्य-विषय ग्राम और नगरके ध्रुवाङ्क निकालना है। साधारणत जिस देशका जो दिशाङ्क और देशाङ्क होता है वह देशाङ्क ही नगराङ्क हो जाता है। पाँचवी गाथा के विवेचन में हमने सभी देशों के दिशाङ्क, देशाङ्क और नगराङ्क अङ्कित किए हैं। हमारा विश्वास है कि ध्रुवाङ्कबोधक सारणीसे किसी भी ग्राम या नगरका ध्रुवाङ्क जाना जा सकता है।

छठवी और सातवी गाथामें जिस-जिस देशके नगर, ग्राम, पर्वत, स्थान आदिके ध्रुवाङ्क उपलब्ध न हो उस-उस देशके ग्राम, नगरादिका जो नाम हो उस नामके नक्षत्रकी सख्यामें ११ जोडकर ९ का भाग देनेसे एकादि-शेषरूप ध्रुवाङ्कका प्रमाण आता है। नगर, ग्रामादिका ध्रुवाङ्क बनाकर चौथी और पाँचवी गाथाके अनुसार-विंशोत्तरी दशाका आनयन कर फलादेश अवगत करना चाहिए।

दशा-क्रममें महादशा, अन्तर-दशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म-दशा, और प्राण दशाका आनयन कर उनके शुभा-शुभानुसार ही फलादेश ज्ञात करना चाहिए। महादशाका फलादेश वर्ष भरके लिए रहता है पर अन्तर दशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म-दशा और प्राण-दशाका फलादेश निश्चित समयके लिए ही होता है। लोक विजय-यन्त्रकी मूल गाथाओमें इन पाँचो प्रकारकी दशाओकी आनयन-विधि प्रतिपादित होनेपर भी इस ग्रन्थके विवेचनमें उसका समावेश किया गया है।

आठवी गाथामें लोक-विजय-यन्त्रका प्रयोजन वर्णित है। अति-वृष्टि, अनावृष्टि, स्वदेशकी स्थिति, राष्ट्रोके साथ सम्बन्ध, रोग-शोकका भय, धान्यकी उत्पत्ति और विनाश, राजाको कष्ट एव सेनामें उपद्रव आदि बातोका परिज्ञान वर्णित है। ईति-भीति आदि सात प्रकारका भय बताया गया है। अति-वृष्टि, अनावृष्टि, स्वचक्र, परचक्र, टिड्डी-मूषक, और तोता आदि पक्षियों द्वारा फसलको हानि पहुँचाना, फसलमें रोगोका उत्पन्न होना, कीडोका फसलको नष्ट करना, आदि फलादेश साकेतिक रूपमें वर्णित हैं। इस गाथामें फसलको हानि पहुँचाने वाले सभी साधन ईति-भीतिमें परिगणित हैं। देशमें सुभिक्ष, शान्ति-सुख उपद्रव, विद्रोह, व्याघात, आन्तरिक और वाह्य सघर्ष, शासनकी सुव्यवस्था, आवश्यक वस्तुओके मूल्य, उनका सद्भाव और अभाव, शीत, उष्ण, आतप, ओला, बादल, बिजली, महामारी, युद्ध, शत्रु आक्रमण, नेताओकी स्थिति, शिक्षा-साहित्यकी स्थिति, कलाकी स्थिति, प्रभृति बातोका परिज्ञान, दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म और प्राणदशाके आधारपर ही किया जाता हैं। इस प्रकार इस आठवी गाथामे दशा, महादशा आदिके अनुसार शुभाशुभ फलादेशोका कथन किया गया है।

नवमी गाथामें भी फलादेशका ही वर्णन है। इस वर्णनमें पूर्वकी अपेक्षा यह विशेष बात बतलाई गई है कि सवत्सरके अधिपतिसे लेकर ही ध्रुवाङ्क, योगफलके अनुसार, दशाकी गणना की जाती है। यदि वर्षान्त तक शनि एक ही नक्षत्रमें निवास करता है तो फलादेशमें कोई परिवर्तन नही आता। शनि नक्षत्रके परिवर्तित होते ही फलादेशमें भी परिवर्तन हो जाता है। शनि नक्षत्रका सम्बन्ध सवत्सरके फलके साथ विशेष रूपसे रहता है। अत लोक-विजय-यन्त्रमें शनि नक्षत्रको ही मुख्यता दी गई है। यो तो गुरु नक्षत्रका सम्बन्ध भी

सवत्सरके साथ कम नही है। क्योकि वृहस्पतिके वर्षसे ही सवत्सरका रूप निर्धारित किया जाता है। किन्तु लोक-विजय यन्त्रकी इस गाथाकी दृष्टिमें शनि नक्षत्रका ही सर्वाधिक महत्त्व स्वीकार किया गया है। इस प्रकार इस नवमी गाथा द्वारा विशोत्तरी दशा निकाल कर वृष्टि, अति-वृष्टि, अनावृष्टि एव धान्योत्पत्तिके भविष्यको ज्ञात करना चाहिए।

दशमी गाथामें सूर्य दशाके अनुसार जनताके आरोग्य लाभ, धान्य-विशेषकी उत्पत्ति, राजाओमें तेजस्विता, अश्व-उत्पत्ति एव प्रजामें भय उत्पन्न होनेका वर्णन आया है। इस गाथामें सूर्यकी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा एव प्राणदशाके क्रमसे कृषि, उद्योग तथा वाणिज्यके विकासका वर्णन किया गया है।

लोक-विजययन्त्रमें वर्णित सूर्य दशाका राष्ट्रीय फलादेश पाराशरके फलादेशसे भिन्न है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि पाराशरने सूर्यकी दशामें वैयक्तिक सुख-दु:खादि फलादेशोका विवेचन किया है। किन्तु, लोक-विजययन्त्रकारकी दृष्टि राष्ट्र और समाजके भविष्य फलकी ओर है। अतएव इस दशवी गाथामें राष्ट्रीय कार्यक्रमोकी पूर्ति या अपूर्तिका विचार किया गया है। सामान्यत सूर्यकी महादशामें राष्ट्रकी समृद्धि होती है। समयपर यथेष्ट वर्षा एव प्रचुर परिमाणमें धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है। जिस नगर, ग्राम या प्रदेशमें सूर्यकी दशाका फल घटित होता है, वह नगर, ग्राम या प्रदेश सभी प्रकारसे उन्नति करता है। सूर्यकी महादशामें सूर्यकी अन्तर्दशा रहनेपर साधारण वर्षा, देशमें अनैक्य, नेताओमे मतभेद, नेत्र-पीडा, वडे-वडे कार्यक्रमोमें असफलता, खनिज पदार्थोकी उत्पत्तिमें कमी तथा गेहूँ, गुड, रूई आदि वस्तुओके उत्पादनमें भी कमी आती है। सूर्यकी प्रत्यन्तर्दशा शिक्षा व्यवसाय एव नवीन कार्योके सम्पन्न करनेमें विशेष सहायक होती है। सूर्यकी सूक्ष्म दशामें देशमें सुख-शान्ति, सभी प्रकारके धान्योकी उत्पत्ति एव आम्र, जामुन आदि फलोकी फसल अच्छे रूपमें आती है। शिल्प और स्थापत्यकी उन्नतिके लिए भी यह दशा सहायक होती है। सूर्यकी प्राणदशामें यथेष्ट वर्षा और कृषि सम्वन्धी कार्योमें विशेष प्रगति होती है। पाट, सन और रेशमी वस्त्रोके उद्योगमे शिथिलता आती है। मवेशियोको नाना प्रकारके कष्ट उठाने पडते है तथा उनका मूल्य भी वढ जाता है। दुग्ध घृत एव अन्य रसोकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाणमें होती है। सूर्यकी प्राण दशामें मवेशियोंके वीच रोग फैलता है और कृषिमें कीडे लगते है।

सूर्यकी महादशामें चन्द्र, मङ्गल, राहु, गुरु, शनि, वुध केतु एव शुक्रकी दशाओंके सम्वन्धानुसार वर्षा, कृषि-विकास, धान्योत्पत्ति, मवेशियोकी सुख-समृद्धि, शिक्षा-व्यवसाय, महामारी आदिका विचार किया जाता है। इस विचारका विस्तार इस गाथाके विवेचनमें अङ्कित है।

ग्यारहवी गाथामे ग्राम, नगर, मण्डल, प्रदेश एव राष्ट्रके लिए चन्द्रदशाका फल निरूपित किया गया है। चन्द्रमाकी दशामें मनुष्य और तिर्यञ्चोको आरोग्य लाभ होता है। धन और सुखकी वृद्धि होती है। जलकी वर्षा कम होनेपर भी घासकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाणमें होती है। तथा पृथ्वीमें अमृतरसका सञ्चार होता है। इस गाथामें देश एव प्रान्तके विकासके हेतु क्रान्ति तथा जनान्दोलनका भी विचार किया गया है। सामूहिक नैतिकता, उद्योग, व्यापार एव राष्ट्रहितके लिए सम्पादित किये जानेवाले कार्योका भी विचार किया गया है। यहाँ यह स्मरणीय है कि देश और नगरके फलादेशके लिए जो दशा, अन्तदशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशा आती है वही वर्ष भरके लिए मानी जाती है। उसमें परिवर्तन समयके अनुसार नही होता। शनि नक्षत्रके परिवर्तित होनेपर वर्षके मध्यमें भी फलादेश परिवर्तित हो जाता है। दशाका विचार करते समय ग्रहस्थितिके प्रभाव और उनके राशि-सक्रमणका विचार करना भी आवश्यक है। दशाके फलमें हीनाधिकताका कारण ग्रहोका वक्री और मार्गी होना भी है। जब मंगल, शनि वक्री होते है तो अधिक वर्षा भी कम हो

जाती है, और फसलकी उत्पत्ति कम होती है तथा नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते है। बुध और शुक्रके वक्री होनेसे दशाके फलमें अधिक तारतम्य आता है और देश, ग्राम एव नगरमे सुख-समृद्धि उत्पन्न होती है।

प्रस्तुत गाथामें चन्द्रमाकी पांचो प्रकारकी दशाओका फलादेश तो आया ही है साथ ही उसके साथ अन्य ग्रहोकी दशाओंके सयोगसे विभिन्न प्रकारके फलोका विवेचन किया गया है। भूकम्प, महामारी, पारस्परिक कलह, आकस्मिक घटनाएँ, शासन, व्यवस्था, आदिका विचार भी दशानुसार किया गया है।

वारहवी गाथामें देश, नगर, ग्राम एव राष्ट्रके लिए मगल दशाका विचार किया गया है। मगलकी दशामें दुर्भिक्ष, शासनको कष्ट और हाथी, घोडे, प्रभृति वाहनोका विनाश होता है। प्राय अग्निकृत उपद्रव होते हैं। नेताओमें कलह होती है। शासन व्यवस्था अस्थिर रहती है और अनेक प्रकारके दु ख तथा भय उत्पन्न होते हैं। भौम (मगल) दशा देश या राष्ट्रके लिए अनिष्टकारी है। इसमें उपद्रव, उत्पात, दुर्भिक्ष, विद्रोह, सघर्ष, धन-धान्यका अभाव एव नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। इस दशामें अकाल, अवर्षा होनेसे फसलको क्षति उठानी पडती है। टिड्डी विशेष रूपमें आती है, फसलमें कीडे लगते है और नदी तटके देशोंमें वाढ आती है। मगल ग्रहकी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्म दशा और प्राण दशा ये सभी अनिष्टकारी हैं। मगलदशाका विचार करते समय शनि और मगलके सम्बन्धपर विचार कर लेना भी आवश्यक होता है। यदि शनि और मगल एक ही स्थानमें स्थिति हो या पूर्ण दृष्टिसे एक दूसरेको देखते हो अथवा दोनोमें त्रिकोण सम्बन्ध हो तो दशाफलमें अधिक अशुभत्व आता है। मगल मार्गी होकर शुक्र और बुधके साथ सम्बन्ध स्थापित करे तो देश या राष्ट्रके लिए शुभ फल होता है तथा मगलका अशुभत्व क्षीण हो जाता है। मगलका स्वगृही होना अथवा जलराशिमें मगलका स्थित होना भी शुभ होता है। देशमें खनिज पदार्थ, धान्य एव शाक सब्जियोकी विशेष उत्पत्ति होती है। मेवा और मशालोके व्यापारमें सामान्यत लाभ होता है। पशुओंमें रोग फैलता है और पशु धनकी हानि होती है।

सामान्यत मगलकी दशाएँ अनिष्टकर होती हैं। दुर्भिक्ष, अनावृष्टि, रोग, दु ख, शोक, ग्लानि और चिन्ता उत्पन्न होती है। स्वर्ण, ताम्र, लौह, पीतल और कांसा आदि धातुओकी उत्पत्ति विशेष रूपसे होती है। इस गाथामे लेखकने मगल दशाके फलादेशका विस्तारसे विवेचन किया है।

तेरहवी गाथामें राहु दशाका फल वर्णित है। राहुकी महादशा रहनेपर धन-सम्पदादि ऋद्धियोका विनाश होता है। नागरिकोको नाना प्रकारके कष्ट होते हैं। भूकम्प, उल्कापात, अतिवृष्टि या अनावृष्टि, पशुओका सहार एव विभिन्न प्रकारके रोगोकी उत्पत्ति होती है। मगल और राहुकी दशाएँ समान रूपसे राष्ट्रके लिए कष्टदायक हैं। पर मगलकी दशामें वर्षाके कम होनेपर भी फसलकी उत्पत्ति होती है और राहु दशामें वर्षाके अधिक होनेपर भी फसलकी उत्पत्ति अच्छी नही होती। अनीति, अत्याचार और पापकी वृद्धि राहुकी दशामें मगलकी अपेक्षा अधिक होती है। मगलकी प्रत्यन्तर्दशा कष्टकारक है। पर राहुकी प्रत्यन्तदशा साधारणत अच्छी होती है। श्रावण और भाद्रपदमें राहुकी प्रत्यन्तर्दशा होनेसे वर्षा अधिक होती है, पर मगलकी प्रत्यन्तर्दशामें ये दोनो महीने प्राय सूखे रह जाते हैं। व्यापार, उद्योग-धन्धे, शिक्षा आदिकी दृष्टिसे राहुकी दशा मगलसे अधिक अच्छी होती है।

चौदहवी गाथामें गुरु दशाका फल वर्णित है। जिस गाँव, नगर, प्रदेश या राष्ट्रमें गुरुकी दशा रहती है उस गाँव, नगर, प्रदेश और राष्ट्रमें वर्षा अच्छी होती है। धन-धान्यकी उत्पत्ति अधिक होती है। व्यापार, उद्योग एव कल-कारखानोका विकास होता है। पशु-सम्पत्ति वृद्धिगत होती है। गाय और भैंसे वहुत दूध देती हैं। रोग-शोक आदिका भय दूर हो जाता है।

गुरु दशाका विचार करते समय अन्य ग्रहोकी अन्तर, प्रत्यन्तर, सूक्ष्म और प्राणदशाका भी विचार कर लेना आवश्यक है। क्रूर-ग्रहकी महादशाके साथ गुरुकी अन्तर दशा देश-वासियोके लिए अच्छी नही होती। क्योकि इस दशामे नाना-प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। स्वास्थ्य नष्ट होता है। उपद्रव और उत्पात होते हैं। परस्पर कलह होता है। देशकी आर्थिक दशा विगड जाती है। शुभग्रहके साथ गुरु दशाका सयोग होनेसे वर्षा उचित परिमाणमे समयपर होती है। तथा फसल भी अच्छी उत्पन्न होती है। गेहूँ, चना और तिल-हनकी खेती अच्छे रूपमें सम्पन्न होती है।

शुभग्रहोकी महादशा और शुभग्रहोकी अन्तरदशामे गुरु की प्रत्यन्तर दशा देशके विकासके लिए वहुत ही अच्छी है। इस दशामें देशकी आर्थिक स्थिति, वहुत ही दृढ होती है। प्रजामे सुख और शान्ति व्याप्त रहती है।। शीत अधिक पडता है जिससे फसलको हानि होती है।

वृहस्पतिकी प्राण-दशामे देशमे सुख-शान्ति, समयपर वर्षा, उद्योगोका विकास और नेताओका सम्मान होता है। क्रूर ग्रहकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्म दशाके साथ गुरुकी प्राणदशा अशुभ-कारक होती है। इस दशामें देशमे उपद्रव, अशान्ति, मारकाट, सघर्ष, लूट-मार आदि होते है। देशकी आर्थिक स्थिति विषम हो जाती है। जिससे समस्त देशको कष्ट उठाना पडता है। अर्थाभावके कारण जनतामें अनेक प्रकारकी अनैतिकताएँ आ जाती है। देशका वातावरण क्षुब्ध रहता है और सभी कार्योंकी प्रगति रुक जाती है। शुभग्रहोकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्म दशाके साथ वृहस्पतिकी प्राणदशा देशकी उन्नतिके लिए सभी प्रकारसे अच्छी होती है। देशमें यथेष्ट वर्षा होनेके कारण फसल वहुत अच्छी उत्पन्न होती है।

इस प्रकार इस गाथामे वृहस्पतिकी दशाका फलादेश विभिन्न दृष्टिकोणोसे वर्णित किया गया है। यद्यपि गाथाका सामान्य अर्थ गुरु दशाके साधारण फलका विवेचन करना ही है। पर साकेतिक रूपमें अन्य ग्रहोके सम्वन्धके साथ गुरु दशाके फलका कथन भी प्राप्त होता है।

पन्द्रहवी गाथामें ग्राम, नगर, मण्डल, प्रदेश एव राष्ट्रके लिए शनि दशाके फलका विवेचन किया है। अति-वृष्टि, अनावृष्टि, व्यापारिक क्षति, धन-धान्यकी विशेष उत्पत्ति, भूकम्प, आकस्मिक भय, उपद्रव, आदि वातोपर शनि दशाकी दृष्टिसे विचार किया है। शनिकी महादशामें अल्प-वृष्टि होती है। और फसलका भी अभाव रहता है। वस्तुत शनि महादशामें देशमे भयकर उत्पात होता है। पडोसी देशोसे युद्ध होने की भी सभावना रहती है। प्रजाको नाना प्रकारका कष्ट उठाना पडता है। इस दशाके प्रारम्भ होते ही देशका वातावरण क्षुब्ध हो जाता है। और नाना प्रकारकी महामारियाँ व्याप्त हो जाती हैं। धन-जनकी हानि उठानी पडती है।

शनि दशाका विचार अन्य ग्रहोके सम्वन्धके साथ उसकी राशि स्थितिके आधारपर भी करना चाहिए। तुला राशिमें शनिके रहनेपर शनिकी दशा देश, समाज और राष्ट्रके अभ्युदयमें साधक वनती है। समयपर यथेष्ट परिमाणमें वर्षा होती है और गेहूँ, चना, जौ, मटर, वाजरा, उडद, मूँग, धान आदिके फसल वहुत अच्छे रूपमें उत्पन्न होती है। मेष राशिके शनिकी महादशामें उत्पात-उपद्रव और वज्रपात होते है। आकाश-में वादलोका गर्जन ही सुनाई पडता है वर्षण नही। वर्षा अभावके कारण सभीको कष्ट होता है। वृष राशिके शनिकी दशामें वज्रपात, ओला, आँधी, एव भयकर तूफान आते हैं। धान्योकी विशेष उत्पत्ति होनेपर भी उनका विनाश हो जाता है। आकस्मिक दुर्घटनाएँ विशेष रूपसे घटित होती हैं। मिथुन राशिके शनिकी दशा देशके धन-धान्यका विनाश करती है। पूर्व-दिशामें वर्षा कम होती है, पश्चिममें अधिक। उत्तर और

दक्षिणके निवासी सामान्यत सुखी और सम्पन्न रहते है । व्यापारियोको धनागम होता है । बेकारीकी समस्या सुलझनेकी अपेक्षा और अधिक उलझती जाती है ।

कर्क राशिके शनिकी दशामें यथेष्ट वर्षा होती है और प्रचुर परिमाणमें धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है । लोहा, जस्ता, तांबा, सोना, चाँदी आदि खनिज धातु पदार्थ अधिक रूपमें प्राप्त होते हैं तथा इन पदार्थोंका मूल्य भी घटता जाता है । देशके विकासके हेतु उद्योग-धन्धे भी बढते जाते हैं और अन्न-वस्त्रकी समस्या, जटिल होती जाती है । इसका प्रधान कारण यह है कि अच्छी फसलके उत्पन्न होने पर भी अन्नादि पदार्थ, दूसरे प्रदेशोमे भेज दिए जाते हैं जिससे खाद्य पदार्थोंकी सुलभता कम होती जाती है ।

सिंह राशिके सिंहकी दशामें देशमें वर्षा होती है । फसल भी अच्छी होती है परन्तु व्यापार उद्योग-धन्धोका विकास नही होता । अत देशकी उन्नति नही हो पाती । नेताओ और महान् व्यक्तियोमें विरोध बढता है । और अनैक्य एव फूट उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है । कन्या राशिके शनिकी महादशामें अति-वृष्टि या अनावृष्टि होती है । देशमें दुर्भिक्ष पडता है । बाढ आती है और महामारियाँ फैलती हैं । वृश्चिक राशिके शनिकी महादशामें सब प्रकारसे अशान्ति, दरिद्रता और विभिन्न प्रकारके कष्टोका सामना करना पडता है । हैजा, चेचक, एव प्लेग जैसी बीमारियाँ वृद्धिगत होती हैं । धनु राशिके शनिकी दशामें देशकी आर्थिक स्थिति बिगडती है । प्रारम्भमें वर्षा होती है पर अन्तमें वर्षाका अभाव होनेसे धान्योत्पत्तिमें बाधा आती है ।

मकर और कुम्भ राशिके शनिकी दशाका फल तुलाके शनिकी दशाके समान ही होता है । समय-समयपर यथेष्ट रूपमें वर्षा होती जाती है । और फसल भी अच्छी उत्पन्न होती है । प्राकृतिक साधनोंका विकास होता है । खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति अधिक रूपमें होती है । लोहा, तांबा, और स्वर्ण इन तीनों धातुओंकी उत्पत्ति विशेष रूपसे होती है । मीन राशिके शनिकी दशामें देशकी अवस्था अत्यन्त दयनीय हो जाती है । आर्थिक सकटके साथ नाना-प्रकारकी बीमारियोका सामना करना पडता है । चोर, डाकू, और लुटेरोका उपद्रव विशेष रूपसे होता है । रोगोकी उत्पत्ति अधिक होती है । जीवन और जगत्की समस्याएँ जटिल हो जाती हैं । मीनका शनि यों भी कष्टकारक होता है तथा प्रजामें सभी प्रकारसे आतक उत्पन्न करता है ।

इस प्रकार इस गाथामें शनि दशाके फलादेशका विस्तारपूर्वक विचार किया है । जिस प्रकार शनि वैयक्तिक जीवनमें हानि पहुँचाता है अथवा अकल्पित रूपमें समृद्ध बनाता है, उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवनमें भी शनि उन्नति या अवनतिका सूचक होता है ।

सोलहवी गाथामें बुधदशाफल आया है । बुध वर्षा एव कृषिकी समृद्धिके लिए उत्तम है, परन्तु रोग, महामारी एव कलहका सूचक होनेसे राष्ट्र समृद्धिमें बाधक है । बुधदशाफलका निरूपण करते हुए बताया है कि इस दशामें बालक एव स्त्रियोकी मृत्यु अधिक होती है, लोगोंके धनका नाश होता है और अनेक प्रकारके रोगोकी उत्पत्ति होनेसे जनसंख्याका विनाश होता है । युद्धस्थानमें सुभटो और राजाओंका सहार भी होता है ।

राष्ट्रीय और सामाजिक जीवनके साथ अन्य ग्रहोंके समान बुधका भी महत्त्व है । बुधकी महादशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशा अन्य शुभाशुभ ग्रहोके सयोगसे इष्टानिष्ट फल प्रदान करती है । वस्तुत. बुधको राष्ट्रका धान्येश और रोगेश माना जाता है । जब उच्चराशि या स्वग्रही बुधकी दशा आती है, तो राष्ट्रमें सभी प्रकारके अनाज प्रचुर परिमाणमें उत्पन्न होते हैं । वर्षा आवश्यकतानुसार समयपर होती है । तृण—घास आदिकी उन्नति भी यथेष्ट परिमाणमें होती है । मवेशीको किसी प्रकारका कष्ट नही होता ।

जलवर्षा अधिक होनेके कारण तालाब, नदी और कुओमें अधिक जल सचित होता है । देशका वातावरण सुख-शान्तिमय बना रहता है, नेताओंमें परस्पर प्रेम और सहयोगकी भावना विकसित होती है ।

उद्योग-धन्धो और कल-कारखानोका निरन्तर विकास होता है। रूई, घी, चाँदी, खनिज पदार्थ आदिकी उत्पत्ति विशेष रूपसे होती है। आन्तरिक शान्ति रहनेसे पडोसी राज्योके साथ मेल-मिलाप बढता है। समुद्र, पर्वत और नदी तटोसे मूल्यवान् मणि-माणक्य प्राप्त होते हैं।

बुधदशाका फल बुधकी राशि स्थितिके अनुसार अवगत करनेसे राष्ट्रकी यथार्थ स्थितिका परिज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। मेषराशिके बुधकी महादशामें लाभ, धान्यकी उत्पत्ति, नारियो और बच्चोकी मृत्यु, पशुओमें नाना प्रकारके रोग एव राष्ट्रकी आर्थिक समृद्धि होती है। वृषराशिके बुधमें वर्षा अधिक होती है। तथा नदियोमे बाढ आती है, जिससे धन-जनकी हानि होती है। मिथुनराशिके बुधकी दशामें सुख-शान्तिके साथ व्यापारिक विकास होता है। देशका व्यापार समुद्र पारके देशोके साथ बढता है।

कर्क और सिंहराशिके बुधकी दशामें वर्षा कम होती है, पर फसल अच्छी उत्पन्न होती है। कृषिके लिए सिंचाईकी व्यवस्था की जाती है। राजनीतिक पार्टियोमे पारस्परिक विरोध बढता है और प्रदेशके शासन-में गडबडी उत्पन्न होती है। सत्ताधारियोके बीच पारस्परिक कलह उत्पन्न होता है। कन्या राशिके बुधकी दशामें देशमें सभी प्रकारकी सुव्यवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं। वर्षा प्रचुर परिमाणमें होती है और खेती कार्योंमें पूर्णतया उन्नति होती है। सुभिक्ष रहनेसे आर्थिक विकासके भी अवसर प्राप्त होते हैं। बुधकी दशामें बुधकी अन्तर और प्रत्यन्तर दशाएँ भी सुख शान्तिकी सूचक होती है। तुला और वृश्चिक राशिका बुध कृषिकार्यमें बाधक होता है धनुराशिके बुधकी दशा कल्याणकारक होती है। मकर और कुम्भ राशिका बुध अल्प-वृष्टिका सूचक है।

मीनराशिके बुधकी दशा उत्सव, धार्मिक अनुष्ठान एव सुभिक्षकी सूचना देती है। वस्तुत इस गाथा-में प्रतिपादित बुधकी दशामें अच्छी वर्षा होनेके कारण कृषिका विकास होता है। देशकी आर्थिक स्थिति सबल होती है। युद्ध या विग्रहके कार्योंमें शिथिलता आती है। विदेशोके साथ व्यापारिक और राजनीतिक सम्बन्ध सुदृढ होता है। सदाचार और सयमकी ओर देश और नगरवासियोका झुकाव होता है।

सत्रहवी गाथामें केतु दशाफल अङ्कित है। ज्योतिपशास्त्रमें केतु राष्ट्रका मस्तिस्क माना जाता है। लोकविजययन्त्रकारने भी इसका मस्तिष्कके रूपमें ही वर्णन किया है। व्यक्तिके शरीरमें विचार शक्ति और चिन्तन शक्तिके दृष्टिसे मस्तिष्कका जो स्थान है वही स्थान राष्ट्रके शरीरमें केतुका है। केतु वर्षा, कृषि एव आर्थिक समृद्धिके साथ राजनीतिक विचारधाराओका सूचक है। शासक और नेताओकी चिन्तन शक्तिका विचार केतुकी दशासे किया जाता है। जिस ग्राम, देश, नगर, राष्ट्रमें केतुकी दशा विद्यमान रहती है उस ग्राम देश नगर और राष्ट्रमें क्रान्ति उत्पन्न होती है। पुरानी रीतियाँ और विचार परम्पराएँ समाप्त हो जाती हैं और इनके स्थानपर नवीन विचार उत्पन्न होते हैं, जिससे देश या नगरका कल्याण होता है। विवेकी और सदाचारी शासकके आनेसे प्रजामे सन्तोष और शान्ति उत्पन्न होती है तथा देशका आर्थिक दृष्टिसे विकास और विस्तार होता है। व्यापारकी दृष्टिसे भी यह दशा अच्छी है। व्यापारियोको लाभ होता है। वर्षा अधिक होने के कारण फल, मेवे और अनाजकी उत्पत्ति विशेष रूपसे होती है। गन्नेकी फसल अच्छी मात्रामें उत्पन्न होने-से गुड और चीनीका उत्पादन विशेष रूपमें होता है।

रूई, कपास और सूतके व्यापारियोके लिए केतुकी दशा लाभप्रद है। कृषकोको सभी प्रकारकी समृ-द्धियाँ प्राप्त होती है। वर्षा पर्यन्त अच्छी वर्षा होनेके कारण धन-धान्यकी विशेष उत्पत्ति होती है। निश्चयत केतुके दशा धन-धान्यकी समृद्धिकी सूचक है।

राष्ट्रके अभ्युदय और विकासकी दृष्टिसे भी इस गाथामे फलका प्रतिपादन किया गया है। केतुकी

दशामें देशके कला-कौशलकी वृद्धि होती है। अन्य देशोमें प्रतिष्ठा वढती है और देशवासियोंको सभी प्रकार-से सुख और शान्ति प्राप्त होती है।

लोकविजययन्त्रकारने केतुकी पाँचो प्रकारकी दशाओका अन्य ग्रहोके सयोगसे फलादेशोकी तारत-म्यताका वर्णन किया है। यो तो केतुकी राशि स्थितिके अनुसार भी शुभाशुभ फलका विवेचन सङ्केत रूपमें इस गाथामे मिलता है। इस सङ्केतका स्पष्टीकरण विवेचनके अन्तर्गत किया गया है। अतएव उसे यहाँ पुनरा-वृत्ति करनेकी आवश्यकता नही है।

शुभ ग्रहकी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाके साथ केतुकी कोई भी दशा देशकी समृद्धिकी सूचक है। अन्य घी, तेल, दूध, वस्त्र आदिकी उत्पत्ति इस दशामें विशेष रूपसे होती है और कृषि विकासकी योजनाओका कार्यान्वियन किया जाता है अतएव देशकी समृद्धिकी सूचना उक्त दशासे प्राप्त होती है।

क्रूर ग्रहोंकी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशामें केतुकी कोई भी दशा देश-को हीन दशाका वोधक होती है। महामारीके कारण लाखो व्यक्तियोकी मृत्यु होती है। देशमें क्रान्तिकारी विचार वढते है और शासन-सूत्रमें परिवर्तन होता है। आन्तरिक कलहके कारण नवीन आर्थिक योजनाएँ सफल नही हो पाती। वस्तुओके भाव वढते है जिससे सर्वसाधारणको कष्ट होता है। देशमें आतङ्क व्याप्त रहता है और खीचातानीकी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऊन, रूई और चमडेका व्यापार विदेशोंके साथ वढता है। साधारणत मवेशियोको कष्ट होता है।

अठारहवी गाथामें शुक्र दशाका फल प्रतिपादित है। शुक्र राष्ट्र या देशके आचारका सूचक है। यो तो शुक्रसे वर्षा, धान्योत्पत्ति, व्यापार, उद्योग-धन्धे, कल-कारखाने एव वैज्ञानिक अनुसन्धान आदिका भी विचार किया गया है, पर विशेष रूपसे यह जनताके स्वास्थ्य एव सदाचारका ही सूचक है। जिस प्रदेशकी जनता स्वस्थ, सदाचारी और सयमी होगी उस देश या राष्ट्रकी जनता ऐहिक सुखोका भी उपभोग कर सकेगी। अतएव विंशोत्तरी दशा क्रममें शुक्रकी दशा देशवासियोके आचरणपर प्रकाश डालती है।

शुक्र दशामें शासकोकी कीर्ति दिग्दिगन्तमें व्याप्त हो जाती है। धन-धान्यकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाण-में होती है। यथेष्ट वर्षा समयपर होती है तथा देशका समुचित विकास होता है। फसल वहुत अच्छी उत्पन्न होती है जिससे प्रजाको सव प्रकारसे सुख प्राप्त होता है। आर्थिक दृष्टिसे जनता सुखी रहती है। विदेशोंके साथ मधुर सम्बन्धका विकास होता है। परराष्ट्र नीतिमें अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। उत्सव, मङ्गल, नृत्य एव गान निरन्तर होते रहते हैं। वैज्ञानिक अनुसन्धानके साथ नवीन कल-कारखानोकी स्थापना, देशकी भौगो-लिक सीमाओमें सशोधन और परिवर्धन एव अन्य देशोमें देशका महत्त्व प्रकट होता है।

कुछ विद्वनोने शुक्रको रसेश माना है। अतएव वे शुक्रकी दशासे राष्ट्रके घृत, दुग्ध, दधि, मधु आदि-का विचार करते हैं। रसेश होनेके कारण ही शुक्रसे वर्षा, फसलोकी उत्पत्ति एव देशकी आन्तरिक आर्थिक स्थितिका भी विचार करते हैं। शुक्र उच्च और स्वराशिका होनेपर देशकी सभी प्रकारसे समृद्धियोकी सूचना देता है और वर्षके वारह महीनोमेंसे किस महीनेमें खाद्य सामग्रीकी कैसी स्थिति रहेगी, इसपर भी प्रकाश डालता है। अन्नकी उत्पत्तिके साथ तृणकी उत्पत्तिका परिज्ञान भी शुक्रकी दशासे किया जाता है।

लोकविजययन्त्रकारने शुक्रको मूलत चार वातोका सूचक माना है—

(i) राष्ट्रके आचरण और रहन-सहनका सूचक।
(ii) वर्षाके परिमाणका सूचक।

(iii) भौतिक समृद्धिका सूचक ।

(iv) नवीन योजनाओ और वैज्ञानिक अनुसन्धानोके कार्यान्वियनका सूचक ।

उन्नीसवी गाथामें विशेष रूपसे ग्रहोके स्वरूप स्वभाव और गुणोके अनुसार देश और राष्ट्रके फलका विचार किया गया है। मङ्गल, राहु और शनिकी गणना क्रूर ग्रहोमें कर इनसे स्वराष्ट्रभय एव परराष्ट्रके साथ घटित होनेवाले सम्बन्धोका विचार किया गया है। मङ्गल वक्री होनेपर विशेष रूपसे आन्तरिक अशान्तिकी सूचना देता है। मङ्गलके पांच वक्र माने गये है—

(१) उष्ण—अनावृष्टि द्योतक

(२) शोषमुख—अल्पवर्षा सूचक

(३) व्याल—कृषिमें रोगोत्पादक

(४) लोहित—ओला या पाला सूचक

(५) लोहमुद्गर—युद्ध और कलह सूचक

वराही सहितामें लोहितको रुधिरानन और लोहमुद्गरको असिमुसल कहा गया है। मङ्गल, कृतिकादि सात नक्षत्रोमे गमन करनेपर राष्ट्रको कष्ट, मघादि सात नक्षत्रोंमें विचरण करनेपर भय, अनुराधादि सात नक्षत्रोंमें विचरण करनेपर अनीति और धनिष्ठादि सात नक्षत्रोमे विचरण करनेपर निन्दित फल होता है। रोहिणी, श्रवण, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद और ज्येष्ठा नक्षत्रमे मङ्गल विचरण करता हो तो वर्षाका अभाव रहता है एव श्रवण, मघा, पुनर्वसु, मूल, हस्त, पूर्वाभाद्रपद, अश्विनी, विशाखा और रोहिणी नक्षत्रमें विचरण करे तो शुभ फल होता है। मङ्गलके चार, प्रवास वर्ण, दीप्ति, काष्ठा, गति, फल, वक्र और अनुवक्रके अनुसार भी फल प्रतिपादित किया जाता है।

राहुका विचार करते समय श्वेत, सम, पीत और कृष्ण वर्णका विचार करना आवश्यक है। हरे रगका राहु रोग सूचक, कपिल वर्णका दुर्भिक्ष सूचक, अरुण वर्णका अनावृष्टि सूचक, कपोत और कपिल वर्णका भय सूचक, पीत वर्णका व्यापारियोका विनाश सूचक, दूर्वादल या हल्दीके समान वर्ण वाला राहु महामारी सूचक एव रक्तिमवर्णका राहु क्षत्रिय नाश सूचक होता है। लोकविजययन्त्रकारने राहुको क्रूर ग्रह मानकर उसके वर्णके अनुसार शुभाशुभका विचार किया है।

प्रस्तुत गाथाके अनुसार तृतीय अशुभ ग्रह शनि है। शनि जातकके समान ही राष्ट्रको भी कष्ट प्रदान करता है। शनिके उदय, अस्त, आरूढ, क्षत्र, दीप्त आदि अवस्थाओके अनुसार फलोका कथन प्राप्त होता है। श्रवण, स्वाति, हस्त, आर्द्रा, भरणी और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें शनि स्थित हो तो पृथ्वीपर जलकी वर्षा होती है तथा वस्तुओके भावोमें समर्घता पायी जाती है। अश्विनी नक्षत्रमें शनिके विचरण करनेसे अश्वारोही, कवि, वैद्य और मन्त्रियोको हानि उठानी पडती है। ग्रन्थकारने शनिके रङ्ग, अस्तोदय, परिवेप, एव नक्षत्रानुसार वर्षाका विचार किया है।

बीसवी गाथामे क्रूर और शुभग्रहोका फलादेश वर्णित है। क्रूर-ग्रहोकी दशामें राष्ट्रको कष्ट होता है और शुभग्रहकी दशामे राष्ट्रमें सुख शान्ति व्याप्त रहती है। इसी गाथामे तीन प्रकारकी दृष्टियोका भी विवेचन आया है। सम्मुख, दक्षिण और वाम ये तीन दृष्टियाँ है। सम्मुख दृष्टि पूर्वसे पश्चिम और पश्चिमसे पूर्वको होती है। तथा उत्तरसे दक्षिण एव दक्षिणसे उत्तर भी सम्मुख-दृष्टि मानी जाती है। पूर्वसे उत्तर, उत्तरसे पश्चिम, पश्चिमसे दक्षिण और दक्षिणसे पूर्वकी ओर दक्षिण दृष्टि मानी जाती है। पूर्वसे दक्षिण, दक्षिणसे पश्चिम, पश्चिमसे उत्तर, और उत्तरसे पूर्व, वाम दृष्टि मानी जाती है। इस ग्रह-दृष्टिका नाम ही वेध है। देश, काल और वस्तु इन तीनोमें ग्रह-वेध द्वारा शुभाशुभ फलका ज्ञान करना चाहिए।

उक्त गाथामें क्रूर और शुभग्रहोंकी दृष्टि युद्ध एवं युतिका फल भी संकेतित है। ज्योतिषमें ग्रह-युद्ध-के चार भेद हैं—भेद, उल्लेख, अंशुमर्दन और अपसव्य। भेद युद्धमें वर्षाका नाश, सुहृद और कुलीनोंमें भेद होता है। उल्लेख युद्धमें शस्त्रभय, मन्त्र-विरोध और दुर्भिक्ष होता है। अंशुमर्दन युद्धमें राजाओंमें युद्ध, शस्त्र, रोग, भूखसे पीडा और अवमर्दन होता है। तथा अपसव्य युद्धमें राजाओंका युद्ध होता है। सूर्य दोप-हरमें आक्रन्द होता है। पूर्वाह्णमें पौरग्रह तथा अपराह्णमें यायी ग्रह आक्रन्द संज्ञक होते हैं। बुध, गुरु और शनि, ये सदा पौर हैं। चन्द्रमा नित्य आक्रन्द है। केतु, मङ्गल, राहु और शुक्र यायी हैं। इन ग्रहोंके हत होनेसे आक्रन्द, यायी और पौर क्रमानुसार नाशको प्राप्त होते हैं। जयी होनेपर स्ववर्गको जय प्राप्त होता है। पौर ग्रहसे पौर-ग्रहके टकरानेसे पुरवासीगण और पौर-राजाओंका विनाश होता है। इस प्रकार यायी और आक्रन्द ग्रह या पौर और यायी ग्रह परस्पर हत होनेपर अपने-अपने अधिकारियोंको नष्ट कर देते हैं। जो ग्रह दक्षिण दिशामें रूखा, कम्पायमान, टेढ़ा, क्षुद्र और किसी ग्रहसे आच्छादित हुआ विकराल प्रभावहीन और विवर्ण दिखलाई पड़ता है वह पराजित कहलाता है। इससे विपरीत लक्षण वाला ग्रह जयी कहलाता है। वर्षाकालमें सूर्यसे आगे मंगलके रहनेसे अनावृष्टि, शुक्रके आगे रहनेसे वर्षा, गुरुके आगे रहनेसे गर्मी और बुधके आगे रहनेसे वायु चलती है। सूर्य-मंगल, शनि-मंगल और गुरु-मंगलके संयोगसे वर्षाका अभाव रहता है। बुध-शुक्र और गुरु बुधका योग वर्षाकारक है। क्रूर ग्रहोंसे अदृष्ट-और अयुत, बुध एवं शुक्र एक राशिमें स्थित हो और उन्हें वृहस्पति भी देखता हो तो अधिक वर्षा होती है। क्रूर ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत, बुध और वृहस्पति एक राशिमें स्थित हो और शुक्र उन्हें देखता हो तो अच्छी वर्षा होती है। क्रूर-ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत गुरु और शुक्र एकत्र स्थित हो और शुक्र उन्हें देखता हो तो समयानुसार यथेष्ट वर्षा होती है। शुक्र और चन्द्रमा, अथवा मंगल और चन्द्रमा यदि एक राशिपर स्थित हो तो सर्वत्र वर्षा होती है और फसल भी उत्तम होती है। सूर्यके सहित वृहस्पति यदि एक राशिपर स्थित हो तो जब तक वह अस्त न हो जाय तब तक वर्षाका योग समझना चाहिए।

शनि और मंगलका एक राशिपर स्थित रहना महावृत्तिका सूचक है। इस योगके होनेसे दो महीने तक वर्षा होती है। पश्चात् वर्षा में रुकावट उत्पन्न होती है। सम्यक्-ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत शनि एवं मंगल यदि एक स्थानपर स्थित हो तो वायुका प्रकोप तथा अग्निका भय होता है। एक राशि या एक ही नक्षत्रपर राहु मंगल स्थित हो तो वर्षाका नाश होता है। गुरु और शुक्र यदि एकत्र स्थित हो तो असमयमें वर्षा होती है। सूर्यसे आगे शुक्र या बुध जाएँ तो वर्षाकालमें निरन्तर वर्षा होती रहती है। मंगलके आगे सूर्यकी गति हो तो वर्षा अच्छी होती है। पर सूर्यसे आगे मंगल हो तो वर्षाका अभाव हो जाता है।

वृहस्पतिके आगे शुक्र हो तो अवश्य वर्षा होती है। किन्तु शुक्रके आगे वृहस्पति हो तो वर्षाका अव-रोध होता है। बुधके आगे शुक्रके होनेसे महावृष्टि और शुक्रके आगे बुधके होनेसे अल्प-वृष्टि होती है। यदि दोनोंके मध्यमें सूर्य या अन्य ग्रह आ जाएँ तो वर्षा नहीं होती। अनिश्चित मार्गसे गमन करता हुआ बुध यदि शुक्रको छोड़ दे तो सात दिन या पाँच दिन तक लगातार वर्षा होती है। उदय या अस्त होता हुआ बुध यदि शुक्रसे आगे चला जाय तो शीघ्र ही वर्षा होती है। जल-नाडियोंमें आनेपर और अधिक वर्षाके होनेकी सम्भा-वना रहती है।

बुध, वृहस्पति और शुक्र ये तीनों ग्रह एक ही राशिपर स्थित हों और क्रूर-ग्रहोंसे अदृष्ट और अयुत हों तो इन्हें महवृष्टि करनेवाला समझना चाहिए। शनि, मंगल और शुक्र तीनों ग्रह एक राशिपर स्थित हो और गुरु इन्हें देखता हो तो निसन्देह वर्षा होती है। सूर्य, शुक्र और बुधके एक राशिपर स्थित होनेसे अल्पवृष्टि होती है। सूर्य, शुक्र और वृहस्पतिके एक राशिपर रहनेसे अति-वृष्टि होती है। शनि, शुक्र और

मगल, एकत्र स्थिति हो और गुरुकी उनपर दृष्टि हो तो साधारण वर्षा होती है । शनि, राहु और मगल, इन तीनोंके एक राशिपर स्थित रहनेसे ओलोंके साथ वर्षा होती है । सभी ग्रह एक ही राशिपर स्थित हो तो दुर्भिक्ष, अवर्षा और रोगके कारण कष्ट होता है । शुक्र, मगल, शनि और वृहस्पतिके एक स्थानपर स्थित होनेसे वर्षाका अभाव होता है और अन्न महँगा होता है । इस योगके रहनेसे विहार, आसाम, उडीसा, पूर्व-पाकिस्तान, वगाल आदि पूर्वीय प्रदेशोमें फसलकी उत्पत्ति स्वल्प मात्रामे होती है । और पजाव, दिल्ली, राजस्थान एव हिमाचल प्रदेशकी सरकारोके मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन होता है । इटली, ईरान, अरव, मिश्र, इत्यादि मुस्लिम राष्ट्रोमें भी खाद्यान्नोकी कमी होती है । और उक्त राष्ट्रोकी आर्थिक और राजनैतिक स्थिति भी विगडती जाती है । मगल, शुक्र, शनि और राहु यदि ये ग्रह एक राशिपर स्थित हो तो वर्षाका अभाव और दुर्भिक्ष होता है । मगल, वृहस्पति, और शुक्र और शनिके एक राशिपर स्थित रहनेसे अल्प-वृष्टि या वर्षाभाव की सूचना मिलती है । कागज, कपडा, रेशम और चीनीके व्यवसायमें घाटा होता है ।

भद्रवाहुसहिताकारने चार या पाँच गहोको एक साथ अवस्थितिको वर्षाभावका सूचक वताया है । सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि और राहुके एक साथ स्थित रहनेसे वर्षाभाव तो होता ही है साथ ही हैजा, प्लेग, जैसी संक्रामक वीमारियाँ भी फैलती है, गृह-युद्ध होता है और देशके प्रत्येक भागमें अशान्ति रहती है । इस प्रकार लोक-विजय यन्त्रकारने वीसवी गाथामें उक्त फलादेशका सकेत उपस्थित किया है ।

इक्कीसवी और वाईसवी गाथाओमे सूर्य, चन्द्र, मगल और बुधकी दृष्टियोका फल वताया गया है । जिस ग्रह-युद्ध और वेधका पूर्वमें सकेत किया है उसका स्पष्टीकरण इन दोनो गाथाओमें प्राप्त होता है । सूर्य की सम्मुख-दृष्टि राजा-प्रजाके तेजको नष्ट करती है और उनमें सम्मोह उत्पन्न होता है । चन्द्रमाकी सम्मुख-दृष्टि शान्तिदायक होती है और मगलकी अग्नि, भय एव रोगोत्पादक होती है । इसी प्रकार बुध ग्रहकी दृष्टि धन-धान्यकी वृद्धि करती है और जनताको सुख-शान्ति प्रदान करती है । वृहस्पतिकी दृष्टि रहनेसे राज्य-कोप एव धन-धान्यकी वृद्धि होती है । जिस ग्राम, नक्षत्र या वस्तु नक्षत्रसे सूर्यका वेध होता है उस ग्रामके मुखियाकी शक्ति क्षीण हो जाती है और उसका पुरुषार्थ घटने लगता है । तथा उसके स्थानपर अन्य मुखियाका निर्वाचन होता है । यदि वस्तु-नक्षत्र सूर्यसे विद्ध हो तो वह वस्तु तेज होती है, उसका अभाव होता है । तथा उसके मूल्यमें अत्यधिक वृद्धि होती है । जो व्यापारी सूर्यके विद्ध नक्षत्र नामवाली वस्तुओका सचय करते हैं वे उन वस्तुओंसे लाभ उठाते है । सूर्य विद्ध, नगर या ग्रामके निवासियोको कष्ट भोगना पडता है तथा उन्हें अनेक प्रकारका कष्ट होता है ।

इसी प्रकार चन्द्रवेध, भौमवेध और शनिवेधका भी विचार किया जाता है । तेईसवी गाथामें शुक्र और शनिवेधके फलका निरूपण किया गया है । शुक्रके वेधमें राजा-प्रजाकी उन्नति, सर्वांगीण विकास, जन-सामान्यको आनन्द एव सुख प्राप्त होते हैं । शनिके वेधमें मनुष्य और पशुओको कष्ट, भयकर दुर्भिक्ष और भयकर दुष्काल पड़ता है । शुक्र-वेध, ग्राम, नगर, देश और राष्ट्रके लिए सुखकारक होता है । इसमें यथेष्ट वर्षा, धन-धान्यकी उत्पत्ति, देशके निवासियोको सुख-शान्ति एव भौतिक सुखोकी प्राप्ति होती है । उच्चराशि के शुक्रके वेधमे समयानुसार यथेष्ट वर्षा तो होती ही है पर देशका 'प्रभुत्व भी बढता है, विदेशोंमें सम्मान प्राप्त होता है तथा राजनैतिक समस्याओका समाधान भी सहजमें हो जाता है । मूल त्रिकोणके शुक्रके वेधमें देशकी आर्थिक स्थिति विकसित होती है और भौतिक सुख-समृद्धि प्राप्त होती है । जब शुक्र दक्षिणकी ओर से वेध करता है उस समय देशमें सभी सुखके साधन अनायास उपलब्ध हो जाते है । आर्थिक स्थिति सवल होती है । तथा तृण और धान्यकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाणमें होती है । जिस ग्राम या नगरके नक्षत्रके साथ शुक्रका वेध होता है उस ग्राम अथवा नगरकी पूर्णतया उन्नति होती है । धन और मीनराशिके शुक्रके वेधमें

देशका आर्थिक विकास होता है। तथा नवीन योजनाएँ कार्यान्वितकी जाती है। नीच राशिके शुक्रका वेध सभी प्रकारसे कष्टकारक होता है। उच्चराशिके शुक्रका वेध गुरुसे सयोग होनेपर हो तो समयपर यथेष्ट वर्षा, सुख-समृद्धि एव अधिकारोकी वृद्धि होती है।

शनिका वेध देशके लिए अच्छा नही होता। इसमे देशके मनुष्य और पशुओको अनेक प्रकारके रोग, उपद्रव और कष्ट उठाने पडते है। यह वेध जिस देश या नगरमें होता है उस नगरमे अवर्षण, अराजकता, असन्तोष और असहयोगकी भावना व्याप्त हो जाती है। देशके विकासके लिए शनिका वेध बाधक माना जाता है।

चौवीसवी गाथामें छ मासका फल और पच्चीसवी गाथामें मास नक्षत्रके फलादेशका वर्णन आया है। छ मासका विचार बडे विस्तारके साथ ज्योतिष ग्रन्थोमें मिलता है। किस महीनेकी कौन सी तिथि क्षीण होनेपर किस प्रकारका फलादेश देती है, इसका निरूपण इन गाथाओमें है। वास्तवमें किसी भी महीने की पूर्णिमाका क्षय अशुभसूचक माना गया है। आषाढी, माघी, वैशाखी और फाल्गुनी पूर्णिमाका क्षय होनेसे वर्षा-अभाव, फसलका विनाश एव नाना प्रकारके उपद्रवोका सामना करना पडता है। जिस वर्ष छ मास पडता है उस वर्ष देशमें दुर्भिक्ष, महँगाई, उपद्रव और अनेक प्रकारके सकट आते हैं। जिस महीनेमें दो सक्रान्तियाँ होती हैं उसमें छ मास होता है। और जिसमें सूर्य-सक्रान्ति नही होती वह अधिमास कहलाता है। छ मास कात्तिकादि तीन महीनोमें ही होता है। और जब कभी छ मास होता है उस समय वर्षमे दो अधिमास हो जाते हैं। जब कार्तिक छ मास होता है उस वर्षमें भयकर दुर्भिक्ष, अवर्षण, उत्पात, अराजकता और खण्ड-वृष्टि होती है। देशका व्यापार भी अवरुद्ध हो जाता है। मार्ग-शीर्ष छ मास होनेपर धन-धान्यकी कमी, अति-वृष्टि या अनावृष्टि, बाढ, फसलमें कीडोका लगना आदि फलादेश घटित होते हैं। पौष मासका छय होनेपर आन्तरिक कलह, फसलकी क्षति, उपद्रव एव शासकोका प्रभाव क्षीण होता है।

मास नक्षत्रके पूर्णिमाको आनेसे देशमें सुख-समृद्धि, व्यापारमें वृद्धि, जनतामें प्रेम और सहयोग, नर-नारियोंको आनन्द, पशुओको सुख व देशका आर्थिक विकास होता है।

लोक-विजययन्त्र का महत्व

लोक-विजययन्त्रका वर्ण्य-विषय सामाजिक जीवनके सुख-दु खका विश्लेषण करना एव सामाजिक और राष्ट्रीय जीवनके फलादेशका प्रतिपादन करना है। वर्षा, सुभिक्ष, रोग, महामारियाँ, पारस्परिक वैर-विरोध, परचक्रभय, औद्योगिक विकास आदिका विवेचन करना ही इस ग्रन्थका प्रधान लक्ष्य है। कुल तीस गाथाओंमें इतने विस्तृत विषयको सक्षिप्त रूपमें कथन करना, इस ग्रन्थकी बहुत बडी सफलता है। सहिताके व्यापक प्रमेयोको प्रामाणिकताके साथ सक्षेपमें प्रतिपादित कर देना एक सामान्य बात नही है। अत विषयके साङ्गोपाग विवेचनकी दृष्टिसे यह एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें ध्रुवाङ्को परसे फलादेशका विचार-विनिमय किया गया है।

ज्योतिष-शास्त्रमें हेतु या कारणोका वही स्थान है जो न्याय-शास्त्रमें हेतु या कारणोका है। जो हेतु जितना सबल और अन्यथानुपपन्नत्वसे युक्त होगा, वह हेतु उतना ही सबल और कार्यकारी माना जायगा। यही कारण है कि ज्योतिष-शास्त्र, गणित-प्रक्रियाका अवलम्बन लेकर हेतुओके अन्यथानुपपत्रत्वकी सिद्धि करता है।

हेतुको अव्यभिचारी होनेके लिए उसका अविनाभावित्व रहना आवश्यक माना जाता है। लोक-विजय-यन्त्रमें ग्राम, नगर, देश, राष्ट्र आदिके ध्रुवाक पठित हैं। और इन ध्रुवाको परसे वर्षा, सुभिक्ष, एव अन्य राष्ट्रीय सुखासुखका विचार किया जाता है।

इस ग्रन्थकी एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें पाराशर पद्धति द्वारा निर्णीत विंशोत्तरी दशाका समावेश भी किया गया है। विंशोत्तरी दशा द्वारा वैयक्तिक जीवनके उतार-चढावोका विश्लेषण करना ही प्रधान उद्देश्य माना गया है। लोक-विजययन्त्रकारने इस वैयक्तिक प्रक्रियाको सार्वजनीन बनानेका प्रयास किया है। फलत ध्रुवाकोके आधारपर वैयक्तिक जीवनके क्रमानुसार ही सामाजिक और राष्ट्रीय जीवनके शुभाशुभत्वका आनयन किया है। चिन्तन पद्धतिकी दृष्टिसे यह पहला ही प्रयास है, जिसमें वैयक्तिक जीवनका राष्ट्रीयकरण किया गया है। दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाओंका नवग्रहोके विभिन्न रूपोके सयोगीमर्गोके क्रमानुसार फलादेशका कथन किया है। वास्तवमें लोक-विजययन्त्रकारने विंशोत्तरी दशाको राष्ट्रीयदशाके रूपमें विवेचित कर ज्योतिष-ज्ञानके क्षेत्रमें एक नया ही चरण-चिह्न स्थापित किया है। जहाँ वर्षा और सुभिक्षका विवेचन ग्रहोके सयोगी-क्रम एव गोचर विधियो द्वारा किया जाता है वहाँ विंशो-त्तरीकी रुपान्तरित शैली ने एक नई दिशा ही उद्घाटित की है।

सहिता ग्रन्थोमें सामान्यत वर्षा, सुभिक्ष,दुर्भिक्ष, महामारी आदिका निरूपण पाया जाता है। इन ग्रन्थो में किसी दशा विशेषका अवलम्बन नही लिया गया है। दशाके अभाव में नगर, ग्राम, एव प्रदेशोमें कहाँ, किस प्रकारकी वर्षा होगी, फसल में रोग उत्पन्न होगे या नही, आदिका विचार विंशोत्तरी दशाके अव-लम्बनसे ही सम्भव है। राष्ट्रीय जीवनमें उत्पन्न होनेवाली विभिन्न समस्याओके समाधान भी विंशोत्तरी दशाके आलोकमें ही सम्भव हो सकते हैं। किसी निश्चित ग्राम या नगरमें सुभिक्षादि किस प्रकार सम्भव हैं इसका विचार विंशोत्तरी के आधारपर ही हो सकता है।

दिव्य-निमित्त, कार्य-कारणभाव सूचक निमित्त, अन्तरिक्ष-निमित्त, आदि निमित्तोसे जो फलादेश प्रति-पादित होता है, वह विंशोत्तरी दशाके तुल्य कभी नही हो सकता। यत निश्चित समय, निश्चित तिथि, निश्चित मास, आदिका ज्ञान विंशोत्तरी द्वारा ही सभव है। अतएव सहिता-स्कन्ध के निर्माताओने जिन बातो तत्त्वोका विवेचन केवल निमित्तप्रक्रियाके आधारपर किया है वह विवेचन पूर्णतया सत्य नही हो सकता। अतएव लोक-विजययन्त्रकारने राष्ट्रके प्रत्येक नगर और ग्रामके भविष्यका फल ध्रुवाको और विंशोत्तरी दशाके समन्वय द्वारा करके एक नई पद्धतिका प्रचलन किया है। यह पद्धति इस ग्रन्थके अतिरिक्त अन्यत्र कही भी उपलब्ध नही होती है।

वस्तुत हमारा यह देश कृषि प्रधान है। कृषिकी उन्नति और अवनतिसे ही देशकी उन्नति और अवनति मानी जाती है। अतएव ज्योतिष-शास्त्र और निमित्त-शास्त्रमें वर्षा और फसलका विचार करते हुए देशकी आर्थिक समृद्धि किस प्रकार सम्भव हो सकती है तथा कृषिकी उपजको किस प्रकार बढाया जा सकता है, का विवेचन भी इस ग्रन्थमें किया गया है। अथर्ववेदमे फसलोंके रोगोको दूर करनेके लिए जादू-टोनोका विचार किया है तथा फसलमें उत्पन्न होनेवाले विभिन्न रोगोंके निवारणके लिए औषधियो एव यन्त्रो-मन्त्रो एव वैज्ञानिक प्रक्रियाओका निरूपण भी किया गया है। अथर्ववेदके कृषिरोग निवारण सम्बन्धी विचार से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतमें कृषिके विकासको सर्वाधिक महत्व दिया गया था इसी कारण भारतके विचारक ज्योतिषियोने भी कृषिविद्याका विचार ज्योतिषकी शैलीमें किया है।

जब ज्योतिषके विषयका विस्तार हुआ और सभी ज्ञान-विज्ञान इसी विषयकी सीमामें समाविष्ट हो गए तो नए चिन्तक ज्योतिषियोने कृषि और राष्ट्रके फलादेशका विवेचन किया। लोक-विजययन्त्र ऐसा ही ग्रन्थ है जिसमें राष्ट्र और कृषिके शुभाशुभफलत्वका उपपत्यपूर्वक विवेचन किया है। इस यन्त्रकी सभी गाथाओमें कार्यकारणसम्बन्धी निष्पत्तियाँ अकित है। अत इसे कोरा अनुमानजन्य फलादेश नही कहा जा सकता है। सक्षेपमें इस ग्रन्थकी निम्निलिखित विशेपताएँ हैं—

१ निमित्तोंके स्थान पर ध्रुवाकोकी कल्पना।
२ देश, नगर और ग्रामोकी विंशोत्तरीदशाका विचार।
३ दशा और ध्रुवाकोका समन्वय तथा इस समन्वित पिण्ड-परम्परासे भविष्यकालका कथन।
४ सवत्सरके अधिपतिका विचार।
५ विभिन्न वस्तुओकी तेजी-मन्दीका विचार।
६ राजा-प्रजाकी शाति-व्यवस्थाका कथन।
७ ईति-भीतिका विस्तारपूर्वक निरूपण।

लोकविजययत्रकी भाषा एव शैली

लोकविजयन्त्रकी भापा सामान्य प्राकृत है, इसका स्वरूप किसी एक प्राकृत भापाके रूपमें निर्धारित नही किया जा सकता है। जैन शौरसेनी और जैन महाराष्ट्रीका मिश्रितरूप होनेके कारण इसे प्राचीन प्राकृत माना जा सकता है। इस ग्रन्थकी भापाकी प्रमुख विशेपताएँ निम्नलिखित हैं —

१ इस ग्रन्थकी प्राकृतकी मूल प्रकृति सस्कृत है। स्वरों में ऋ, ॠ, लृ, लॄ, ऐ, और औ स्वरोका अभाव है। मूल स्वर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, और ओ ये आठ स्वर ही पाये जाते हैं। प्राकृतके सामान्य नियमोंके अनुसार औ और ऐका अस्तित्व ओ और ए में पाया जाता है।

२ ऋ स्वरके स्थानपर रि, इ और उ पाये जाते हैं। यथा—
रिक्ख ∠ ऋक्षम्—गाथा ६
रिसही = ऋषम —थाया २
रिद्धिविणासो∠ऋद्धिविनाश —गाथा १३
अमियरसो = अमृतरस —गाथा १० (यहाँ ऋकारके स्थानपर इकारादेश हुआ है।)
पिट्ठीए = —गाथा १९½ (ऋकारके स्थानपर इकार)
तिणुप्पत्ती∠तृणोत्पत्ति —गाथा १० (ऋकारके स्थान पर इकार)
अदिवुट्ठि∠अतिवृष्टि —गाथा ८ ('वृ'के अन्तर्गत ऋके स्थान पर उकार।)
अणावुट्ठी∠अनावृद्धि —गाथा ८ (,, ,,)
वुड्ढि∠वृद्धि —गाथा ३ ('वृ' के अन्तर्गत ऋके स्थानपर उकार)
वुड्ढिकरो∠ वृद्धिकर —गाथा २३ (,, ,,)

३ व्यञ्जन परिवर्तनमें 'क'के स्थानपर 'ग' और 'क' का लोप होकर अवशिष्ट स्वरके स्थानपर 'य' श्रुति पायी जाती हैं। यथा—
तिलोगे = त्रिलोक —गाथा १ ('क'के स्थानपर ग।)
लोगविजय∠लोकविजयम्—गाथा १ ('क'के स्थानपर ग हुआ है।)
सोग∠शोक—गाथा ८ ('क'के स्थान पर ग')
इगसय∠इकशत—गाथा ३ (,, ,,)
सुहयरा = सुखकरा—गाथा १९½ ('क'का लोप और लुप्त स्वरके स्थानपर 'य' श्रुति।)
लोय = लोक—गाथा १५ ('क'का लोप और लुप्त स्वरके स्थानपर 'य' श्रुति।)
सयक्त = सकल—गाथा १५ ('क'का लोप और लुप्त स्वरके स्थान पर 'य' श्रुति।)
लोयाण∠लोकाताम्—गाथा ९ ('क'का लोप और लुप्त स्वरके स्थानपर 'या'।)

४ क्वचित् मध्यवर्त्ती 'क' सस्कृतके प्रभावके कारण ज्योका त्यो बना रह जाता है। यथा—
नवकोट्ठएण∠नवकोष्ठकेन—गाथा ३ (यहाँ क्रीष्ठक शब्दमे आदि 'क' ज्योके त्यो रूपमें स्थित है।)
अंकगणिय∠अकगणित्वा—गाथा ३ ('क' ज्यो का त्यो अवस्थित है।)
अको∠अङ्क —गाथा ५ (,, ,,)
भयकरो∠ भयङ्कर —गाथा १९—सस्कृत रूप होनेके कारण 'क' में विकार नही हुआ है।
सुहकरा∠शुभङ्करा —गाथा १९३—सस्कृतके समान 'क' अवस्थित।

५ कही-कही लुप्त 'क' के स्थान पर स्वर ही अवशिष्ट रहता है, 'य' श्रुति नही होती। यथा—
समाउला∠समाकुला—गाथा १८ ('क' लुप्त है और 'उ' स्वर अवशिष्ट है, किन्तु उसके स्थान पर 'य' श्रुति नही हुई।
कोट्ठएण∠कोष्ठकेन—गाथा ३ ('केन' शब्दके 'क' का लोप हुआ है और 'ए' स्वर अवशिष्ट है।

६ मध्यवर्त्ती ग का लोप, अवशिष्ट स्वरके स्थान पर 'य' श्रुति होती है। अनेक शब्दोमें सस्कृतवत् 'ग' की स्थिति ज्योंके त्यो रूपमें अवस्थित मिलता है। यथा—
नयर∠नगरम्—गाथा ५ (ग का लोप, अवशिष्ट अ स्वरके स्थान पर 'य' श्रुति।)
देसनयरे∠देशनगरे—गाथा ६ (,, ,,)
नयर∠ नगर—गाथा ७ (,, ,,)
णयरस्स∠नगरस्य—गाथा १३ (,, ,,)
रोग∠रोग—गाथा १६—ग ज्योके त्यो रूपमें अवस्थित है।
अकगणिय∠अकगणित्वा—गाथा ३—ग ज्योके त्यो रूपमें स्थित है।

७ त के स्थान पर द पाया जाता है। यथा—
गणिद∠गणितम्—गाथा ७ (त के स्थान पर द हुआ है।)
अदि∠अति—गाथा ८ (,, ,,)
भणिदा∠भणिता—गाथा ४ (,, ,,)

८ 'त' के स्थान पर त और य भी पाये जाते हैं। यह प्रवृत्ति शौरसेनीकी है। यथा—
इगसय∠इकशत—गाथा ३—(त के स्थान पर य)
इयरेहिं∠इतरेभ्भ —गाथा २ (त के स्थान पर य)
गीयत्था∠गीतार्था —गाथा ५ (,, ,,)
अमिय∠अमृत—गाथा ११ (त के स्थान पर य हुआ है)
जणिय∠जनित—गाथा २३
त = त
जतूण∠जन्तून्—गाथा १

९ त का लोप होने पर केवल स्वर भी अवशिष्ट रह जाता है। यथा—
जाई∠जाति—गाथा १८
चउसु = चतुर्पु—गाथा १९
हरइ = हरति—गाथा २१
जणइ∠जनति—गाथा—२१
पूरयति∠परेइ—गाथा २२

१० लोकविजयन्त्रकी भाषामें मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द और प का लोप विकल्पसे पाया जाता है अथवा यो कह सकते हैं कि इनका लोप अनियमित रूपसे पाया जाता है। यथा—
इयरेहिम∠इतरेभ्य —गाथा २, मध्यवर्ती त का लोप हुआ है।
पय∠पदम्—गाथा ३, मध्यवर्ती द का लोप हुआ है।
नयर∠नगरम्—गाथा ५, मध्यवर्ती ग का लोप हुआ है।
शयल∠शकलम्—गाथा १५—मध्यवर्ती क का लोप हुआ है।
पया∠प्रजा—गाथा १७—ज का लोप हुआ है।
तेय∠तेजस्—गाथा २१—ज का लोप हुआ है।
अइसारो∠अतिसार —गाथा २१—मध्यवर्ती त का लोप हुआ है।
रायपयाण∠राजाप्रजानाम्—गाथा २३—मध्यवर्ती ज का लोप हुआ है।

११ लोकविजययन्त्रकी भाषामें प के स्थान पर व का प्रयोग पाया जाता है। यथा—
नरवइ∠नरपति—गाथा २३—प के स्थान पर व हुआ है।
उवद्दव∠उपद्रवम्—गाथा १५—प के स्थान पर व हुआ है।

१२ प्राकृतकी सामान्य प्रवृत्तिके अनुसार ध, फ, घ, ख और भ के स्थान पर ह पाया जाता है। यथा—
रिसह∠ऋषभ—गाथा २—भ के स्थान पर ह हुआ है।
णिहिभत्ते∠निधिभत्ते—गाथा ४—ध के स्थान पर ह हुआ है।
मेहसकुलो∠मेघसङ्कुल —गाथा १८—घ के स्थान पर ह हुआ है।
सुहकरा∠सुभङ्करा—गाथा २०—भ के स्थान पर ह हुआ है।
सुहयरा∠सुखकरा—गाथा २०—ख के स्थान पर ह हुआ है।
पोहुवी∠पृथ्वी—गाथा १८—ख के स्थान पर ह हुआ है।

१३ सयुक्त व्यञ्जन परिवर्त्तनोंमें 'त्स' के स्थान पर 'च्छ', 'ष्ट' के स्थान पर 'ट्ठ', 'म्भ' के स्थान पर 'म्भ', 'स्तोक' के स्थान पर 'थोव' 'भ्र' के स्थान पर 'भ' और 'त्य' के स्थान पर 'च्च' पाये जाते हैं। यथा—
सवत्सर∠सवच्छर —गाथा ३
आरम्भ∠आरम्भ—गाथा ३
आइच्चाइ∠आदित्यादि—गाथा ५
आइच्चे∠आदित्ये—गाथा १०
कोट्ठागार∠कोष्ठागारम्—गाथा २२
तुट्ठो∠तुष्ट —गाथा २२
भसो∠भ्रष्ट —गाथा १३
थोवजल—स्तोकजलम्—गाथा ११

१४ दन्त्य और मूर्धन्य दोनों प्रकारके 'न' और 'ण' पाये जाते हैं। यथा—
आनन्दो∠आनन्द —गाथा २३
जणिय∠जनित —गाथा २३
नभो∠नभ —गाथा १८
जणइ∠जनति, जनिका—गाथा २१

देसनयरे∠देशनगरे—गाथा ६
नयरं∠नगरम्—गाथा ५
नाह∠नाथ—गाथा १
नवकोट्ठएण∠नवकोष्ठकेन—गाथा ३

१५ प्रथमा विभक्तिके एकवचनमें विसर्गके स्थान पर 'ओ' कार आदेश होता है —
अईसारो∠अतीसार —गाथा २१
मेहसकुलो∠मेघसकुल —गाथा १७
वुड्ढिकरो∠वृद्धिकर —गाथा २३
मासक्खओ∠मासक्षय —गाथा २९

१६ सप्तमीके एकवचनमे अर्धमागधीके प्रभावके कारण 'म्मि' विभक्ति चिह्न पाया जाता है। यथा—
जम्मि∠यस्मिन्—गाथा ७
सुहम्मि∠शुभे—गाथा २५
विकल्पाभाव पक्षमें 'ए' प्रत्यय ही पाया जाता है—
णिहिभत्ते∠निधिभक्ते—गाथा ४
आइच्चे∠आदित्ये—गाथा १०
भोमे∠भौमे—गाथा १२
सुजीवे∠सुजीवे—गाथा १४

१७ धातुरूपोमें लट्लकारमे √भू के स्थान पर हू, हो, भव, हुव आदि रूप मिलते हैं। यथा—
होइ∠भवति—गाथा ३, गाथा ११
हुति∠भवन्ति—गाथा १४, गाथा २०
हवइ∠भवति—गाथा १७

१८ √कृञ् के स्थान पर 'कुण' का प्रयोग पाया जाता है। यथा—
कुणति∠कुर्वन्ति—गाथा २०

१९ कुछ धातुरूप सस्कृतके समान ही पाये जाते हैं। यथा—
विचरति∠विचरन्ति—गाथा १९
पभणति∠प्र + √भण् + न्ति—गाथा ५

२० क्त्वा प्रत्ययके स्थान पर य, तूण, इऊण, आय और आए प्रत्यय पाये जाते है। यथा—
ठविय∠स्थपित्वा
अकगणिय∠अङ्कगणित्वा
गणिय∠गणित्वा—गाथा ४
करिय∠कृत्वा—गाथा ६
गणिऊण∠गणित्वा—गाथा ९

२१ विधिलिङ्गके रूप भी कृदन्तके समान प्रयुक्त है। यथा—
वियाणिज्जा∠विजानीयात्—गाथा ३

वियाणाहि∠विजानीयात्—गाथा ७
जाणए∠जानीयात्—गाथा ९

२२ स्वरभक्तिके प्रयोग भी पर्याप्त मात्रामें पाये जाते हैं। यथा—
सिरि∠श्री—गाथा २
सामिय∠स्वामिन —गाथा २
मिच्छाण∠म्लेच्छाणाम्—गाथा १८
पुहवी∠पृथ्वी—गाथा १८

२३ विध्यर्थ प्रत्ययोमें धातुमें तव्व प्रत्ययका प्रयोग पाया जाता है। यथा—
वोधव्वो∠वोधव्य —गाथा ५

२४ सयुक्त विजातीय व्यञ्जनोमें पूर्ववर्त्तीका लोप हो गया है और शेपमें द्वित्व पाया जाता है। इसे समीकरणकी विधि भी माना जा सकता है। यथा—
सप्परचक्क∠स्वपरचक्रम्—गाथा ८
दसाक्कमे∠दशाक्रमे—गाथा ४
चमुद्दव∠चोपद्रवम्—गाथा ८
उवद्दव∠उपद्रवम्—गाथा १५
आरुग्गो∠आरोग्य —गाथा ९

२५ इस ग्रथमें कतिपय देशी शब्द भी प्रयुक्त हैं। इन शब्दोंकी व्युत्पत्तियाँ अनिश्चित हैं। यथा—
ठाठ युद्धके अर्थमें प्रयुक्त है—गाथा १६
स्त्रीके स्थान पर इत्थी रूप पाया जाता है। इसी प्रकार 'घरि घरि' 'गृह गृहम्'के लिए प्रयुक्त है।

शैलीकी दृष्टिसे लोकविजय ग्रन्थकी समास शैली है। थोडेमें अधिक कह देना तथा सकेत द्वारा भी अर्थका वोध कराना इस शैलीकी विशेपता है। अल्प शब्दोमें विशेपताओको निवद्ध करना तथा लक्षण द्वारा गम्भीर अर्थको व्यक्त करना भी इस ग्रन्थकी शैलीकी विशेपता है। गाथाएँ सूत्र रूप हैं, इनके अर्थवोधके लिए विशेप भाष्यकी आवश्यकता है। अतएव स्पष्टीकरणके लिए विवेचन लिखा गया है। वस्तुत इस ग्रन्थकी शैली न्याय और व्याकरण ग्रथोकी शैलीके समान है। सक्षेपमें इसे समानशैलीकी सज्ञासे अभिहित किया जा सकता है।

रचना-काल—लोकविजययन्त्रके रचयिताके सम्बन्धमें आदि, मध्य या अन्तमें कोई स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नही होता है। वृहज्ज्यौतिपार्णव ग्रन्थमें प्राचीन जैनी गाथा लिखकर मूल ग्रंथका पाठ दिया गया है और अन्तमें पुष्पिका वाक्य लिखते समय 'भद्रवाहुविरचिते लोकविजयग्रथे सुभिक्ष, दुर्भिक्ष वर्णनम्' लिखा है। इस पुष्पिकासे यह ज्ञात नही होता कि यह पुष्पिका मूलग्रथ रचयिताकी है अथवा वृहज्ज्यौतिपार्णवके सम्पादक महोदयकी है। इस ग्रथके सम्पादक हरिकृष्ण शर्माने विभिन्न ग्रथोंसे विपयोका चयन कर अपनी सस्कृत व्याख्या लिखी हैं। अत जिस मूल ग्रथमे इन गाथाओंका चयन किया है उस मूल ग्रंथका उल्लेख हरिकृष्ण शर्माने नही किया।

'मेघमहोदय'में इन गाथाओका एक पाठ मिलता है। यह ग्रन्थ भी विक्रम सवत् १७३७ के आस-पास मेघ विजय गणि द्वारा सकलित ही है। मौलिकता तो इस ग्रथमें है नहीं। कर्पूर चक्र, पद्मिनी चक्र, मडल प्रकरण, उत्पात्, संवत्सरफल आदि विपय सहिता ग्रन्थोंमे लेकर ज्योंके त्यों रूपमें प्राय निवद्ध किए गए हैं।

इन गाथाओका पाठ मेघमहोदयमें वृहज्ज्यौतिषार्णवके पाठकी अपेक्षा विल्कुल भिन्न है। अत दोनो पाठोकी तुलना करनेसे यह ज्ञात होता है कि वृहज्ज्यौतिषार्णवकी गाथाएँ किसी अन्य प्राचीन ग्रथसे सकलित की गयी है। मेघमहोदय और वृहज्ज्यौतिषार्णव इन दोनोके सकलनका आधारभूत कोई अन्य ग्रथ ही रहा होगा। मेघमहोदयमें आयी हुई गाथाओकी भापा और शव्दावली भी वृहज्ज्यौतिपार्णवकी गाथाओकी शव्दावलीसे पर्याप्त भिन्न है। अत पाठ शुद्धिकी दृष्टिसे वृहज्ज्यौतिपार्णवकी गाथाएँ अधिक प्रामाणिक हैं और इन गाथाओ की भाषाका रूप भी ऐसा है जिसे हम सामान्य प्राकृत कह सकते हैं। व्याकरणकी दृष्टिसे न तो हम इसे अर्द्धमागधी मान सकते है न शौरसेनी ही और न महाराष्ट्री ही। इसकी मूल प्रकृति सस्कृति है और अर्द्ध-मागधी एव शौरसेनी दोनोका मिश्रित रूप इस ग्रथकी भाषामें समाहित है। सस्कृतके विचरन्ति 'नभ', 'विहरन्ति', 'नर्यान्त', आदि प्रयोग भी ज्योके त्यो रूपमें पाए जाते हैं। अत इसकी भाषा 'वसुदेवहिण्डी' और 'पउमचरिय'की भाषाके समकक्ष प्रतीत होती है। इस ग्रन्थकी भाषामें पाँच प्रवृत्तियाँ अर्द्धमागधीकी और पाँच ही प्रवृत्तियाँ प्राचीन शौरसेनीकी पायी जाती है। समास, सन्धि, कृदन्त, तद्धित एव क्रियारूपो-की व्यवस्था सस्कृतके वहुत निकट है। हम यहाँ अर्द्धमागधीकी उपलव्ध होने वाली प्रवृत्तियोका निर्देश करते हैं—

१ दो स्वरोके मध्यवर्ती, असयुक्त, क के स्थानमें विकल्पसे ग पाया जाता है।

२ दो स्वरोके मध्यवर्ती असयुक्त, ग, प्राय स्थित मिलता है।

३ शव्दके आदि, मध्य और सयोगमें ण के समान क्वचित्-कदाचित् न भी पाया जाता है।

४ दीर्घ स्वरके पश्चात् आने वाले 'इतिवा'के स्थानमें 'तिवा' और इवाका प्रयोग मिलता है।

५ सप्तमी विभक्तिके एकवचनमें 'म्रि' प्रत्यय पाया जाता है।

इसी प्रकार प्राचीन शौरसेनी या जैन शौरसेनीकी प्रवृत्तियाँ भी उपलव्ध होती हैं—

१. इस ग्रन्थकी भाषामें 'त' के स्थानपर क्वचित-कदाचित द का प्रयोग भी होता है।

२ 'त' के स्थान पर 'त' और 'य' दोनो ही पाये जाते हैं।

३ 'क' के स्थान पर 'ग' के अतिरिक्त 'क' और 'य' भी पाए जाते हैं।

४ मध्यवर्त्ती क, ग, च, ज, त, द और प का लोप अनियमित रूपसे पाया जाता है।

५ विभक्ति चिन्होमें प्रथमा विभक्तिके एकवचनमें ओ एव सप्तमीके एकवचनमें सस्कृतके समान ए-कार प्रत्यय पाया जाता है।

६ कृदन्त रूप शौरसेनीके समान ही पाए जाते हैं।

७ इक्त्वाके स्थान पर य और त्य के स्थान पर 'च्च' पाए जाते हैं।

८ 'भू' धातुके स्थान पर हो और 'कृ' के स्थान पर 'कुण्' प्रयोग उपलव्व होते हैं।

अतः इस ग्रथकी भाषामें शौरसेनी और अर्द्धमागधी इन दोनो ही प्रवृत्तियोका समन्वित रूप पाया जाता है। अत इस ग्रथकी भाषाको हम सामान्य प्राकृतके नामसे अभिहित कर सकते है। प्रारम्भमें प्राकृत-का सामान्य स्वरूप ही था। शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी आदि देशज भेदोका विकास तो साहित्यिक प्राकृत-के समयमें ही हुआ है। अत भापाकी दृष्टिसे इस ग्रथका रचनाकाल ईस्वी सन्की पाँचवी शताव्दीके वाद नही होना चाहिए।

वृहज्ज्योतिपार्णवकी पुष्पिकामें अकित 'भद्रवाहु विरचित' पद भी विचारणीय हैं। भद्रवाहु श्रुति केवलि तो इस ग्रन्थके रचयिता नही हैं। वहुत सभव है कि द्वितीय भद्रवाहु जिन्हे वरामेरका भाई माना जाता है

इस ग्रन्थके रचयिता हो । इस ग्रन्थकी चार गाथाएँ श्रीधरकी ज्योतिर्ज्ञानविधिमें भी उद्धृत मिलती हैं । इन गाथाओका पाठ वृहज्ज्यौतिपार्णवके पाठके समान ही हैं । अत वहुत सभव है कि इस ग्रन्थकी रचना भद्रवाहु द्वितीय द्वारा पाँचवी और छठी शताब्दिके मध्यमें की गई हो ।

सपादन करते समय ज्योतिप साहित्यके हस्तलिखित और मुद्रित समस्त ग्रन्थोका आलोडन कर यह जानना चाहा कि इस ग्रन्थकी गाथाएँ अन्यत्र कहाँ-कहाँ उद्धृत मिलती हैं । ज्योतिर्ज्ञानविधिमें चार गाथाएँ ज्योके त्यो रूपमें प्राप्त हैं । मेघविजयगणि द्वारा सकलित मेघमहोदय या वर्ण प्रवोधमे इस ग्रन्थकी सभी गाथाएँ यत्-किंचित् परिवर्तनके साथ प्राप्त होती हैं । इन गाथाओका गठन जैन महाराष्ट्रीका है और सारी प्रवृत्तियाँ महाराष्ट्री के समकक्ष हैं । अत वर्णप्रवोधके रचयिताने इन गाथाओको किसी अन्य ग्रन्थसे ग्रहण कर इनका पृथक् अस्तित्व सिद्ध करनेके लिए महाराष्ट्रीका पुट दिया है । अतएव सक्षेपमें वर्ण्य-विपय, भापा-शैली एव ज्योतिर्ज्ञानविधिमें प्राप्त उद्धरणके आधार पर इसका रचनाकाल वराहमिहिरसे पूर्व ही सिद्ध होता है । एक अन्य प्रमाण यह भी है कि लोकविजययन्त्रकी आठवी, नौवी और दशवी गाथाओकी सस्कृत छाया वाराही सहिताकी भट्टोत्पली टीकामें उद्धृत है । अत श्रीधर और भट्टोत्पलके पूर्व इस ग्रथका अस्तित्व सिद्ध होता है । भट्टोत्पलका समय शक सवत् ८८८ है और श्रीधरका दशम शताव्दीका अन्तिम भाग है । श्रीधरने सवत्स-रोके नाम और उनके शुभाशुभत्वके सम्वन्धमें विचार करते हुए लोकविजययन्त्रकी गाथाएँ प्रस्तुत की हैं । वाराही सहिताके प्रकरणमें लोकविजययन्त्रको गाथाओकी छाया भी दृष्टिगोचर होती है । अतएव हमारा अनुमान है कि इस ग्रन्थका रचना काल वराहमिहिरसे पूर्व होना चाहिए ।

प्रस्तुत सम्पादन

लोकविजययन्त्रके सम्पादनकी भी एक कथा है । इसकी गाथाओकी सूचना स्व० श्री पण्डित जवाहर लाल वैद्यने आदरणीय आचार्य पण्डित जुगलकिशोरजी मुख्तारको दी थी और उन्होने ही इन गाथाओका सङ्कलन कर मुख्तार साहवको दिया था । मुख्तार साहवने उस सकलनको सम्पादन और अनुवादके लिए मेरे पास भेजा । इस समय तक मेरा भारतीय ज्योतिप नामक ग्रथ प्रकाशित हो चुका था । अत आदरणीय मुख्तार साहवको मेरे ऊपर इस ग्रथके सम्पादनका पूर्ण विश्वास था । मैंने उनकी आज्ञा स्वीकार कर इसका सम्पादन और अनुवाद सन् १९५०में पूर्ण कर उन्हें प्रकाशनार्थ सुपुर्द किया । मुख्तार साहवने अनुवाद और सम्पादनको देखकर मुझे सूचित किया कि दो-चार दिनो तक मेरे साथ वैठने पर ही इसकी गाथाएँ शुद्ध हो सकेंगी । आप अन्यत्र इस ग्रथके उद्धरण कहाँ-कहाँ प्राप्त होते हैं तथा इस प्रकारका विपय किन-किन ग्रथोमें आया है इसकी जाँच-पडताल कीजिए । मैंने वृहज्ज्योतिषार्णवके सभी खण्ड काशी विद्यापीठके पुस्तकालय से प्राप्त किये और गाथाओका मिलान ज्योतिपार्णवमें लिखित गाथाओसे किया ।

भट्टोत्पली टीका ज्योतिषका भडार है । मैंने इस समुद्रका भी मन्थन किया और गाथाओंकी भाव छायाको ढूँढ निकाला । ज्योतिर्ज्ञानविधि जो अभी तक अप्रकाशित है और जिसकी पाण्डुलिपि मूडविद्रीके शास्त्र-भण्डार मे है । मैंने उसे सन् १९४६ में मँगाया । इस ग्रथके अव्ययनसे ज्ञात हुआ कि सवत्सर प्रकरण में लोकविजययन्त्रकी गाथाएँ उद्धृत हैं । भाव छाया तो अनेक श्लोकोमें दिखलाई पडती है । ऋपि-पुत्रके निमित्तशास्त्रमें कई गाथाओंकी समानता दृष्टिगोचर होती है । जैन सिद्धान्त भवन, आरा-के ग्रथागारमें ऋपिपुत्र निमित्तशास्त्रकी तीन हस्तलिखित प्रतियाँ हैं । एक प्रतिमें गाथाओकी सख्या अधिक है तथा शव्द परिवर्तनके साथ कुछ गाथायें लोकविजययन्त्रकी गाथाओंसे भी मिल जाती हैं । 'मेघमहोदय'में तो ये सभी गाथाएँ पाठान्तरके साथ उद्धृत हैं । अतएव मैंने उक्त सभी ज्योतिप-साहित्यके

आलोकमे लोकविजययन्त्रकी गाथाओका पाठ संशोधित किया और पुन. मुख्तार साहबको प्रकाशनार्थ दिया। मुख्तार साहबने सिद्धान्तशास्त्री पण्डित हीरालालजीके सहयोग से इन गाथाओका पुनर्वाचन किया तथा मेरे अनुवाद और विवेचनको भी उन्होने देखा और प्रकाशनके हेतु पाण्डुलिपि स्वीकृत की। कई वर्षो तक इस ग्रन्थका प्रकाशन अवरुद्ध रहा। इसी बीच मैंने वीर सेवा मन्दिरके सत्त्वाधिकारी, साहित्यानुरागी स्वर्गीय श्री बाबू छोटेलालजीसे अनुरोध किया कि आपके यहाँ मेरे द्वारा सम्पादित लोकविजययन्त्रकी पाण्डुलिपि पडी हुई है। आप उसे अपनी सस्थासे प्रकाशित कराइये अथवा मुझे वापस कर दीजिये। पाँच-छ महीनेकी तलाशके पश्चात् श्री बाबू छोटेलालजीने पाण्डुलिपि मुझे वापस लौटा दी। पाण्डुलिपिके दस-बारह पृष्ठ दीमक द्वारा चाट लिये गये थे। अत उन्होने लिखा कि इसे पुन पूर्ण कर वीर सेवा मन्दिरको दीजिए। इसका प्रकाशन हो जायगा। इन दिनो तक परम पूज्य आचार्य पण्डित श्री जुगलकिशोरजी मुख्तार वार्धक्यके कारण अशक्त हो गये थे और उन्होने भी मुझे 'एटा'से पत्र लिखा था कि लोक-विजययन्त्र और 'आयज्ञान तिलक' इन दोनो ग्रन्थोके प्रकाशनकी मेरी आन्तरिक अभिलाषा है। इन दोनो ग्रन्थोका प्रकाशन वीर सेवा मन्दिर ट्रस्टकी ओरसे किया जायगा। कई वर्षोका समय यो ही निकल गया। अत आप उसे पुन ठीक कर शीघ्र ही ट्रस्टको दे दीजिए। अवकाश निकालकर आयज्ञानतिलकका सम्पादन और अनुवाद भी प्रारम्भ कीजिए। मेरे पास इसकी दो पाण्डुलिपियाँ है। एकको मैंने स्वय सशोधित किया है जिसे मैं सम्पादनके समय आपको दे दूँगा।

पूज्य मुख्तार साहबकी रुग्णता उत्तरोत्तर बढती गयी और उनके जीवनकालमे इन दोनो ग्रन्थोका प्रकाशन न हो सका। उनकी मृत्युके पश्चात् वीर सेवा मन्दिर ट्रस्टके सुयोग्य मन्त्री डॉ० प्रो० श्री दरबारीलालजी कोठिया एम० ए०, आचार्य, पी० एच डी० से मैंने मुख्तार साहबकी इच्छा अभिव्यक्त की। कोठियाजीने कहा कि लोकविजययन्त्रके प्रकाशनकी चर्चा बहुत पुरानी है। मुझे ज्ञात है कि पूज्य मुख्तार साहबने इसका सम्पादन और अनुवाद कराया है। वे ४९-५० ई० में ही इसका प्रकाशन वीर सेवा मन्दिरसे करना चाहते थे। पर परिस्थितियोने वैसा नही करने दिया। अतएव अब मैं उनके ट्रस्टकी ओरसे इस ग्रन्थका प्रकाशन करनेकी व्यवस्था करता हूँ। फलत उन्होंने मुझसे पाण्डुलिपि लेकर २० वर्ष पुराने इस कार्यक्रमको मूर्तरूप दिया। अतएव मैं इस सङ्कल्पको पूर्ण करनेमे सहायक और प्रेरक परम पूज्य पडित श्रीजुगलकिशोरजी मुख्तारके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हुआ महामना स्वर्गीय श्रीबाबू छोटेलालजीके प्रति भी अपनी श्रद्धाभक्ति समर्पित करता हू।

इस सङ्कल्पकी पूर्तिमे सहायक सिद्धान्तशास्त्री पण्डित श्रीहीरालालजी ब्यावर एव विद्वच्छिरोमणि प्रसिद्ध नैयायिक श्री प्रो० दरबारीलालजी कोठियाके प्रति विनम्र आभार प्रकट करता हूँ। श्रीकोठियाजीकी कृपासे ही यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। अन्तमे बृहज्ज्योतिषार्णवके उद्धरणोकी सूचना देने वाले स्व० वैद्य पण्डित जवाहरलालजीके प्रति भी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करना पुनीत कर्त्तव्य है। मैं उन लेखकों और विद्वानोके प्रति भी नतमस्तक हूँ जिनकी रचनाओंसे मुझे विवेचन एव प्रस्तावना लिखनेमे सहयोग प्राप्त हुआ है।

श्रुतलेख लिखनेवाले आयुष्मान् नलिनकुमार एव महावीर विद्यासागर इन दोनो स्नातक कक्षाके छात्रोको उनके अभ्युदयके हेतु आशीर्वाद देता हूँ। ये दोनो छात्र अपने जीवनमे नवालोक और सर्वाङ्गीण उन्नति प्राप्त करे यही कामना है। यहा यह स्मरणीय है कि प्रूफ सशोधनका कार्य डा० प्रो० कोठियाजीने ही किया है। कोठियाजी श्रीवर्णी ग्रन्थमाला एव वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट इन दोनो सस्थाओसे उच्च कोटिके साहित्यका प्रकाशन कर रहे है। उनके इस कार्यमे अहर्निश प्रगति हो यही हार्दिक भावना है।

[illegible] भवन,
बसन्त पञ्चमी,
विक्रम सवत् २०२७

नेमिचन्द्र शास्त्री

विषय-सूची

लोकविजय यन्त्र

मङ्गलस्तवन और प्रतिज्ञा

पणमिय पयारविंदे तिलोगनाहस्स जगपईवस्स ।
वुच्छामि लोगविजय जंत जतूण सिद्धिकरं ॥ १ ॥

जो तीन लोकके नाथ और जगत्के प्रदीपरूप हैं, उन ऋषभ जिनेन्द्रके चरण-कमलोको प्रणाम करके मैं उस लोकविजय यन्त्रको कहता हूँ, जो ससारी प्राणियोकी कार्यसिद्धिका करनेवाला—उनकी कार्यसिद्धिमें सहायक है ॥ १ ॥

विवेचन—लोकविजय यन्त्रकी द्वितीय गाथामे आदितीर्थङ्कर ऋषभदेवका निर्देश किया गया है, अत प्रस्तुत मगलाचरणमें भी प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभदेवको नमस्कार करनेके उपरान्त जनकल्याणके हेतु लोकविजय यन्त्रको लिखनेका सकेत किया है ।

लोकविजययन्त्रकी अकसख्याका निर्धारण तथा अकसख्याकी कल्पना द्वारा इस यन्त्रका विस्तार गणित-सिद्धान्तपर आधारित है । सामाजिक जीवनकी सुख-शान्ति एव कष्ट-विपत्तिको अवगत करनेके लिए इस यन्त्रका उपयोग कई प्रकारसे किया जाता है । इसकी उपयोग-विधियोका वर्णन यथास्थान किया जायगा । ज्योतिषशास्त्रमे मानवसमाजको सुखी और सम्पन्न सिद्ध करनेके लिए निम्नलिखित दश कारणोका निरूपण किया है[1] । इन साधनोमेसे एक या अधिकके कम होने पर समाज दु खी माना जाता है ।

(१) अकाल—असमयमे वर्षाका न होना, (२) समयपर वर्षाका होना, (३) यथोचित मात्रा मे धान्य—अनाजका उत्पन्न होना, (४) रोग एव महामारियोका अभाव, (५) साधुओका सत्कार, (६) अनुकूल रूप, (७) अनुकूल रस, (८) अनुकूल गन्ध, (९) अनुकूल स्पर्श और (१०) अनुकूल शब्द । साधुओके सत्कारके अन्तर्गत जान-मालकी रक्षा, पारस्परिक वैर-विरोधका आभाव एव सुख-शान्ति सम्मिलित हैं । अनुकूल रूप-रस-स्पर्श-शब्दका आशय धान्य, दुग्ध, घृत, गुड प्रभृति उपयोगी पदार्थोकी प्रचुर परिमाणमें उत्पत्ति होनेसे है । आर्थिक समृद्धि, आन्तरिक शान्ति एव परराष्ट्रभयका अभाव ही अनुकूलताका परिचायक है । देशकी वास्तविक समृद्धि वर्षापर निर्भर है, वर्षा कहाँ पर कितनी होगी, इसका निर्धारण उक्त लोकविजय यन्त्र द्वारा सभव है । ज्योतिषशास्त्रमे वर्षाके हेतु देश, वायु और देव ये तीन माने गये हैं । जिस देशमें[2] जब जलयोनिके जीवोके पुद्गलोका विनाश और उत्पत्ति हो उस समय वहाँ वर्षा होती है । प्राचीन मान्यतानुसार नागकुमार, यक्ष और भूत जातिके व्यन्तर भी वर्षाके कारण हैं । वर्षाकालमें अनु-

---

१ दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसम जाणेज्जा त०—अकाले न वरिसइ काले वरिसइ साहू पूइज्जति, असाहू ण पूइज्जंति गुरुसु जणो सम्म पडिवन्नो मणुण्णा सद्दा मणुण्णा रूवा मणुण्णा रसा मणुण्णा गधा मणुण्णा फासा । —ठाणाग १०, १०५७ सूत्र ।

२ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया त० तस्सि च णं देससि वा पएससि वा णो बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चयंति उववज्जति ।

पडिलोमवाऊ समुट्ठिय वासिउकाम वाउकाए विहुणेइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाये सिया । तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया ।—ठाणाग ३।३।२२९ ।

कूल वायुका रहना भी अच्छी वर्षाके लिए आवश्यक है। वर्षाके समय प्रचण्ड पवन चलता है, तो वर्षा छिन्न-भिन्न हो जाती है। सर्वतोभद्र, लोकविजय, सप्तनाडी, लागल, समुद्र और रोहिणी प्रभृति चक्रोद्वारा वर्षा का परिज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। आकाशीय और भूमिज निमित्तो द्वारा भी वर्षाका ज्ञान किया जाता है। ये निमित्त इतने सरल और परिचित है, जिसमे एक अशिक्षित कृषक भी वर्षाके सम्बन्धमे जानकारी प्राप्त कर सकता है। घाघ और भड्डरीकी उक्तियाँ आज भी कृषिप्रेमी जनताके मुँहसे सुनायी पडती है। बरसातके आरम्भसे लेकर फसलकी कटाई तककी कहावते सुप्रसिद्ध है।

लोकविजय यन्त्रके रचयिताको वर्षाविज्ञान, नभोमण्डल, ग्रहोकी गति-स्थिति एव सुभिक्षविज्ञानकी विशेष जानकारी थी। उन्होने ग्रहोके ध्रुवाङ्कोपरसे ही वर्षाके सम्बन्धमे तथ्य निर्धारित किये है। ये केवल अनुमित आकडे ही नही है, बल्कि गणित-प्रक्रियापर अवलम्बित निश्चित तथ्य है। आजके वैज्ञानिक युगमें वेधशालाओके द्वारा वर्षा और सुभिक्षका निरूपण उतने दृढ़ विश्वासके साथ नही किया जाता है, जितने दृढ निश्चयके साथ लोकविजय यन्त्रके रचयिताने ध्रुवाङ्कोका निरूपण किया है। पूनाकी वेधशाला की भविष्यवाणी कभी कदाचित् गलत भी सिद्ध हो सकती है तथा इस वेधशालासे बहुत दिन पहले वर्षाकी स्थितिका पता भी नही चल सकता है। पर यन्त्रप्रक्रिया द्वारा किसी भी देशकी भविष्यमें होने वाली वर्षा की स्थितिको यथार्थ रूपमे जाना जा सकता है। यह यन्त्र-प्रक्रिया भारतीय मस्तिष्ककी अमूल्य उपज है।

यन्त्र-प्रक्रियामे देशोको तीन भेदोंमे विभक्त किया है[1]—जलमय देश, जगल देश और मिश्र देश। भारतमे आसाम, बगाल और मालवा प्रभृतिकी गणना जलमय देशोमें, मारवाड, आन्ध्र, राजस्थान प्रभृति की जगल देशोमें एव बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, मद्रास, सौराष्ट्र प्रभृतिकी मिश्र देशोमें गणना की गयी है। समान ग्रहयोगके रहने पर भी देशकी विशेषताके कारण जलमय देशोमे अधिक वृष्टि, जगलमय देशोमें अल्पवृष्टि और मिश्र देशोमें मध्यवृष्टि होती है। अत यन्त्रो द्वारा फल अवगत करते समय देश-विशेष का विचार अवश्य करना चाहिए। इसी कारण 'मेघमहोदय' में 'मेघविजयगणि' ने वर्षाहेतुओका बडे ही विस्तारके साथ निरूपण किया है। देशविशेष और समयविशेष इन दोनो बातोंपर ऊहा-पोह किये बिना फल बतलाना ज्योतिषशास्त्र सम्बन्धी अनभिज्ञताका सूचक है। "अपने रहनेके स्थान और समग्र देशके कल्याणके लिए निमित्त देखना चाहिए। उद्यमी पुरुषको आने वाले उत्पातोका पहलेसे ही विचार कर सुखी और सम्पन्न प्रदेशमे स्थान ग्रहण करना चाहिए।" पदार्थके नैसर्गिक रूपमें अकस्मात् परिवर्तन होने पर उत्पात समझा जाता है। अकारण वस्तुके स्वरूपमें विकृति होना उत्पात है। उत्पात होने पर दुष्टकाल, महामारी तथा नाना प्रकारके अरिष्ट उत्पन्न होते हैं। देशकी सुख-शान्तिका परिज्ञान निमित्तो, उत्पातो, ग्रहचार तथा यन्त्रोसे अवगत कर चेतावनी प्राप्त करनी चाहिए॥ १॥

यन्त्रनिर्माणकी विधि

सिरि-रिसहेसरसामियपारणपारम्भ गणिय धुव्वक।
दिस-इयरेहिं ठविय जत देवाण सारमिण॥२॥

[1] अनूपो जाङ्गलो मिश्रस्त्रिधा देशो बुधैर्मत। तत्तत् स्वभाव विज्ञाय जलवृष्टिर्निगद्यते॥
तस्मान् मालवदेशादौ समानेऽपि ग्रहोदये। वृष्टि स्यादेव नियता कालात् क्षेत्रे, व लिष्टता॥
तदा दुष्टे ग्रहादीना योगे दुर्भिक्षता न हि। किन्तु विग्रह भार्यादिस्तत्कृत वैकृत भवेत्॥
एवं मरुस्थलादौ स्याद् यदा शुभाग्रहोदय। तथाप्यवग्रहो वृष्टेर्वाच्य स्वल्पोऽपि धीमता॥
—मेघमहोदय पृ० ४-५।

यह वक्ष्यमाण यन्त्र, जो कि ऋपमेश्वर स्वामीके पारणा-समयसे—अक्षय-तृतीयाके दिन उनकी प्रथम पारणा-ग्रहणकी वेलासे—गणित करके दिशा-विदिशाओमें स्थापित किये हुए ध्रुवाङ्कोको लिए हुए है, दैवज्ञोका सार है, दैवाधीन घटनाओका सूचक है ॥ २ ॥

विवेचन—अक्षय-तृतीयाके दिन मेघोका निरीक्षण कर सुभिक्ष-दुर्भिक्ष जाननेकी प्रथा भी प्राचीन-कालसे प्रचलित है। यदि इस दिन आकाशमें बादल हो तो वर्षा अच्छी होती है और देशमे सुभिक्ष होता है। प्रात काल आकाशमे मेघोके दिखलायी पडनेसे आरम्भमें अच्छी वर्षा, मध्याह्नमें मेघोके दिखलाई पडनेसे वर्षाका अभाव अथवा अधिक वर्षा एव सन्ध्या समय मेघ-दर्शन हो तो अल्पवर्षा होती है। मध्याह्नकाल में आकाशमें मेघघटाएँ गर्जन-तर्जन करती हुई दृष्टिगोचर हो तो श्रावण-भादोमें अधिक वर्षा, आश्विनमें अल्प वृष्टि एव कार्त्तिक, मार्गशीर्ष और माघ मासमें भी अल्पवृष्टि होती है। अपराह्नकालमें काली-काली घटाएँ दिखलायी पडे तो अपाढ, श्रावण, आश्विन और मार्गशीर्षमे पर्याप्त वर्षा होती है। अक्षय-तृतीयाके दिन आकाशमे बादलोके रहनेसे आगामी वर्षाकी सूचना प्राप्त होती है।

अक्षय-तृतीयाकी रात्रिमें बादल दिखलायी पडे और साधारण वर्षा भी हो तो पूरा सवत् ही सुखप्रद नही होता, रोग-मरी फैलती है। अनाज अल्प परिमाणमे उत्पन्न होता है। इस दिन मध्यरात्रिके बाद आकाशमे बादल हों तो सभी प्रकारसे अशान्ति, उपद्रव और फसलमें नाना प्रकारके रोगोकी सूचना समझना चाहिए। अक्षय तृतीयाको दिनभर बादल आकाशमें छाये रहे तो आगामी समय सुखमय व्यतीत होता है। रात्रिमें बादलोका आकाशमें आच्छादित रहना अशुभ सूचक है।

भड्डरीने अक्षय-तृतीयाके दिन आकाशमें दिखलायी पडनेवाले बादल, बिजली आदि निमित्तोंके द्वारा आगामी वर्षके शुभाशुभत्वका सुन्दर निरूपण किया है। उनका अभिमत है कि इस दिन प्रात काल से ही आकाशमें बादल दिखलायी पडे और मध्याह्नमें बिजली चमके तो उत्तम फसल उत्पन्न होती है। यह निमित्त सुकाल और सुख-समृद्धिका सूचक है, पशुधनकी समृद्धिकी भी सूचना इसी निमित्तसे प्राप्त होती है। आर्षग्रन्थोमे भी निमित्तो द्वारा वर्षाको अवगत करनेका निरूपण आया है। अक्षय-तृतीया का दिन ज्योतिषशास्त्रमें कई प्रकारके निमित्तोके लिए प्रसिद्ध है। इस तिथिको दिनमें बादलोका रहना और रात्रिमें बादलोका अभाव रहना शुभ सूचक बताया गया है। बादलोकी आकृति, स्थिति एव गतिसे भी विभिन्न प्रकारके शुभाशुभोका विवेचन पाया जाता है।

षष्ठि-सवत्सरीमें अक्षय-तृतीयाके दिन प्रहरोके अनुसार बादलोका फल कहा है। प्रथम प्रहरमें होनेवाली बादलोकी गर्जना, आच्छादित होना तथा हल्के रूपमें बरसना सुभिक्षका सूचक माना गया है। दूसरे प्रहरमें बादलोके आच्छादित होनेसे सन्तुलित रूपमें वृष्टि होती है, देशमें धन-धान्यकी वृद्धि होती है, शासक-शासितोमें एकता और प्रेम बढता है। तीसरे प्रहरमें बादलोके होनेसे गेहूँ, चना, उडद आदि की विशेषरूपसे उपज होती है। चौथे प्रहरमे इस दिन बादलोका गर्जन अशुभप्रद माना है, इस दिन बरसना शुभ और सामान्यत सुकालका सूचक है। पाँचवे प्रहरमें सुभिक्ष, व्यापारमें लाभ, देशकी सम्पत्तिकी वृद्धि एव जनताकी धर्मकार्योकी ओर विशेष रुचि होती है। छठवे प्रहरमे वर्षा होनेसे शान्ति और सुभिक्ष की सूचना प्राप्त होती है। सातवे प्रहरमें आकाशमे बादलोका आच्छादित रहना बहुत शुभ और वर्षा होना अशुभ सूचक है। आठवें प्रहरमे आकाशका स्वच्छ रहना मगलसूचक है।

अक्षय-तृतीयाके दिन मध्याह्नमें छाया गणित द्वारा भी सुभिक्ष-दुर्भिक्षका ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसकी प्रक्रिया यह है कि एक नौ अंगुल लम्बी सीधी और चिकनी लकडीको समतल भूमि पर खडा कर दे।

इस लकडीकी छाया पूर्वाभिमुख हो तो अगुलात्मक छाया प्रमाणको पाँचसे गुणाकर सातका भाग दें। भाग देनेसे सम सख्या शेष रहे तो दुर्भिक्षकी सूचना और विषम सख्या शेष रहे तो सुभिक्षकी सूचना समझनी चाहिए। शून्य शेष रहने पर अनाज पर्याप्त मात्रामें उत्पन्न होता है, किन्तु रोग, कष्ट, विपत्ति, या आकस्मिक विद्रोहकी सूचना भी प्राप्त होती है। छायाके पश्चिमाभिमुख होने पर उस अङ्गुलात्मक छायाको चारसे गुणा कर पाँचका भाग देने पर शेष एकमे सुभिक्ष, दोमें दुर्भिक्ष, तीनमें सुभिक्ष, चार शेषमें समता—सामान्यत सुख-शान्ति और शून्य शेषमें सब प्रकारसे सुख-शान्तिकी प्राप्ति होती है। उत्तराभिमुख छायाके होनेपर अङ्गुलात्मक छाया मानको ग्यारहसे गुणा कर तेरहका भाग देकर शेष सख्याके अनुसार भविष्यफल अवगत करना चाहिए। एक शेष रहने पर शान्ति-सुख, दो शेष रहने पर पशुओको कष्ट, तीन शेष रहने पर अवर्षण, चार शेष रहने पर धन-धान्यकी समृद्धि, पाँच शेष रहने पर अकाल, छ शेष रहने पर सुख-साता, सात शेष रहने पर कष्ट, महामारी और अन्नकी उत्पत्ति, आठ शेष बचने पर सुभिक्ष, रोगवृद्धि और आन्तरिक कलह, नौ शेष बचने पर देशमें उत्पात, किसी महापुरुष या नेताकी मृत्यु और सामान्यत जलवर्षा, दश शेष रहने पर सुख, नये कार्योका प्रचार-विकास, अन्नकी समृद्धि और जनसख्याकी वृद्धि, ग्यारह शेष बचने पर अच्छी वर्षा, सामान्यत सुख, वस्तुओकी मूल्यवृद्धि और व्यापारियोको अकस्मात् लाभ, बारह शेष बचने पर अन्नकी समृद्धि, प्रजाको सुख और राज्यकोषकी वृद्धि एव शून्य रहने पर धन-जनकी हानि, तिलहनोकी मूल्यवृद्धि, सामान्यत वर्षा, प्रजामें पारस्परिक कलह, वितडा और शत्रु-आक्रमणकी सूचना समझनी चाहिए।

दक्षिणाभिमुख छायाके होने पर अङ्गुलात्मक छाया मानमे सात जोडकर चारसे भाग देने पर एक शेष बचनेसे अन्नवृद्धि, समयानुसार वर्षा, विशेष रूपसे तृणोत्पत्ति एव सुख-शान्ति, दो शेष बचनेसे पशुओकी वृद्धि, आवश्यकतानुसार वर्षा, नये नेताका पदार्पण एव सामान्यत सुख-लाभ, तीन शेष बचनेसे अन्न-हानि, अल्पवर्षा, धान्यरोग एव जल-कष्ट और शून्य शेष बचनेसे व्यापारमे लाभ, सामान्यत वर्षा एव पशुओकी मूल्य वृद्धिकी सूचना प्राप्त होती है। छाया-गणितकी उपयोगिता वर्षा और सुभिक्ष ज्ञानके लिए अत्यधिक है। यह गणित मेष-सक्रान्ति और अक्षयतृतीया इन दोनो दिनो करके भविष्यकी सूचना प्राप्त करनी चाहिए। यदि दोनो दिनोका भविष्य फल समान निकलता हो तो निश्चयत वर्षा और सुभिक्षकी सूचना समझ लेना चाहिए।

अक्षय-तृतीया तिथिको जो नक्षत्र रहता है, उस नक्षत्रसे भी भावी फलादेश अवगत किया जाता है। यदि इस तिथिको समस्त दिन व्यापी रोहिणी नक्षत्र हो तो देशमें सुभिक्ष, सस्ता अन्न, व्यापारियोको हानि, धर्ममार्गका विकास, उत्सवोमें उत्साह एव सम्यक् जलवर्षाकी सूचना प्राप्त होती है। मारवाड, राजस्थान, गुजरात, बम्बई, बिहार, अवध और मद्रासमें यथेष्ट वर्षा होती है, परन्तु आसाम, विन्ध्यप्रदेश, मध्यप्रदेश, और दक्षिणी प्रान्तमे अवर्षण या अतिवर्षणकी स्थिति रहती है। श्रावण और भाद्रपदमें अधिक वर्षा और अन्य महीनोमें अल्पवर्षा होती है। यदि अक्षयतृतीयाके दिन कृत्तिका नक्षत्र आता है, तो अल्पवर्षा होती है। फसल भी अच्छी नही होती, देशमे सर्वत्र उपद्रव होते हैं, राजनैतिक दलोमे सघर्ष होता है और आषाढ़के महीनेमें अच्छी वर्षा होती है। हाँ, श्रावण और भाद्रपदमें वर्षा कम होती है तथा आश्विनमासमें भी समयपर वर्षा होनेकी सूचना प्राप्त होती है, अत पूर्व, दक्षिण और उत्तरके प्रदेशोमे अच्छी फसल उत्पन्न होती है। अक्षयतृतीयाको कृत्तिका नक्षत्रके सूर्यास्तकाल पर्यन्त रहनेसे उत्तरकी स्थिति अच्छी नही रहती। इस दिशाके प्रदेशोमे अकालकी सम्भावना बनी रहती है। मृगशिरा नक्षत्र जब उक्त तिथिको मध्याह्नव्यापी रहता है, तो साधारण वर्षाकी सूचना प्राप्त होती है। वस्तुओंके मूल्यमें वृद्धि होती है और फसल साधारण-

रूपमें उत्पन्न होती है। उक्त तिथिको यदि यह नक्षत्र सूर्यास्तपर्यन्त रहे तो पूर्वके प्रदेशोमें अधिक वर्षा, दक्षिणमे सामान्य वर्षा, पश्चिमीय प्रदेशोमें सुख-समृद्धि और उत्तरके प्रदेशोमें जलकष्ट रहता है। यदि यह नक्षत्र उक्त तिथिको मध्यरात्रि तक रहे तो व्यापारियोको हानि, वस्तुओके मूल्योमें विशेष उतार-चढाव औद्योगिक कार्योमे प्रगति, धान्यकी विशेष उत्पत्ति, गेहूँ-चना-जौकी फसलमें किञ्चित् न्यूनता एव पशुओको कष्ट होता हैं। रोहणी नक्षत्र ५० घटीसे अधिक तृतीयाके दिन हो अथवा ८ घटीसे कम हो तो अधिक जलवृष्टि होती है। अनाजके मूल्यमे विशेषरूपसे घटा-बढा होती रहती है। पश्चिमके प्रदेशोमें अधिक सुख-शान्ति रहती है।

अक्षय-तृतीयाको पडनेवाले वारके अनुसार भी फलादेश ज्ञात करनेकी विधि प्रचलित है। यदि अक्षय-तृतीया गुरुवारके दिन पडे तो समयानुसार पर्याप्त वर्षा, सर्वत्र सुख शान्ति, धन-जनकी वृद्धि, दुग्ध-घृतकी समृद्धि, व्यापारियोको लाभ, औद्योगिक कार्योमे प्रगति, धर्म-कार्योका प्रचार-प्रसार, नेताओमे सघर्ष और सभी दिशाओमें सुभिक्षकी सूचना प्राप्त होती है। इस तिथिके दिन शुक्रवार हो तो पूर्वीयप्रदेशोमें अल्पवर्षा, पश्चिमीय प्रदेशोमें पर्याप्त वर्षा, दक्षिणीय प्रदेशोमें सामान्य वर्षा और उत्तरीय प्रदेशोमे जल-कष्ट रहता है। वर्षाकी उक्त स्थितिके रहने पर भी धान्य उत्पत्ति सुन्दर होती है। अनाज सस्ता रहता है और पशुधनकी वृद्धि होती है। जब अक्षयतृतीया बुधवारके दिन पडती है, तो मध्यम वर्षा, प्रजामें विद्रोह, धर्मात्माओमे कलह, नेताओको कष्ट, राजनैतिक दलोमे परस्पर सघर्ष, राजकार्योमें विशृखलता एव मध्यम रूपमे फसलकी उत्पत्ति होती है। मगलवारको इस तिथिके आनेसे अतिवृष्टि या अनावृष्टि, असमयवृष्टि, अन्नहानि, फसलमें नाना प्रकारके रोगोकी उत्पत्ति, व्यापारियोको लाभ, कपासकी फसलकी हानि, गन्ना की फसलमे समृद्धि, गेहूँ-चनाकी उत्पत्तिमे कमी एव जनताको रोगजन्य कष्ट होता है। सोमवारको इस तिथिके आने पर प्रचुर परिमाणमे धन-धान्यकी वृद्धि, यथेष्ट परिमाणमें वर्षा, देशमें शान्ति, किसानोको लाभ, ईति भीतिका अभाव, दक्षिण-प्रदेशमें महामारी, फसलकी कमी, उत्तरमे पर्याप्त जलवर्षा एव दुग्ध-घृतादि रसपदार्थोके मूल्यमे कमी आती है और उक्त पदार्थोकी उत्पत्ति प्रचुर-परिमाणमे होती है। रवि-वारको जब यह तिथि पडती है तो साधारण वृष्टि, सामान्य रूपसे धान्यकी उत्पत्ति, व्यापारियोको लाभ, रस-पदार्थोके मूल्यमे महार्घता एव सक्रामक बीमारियाँ फैलती है। शनिवारके दिन इस तिथिका पडना अशुभ सूचक है। इस दिन अक्षयतृतीयाके होनेसे वर्षाकी कमी, पूर्वीय प्रदेशोमे बाढ, भुखमरी, पश्चिम में सुख-शान्ति, दक्षिणमें नाना प्रकारसे अशान्ति, अन्नकी कमी और नेताओमे परस्पर कलह उत्पन्न होती है। अक्षयतृतीयाके दिन रोहिणी-नक्षत्र और गुरुवार हो तो आगामी वर्षके लिए बहुत ही शुभ सूचक है। वर्षा अच्छी होती है और फसल भी उत्तम होती है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि इस दिन गुरुग्रहका उदित रहना आवश्यक है, गुरुग्रहके अस्त रहनेसे या बाल्यावस्थामें रहनेसे फलकी प्राप्ति नही होती। जब गुरु बाल्योदय अवस्थामे रहता है, तो अत्यल्प फलकी प्राप्ति होती है। मार्गी बृहस्पतिके रहनेमे भी उक्त फल उपलब्ध होता है।

अक्षय-तृतीयाके दिन बुधवारका पडना और साथमे कृत्तिका नक्षत्रका रहना देशकी समृद्धि, सुख, शान्ति, सुवर्षाका सूचक है। मार्गी बलवान् बुध कृत्तिका नक्षत्र सहित अक्षयतृतीयाके दिन रहनेसे देशकी समृद्धि, सुख और शान्तिका सूचक है। इस तिथिको मृगशिरा नक्षत्र शुक्रवार, बुधवार और सोमवारको पडे तो सुकाल, सुभिक्ष और वर्षाका सूचक है।

अक्षयतृतीयाके दिन शकुन, धान्य, लोष्ठ आदि परीक्षाओ द्वारा वर्षा और शुभाशुभके फलका विवे-चन करते हुए लिखा गया है कि वैशाख शुक्ला द्वितीयाकी रात्रिमें, जिसमे तृतीया आ गयी हो, दूसरे घर

जाकर कोई वस्तु मागनी चाहिए। यदि गृहस्वामी प्रसन्नता-पूर्वक अभिलषित वस्तु दे और मधुर-प्रिय वचन बोले तो आगामी वर्ष उत्तम रहेगा, इसके विपरीत आचरणमें अनिष्ट फल होता है। शकुन साधकर इसी रात्रिमें किसीके घर जाकर वहांके स्त्री-पुरुषोका वार्तालाप सुना जाय, यदि वे प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप कर रहे हो तो शुभ और कलह युक्त वार्तालाप हो तो अशुभ फल अवगत करना चाहिये।

अक्षय-तृतीयाके दिन कुम्हारके घरसे चार कच्चे सिकोरे—मिट्टीके कटोरी जैसे वर्तन लाकर उनमें क्रमश आषाढ, श्रावण, भाद्र और आश्विनकी भावना करके जल भरदे और देखे कि सबसे पहले कौन से महीने वाले सिकोरेसे किस दिशासे जल वह रहा है। जिस महीनेके सिकोरेसे जिस दिशाको शीघ्र ही जल वहेगा, उस महीनेमे उसी दिशामें प्रचुर वर्षा होगी। जिस महीनेके सिकोरेसे सबसे पीछे जल गिरे और जिस दिशामें गिरे, उस महीनेमें उस दिशामें जलकी वर्षा नही होती है।

अक्षय-तृतीयाके दिन प्रात कालमें ग्रामके वाहर किसी पेडके नीचे दही, भात, घृत, चीनीके पाँच पिण्ड वनाकर चार चारो दिशाओमे और एक बीचमें रख दे। कौवे सर्व प्रथम जिस दिशाके पिण्डको खावे, उस दिशामें पूर्णतया सुभिक्ष होगा। यदि वे बीच वाले पिण्डको खावे तो सभी देशोमें सुभिक्ष होगा। यहाँ एक वात ध्यान रखनेकी यह है कि कौवे जिस दिशासे आकर खायेंगे, उस दिशामे रोग-मरी एव नाना प्रकारकी व्याधियाँ उत्पन्न होनेकी सूचना समझना चाहिए।

अक्षय-तृतीयाको किसी स्वच्छ पात्रमें जल भर उसमें सूर्य प्रतिविम्वका दर्शन करे, यदि उसमें लाल विम्व दिखलायी पडे तो युद्ध, कलह, पीला दिखलायी पडे तो रोग, श्वेत दिखलायी पडे तो सुभिक्ष एव धूसर-वर्ण दिखलायी पडे तो मूषक, टिड्डी आदिसे फसलको भय रहता है।

अक्षय-तृतीयाके दिन यदि रोहिणी नक्षत्रका तारा अस्त नही हुआ और चन्द्रमा उससे पहले ही अस्त हो गया हो तो दुर्भिक्ष, रोहिणी नक्षत्र पहले अस्त हो गया हो और चन्द्रमा उसके वाद अस्त हुआ हो तो सुभिक्ष होता है।

इस तिथिको चन्द्रमा सूर्यसे वायी ओर अस्त हो तो अशुभ, उत्तरकी ओर रहे तो सुभिक्ष एव समा-नान्तर हो तो सुभिक्ष होता है। इस तिथिके अन्तिम दो प्रहरमें दो-दो घडीका विभाग करके क्रमश आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन महीनोकी कल्पना करनी चाहिए। प्रथम दो घडियोमें पूर्वकी हवासे, द्वितीय दो घडियोमें उत्तरकी हवासे, तीसरी दो घडियोमें पश्चिमकी हवासे और अन्तिम दो घडियोमें दक्षिण की हवासे क्रमश आषाढ, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन मासमें वर्षा होनेकी सूचना समझनी चाहिए। इस तिथिकी रात्रिमें पूर्व दिशाकी हवा चलनेसे धान्यकी उपज वहुत अच्छी होती है।

इस तिथिको दक्षिणी वायु चलनेसे घासकी हानि, पश्चिमी वायु चलनेसे यथेष्ट वर्षा और उत्तरीय वायु चलनेसे वर्षा ऋतुमें इक्कीस दिनो तक मेघ गर्जन होता है। यदि इस तिथिको चारो दिशाओकी वायु चले तो अनावृष्टि या अतिवृष्टि, प्रजाको कष्ट एव धान्य महँगा विकता है। पूर्व और उत्तरकी हवा चलनेसे वर्षाका सद्भाव और दक्षिण तथा नैऋत्य कोणकी हवा चलनेसे वर्षाकी रुकावट सूचित होती है। पश्चिमकी वायु चलनेसे खूव वर्षा होती है। आकाशमें वादलोकी चाल देखकर वायुकी गतिका परिज्ञान करना चाहिए।

इस तिथिसे लेकर पाँच-छ दिनो तक लगातार वायु अधिक चले तो आगामी वर्षमें धान्य उत्पत्ति की कमीकी सूचना प्राप्त होती है। यदि अक्षयतृतीयाके एक दिन वाद आकाशमें वादल दिखलाई पडे और हवा चले तो उक्त वर्षा होनेकी सूचना प्राप्त होती है। अक्षयतृतीया अथवा वैशाख शुक्ला चतुर्थीको वर्षा होना आगामी वर्षके लिए शुभ सूचक नही है।[१]

---

१ विशेष जानकारीके लिए देखिये—कादम्बिनी, जयपुर, वि० स० १९९९, पृ० ५७-६२।

लोकविजय-यन्त्रके ध्रुवाङ्क

नवकोट्ठएण सुद्धं इगसय पणयाल अकगणिय-पय ।
इक्किक्वक होइ वुड्ढी तेवन्नसयं त्रियाणिज्जा ॥३॥

नौ कोठोसे शुद्ध चक्र वनाकर मध्यके कोष्ठकमे १४५ का अङ्क लिखे, तत्पश्चात् उसमे दिशा-विदिशाके क्रमसे एक-एक अङ्क बढाकर प्रदक्षिणारूप १५३ तकके ध्रुवाङ्क स्थापित करे ।

विवेचन—ज्योतिष शास्त्रमें देशोका विचार उज्जयिनीसे किया गया है, क्योकि रेखाशके निकट यह नगरी पडती है । अत मध्यप्रान्तका ध्रुवाङ्क १४५ है, इसके पश्चात् पूर्व दिशाके देशोके ध्रुवाङ्क १४६, अग्निकोणके देशोके ध्रुवाङ्क १४७, दक्षिणके देशोके ध्रुवाङ्क १४८, नैऋत्यकोणके देशोके ध्रुवाङ्क १४९, पश्चिमके देशोके ध्रुवाङ्क १५०, वायुकोणके देशोके ध्रुवाङ्क १५१, उत्तरके देशोके ध्रुवाङ्क १५२, और ईशान-कोणके देशोके ध्रुवाङ्क १५३ है ।

दिशाके ध्रुवाङ्क पूर्व दिशाको आदि कर स्थापित करने चाहिए । जैन गणित परम्परामे गणना एकसे होती है, परन्तु एकको सख्या नही माना गया है ।[१] अत पूर्व दिशाका देशाङ्क २ है, इसके आगे अग्नि-कोणका ३, दक्षिण दिशाका ४, नैऋत्यकोणका ५, पश्चिम दिशाका ६, वायुकोणका ७, उत्तर दिशाका ८ और ईशानकोणका ९ देशाङ्क है । इस प्रकार दिशा और देशोके ध्रुवाङ्क स्थापित कर यन्त्र वना लेना चाहिए । इस यन्त्र परसे शुभाशुभ फल अवगत करना तथा उस फलादेशके अनुसार सतर्क और सावधान होकर अपनी प्रवृत्ति करना चाहिए। मध्य देशका देशाङ्क एक माना गया है ।

यन्त्रसे फलादेश निकालनेकी विधि

णिहिभत्ते ज सेस तमकसारेण गणिय जे देसा ।
संवच्छररायाओ आरम्भ दसाक्कमे भणिदा ॥४॥

लोकविजय-यन्त्रद्वारा प्राप्त हुए देश और दिशाके ध्रुवाङ्कोमे अश्विनी आदि जिस नक्षत्रपर शनि हो, उतनी सख्या जोडकर योगफलमे नौका भाग देने पर जो शेष रहे, उसे वर्त्तमान सवत्सरके राजासे आरम्भ कर विंशोत्तरी दशाक्रमसे गणनाकर फलादेश अवगत करना चाहिए ।

विवेचन—लोकविजय-यन्त्रमें देश, ग्राम, नगर और दिशाके ध्रुवाङ्क आये है, अपने नगरके ध्रुवाङ्कमें दिशाका ध्रुवाङ्क जोडकर, अश्विन्यादिसे गिनकर शनिनक्षत्रसख्याको जोड देनेसे जो योगफल आवे, उसमे ९ का भाग देनेसे एकादि शेषमे वर्त्तमान सवत्सरके राजासे विंशोत्तरी दशाक्रमसे फल अवगत करना चाहिए । यहाँ शनिनक्षत्रसख्याको जोडनेका कारण यह है कि सवत्सरपर शनिका प्रभाव विशेष पडता है । वर्षा, सुभिक्ष, उत्पात, व्यापार, रोग, आकस्मिक भय आदिका सम्वन्ध शनि और वृहस्पतिसे अधिक है । वर्तमान सवत्सरका स्वामी वृहस्पतिसे सम्वन्ध रखता है, अत यहाँ पर गुरुनक्षत्रको जोडा नही गया है । शनिनक्षत्रकी अपेक्षा भावी फलादेशके लिए सर्वदा रहती है। अत उपर्युक्त गाथामें शनिनक्षत्रका उल्लेख न होनेपर भी प्रसगवश शनिनक्षत्र ग्रहण किया गया है ।

उदाहरणार्थ वि० स० २०२३ के मार्गशीर्षमें यह जानना है कि कलकत्ता, आरा, सहारनपुर, दिल्ली और वाराणसीमें सुभिक्ष, वर्षा एव रोग आदिकी क्या स्थिति होगी ? इस उदाहरणमें कलकत्ता पूर्व दिशामें

१. एयादीया गणणा वीयादीया हवति सखेज्जा—त्रिलोकसार, गाथा १६ ।

है, अत कलकत्ताकी दिशाका ध्रुवाङ्क १४६ हुआ तथा यहाँका देश ध्रुवाङ्क दो है। शनि मार्गशीर्पमे पूर्वा भाद्रपद नक्षत्रपर है, तथा इस वर्षका सवत्सरपति बुध है। अत एव अश्विनीमे पूर्वा भाद्रपद तक नक्षत्र गणना की तो २५ सख्या आई। अत १४६ + २ + २५ = १७३ योगफल हुआ। इनमे ९ का भाग दिया तो १७३ – ९ = १९ भागफल और शेष २ रहा। अब शेपका सवत्सर राजा—बुधसे विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार गणना करनी चाहिए अर्थात् आदित्य, चन्द्रमा, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्रक्रमसे ग्रह-गणना करनी है। यहापर दो शेप है, अत बुधसे गणना करने पर दूसरी सख्या केतुकी हुई। गाथा १७ मे केतु दशाका फलादेश बताया गया है। अत फलादेश आगे लिखे गये दशाफलके आधारपर अवगत करना चाहिए। विंशोत्तरी दशाके क्रमका सक्षेपमें स्मरण रखनेके लिए निम्नाङ्कित सक्षिप्त रूप उपादेय होगा।

आ० च० रा० जी० श० बु० के० शु०। शुक्रसे आगे गणना करनेकी आवश्यकता पडनेपर पुन आ० —आदित्य—सूर्यसे गिनना होता है।

वाराणसी ईशान कोणमे स्थित है, क्योकि दिशाका परिज्ञान उज्जयिनीसे किया जाता है। अत वाराणसीका दिशाध्रुवाङ्क १५३, देशध्रुवाङ्क ९ है, शनि पञ्चाङ्गमें पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रपर है, अत इसकी सख्या २५ है। अतएव १५३ + ९ + २५ = १८७ योगफल हुआ। इसमें ९ का भाग दिया तो—१८७ – ९ = २० भागफल और ७ शेप रहा। बुध सवत्सरका राजा है, अत बुधसे विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार गणना की तो राहुकी दशा आई। राहुदशाका फल १३वी गाथामें आगे आया है।

दिल्ली उत्तर दिशामें है, यहाँका ध्रुवाङ्क १५२ है और यहाँका देशध्रुवाङ्क ८ है। शनि पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमे अवस्थित है, इसकी सख्या २५ है। अत १५२ + ८ + २५ = १८५, १८५ – ९ = २० भागफल, ५ शेप रहा। बुधसे विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार ५ सख्याकी गणना की तो चन्द्रमाकी दशा आयी। इस दशाका फल ११वी गाथामें वर्णित है।

आराका दिशाध्रुवाङ्क १५३, देशध्रुवाङ्क ९ और पूर्ववत् नक्षत्रसख्या २५ है, अत १५३ + ९ + २५ = १८७ – ९ = २० भागफल और ७ शेप। सवत्सराधिपति बुधसे विंशोत्तरी दशाके अनुसार गणना की तो राहुकी दशा आई। इसका फलादेश इस ग्रन्थकी १३ वी गाथाके अनुसार ज्ञात करना चाहिए। इसी प्रकार धौलपुर, आगरा, मथुरा, सागर प्रभृति स्थानोका फलादेश अवगत करना चाहिए।

सुभिक्ष, दुर्भिक्ष और वर्पाका परिज्ञान करनेके लिए इस लोकविजय-यन्त्र का उपयोग अक्षय-तृतीयाके दिन करना चाहिए। जिस प्रकार अक्षय-तृतीयाके दिन बादलोका निरीक्षणकर वर्पाका परिज्ञान प्राप्त किया जाता है, उसी प्रकार इस लोकविजययन्त्रके उपयोग द्वारा समस्त देशोके शुभाशुभत्वका विचारविमर्श किया जाता है।

सवत्सरद्वारा शुभाशुभ ज्ञात करनेका नियम

सवत्सर जाननेकी प्रक्रिया बतलाते हुए कहा गया है कि शकाब्दमें १२ जोडकर ६० का भाग देनेपर एकादि शेपमे प्रभव, विभव आदि सवत्सर होते है अथवा विक्रम सवत्में ९ जोडकर ६० का भाग देनेपर एकादि शेपमे प्रभव, विभव आदि सवत्सर होते हैं। सवत्सरोंकी सख्या ६० मानी गयी है। बीस-बीस सवत्सरोको आचार्योंने एक-एक युगमें विभक्त किया है, अत ब्रह्मबीसी, विष्णुबीसी और रुद्रबीसीके नामसे ये तीनो युग प्रसिद्ध हैं। सवत्सरोकी नामावली निम्न प्रकार है —

लोकविजय यन्त्रके लिए उपयोगी शनि नक्षत्रका परिज्ञान पञ्चांगपरसे ही किया जा सकता है। प्रत्येक पञ्चागमे शनैश्चरका नक्षत्र अकित रहता है। यन्त्र द्वारा फलादेश अवगत करनेके लिए उपयोगी नक्षत्रोकी नामावली निम्न प्रकार है—

(१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिरा, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वाफाल्गुनी, (१२) उत्तराफाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाति, (१६) विशाखा, (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढा, (२१) उत्तराषाढा, (२२) श्रवण, (२३) घनिष्ठा, (२४) शतभिषा, (२५) पूर्वाभाद्रपदा, (२६) उत्तराभाद्रपदा, (२७) रेवती। उत्तराषाढाके बाद और श्रवणके पहले अभिजित् नक्षत्र भी माना जाता है, किन्तु इस फलादेशमे इसकी गणना नही की गयी है।

ग्राम और नगरके ध्रुवाङ्क

जो अंको जं दिस्से बोधव्वो देसगाम-नयरस्स।
आइच्चाइ-गहाण फल च पभणति गीयत्था ॥ ५ ॥

जो जो अक जिस जिस देशके है, वे ही उस देशके अन्तर्गत ग्राम, नगरके ध्रुवाङ्क जानना चाहिए। इन ध्रुवाङ्कोंके द्वारा ही गीतार्थ विद्वान् सूर्यादि ग्रहोका फल कहते हैं।

विवेचन—तीसरी और चौथी गाथामें सामान्यत देश और दिशाके ध्रुवाङ्क बतलाकर रवि आदि ग्रहोकी दशा निर्धारित की गयी है और आगेवाली गाथाओमें उन दशाओका फलादेश बतलाया गया है। इस गाथामें आचार्यने इतना ही बतलाया है कि सामान्यरूपसे जिस देशका जो ध्रुवाङ्क है, वही ध्रुवाङ्क उस देशके गाँव, नगर, नदी, वन, पर्वत आदिका भी माना जायगा। फलादेशकी प्रक्रिया पूर्वोक्त ही रहेगी। विशेषरूपसे फल ज्ञात करनेके लिए आगेवाली गाथाओमें प्रत्येक नगरके ध्रुवाङ्कोका आनयन किया है। ध्रुवाङ्कानयनकी यह प्रक्रिया बडी ही सरल, विद्वत्तापूर्ण और वैज्ञानिक है। जो अधिक गणित नही करना चाहते है तथा विषयकी गहराई और विस्तारमें प्रवेश नही करना चाहते हैं, उन्हें पूर्वोक्त विधिसे ही ग्रहदशाका परिज्ञान कर लेना चाहिए।

लोकविजय यन्त्रकी ध्रुवांक-सारणी

क्रमसख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
१	अकालकोट	बम्बई	१४९	५	५	कृत्तिका
२	अकोला	महाराष्ट्र	१४८	४	५	कृत्तिका
३	अगरतल्ला	त्रिपुरा	१४६	२	५	कृत्तिका
४	अघनेरा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	५	कृत्तिका
५	अजन्ता	हैदराबाद	१४८	४	५	कृत्तिका
६	अजमेर	अजमेर	१५२	८	५	कृत्तिका
७	अजमगढ	मध्यप्रदेश	१४५	१	५	कृत्तिका
८	अटक	पजाब	१५०	६	५	कृत्तिका
९	अण्डमन	अण्डमन	१४७	३	५	कृत्तिका
१०	अनन्तापुर	मैसूर	१४६	४	५	कृत्तिका

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	विनाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
४६	औरंगाबाद	हैदराबाद	१४८	८	६	रोहिणी
४७	कटक	उड़ीसा	१५०	६	७	मृगशिर
४८	कटनी	मध्यप्रदेश	१४९	१	७	मृगशिर
४९	काठियावाड़	गुजरात	१५०	६	७	मृगशिर
५०	कन्नौज	उत्तरप्रदेश	१५२	८	७	मृगशिर
५१	करनाल	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
५२	कर्नाटक	दक्षिणभारत	१४७	३	७	मृगशिर
५३	करांची	पाकिस्तान	१५०	६	७	मृगशिर
५४	करीमनगर	हैदराबाद	१४८	४	७	मृगशिर
५५	करूर	मद्रास	१४९	५	७	मृगशिर
५६	करोली	राजस्थान	१५२	८	७	मृगशिर
५७	कल्याण	बम्बई	१५०	६	७	मृगशिर
५८	कलकत्ता	बंगाल	१४८	२	७	मृगशिर
५९	कलिंगपट्टम	मद्रास	१४७	३	७	मृगशिर
६०	कसौली	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
६१	कागरा	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
६२	काजीवरम	मद्रास	१४७	३	७	मृगशिर
६३	कायर	बिहार	१४६	२	७	मृगशिर
६४	कादिरी	मद्रास	१४७	३	७	मृगशिर
६५	कानपुर	उत्तरप्रदेश	१५३	९	७	मृगशिर
६६	कागवेलपुर	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
६७	काम्बे	बम्बई	१५०	६	७	मृगशिर
६८	कारकल	मद्रास	१४७	३	७	मृगशिर
६९	कालका	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
७०	कालाबाग	पंजाब	१५२	८	७	मृगशिर
७१	काश्मीर	काश्मीर	१५२	८	७	मृगशिर
७२	काबली	मद्रास	१४८	८	७	मृगशिर
७३	कालीकट	मद्रास	१४८	४	७	मृगशिर
७४	कालेमियर	मद्रास	१४८	४	७	मृगशिर
७५	किशनगज	बिहार	१५३	९	७	मृगशिर
७६	किशनगढ	जैसलमेर	१५१	७	७	मृगशिर
७७	किशनगढ	राजस्थान	१५१	७	७	आर्द्रा
७८	कुन्दापुर	मद्रास	१४८	४	८	आर्द्रा
७९	कुद्दप्पा	मद्रास	१४७	३	८	आर्द्रा
८०	कुधालोर	मद्रास	१४७	३	८	

क्रमसख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
११६	गोल्कुण्डा	हैदरावाद	१४८	४	९	पुनर्वसु
११७	गोहाटी	आसाम	१५३	९	९	पुनर्वसु
११८	चकरौता	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	रेवती
११९	चटगांव	वगाल	१४६	२	३	रेवती
१२०	चतगपुर	मद्राग	१४७	३	३	रेवती
१२१	चन्द्रनगर	वगाल	१४६	२	३	रेवती
१२२	चाडवासा	विहार	१४६	२	३	रेवती
१२३	चांदपुर	वगाल	१५२	२	३	रेवती
१२४	चांदवाडी	विहार	१५३	९	३	रेवती
१२५	चांदा	मध्यप्रदेश	१४५	१	३	रेवती
१२६	चांदोद	वम्वई	१४९	५	३	रेवती
१२७	चिकमागालूर	मैसूर	१४८	४	३	रेवती
१२८	चिकाकोल	मद्रास	१५३	९	३	रेवती
१२९	चित्तूर	मद्रास	१५३	९	३	रेवती
१३०	चित्तौड	राजस्थान	१५२	८	३	रेवती
१३१	चिदम्वरम्	मद्रास	१४७	३	३	रेवती
१३२	चिलारू	काश्मीर	१५२	८	३	रेवती
१३३	चुनार	उत्तरप्रदेश	१५३	९	३	रेवती
१३४	छपरा	विहार	१५३	९	८	आर्द्रा
१३५	छोटानागपुर	विहार	१४६	२	८	आर्द्रा
१३६	जगन्नाथगज	वगाल	१५३	९	५	उत्तरापाढा
१३७	जनकपुर	मध्यप्रदेश	१५२	८	५	उत्तरापाढा
१३८	जवलपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	५	उत्तरापाढा
१३९	जमालपुर	विहार	१४६	२	५	उत्तरापाढ़ा
१४०	जयनगर	विहार	१५३	९	५	उत्तरापाढा
१४१	जामपुर (जम्बू)	पजाव	१५३	९	५	उत्तरापाढा
१४२	जम्मू (जम्वू)	काश्मीर	१५२	८	५	उत्तरापाढा
१४३	जालन	हैदरावाद	१४८	४	५	उत्तराषाढा
१४४	जालन्धर	पजाव	१५२	८	५	उत्तरापाढा
१४५	जालपागोडी	वगाल	१५२	८	५	उत्तरापाढा
१४६	जालियानवाला	पजाव	१५२	८	५	उत्तरपाढ़ा
१४७	जालौन	उत्तरप्रदेश	१५१	७	५	उत्तराषाढा
१४८	जूनागढ़	सौराष्ट्र	१५०	६	६	अभिजित्
१४९	जैकोवावाद	वम्वई	१५२	८	६	अभिजित्
१५०	जैपुर	राजस्थान	१५२	८	६	अभिजित्

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
१५१	जैसलमेर	राजस्थान	१५२	८	६	अभिजित्
१५२	जोधपुर	राजस्थान	१५२	८	६	अभिजित्
१५३	जौनपुर	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	अभिजित्
१५४	झालरापाटन	राजस्थान	१५२	८	२	उत्तराभाद्रपद
१५५	झांसी	उत्तरप्रदेश	१५१	७	२	उत्तराभाद्रपद
१५६	टाटानगर	बिहार	१४६	२	८	पूर्वाफाल्गुनी
१५७	टोंक	राजस्थान	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
१५८	ट्रावनकोर	ट्रावनकोर स्टेट	१८६	-	८	पूर्वाफाल्गुनी
१५९	डलहौजी	पंजाब	१५२	८	१	पुष्य
१६०	डाल्टेनगंज	बिहार	१५३	९	१	पुष्य
१६१	डिब्रूगढ़	आसाम	१५३	९	२	आश्लेषा
१६२	डीमापुर	आसाम	१५३	०	२	आश्लेषा
१६३	डेरा इस्माइलखां	पंजाब	१५१	७	२	आश्लेषा
१६४	डेरा गाजीखां	पंजाब	१५१	७	२	आश्लेषा
१६५	ढाका	बंगाल	१८६	२	८	पूर्वाषाढ़ा
१६६	तिरुपती	मद्रास	१८७	३	०	विशाखा
१६७	त्रिचनापल्ली	मद्रास	१८७	३	०	विशाखा
१६८	तंजोर	मद्रास	१४७	३	१	विशाखा
१६९	दरभंगा	बिहार	१५३	९	१	पूर्वाभाद्रपद
१७०	दानापुर	बिहार	१५३	९	१	पूर्वाभाद्रपद
१७१	दार्जिलिंग	बंगाल	१५३	९	१	पूर्वाभाद्रपद
१७२	दिनाजपुर	बंगाल	१५३	९	१	पूर्वाभाद्रपद
१७३	दिल्ली	दिल्ली	१५२	८	१	पूर्वाभाद्रपद

क्रमसख्या	नाम नगर	राज्य	विशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
१८६	नागपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	१	अनुराधा
१८७	नारायणगज	वगाल	१४६	२	१	अनुराधा
१८८	नासिक	वम्वई	१५३	९	१	अनुराधा
१८९	नीमच	ग्वालियर स्टेट	१५२	८	१	अनुराधा
१९०	नैलौर	मद्रास	१४७	३	१	अनुराधा
१९१	नैनीताल	उत्तरप्रदेश	१५३	९	१	अनुराधा
१९२	पटना	विहार	१५३	९	५	उत्तराफाल्गुनी
१९३	पटियाला	पजाव	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
१९४	पलामू	विहार	१५३	९	५	उत्तराफाल्गुनी
१९५	पाटन	वडौदा	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
१९६	पालघार	मद्रास	१४७	३	५	उत्तराफाल्गुनी
१९७	पाण्डेचेरो	मद्रास	१४७	३	५	उत्तराफाल्गुनी
१९८	पानीपत	पजाव	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
१९९	पोलोमीत	उत्तरप्रदेश	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
२००	पुर्लिया	विहार	१५३	९	६	हस्त
२०१	पुरी	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	हस्त
२०२	पुडुकोहे	मद्रास	१४७	३	६	हस्त
२०३	पूर्णिया	विहार	१५३	९	६	हस्त
२०४	पूना	वम्वई	१५०	६	६	हस्त
२०५	पुरी	विहार	१४६	२	६	हस्त
२०६	पेशावर	सीमाप्रान्त	१५१	७	७	चित्रा
२०७	प्रतापगढ	राजस्थान	१५२	८	५	उत्तराफाल्गुनी
२०८	फतेहगढ़	उत्तरप्रदेश	१५१	७	४	पूर्वाषाढा
२०९	फतेहपुरसीकरी	उत्तरप्रदेश	१५२	८	४	पूर्वापाढा
२१०	फतेहपुर	राजस्थान	१५२	८	४	पूर्वाषाढा
२११	फरीदकोट	पजाव	१५२	८	४	पूर्वाषाढा
२१२	फरीदपुर	वगाल	१४६	२	४	पूर्वापाढ़ा
२१३	फर्रुखावाद	उत्तरप्रदेश	१५२	८	४	पूर्वाषाढ़ा
२१४	फलटन	वंम्वई	१५०	६	४	पूर्वापाढा
२१५	फिरोजपुर	पजाव	१५२	८	४	पूर्वापाढ़ा
२१६	फैजावाद	उत्तरप्रदेश	१५३	९	४	पूर्वापाढा
२१७	वक्सर	विहार	१५३	९	६	रोहिणी
२१८	वखसार	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	रोहिणी
२१९	वघेलखड	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२२०	भडौंच	वम्वई	१५०	६	६	रोहिणी

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
२२१	वड़ौदा	वम्बई	१५०	६	६	रोहिणी
२२२	वद्रीनाथ	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	रोहिणी
२२३	वनारस	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	रोहिणी
२२४	वम्वई	वम्वई	१५०	६	६	रोहिणी
२२५	वर्द्धमान	वगाल	१४६	२	६	रोहिणी
२२६	वर्द्धा	मध्यप्रदेश	१४८	४	८	रोहिणी
२२७	वरहमपुर	वगाल	१४६	२	६	रोहिणी
२२८	वरहमपुर	मद्रास	१४८	८	६	रोहिणी
२२९	वरार	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२३०	वरौदा	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२३१	वरेली	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	रोहिणी
२३२	वलिया	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	रोहिणी
२३३	वलैरी	मद्रास	१४७	३	६	रोहिणी
२३४	वस्तर	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२३५	वस्ती	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	रोहिणी
२३६	वहराइच	उत्तरप्रदेश	१५३	९	६	रोहिणी
२३७	वाकरगज	वगाल	१५३	९	६	रोहिणी
२३८	वारकपुर	वगाल	१५३	९	६	रोहिणी
२३९	वारपेट	आसाम	१५३	९	६	रोहिणी
२४०	वारसी	वम्वई	१५१	७	६	रोहिणी
२४१	वारौनी	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२४२	वालसोर	विहार	१५३	९	६	रोहिणी
२४३	वालोचा	राजस्थान	१५१	७	६	रोहिणी
२४४	वासवा	मद्रास	१४७	३	६	रोहिणी
२४५	वासिम	वरार-म प्र	१४८	४	६	रोहिणी
२४६	विमलीपट्टम	मद्रास	१४८	४	६	रोहिणी
२४७	विलासपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२४८	विलोचिस्तान	सीमाप्रान्त	१५१	७	६	रोहिणी
२४९	वीकानेर	राजस्थान	१५२	८	६	रोहिणी
२५०	वीजापुर	वम्वई	१५०	६	६	रोहिणी
२५१	वुकुर	वम्वई	१५०	६	६	रोहिणी
२५२	वुन्देलखण्ड	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२५३	वुरहानपुर	मध्यप्रदेश	१४५	१	६	रोहिणी
२५४	वुलसार	वम्वई	१५०	६	६	रोहिणी
२५५	वून्दी	राजस्थान	१५२	८	६	रोहिणी

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	पिंडाङ्क	वर्गाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
२५६	बेतिया	बिहार	१५३	९	७	मृगशिर
२५७	बेरहमपुर	बंगाल	१५३	९	७	मृगशिर
२५८	बेल्लोर	मद्रास	१४९	५	७	मृगशिर
२५९	बेलगांव	बम्बई	१५०	६	७	मृगशिर
२६०	बैंगलूर	मैसूर	१५०	६	७	मृगशिर
२६१	बोगारा	पाकिस्तान	१४६	२	७	मृगशिर
२६२	बौनीगढ़	बिहार	१४६	२	७	मृगशिर
२६३	बोब्बिली	मद्रास	१४९	५	७	मृगशिर
२६४	भटिण्डा	पंजाब	१५२	८	३	मूल
२६५	भण्डारा	मध्यप्रदेश	१४५	१	३	मूल
२६६	भदोरा	मध्यप्रदेश	१४५	१	३	मूल
२६७	भरतपुर	राजस्थान	१५२	८	३	मूल
२६८	भागलपुर	बिहार	१५३	९	३	मूल
२६९	भावनगर	बम्बई	१५०	६	३	मूल
२७०	भुसावल	बम्बई	१५०	६	४	पूर्वाषाढा
२७१	भेलसा	मध्यप्रदेश	१५२	८	५	उत्तराषाढा
२७२	भोपाल	मध्यप्रदेश	१५२	८	५	उत्तराषाढा
२७३	मऊ	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२७४	मछलीपट्टम्	मद्रास	१४७	३	३	मघा
२७५	मथुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२७६	मदारीपुर	बंगाल	१५३	९	३	मघा
२७७	मद्रास	मद्रास	१४७	३	३	मघा
२७८	मदुरा	मद्रास	१४७	३	३	मघा
२७९	मधुपुर	बिहार	१५३	९	३	मघा
२८०	मधुबनी	बिहार	१५३	९	३	मघा
२८१	मनीपुर	आसाम	१४६	२	३	मघा
२८२	महाबलेश्वर	बम्बई	१५०	६	३	मघा
२८३	महोबा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२८४	मानिकपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२८५	मालिकपुर	मध्यप्रदेश	१४८	४	३	मघा
२८६	मालवा	मध्यप्रदेश	१४५	१	३	मघा
२८७	मिर्जापुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२८८	मुकामा	बिहार	१५३	९	३	मघा
२८९	मुगलपुरा	पंजाब	१५१	७	३	मघा
२९०	मुंगेर	बिहार	१५३	९	३	मघा

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	दिशाङ्क	देशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
२९१	मुजफ्फरगढ	पजाव	१५२	८	३	मघा
२९२	मुजफ्फरनगर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२९३	मुजफ्फरपुर	विहार	१५३	९	३	मघा
२९४	मुर्शिदावाद	वँगाल	१४७	३	३	मघा
२९५	मुरादावाद	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२९६	मुरार	मध्यप्रदेश	१५२	८	३	मघा
२९७	मुलतान	पजाव	१५२	८	३	मघा
२९८	मेदनीपुर	वगाल	१४६	२	३	मघा
२९९	मेरठ	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
३००	मैंगलूर	मद्रास	१४८	४	३	मघा
३०१	मैंनपुरी	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	मघा
३०२	मैसूर	मैसूर	१५०	६	३	मघा
३०३	मोतिहारी	विहार	१५३	९	४	पूर्वाफाल्गुनी
३०४	रतलाम	मध्यप्रदेश	१४५	१	७	चित्रा
३०५	राजकोट	वम्वई	१५०	६	७	चित्रा
३०६	राजनादगाँव	मध्यप्रदेश	१५१	७	७	चित्रा
३०७	रानीगज	वगाल	१५३	९	७	चित्रा
३०८	रामपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	७	चित्रा
३०९	रायगढ	मध्यप्रदेश	१५२	८	७	चित्रा
३१०	रायपुर	मध्यप्रदेश	१५२	८	७	चित्रा
३११	रायवरेली	उत्तरप्रदेश	१५२	८	७	चित्रा
३१२	रावलपिण्डी	पाकिस्तान	१५२	८	७	चित्रा
३१३	राँची	विहार	१४७	३	७	चित्रा
३१४	रुढकी	उत्तरप्रदेश	१५२	८	८	स्वाति
३१५	रुहेलखण्ड	उत्तरप्रदेश	१५२	८	८	स्वाति
३१६	लखनऊ	उत्तरप्रदेश	१५२	८	३	अश्विनी
३१७	ललितपुर	उत्तरप्रदेश	१५१	७	३	अश्विनी
३१८	लश्कर	मध्यप्रदेश	१५२	८	३	अश्विनी
३१९	लारकन	वम्वई	१५०	६	३	अश्विनी

क्रमसंख्या	नाम नगर	राज्य	विंशाङ्क	वेशाङ्क	नगराङ्क	नक्षत्र
३२०	लाहौर	पाकिस्तान	१५२	८	३	अश्विनी
३२१	लुधियाना	पंजाब	१५५	८	४	भरणी
३२२	लोहराना	पंजाब	१५२	८	४	भरणी
३२३	विजयापट्टम	मद्रास	१४८	४	६	भरणी
३२४	विजयनगरम्	मद्रास	१४८	२	६	रोहिणी
३२५	ब्यावर	राजस्थान	१४८	४	६	रोहिणी
३२६	शाहजहाँपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	६	रोहिणी
३२७	शिमला	पंजाब	१५३	९	९	शतभिषा
३२८	शिवपुरी	मध्यप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३२९	श्रीनगर	काश्मीर	१५२	८	९	शतभिषा
३३०	सतारा	बम्बई	१४९	५	९	शतभिषा
३३१	सहसराम	बिहार	१५३	९	९	शतभिषा
३३२	सहारनपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३३३	सरसावा	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३३४	सागर	मध्यप्रदेश	१४५	१	९	शतभिषा
३३५	सांगली	बम्बई	१४९	५	९	शतभिषा
३३६	स्यालकोट	पंजाब	१५२	८	९	शतभिषा
३३७	सिरोही	राजस्थान	१५२	८	९	शतभिषा
३३८	सिलहट	आसाम	१५३	९	९	शतभिषा
३३९	सिलीगुडी	बंगाल	१५३	९	९	शतभिषा
३४०	सिवान	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३४१	सिवनी	मध्यप्रदेश	१३५	१	९	शतभिषा
३४२	सीतापुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३४३	सीतामढी	बिहार	१५३	९	९	शतभिषा
३४४	सुन्दरवन	बंगाल	१४६	२	९	शतभिषा
३४५	सुल्तानपुर	उत्तरप्रदेश	१५२	८	९	शतभिषा
३४६	सूरत	महाराष्ट्र	१५०	६	१	शतभिषा
३४७	सोमनाथ	बम्बई	१५०	६	१	पूर्वाभाद्रपदा
३४८	शोलापुर	बम्बई	१५०	६	१	पूर्वाभाद्रपदा
३४९	हुब्बली	बम्बई	१५०	६	१	पुष्य
३५०	हैदराबाद	महाराष्ट्र	१४८	४	१	पुष्य
३५१	होशंगाबाद	मध्यप्रदेश	१४५	१	१	पुष्य
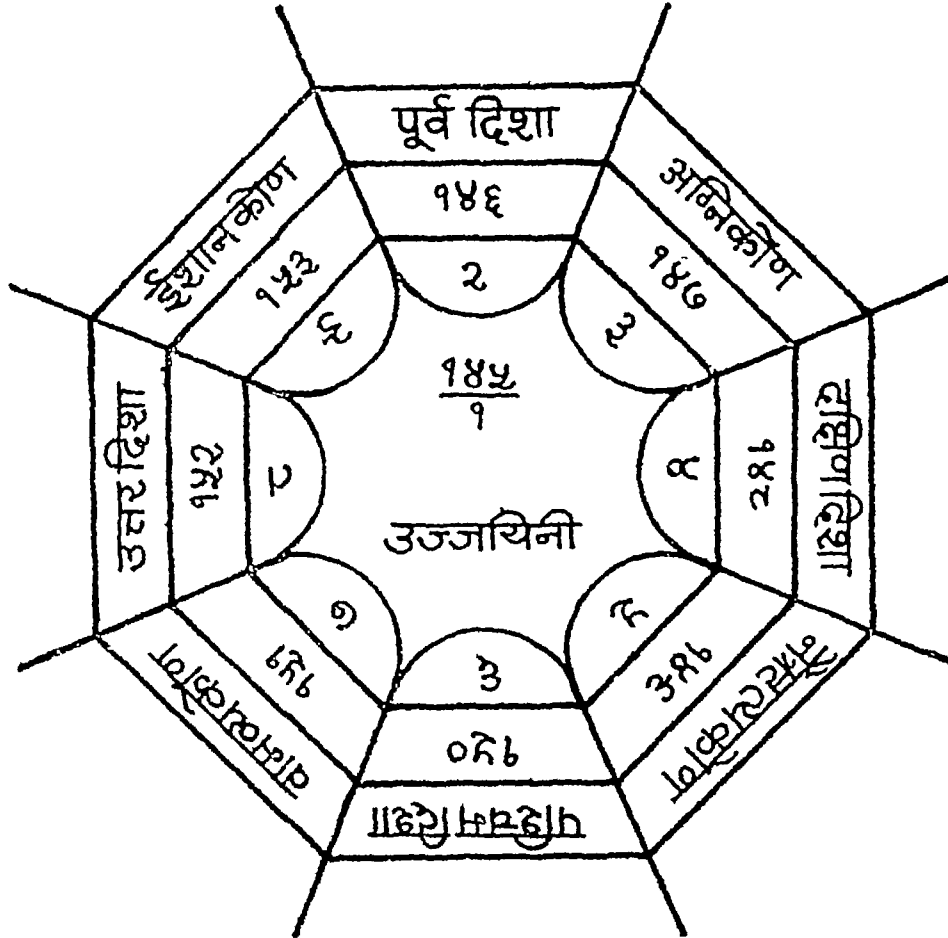
नगर और ग्रामोके ध्रुवाङ्क निकालनेकी विधि

जं जम्मि देसनयरे गामे ठाणे वि णत्थि मूलधुवो ।
तं णामेण य रिक्खं रुद्दंकं करिय सम्मिस्सं ॥६॥
णिहि-भत्ते ज सेस धुवगणिदं देसनयरगामाणं ।
मूलदसाक्कमगणिदं पुव्वत्तफलं वियाणहि ॥७॥

जिस जिस देशके नगर, ग्राम, पर्वत, स्थान आदिके ध्रुवाङ्क उपलब्ध न हो उस उस देशके ग्राम, नगरादिका जो नाम हो, उस नामके नक्षत्रकी संख्यामे ११ जोडकर ९ का भाग देनेसे एकादि शेषरूप ध्रुवाङ्कका प्रमाण आता है। नगर, ग्रामादिका ध्रुवाङ्क बनाकर पूर्वोक्त क्रमसे मूलदशाके गणितानुसार दशाका ज्ञान एव उसके फलादेशका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

आशय यह है कि दिशाङ्क, देशाङ्क, नगराङ्क, संवत्सर, राजाका विंशोत्तरी दशाका वर्षाङ्क और शनि महादशाके गाँव नक्षत्र नामकी संख्याको जोडकर ९ का भाग देने पर जो एकादि शेष आये, उसमें विंशोत्तरी दशाकी गणनाके अनुसार सूर्यादि ग्रहोंकी दशा अवगत करनी चाहिए।

विवेचन—आचार्यने पहले दिशा और देशके ध्रुवाङ्क परिगणित किये हैं, इन दो गाथाओंमें अभीष्ट नगर और गाँव आदिके ध्रुवाङ्क निकालनेकी प्रक्रिया बतलायी है। जिस नगर या गाँवके ध्रुवाङ्क निकालने हो, उस नगर या ग्रामके नामके आदि अक्षरपरसे नक्षत्रका परिज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिये। नक्षत्र सख्या में ११ जोडकर ९ का भाग देनेसे जो शेष रहे, वही उस गाँव या नगरका ध्रुवाङ्क होगा। अक्षरोके अनु-सार नक्षत्रोकी जानकारी निम्न प्रकार प्राप्त की जा सकती है।

नक्षत्रोंके अक्षर

चू चे चो ला = अश्विनी, ली लू ले लो = भारणी, आ ई उ ए = कृत्तिका।
ओ वा वी वू = रोहिणी, वे वो का की = मृगशिरा, कू घ ङ छ = आर्द्रा ।
के को हा ही = पुनर्वसु, हू हे हो डा = पुष्य, डी डू डे डो = आश्लेपा।
मा मी मू मे = मघा, मो टा टी टू = पूर्वाफाल्गुनी, टो टे पा पी = उत्तराफाल्गुनी।
पू ष ण ठ = हस्त, पे पो रा री = चित्रा, रू रे रो ता = स्वाति।
ती तू ते तो = विशाखा, ना नी नू ने = अनुराधा, नो या यी यू = ज्येष्ठा।
ये यो भ भी = मूल, भू ध फ ढ = पूर्वापाढा, भे भो ज जी = उत्तरापाढा।
खी खु खे खो = श्रवण, ग गी गू गे = घनिष्ठा गो स सी सू = शतभिपा।
से सो दा दी = पूर्वाभाद्रपदा, दू थ झ ञ = उत्तराभाद्रपदा, दे दो च ची = रेवती।

उदाहरण—आराका ध्रुवाङ्क निकालना है। इसका आद्य वर्ण 'आ' है, यह कृत्तिका नक्षत्रके अक्षरोमें पडता है, अत आराका कृत्तिका नक्षत्र हुआ। अश्विनीसे गणना करने पर कृत्तिका तीसरा नक्षत्र हुआ, अत तीन नक्षत्र-सख्यामे ग्यारह जोडकर नौका भाग दिया तो—३ + ११ = १४, १४ – ९ = १ भागफल ५ शेष। इस प्रकार आरा नगरका ५ ध्रुवाङ्क हुआ। इसी प्रकार 'दिल्ली' का ध्रुवाङ्क बनाना हो तो 'दिल्ली' का आद्य वर्ण 'दि' पूर्वभाद्रपद नक्षत्रके अक्षरोमें 'दि' = 'दी' मिला। अत दिल्ली नगरका पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र माना जायगा। अश्विनीसे गणना करने पर पूर्वभिद्रपदा २५ वाँ नक्षत्र पडता है, अत २५ + ११ = ३६, ३६ – ९ = ४ भागफल ० शेष। शून्य शेपका अर्थ भाजककी अक सख्याके तुल्य है। अतएव दिल्लीका ध्रुवाङ्क ९ माना जायगा।

नक्षत्रानुसार ध्रुवाङ्कबोधक सारिणी

नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुण्य	आश्लेपा
	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ध्रुवाङ्क	३	४	५	६	७	८	९ (०)	१	२
नक्षत्र	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१६	१८
ध्रुवाङ्क	३	४	५	६	७	८	९ (०)	१	२
नक्षत्र	मूल	पूर्वापाढा	उत्तरापाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
	१९	२०	२१	२२	२३	२४	५५	२६	२७
ध्रुवाङ्क	३	४	५	६	७	८	९ (०)	१	२

ग्राम, नगर आदिके आद्य वर्णपरसे ध्रुवाङ्कबोधक सारिणी

आद्य वर्ण अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अ.
५	५	५	५	५	५	७	७	४	४	५	५	६	६	५	५

आद्य वर्ण	क	का	कि	की	कु	कू	कृ	कॄ	के	कै	को	कौ	क	क.
ध्रुवाङ्क	७	७	७	७	८	८	७	७	९	९	९	९	७	७
आद्यवर्ण	ख	खा	खि	खी	खु	खू	खृ	खॄ	खे	खै	खो	खौ	ख	ख
ध्रुवाङ्क	६	६	७	७	ऽ	७	६	६	७	७	७	७	६	६
आद्यवर्ग	ग	गा	गि	गी	गु	गू	गृ	गॄ	गे	गै	गो	गौ	ग	ग
ध्रुवाङ्क	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	८	८
आद्यवर्ण	घ	घा	घि	घी	घु	घू	घृ	घॄ	घे	घै	घो	घौ	घ	घ
ध्रुवाङ्क	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
आद्यवर्ण	ङ	ङा	ङि	ङी	ङु	ङू	ङृ	ङॄ	ङे	ङै	ङो	ङौ	ङ	ङ
ध्रुवाङ्क	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
आद्यवर्ण	च	चा	चि	ची	चु	चू	चृ	चॄ	चे	चै	चो	चौ	च	च
ध्रुवाङ्क	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
आद्यवर्ण	छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छ	छ	छृ	छॄ
ध्रुवाङ्क	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
आद्यवर्ण	ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	ज	ज	जृ	जॄ
ध्रुवाङ्क	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५
आद्यवर्ण	झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झ	झ	झृ	झॄ
ध्रुवाङ्क	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
आद्यवर्ण	ञ	ञा	ञि	ञी	ञु	ञू	ञे	ञै	ञो	ञौ	ञ	ञ	ञृ	ञॄ
ध्रुवाङ्क	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
आद्यवर्ण	ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	ट	ट	टृ	टॄ
ध्रुवाङ्क	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	४	४	४	४
आद्यवर्ण	ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठ	ठ	ठृ	ठॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
आद्यवर्ण	ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	ड	ड	डृ	डॄ
ध्रुवाङ्क	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१
आद्यवर्ण	ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढ	ढ	ढृ	ढॄ
ध्रुवाङ्क	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
आद्यवर्ण	ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	ण	ण	णृ	णॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	३	६	६	६	६	६	६	६
आद्यवर्ण	त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	त	त	तृ	तॄ
ध्रुवाङ्क	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८

आद्यवर्ण	थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थ	थृ	थॄ
ध्रुवाङ्क	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
आद्यवर्ण	द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	द	द	दृ	दॄ
ध्रुवाङ्क	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	१	१	१	१
आद्यवर्ण	घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घ	घ	घृ	घॄ
ध्रुवाङ्क	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
आद्यवर्ण	न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	न	न	नृ	नॄ
ध्रुवाङ्क	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	१	१	१
आद्यवर्ण	प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	प	प	पृ	पॄ
ध्रुवाङ्क	५	५	५	५	६	६	७	७	७	७	५	५	५	५
आद्यवर्ण	फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फ	फ	फृ	फॄ
ध्रुवाङ्क	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
आद्यवर्ण	ब	बा	वि	वी	बु	वू	वे	बै	वो	वौ	व	व	वृ	वॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	६	६	६	६
आद्यवर्ण	भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भौ	भो	भौ	भ	भ	भृ	भॄ
ध्रुवाङ्क	३	३	३	३	४	४	५	५	५	५	३	३	३	३
आद्यवर्ण	म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	म	म	मृ	मॄ
ध्रुवाङ्क	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	३	३	३	३
आद्यवर्ण	य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	य	य	यृ	यॄ
ध्रुवाङ्क	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२
आपवर्ण	र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	र	र	रृ	रॄ
ध्रुवाङ्क	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७
आद्यवर्ण	ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	ल	ल	लृ	लॄ
ध्रुवाङ्क	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
आद्यवर्ण	व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	व	व	वृ	वॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	६	६	६	६
आद्यवर्ण	श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	श	श	शृ	शॄ
ध्रुवाङ्क	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	९	९	९	९
आद्यवर्ण	प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	प	प	पृ	पॄ
ध्रुवाङ्क	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
आद्यवर्ण	स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	स	स	सृ	सॄ
ध्रुवाङ्क	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	९	९	९	९
आद्यवर्ण	ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	हैं	हो	हौ	ह	ह	हृ	हॄ
ध्रुवाङ्क	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	९	९	९	९
आद्यवणु	क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्ष	क्ष	क्षृ	क्षॄ
ध्रुवाक	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	७	७	७	७

आद्यवर्ण	त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्र	त्र	त्रृ	त्रॄ
ध्रुवाङ्क	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८
आद्यवर्ण	ज्ञ	ज्ञ	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञ	ज्ञ	ज्ञृ	ज्ञॄ
ध्रुवाङ्क	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५

उदाहरण—वि० स० २०२३ में आरा, जवलपुर, मथुरा और आगराका फलादेश ज्ञात करना है, अत इन स्थानोके दिगाङ्क, देशाङ्क, नगराङ्क, सवत्सरके राजाके विंशोत्तरी दशा-वर्षाङ्क[1] और शनि नक्षत्रसे नगर नक्षत्र तकके नक्षत्र ध्रुवाङ्कका योग किया।

जवलपुरका दिशाङ्क १४५, देशाङ्क १, नगराङ्क ५, सवत् २०२३ का वर्षाधिपति बुध है, और विंशोत्तरी दशाके अनुसार इसका वर्षाङ्क १७ है, शनि पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रपर है और जवलपुरका उत्तराषाढ नक्षत्र है, अत पूर्वाभाद्रपदासे उत्तराषाढ तक गणना की तो २४ सख्या प्राप्त हुई। अतएव—

१४५ + १ + ५ + १७ + २४ = १९२ योगफल, १९२ – ९—दशा अवगत करनेके लिए नौका भाग दिया जाता है। अत १९२ – ९ = २१ भागफल ३ शेष। विंशोत्तरी दशाके क्रमसे गणना की तो भौम दशा आयी। अतएव वि० स० २०२३ में जवलपुर नगरकी महादशा भौम-मगलकी है।

अन्तर्दशाकी विधि

किसी भी नगरकी अन्तर्दशा देशकी दशाको ही माना जाता है। जवलपुरकी अन्तर्दशा मध्यदेशकी दशा ही मानी जायगी। यहाँके दिशाङ्क, देशाङ्क और शनि नक्षत्र सख्याको जोडकर योगफलमें नौका भाग देना चाहिए। शेषको विंशोत्तरी दशा क्रमसे वर्षाधिपतिसे आगे गिनना चाहिए। यहाँ दिशाङ्क १४५, देशाङ्क १, शनि नक्षत्र सख्या २५ (अश्विनीसे शनि नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा तक गणना की) है, अत १४५ + १ + २५ = १७१, १७१ – ९ = १९ भागफल ० शेष। शून्य शेषको ९ के बराबर मानकर वर्षाधिपति बुधसे गणना की तो शनिकी दशा आयी। अत जवलपुरकी अन्तर्दशा शनिकी है।

प्रत्यन्तरदशा ज्ञात करनेकी विधि

जिस ग्राम या नगरकी प्रत्यन्तर्दशा ज्ञात करनी हो, उस ग्राम या नगरकी दिशाके ध्रुवाङ्कोंमें शनि नक्षत्र सख्याको जोडकर ९ का भाग देनेसे जो शेष आये, उसकी गणना सवत्सर राजासे विंशोत्तरी दशाके अनुसार करनी चाहिए।

सूक्ष्मदशा विधि

दिशाङ्क, देशाङ्क, वर्षके राजाका विंशोत्तरी दशाका मूल वर्षाङ्क और शनि जिस नक्षत्रपर हो उस नक्षत्रसे गाँव नक्षत्र तकके अकोंका योगकर ११ से गुणा करना चाहिए। गुणनफलमे नौका भाग देकर शेष प्रमाणके अनुसार सवत्सर राजाको आदिकर विंशोत्तरी दशाका आनयन कर लेना चाहिए। इस प्रक्रियासे आई हुई दशा ही सूक्ष्मदशा होती है।

---

१. विंशोत्तरी दशाके अनुसार ग्रहोंके वर्षाङ्क निम्नप्रकार है—

पट्दिङ्नगेभविधु-भूप नवेन्दु शैल-

भू-भूधरा नखमिता क्रमतो दशाब्दा ॥

सूर्य ६, चन्द्र १०, भौम ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष प्रमाण है।

प्राणदशा साधनकी विधि

दिशाङ्क, देशाङ्क, नगराङ्क और शनि जिस नक्षत्रपर हो, उस नक्षत्रसे गाँवके नक्षत्र तकके अंकोका योगकर ११ से गुणा करना और गुणनफलमें ९ का भाग देकर शेष प्रमाणको सवत्सर राजाको आदिकर विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार दशाका आनयन करना चाहिए। इस विधिसे आई हुई दशा प्राणदशा होती है।

किसी भी नगरका सम्पूर्ण फलादेश, महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाका साधनकर अवगत करना चाहिए।

उदाहरणमें जवलपुर नगरका फलादेश ज्ञात करनेके हेतु महादशा गुरुकी आई है और अन्तर्दशा शनि की। अव प्रत्यन्तरदशाका साधन करना है, अत —

जवलपुरका दिशाक १४५, शनि नक्षत्र सख्या २५, अत १४५ + २५ = १७० योगफल १७० – ९ = १८ भागफल ८ शेष। यहाँ सवत्सरका राजा वुध है, अत वुधसे गणना की तो गुरुकी प्रत्यन्तरदशा कहलाई।

सूक्ष्मदशाके साधनके लिए—१४५ + १ + १७ + २४ (शनि पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें है और जवलपुरका उत्तरापाढ नक्षत्र है, अत पूर्वाभाद्रपदसे उत्तरापाढ तक गणना की तो २४ सख्या आई) = १८७ योगफल हुआ। अतएव इस योगफलको ११ से गुणा किया—१८७ × ११ = २०५७ गुणनफल, २०५७ – ९ = २२८ भागफल ५ शेष। वि० स० २०२३ में सवत्सरका राजा वुध है, अत वुधसे विंशोत्तरी दशाके क्रमानुसार गणना की ता चन्द्रकी प्राणदशा कहलायी। अत जवलपुरकी महादशा भौमकी, अन्तर्दशा शनिकी, प्रत्यन्तरदशा गुरुकी और सूक्ष्मदशा चन्द्रकी कहलायेगी।

प्राणदशाके सावनके लिए १४५ + १ + ५ + २४ (शनि नक्षत्रसे अभीष्ट नगर जवलपुरके उत्तरापाढा नक्षत्रतककी सख्या) = १७५ योगफल, १७५ × ११ = १९२५ गुणनफल, १९२५ – ९ = २१३ भागफल ८ शेष। सवत्सरके राजा वुधसे गणना की तो गुरुकी प्राणदशा आई।

आरा नगरका उदाहरण

आरा मध्यदेशसे ईशानकोणमें अवस्थित है, इसका दिशाङ्क १५३ हुआ। यहाँका देशाङ्क ९ है, नगराङ्क ५ है, वर्पके राजा—वुधका वर्षाङ्क १७ है, शनिके पूर्वभाद्रपद नक्षत्रसे आरा नगरके कृत्तिका नक्षत्र तक गणना की तो ६ सख्या आई। अत —१५३ + ९ + ५ + १७ + ६ = १९० योगफल, १९० – ९ = २१ भागफल १ शेप। विंशोत्तरी दशाक्रमसे गणना की तो एक शेपमें सूर्यकी महादशा कहलायी।

अन्तर्दशा सावन—दिशाङ्क १५३, देशाङ्क ९, शनि नक्षत्र सख्या २५, अत १५३ + ९ + २५ = १८७ योगफल, १८७ – ९ = २० भागफल ७ शेप। वर्पाधिपति वुधसे गणना की तो राहुकी अन्तर्दशा कहलायी।

प्रत्यन्तरदशा १५३ + २५ = १७८ योगफल (दिशाक + शनि नक्षत्र सख्या), १७८ ÷ ९ = १९ भागफल ७ शेप। वर्पाधिपति वुधसे गणना की तो राहुकी प्रत्यन्तरदशा सिद्ध हुई।

सूक्ष्मदशा—१५३ + ९ + १७ (वर्पाधिपति वुधके विंशोत्तरी दशा वर्पाङ्क) + ६ (शनि नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदसे आराके कृत्तिका नक्षत्र तककी सख्या) = १८५ योगफल १८५ × ११ = २०३५ गुणनफल २०३५ – ९ = २२६ भागफल १ शेप। विंशोत्तरी दशा क्रमसे गणना की तो सूर्यकी सूक्ष्मदशा कहलायी।

प्राणदशा—१५३ + ९ + ५ + ६ (शनि नक्षत्रसे आराके नक्षत्र तककी सख्या) = १७३ योगफल, १७३ × ११ = १९०३ गुणनफल, १९०३ – ९ = २११ भागफल ४ शेप। वर्पाधिपति वुधसे दशाकी गणना की तो सूर्यकी प्राणदशा निष्पन्न हुई।

इस प्रकार आरा नगरकी सूर्यकी महादशा, राहुकी अन्तर्दशा, राहुकी प्रत्यन्तरदशा, सूर्यकी ही प्राणदशा सिद्ध हुई।

वर्षकी गणना दो प्रकारसे होती है—चान्द्रवर्ष और सौरवर्ष। चान्द्रवर्षकी दिन सख्या ३५६ और सौरवर्षकी दिन सख्या ३६५¼ है। आजकल ही नही, किन्तु प्राचीनकालसे ही भारतमें चन्द्रमासान्त मास-गणना और चैत्रशुक्ला प्रतिपदासे वर्ष गणना ग्रहण की जाती है। चैत्रशुक्ला प्रतिपदासे चैत्रशुक्ला अमा-वस्या तक चान्द्रवर्ष लिया जाता है। जिस वर्ष अधिक मास पडता है, उस वर्ष एक चान्द्रवर्षमे ३८६ दिन होते हैं। यहाँ चान्द्रवर्षकी अन्तर्दशा बोधक कोष्ठक दिया जाता है, जिससे अन्तर्दशाके समयका ज्ञान होता है।

३५६ दिनके वर्षकी अन्तर्दशा बोधक सारणी

सू०	च०	भौ०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	दिन
४८	४०	४६	२४	२८	२२	१६	४६	२०	घटी

३८६ दिनके वर्षकी अन्तर्दशाबोधक सारणी

सू०	च०	भौ०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	ग्रह
०	१	०	१	१	२	१	०	२	मास
१९	२	२२	२७	२१	१	२४	२२	४	दिन
१८	१०	३१	५४	२८	७	२१	३१	२०	घटी

वर्षका इष्टानिष्टफलादेश अक्षयतृतीयाके दिन निकालकर अवगत करना चाहिए। उस समय महा-दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशा जिस प्रकारकी रहती है, इष्टानिष्ट फल भी वर्ष भरके लिए उसी प्रकारका प्राप्त होता है। महादशाका फल वर्षभरके लिए और अन्तर्दशाका उपर्युक्त सारणीमें निर्दिष्ट समय तकके लिए समझना चाहिए। प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाका समय गणित विधिसे निकालना चाहिए।[1] सवत्सरका फलादेश ज्ञात करते समय वर्षाधिपति, धान्याधिपति रसाधिपति, मन्त्री एव अन्य वर्षाधिकारियोंका विचार भी कर लेना आवश्यक है।

लोकविजय यन्त्रका प्रयोजन

अदिवुट्ठि-अणावुट्ठी सप्परचक्कं च रोग-सोगभयं।
सस्सुप्पत्ति-विणासो हि रायाकट्ठं चमुद्दवं ॥ ८ ॥

अतिवृष्टि, अनावृष्टि, स्वचक्र—परचक्रकी स्थिति, रोग-शोकका भय, धान्यकी उत्पत्ति और विनाश, राजाको कष्ट और सेनामे उपद्रव आदि बातोकी जानकारी इस यन्त्रके द्वारा प्राप्त करनी चाहिए।

विवेचन—ईति-भीति भय सात प्रकारका माना गया है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि स्वचक्र, परचक्र, टिड्डी, मूषक और तोता आदि पक्षियो द्वारा फसलको हानि पहुँचाना। ज्योतिषशास्त्रमें फसलको जितनी भी वस्तुएँ

१ देखें—भारतीय ज्योतिष, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, सन् १९६६ पृ० २८५ ८५।

हानि पहुँचाती हैं, उन सबकी गणना ईति-भीतिमें की गयी है । देशमें सुभिक्ष, शान्ति, सुख, उपद्रव, विद्रोह, व्याघात, आन्तरिक और वाह्य सघर्ष शासनकी सुव्यवस्था, अव्यवस्था, आवश्यक वस्तुओकी कमी, उनके मूल्यमें वृद्धि, शीत, उष्ण, आतप, ओला, वादल, विजली, महामारी, युद्ध, शत्रु-आक्रमण, नेताओकी स्थिति, शिक्षा-साहित्यकी स्थिति, कलाकी स्थिति प्रभृति वातोका परिज्ञान उक्त लोकविजय यन्त्र द्वारा प्राप्त किया जा सकता है ।

इस यन्त्रसे दशा, महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशाका सावनकर शुभा-शुभत्व, लाभ-हानि आदिका ज्ञान प्राप्त किया जाता है ।

यन्त्र द्वारा शुभाशुभत्व ज्ञात करनेकी विधि

संवच्छररायाओ गणिऊण देसकर्मेण फलं ।
आइच्चाइगहाणं सुहासुह जाणए कुसलो ॥ ९ ॥

सवत्सरके अधिपतिसे लेकर देश-क्रमके अनुसार फलकी गणना करनी चाहिए और तदनुसार कुशल पुरुषोको सूर्यादि ग्रहोका शुभा-शुभ फल जानना चाहिए ।

विवेचन—किसी नगर या गाँवका शुभाशुभत्व ज्ञात करनेके लिए पूर्वोक्त विधिके अनुसार महादशा, अन्तर्दशा आदिका भावन करना चाहिए । यहाँ यह ध्यातव्य है कि दशाओंके साधनसे जो फलादेश आता है, वह एक वर्षके लिए होता है । पर जव शनि वर्षके मध्यमें नक्षत्र परिवर्तन करता है, तव फलादेश वदल जाता है । अत फल शनि नक्षत्रपर ही अवलम्वित रहता है, शनि नक्षत्रके परिवर्तित होते हो फलादेश भी वदल जाता है । शनि नक्षत्र तथा शनिके चरण-भेदका प्रभाव वर्षके इष्टानिष्टपर पडता है । शनि नक्षत्र प्रत्येक पञ्चागमें अकित रहता है, अत दशाका गणित करते समय वर्षमें जव-तक शनि एक नक्षत्रपर है, तव तक एक फल और जव दूसरे नक्षत्रपर आ जाता है, तो फलादेश परिवर्तित हो जाता है । चरणभेदका प्रभाव भी वर्षके शुभाशुभत्वपर पडता है, अत साधारणत समान फल रहनेपर भी चरणभेदसे फलादेशमे स्वल्पान्तर अवश्य आता है । यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि चार चरणोमेसे शनिका विशेष वल मध्यके दो चरणोपर पडता है, अन्तिम चरणका आधा फल और प्रथम चरणका तृतीय चतुर्थांश फल होता है, प्रथम चरणके आरम्भ होनेपर भी कुछ फल पूर्व नक्षत्रका और कुछ वर्तमान नक्षत्रका घटित होता है ।

आचार्योंने वतलाया है कि रोहिणी और कृत्तिका नक्षत्र वर्षका शरीर है, पूर्वापाढ और उत्तरापाढ वर्षकी नाभि हैं, अश्लिपा नक्षत्र वर्षका हृदय है और मघा नक्षत्र वर्षका कुसुम है । ये सव शुद्ध हो तो वर्ष शुभ रहता है । सवत्सर—जिस दिन वृहस्पति नवीन राशिमें प्रवेश करे—का शरीर नक्षत्र यदि पापग्रहसे युक्त या द्रष्ट हो तो अग्नि और वायुका भय, नाभि नक्षत्र पापग्रहसे युक्त या द्रष्ट हो तो अन्नाभाव, क्षुधापीडा, कुसुम नक्षत्र पापग्रहसे युक्त या द्रष्ट हो तो फलोका अभाव, वृक्षोका विनाश एव हृदय नक्षत्र क्रूर ग्रहसे युक्त या द्रष्ट हो तो धान्यका विनाश होता है ।

लोकविजय यन्त्रके कर्त्ताके अनुसार शनिका सवत्सरके शुभाशुभत्वके साथ अधिक सम्वन्ध है, अत फलादेशका ज्ञान करते समय शनिकी द्वादश राशियोका फल भी जान लेना आवश्यक है । ज्योतिपशास्त्रमे अनेक द्रष्टिकोणोंसे फल प्रतिपादन करनेका विधान है भी, अत मेषादि द्वादश राशियोमें शनिका फलादेश निम्न प्रकार अवगत करना चाहिये ।

मेष[1]—इस राशिमे शनि हो तो धान्यका विनाश, वगाल, मद्रास और तमिल प्रदेशोमे विग्रह, उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश, विन्ध्यप्रदेशके अर्धभागमे सुख, सम धान्योत्पत्ति, अधिक रसोत्पत्ति, तृणकी कमी, शीत अधिक, वर्षाकी समता एव हैजाका प्रकोप होता है। पूर्वी बिहारमें अकाल, दक्षिणी बिहारमे सुकाल, बिहारके पश्चिम भागमें सघर्ष, लूट-खसोट होती है। मवेशीको कष्ट रहता है तथा मवेशीकी कीमत घट जाती है। वगाल और आसाममें प्लेग जैसी महामारिया भी होती है। वाढके आनेसे फसल नष्ट हो जाती है। धानमें एक प्रकारका कीडा लग जाता है जिससे फसल मारी जाती है। अश्विनी नक्षत्रपर जव तक शनि रहता है, तव तक धान्यकी कमीके कारण कष्ट उठाना पडता है। भरणी नक्षत्रपर शनिके आते ही वर्षा होने लगती है, पर इतनी अधिक वर्षा होती है, जिससे पूर्वीय प्रदेशोमे वाढ आ जाती है तथा फसलको हानि उठानी पडती है। कृत्तिका नक्षत्र-के प्रथम पादमें जव शनि आता है, उन दिनो मध्यप्रदेशमें सघर्ष होता है, राजनीतिक जिच उत्पन्न हो जाती है और नेताओमें आपसमें मनमुटाव होता है। वगाल और मद्रासमें अकालकी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। राजस्थान और मध्यभारतमें साधारणत स्थिति अच्छी रहती है। मेप राशिका शनि नेताओके लिए अशुभ कारक होता है। वडे-वडे व्यवसायियो और कारोवार करनेवालोको इस राशिके शनिमे लाभ होता है। सोना, चाँदी आदि मूल्यवान् धातुओका मूल्य निरन्तर वढता जाता है। रूई, कपास, सन, पाट आदिके मूल्यमें भी वृद्धि होती है। कृपकोके लिये मेष राषिका शनि अत्यन्त अनिष्ट करनेवाला होता है। मजदूर वर्गके व्यक्तियोके लिए यह शनि सामान्य रहता है। गुजरात, गौडमें धान्यभाव अधिक महँगा होता है। व्यापारियोको अत्यधिक लाभ होता है।

वृष—इस राशिमे शनि हो तो विग्रह, दक्षिण दिशामें शत्रुका भय, वराडदेशमे अशान्ति, पश्चिमीय प्रदेशोमें उथल-पुथल, देशका उजाड, अन्नका भाव तेज, गेहू, चना, नमक और चीनीके व्यापारमें लाभ, सोना, चाँदी, पीतल, काँसा, लोहा और अलमोनियाके वर्तनोमें तथा इन धातुओंके कच्चे मालमें छ मास तक लाभ, आषाढ-श्रावण-भाद्रपद मासोमें लाभ, आसामदेशमें सघर्ष, घरेलु युद्ध या सघर्ष, पशुका नाश, महामार आदि फल प्राप्त होते हैं। रसकी कमी रहती हैं, तृण कम होता है तथा गृह-उद्योगोकी उन्नति होती है। शनि कृत्तिकाके तीनो पादोका योग करनेके पश्चात् जब रोहिणी नक्षत्रमें प्रवेश करता है, उस समय सभी वस्तुएँ अत्यन्त महँगी हो जाती हैं। यद्यपि रोहिणी नक्षत्र में शनिके आनेपर वर्षा अधिक होती है, फसल भी अच्छी होती है, फिर भी सभी वस्तुएँ अधिक महगी होती हैं। अजवायन, अफीम, धनियाँ, जीरा आदिमें माघके महीनेमें लाभ होता है। यो तो रोहिणी नक्षत्रमें शनिके आनेसे सव प्रकारसे शान्ति मिलती है, परन्तु वस्तुओकी कीमत अधिक वढती जाती है। व्यापारियोके लिए रोहिशी नक्षत्रका शनि अधिक अच्छा होता है। पजाव सिन्ध और द्रविडदेशमे फसल अच्छी उत्पन्न होती है। महामारी सौराष्ट्र, अनूपदेश और राजस्थानमे फैलती है। सोनेका मूल्य अधिक वढता है, काँच और मिट्टीके वर्तनोंके व्यापारमें लाभ होता है। मृगशिर नक्षत्रमें शनिके प्रवेश करते ही उत्पात आरभ हो जाते हैं।

मिथुन—इस राशिमें शनि हो तो पश्चिममे दुर्भिक्ष, राजाओमे विग्रह, मालवदेशमें विरोध, राशि-भोगके पाँच महीनेके उपरान्त उज्जयिनीमे उत्पात, दुर्भग, दो मासके पीछे, एक महीने तक दुर्भिक्ष, एक वर्ष पीछे धान्योत्पत्ति, पूर्वदेशमें उत्पात, गुड समभाव, लौंग, केसर, इलायची, पारा, हिंगुलु, रेशम, कत्था, सोठ आदि वस्तुएँ महँगी होती हैं। मालव देशके नेताओमें मन मुटाव होता है, राजनीतिमें जिच पैदा हो जाती है। विदेशोसे व्यापारिक सम्वन्ध वढता है। शनि जव मृगशिर नक्षत्रपर रहता है तव तक प्रजामें अशान्ति रहती है। कलिंग, उत्कल, कामरूप और पजावमें वडी अशान्ति रहती है। व्यापारियोके लिए

१—विशेषके लिए देखें—मेघ महोदय पृ० १९५-२०० ।

इस राशिका शनि विशेष अच्छा नही होता है। केवल मसालोंका व्यापार करनेवालोंको लाभ होता है। गल्ला, सोना, चाँदी आदिके व्यापारमें अधिक लाभ होनेकी सभावना नही है। इन वस्तुओंके व्यापारमें ज्येष्ठ, आपाढ और मार्गशीर्ष मासमें लाभ होता है।

आर्द्रा नक्षत्रका शनि मध्यम है, इस नक्षत्रमें शनिके पहुँचनेपर पूर्वीय भारतमे शान्ति, सुख और धन-धान्यकी वृद्धि, रसोंकी अधिक उत्पत्ति, पशुओंको सुख, ईख और धानकी खेतीमें अधिक लाभ, पाट या सनकी फसलमे कमी होती है। पुनर्वसु नक्षत्रके तीन पादोंमें जब शनि पहुँचता है तो पश्चिम भारतमें उपद्रव, उत्तरमें शान्ति, दक्षिणमें उत्पात और पूर्वमे धान्योत्पत्ति होती है। वर्षा अच्छी होती है, अश्विनके महीनेमें वर्षाका अभाव रहता है। पजाव, आसाम, बगाल, अङ्ग, कलिग, उत्कल आदि प्रदेशोमे सामान्यत फसल अच्छी उत्पन्न होती है।

कर्क—इस राशिमें शनि हो तो मालवा, बुन्देलखण्ड, पहाडी प्रदेशमें अशान्ति, नेताओंमें सघर्ष, विद्रोहियोंकी प्रगति, वर्तमान शासनके प्रति बगावतकी भावना, दक्षिण दिशामें लोकका नाश, गाँवोंमें उपद्रव, रोगोंका वाहुल्य, ज्वरका अधिक प्रयोग, धनका नाश, कार्य-हानि, सेवकोंमें विरोध, देशमें चिन्ता और विषाद, पशुओंकी कमी, चोरोंकी वृद्धि, वायुका अधिक प्रकोप एव आकस्मिक भय उत्पन्न होते हैं। श्रावणमासमें धान्यका भाव तेज, रूईका भाव सस्ता और सोना सस्ता होता है। भादोंमें वर्षा अधिक होती है, जिससे मलेरिया ज्वरका प्रकोप आसाम, बगाल, उत्कल और विहारमें अधिक होता है। घोडा, भैंस अधिक महगे और गाय, बकरी आदि पशु सस्ते होते है। व्यापारमें लाभ होता है। अभ्रक, कोयला, सोना, चाँदी, मूगा, मोती आदिके व्यापारमें साधारणत लाभ होता है। पाट, गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा आदिमें भी लाभ होता है।

पुष्य नक्षत्रमें जब शनि आता है, उस समय प्रजाको अधिक कष्ट होता है। कही-कही भूकम्प, अवर्षण, झझावात, तूफान, बाढ़ आदिके कारण नाना प्रकारके कष्ट होते है। उत्तरप्रदेशके पूर्वीय भागमें खाद्य-सामग्रीकी कमी रहती है। बगालमे भी नानाप्रकारके उपद्रव होते हैं। वृश्चिक, मकर, मीन और मेष राशि-वाले व्यक्तियोंके लिए पुष्य नक्षत्रका शनि उत्तम होता है। बैल, कुत्ता, घोडा आदिके लिए भी यह शनि अच्छा है। अश्लेषा नक्षत्रपर शनिके आते ही सर्वत्र आतक छा जाता है। देशमे एक विचित्र प्रकारकी लहर आती है। देशके पूर्वीय भागमें वर्षाके अधिक होनेसे कष्ट होता है। रोग और बडी-बडी बीमारियाँ अधिक फैलती है। मध्यप्रदेश और दिल्लीके नेताओंमें मन-मुटाव हो जाता है, जिससे देशके शासनमें व्यतिक्रम भी होता है।

सिंह—इस राशिमें शनि हो तो सर्वत्र देशमें सुकाल रहता है, खूब अन्न उत्पन्न होता है। जलवर्षा विशेष, मालव देशमें लाभ, नेताओंमें विग्रह, किसी बडे नेताकी मृत्यु, समुद्रतटके निकटवर्ती प्रदेशोमें अच्छी फसल, शिक्षामें उन्नति, शिल्प और उद्योगके कार्योमें विकास होता है। अनाजका भाव सस्ता होता है। घी, गुड, गेहूँ, चना जौ, बाजरा, मसूर, अरहर, मूँग आदि वस्तुओंके व्यापारमें साधारण लाभ होता है। इस राशिमें शनिके आनेपर पहले तो सुभिक्ष होती है, किन्तु पीछे महामारीके फैल जानेसे प्रजाको कष्ट होता है। कोकण, मालव, अनूपदेश, कामरूप, उत्कल, अग, कलिंग आदिमें धान्य भाव सम रहता है। तृण और पशुओंका भाव सस्ता होता है। पूर्व देशमें वस्त्रव्यवसायमें लाभ होता है, सेनामें विग्रह होता है। विरोधि पार्टियोंमें सगठन होता है तथा वे वर्तमान शासनके प्रति बगावत करते हैं। मघा और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें जब तक शनि रहता है, तब तक फसल अच्छी होती है। उत्तराफाल्गुनीमें शनिके प्रविष्ट होते ही फसल बिगडने लगती है। आसाम, उत्तरप्रदेश और उत्तरीय विहारमें पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रपर शनिके रहनेसे फसल अच्छी नही होती है।

कन्या—जब इस राशिमें शनि आता है तो फसलका नाश हो जाता है, सर्वत्र हाहाकार सुनायी पडता है। वर्षाका अभाव और द्रविड, तामिल, मद्रास, बगाल आदिमें नाना तरहके उपद्रव होते हैं। राज-

स्थानमें फसल अच्छी होती है, पंजाब, सिन्धु, सौराष्ट्र और मध्यप्रदेशमे भी फसल अच्छी होती है । अन्नका भाव कुछ सस्ता होता है, जिस समय शनि वक्री होता है, उस समय धान्यको बेचना चाहिये । कन्या राशिका शनि जब आरम्भ हो उस समय आरम्भके नौ महीनेमे धान्यका सग्रह करना और पश्चात् बेचना अधिक अच्छा होता है । आरम्भके खरीदे गये अनाज, गुड, वस्त्र, रूईमें दूना लाभ होता है, परन्तु जो कन्या राशिके शनिके अर्द्धभाग बीतनेके पश्चात् खरीदते है, वे हानि उठाते है । चित्रा नक्षत्रके शनिमे व्यापारियोको हानि होती है । जूट, पाट, सन, सोना, चाँदी, रूई, वस्त्र आदि सभी पदार्थ सस्ते हो जाते है । हस्त नक्षत्रका शनि भी देशके लिए महान् अरिष्टकारक होता है, देशमें अवर्षण अथवा अतिवृष्टि होती है । समयपर वर्षाके न होनेसे फसल सूख जाती है । आसाम, बगाल और पूर्वीय बिहारमे बाढ आती है । हैजा, प्लेग आदि बीमारियाँ फैलती है ।

तुला—जब इस राशिमें शनि आता है तो धान्यका भाव सस्ता होता है । पृथ्वी रोगसे व्याप्त हो जाती है, भूकम्प, महामारी, उपद्रव, उत्पात आदि होते है । वर्षा बहुत मध्यम होती है, सुख और धनकी कुछ कमी हो जाती है । उत्तरप्रदेश, मध्यभारत, बिहार, पजाब, आसाम और राजस्थानमे सुभिक्ष होता है, पर्याप्त धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है । बगालमें विशेषरूपसे महामारी फैलती है, चारो वर्णोके मनुष्योको कष्ट सहना पडता है । आधी राशिका उपभोग करनेके पश्चात् दक्षिण भारतमें अनाजका भाव महगा होता है । गेहूँ, चना, चावल, उडद और मसूरका भाव महगा होता है । मद्रास और आसामको छोड अन्य सभी प्रदेशोमे सुभिक्ष होता है, वर्षा समयपर यथोचित्त प्रमाणमे होती है, प्रजाको सब प्रकारसे सुख प्राप्त होता है ।

स्वाति नक्षत्रपर जब शनि रहता है, उस समय व्यापारियोको लाभ होता है । सन, पाट और रेशमके व्यवसायमें अधिक लाभ होता है । सोने, चाँदीका व्यापार भी खूब चलता है । अश्व, गाय, बकरी और भैसके व्यापारमे भी पर्याप्त लाभ होता है । मवेशोमें सक्रामक रोग फैलता है । नारियोको कष्ट होता है तथा नक्षत्रके आरम्भमें सर्वत्र सुभिक्ष, शान्ति, सुख, प्रेम और सहयोग बढता है । शिल्प, उद्योग और खेतीमें विकास होता है । सट्टेके व्यापारमें हानि उठानी पडती है । विशाखा नक्षत्रमें शनिके प्रवेश करते ही नाना प्रकारकी आपत्तियाँ आती है, अल्पवृष्टि या अतिवृष्टि होती है, जिससे कृषकवर्गको नाना प्रकारके कष्ट सहन करने पडते है । फसलमें अनेक प्रकारके रोग लग जाते है, पशुओका भाव सस्ता हो जाता है । रस और तृणकी भी कमी हो जाती है । मध्यभारत, विन्ध्यप्रदेश और राजस्थानमे आर्थिक सकट आता है, अन्नकी समस्या जटिल हो जाती है, नेताओमें पारस्परिक सघर्ष होता है ।

वृश्चिक—इस राशिमे शनिके आनेपर सैनिक उपद्रव होता है । सौराष्ट्र, मालवा, हस्तिनापुर, विराट् आदि प्रदेशोंमें आन्तरिक कलह होती है । गेहूँ, कपास, रूई, मसूर, तिल, कपडा आदिके व्यापारमें लाभ होता है । ऊनी कपडेका भाव कुछ सस्ता रहता है, रेशमी वस्त्रके व्यवसायमें पर्याप्त लाभ होता है । मालवामे टिड्डी-का उपद्रव, सब वस्तुओके मूल्यमे वृद्धि, अजवायन, मैथी, सरसो, धनिया, जीरा, कालीमिर्च लालमिर्च और इलायचीके व्यापारमें दुगुना लाभ होता है । वर्षा अधिक होती है । ज्वर, वात प्रधान रोग, निमोनिया, प्लेग आदि बीमारियोका प्रकोप बढता है ।

अनुराधा नक्षत्रपर जब शनि आता है, उस समय पूर्वीय प्रदेशोमें, विशेषत , आसाम, बगाल, बिहार, उत्कल, कलिंग आदिमे वर्षा इतनी अधिक होती है, जिससे प्रजाको महान् कष्टका सामना करना पडता है । कलिंग और बिहारके नेताओमें मनमुटाव हो जाता है, शासनमें शिथिलता आती है तथा राजनैतिक गत्यवरोध होता है । अन्नके व्यापारियोको अत्यल्प लाभ, वस्त्रके व्यवसाइयोको अधिक लाभ तथा सोने-चाँदीके व्यवसाय-में पर्याप्त धन कमाते हैं । जूट और रेशमके व्यवसायमें धनहानि उठानी पडती है । उद्योग और शिल्पके कार्यो-

में उन्नति नही होती है। ज्येष्ठा नक्षत्रपर जब शनि आता है, उस समय उत्तर-पश्चिमके प्रदेशोमें नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। व्यवसायियोको अपने-अपने व्यवसायमें हानि ही उठानी पडती है।

धन—इस राशिका शनि सब प्रकारसे अरिष्टकारक होता है। वर्षाका अभाव—कभी समस्त देशमें पायी जाती है। नैतिक पतन भी हो जाता है। गेहूँ, चना, मटर, तिल, तेल, घी, अजवाइन आदि वस्तुएँ तेज होती हैं। उत्तरप्रदेशमे रोगके कारण नाना प्रकारके कष्ट उठाने पडते हैं। श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिकमे समस्त वस्तुओका भाव मँहगा हो जाता है। महामारीका प्रकोप सर्वत्र दिखलायी पडता है।

मूल नक्षत्रपर शनि जब तक रहता है, तब तकके लिए ज्यादा हानिकारक होता है, वर्षाके रुक जानेसे प्रजाको कष्ट होता है, व्यापारियोको अनेक प्रकारका कष्ट सहन करना पडता है। लाल रग और पीले रगकी वस्तुओंके व्यवसायमें अधिक लाभ होता है। सट्टेसे हानि उठानी पडती है। पूर्वाषाढामें शनिके आते ही प्रजाको सुख और शान्ति प्राप्त होती है। धार्मिक अनुष्ठानोमें पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। पशुओ, लाल रग और श्वेत रगकी वस्तुओंके व्यवसायमे अच्छा लाभ होता है। पूर्वाषाढा नक्षत्रके प्रथमपादमें शनिके आते ही जलवृष्टि होती है। जिन स्थानोमें पानीकी वर्षा ज्येष्ठा नक्षत्रमें नही हुई है, उन स्थानोमें इस नक्षत्रमें शनिके आते ही होती है। फसल भी अच्छी उत्पन्न होती हैं। ईखकी खेतीमें ज्यादा लाभ होता। गेहूँ, चना और मूगकी खेतीमे रोग हो जाता है, धानकी फसल साधारणतया अच्छी होती है।

मकर—इस राशिपर शनिके आते ही सर्वत्र आनन्द और सुख व्याप्त हो जाता है। राजा प्रजा और नेताओमे सौहार्द बढता है। इस राशिमें शनिके आनेपर दो-तीन महीने तक अन्न, घी, कपूर, जायफल, नारियल और नमकका भाव तेज रहता है। इसके पश्चात् इन वस्तुओका मूल्य भी अपने रूपमें हो जाता है। महाजन और धनिक व्यक्तियोंको अनेक प्रकारके कष्ट सहन करने पडते हैं। मालवा और आसाममें वर्षा इतनी अधिक होती है, जिससे बाढ आ जाती है तथा फसलको भी हानि उठाती पडती है। श्वेत रगकी वस्तुओमें व्यापारियोको हानि उठानी पडती है। चाँदी, सोना, ताँबा, हाथी, घोडा, बैल, सूत, कपास, चीनी आदि वस्तुओका भाव महगा होता है।

उत्तराषाढ़ामें शनि जब तक रहता है तबतक जनताको साधारण सुख प्राप्त होता है, किन्तु जब शनि श्रवण नक्षत्र पर पहुँच जाता है, तब पूर्णतया सुख-शान्तिकी प्राप्ति होती है। केवल थोडेसे लोगोमे, जो अपनेको नेता समझते हैं, कलह होती है।

कुम्भ—इस राशिका शनि होनेपर जनताको सब प्रकारसे सुख-शान्तिकी प्राप्ति होती है। देशमें सुख, अनाजकी खूब उत्पत्ति और रस, तृण आदि वस्तुओकी उत्पत्ति भी खूब होती है। दक्षिण, कोकणदेशमें विग्रह होता है तथा राजा-प्रजा सभीको थोडा कष्ट उठाना पडता है। मारवाडमें भी जलकी वर्षा खूब होती है तथा यहाँ फसल भी अच्छी होती है। शतभिषा नक्षत्रपर जब तक शनि रहता है, प्रजाको तब तक खूब सुख और सन्तोष प्राप्त होता है। उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बगाल, आसाम, बिहार, पहाडी राज्य, हस्तिनापुर आदि प्रदेशोमें सुकाल रहता है। यहाँके व्यापारियोंको भी पर्याप्त लाभ होता है। रूई, कपास और वस्त्र-व्यवसायमें भी लाभ होता है। मवेशियोको कष्ट होता है।

मीन—इस राशिपर शनिके आते ही दुर्भिक्ष और सकट आते हैं। अति वृष्टि या अनावृष्टि होती है। गेहू, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, सोना, चाँदी आदिके व्यवसायमें साधारणत लाभ होता है। वर्षारम्भमें खरीदी गयी चीजोको पाँच महीनेके बाद बेच देनेपर दूना लाभ होता है। पाँच महीनेके पहले बेचनेपर घाटा होता है। महामारी, प्लेग, हैजा जैसे सक्रामक रोग भी इसी अवस्थामें उत्पन्न होते हैं।

उत्तराभाद्रपदपर जब तक शनि रहता है, तब तक प्रजाको नाना प्रकारका कष्ट उठाना पडता है। पक्षाघात—लकवा जैसी भयकर बीमारियाँ भी इसी नक्षत्रपर शनिके आनेसे उत्पन्न होती हैं। व्यापारियोके लिये यह समय उत्तम हैं, वे इससे लाभ उठाते हैं। परन्तु इस नक्षत्रके चौथे पादमें जब शनि आता है, उस समय सर्वत्र हाहाकार मच जाता है। सब जगह लूट-खसोट आरम्भ हो जाती है। अनैतिकता, अधार्मिकता और पापाचारकी वृद्धि होती है। रेवती नक्षत्रपर शनिके आते ही प्रजाको सब प्रकारसे कष्ट ही उठाना पडता है। फसलकी कमी हो जाती है, और वर्षाके अभावके कारण सभीको कष्टका अनुभव होता है।

सूर्यदशाफल

आइच्चे आरुग्गो लोयाणं हवइ सस्सणिप्पत्ती।
राया सुतेजजुत्तो अस्सुप्पत्ती य किंचि भय ॥१०॥

सूर्यकी दशामे जनताको आरोग्यलाभ, धान्यकी विशेष उत्पत्ति, राजाओंमे तेजस्विता, अश्व उत्पत्ति और प्रजामे कुछ भय होता है।

विवेचन—सूर्यकी महादशामे धन-धान्यकी प्राप्ति, आरोग्य, ऐश्वर्यकी वृद्धि, नेताओंके पराक्रमकी वृद्धि घोडोकी उत्पत्ति, समयपर यथेष्ट वर्षा, उच्च वर्णोके लोगोको भय, धनिकोको थोडा कष्ट होता है।

सूर्यकी अन्तरदशामे वर्षा साधारण, देशमे अनैक्य, नेत्रपीडा, व्यापारमे लाभ, रुई, गुड और सोनेके व्यापारमे लाभ तथा नेताओंमे मतभेद होनेसे देशको हानि उठानी पडती है।

सूर्यकी प्रत्यन्तरदशामे नवीन कार्योका सम्पन्न होना, नये-नये प्रस्ताव, नयी-नयी स्कीमों और नये-नये नियमोंका निर्माण होना तथा सामूहिक उन्नतिका होना, शिक्षा-व्यवसायमे तरक्की करना आदि फलादेश घटित होते हैं।

सूर्यकी सूक्ष्मदशामे देशमे सुख-शान्ति, धन-धान्यकी उत्पत्ति, नेताओंमे राजनैतिक गत्यवरोध, लाल वस्तुओंके भावोमे वृद्धि और खनिज पदार्थोंकी अधिक उत्पत्ति होती है। इस ग्रहकी सूक्ष्मदशामे देशको औद्योगिक कार्योंमे पूर्ण विकास होता है। शिल्प और स्थापत्यकी उन्नति होती है।

सूर्यकी प्राणदशामे पूर्वमे निर्धारित स्कीमोंको कार्यरूपमें परिणत किया जाता है। देशमें यथेष्ट वर्षा होती है, कृषि सम्बन्धी कार्योंमे प्रगति होती है। व्यापारी इस अवसरसे पूर्ण लाभ उठाते हैं। पाट, सन और रेशमी वस्त्रोंके उद्योगमे शिथिलता आती है। इन वस्तुओंके भाव भी सस्ते हो जाते हैं। सर्वेशियोंको नाना-प्रकारके कष्ट उठाने पडते हैं तथा इनका मूल्य भी बढ जाता है। दूध, घी एवं अन्य रसोंकी उत्पत्ति पर्याप्त मात्रामे होती है। सूर्यकी प्राणदशामे नारियोंको कष्ट होता है।

सूर्यमे सूर्यान्तरदशा—इस दशामे सुवृष्टि, सुकाल और सुव्यापार होता है। निवासियोंको सब प्रकारसे सुख और आनन्दकी प्राप्ति होती है। मनोरंजनके साधन प्राप्त होते हैं तथा राजनैतिक और धार्मिक कार्य अधिक सम्पन्न किये जाते हैं। धार्मिक द्वेष अधिक बढता है। नेताओंका सम्मान बढता है और जनता अन्न-वस्त्रके लिए कष्टसे मुक्त हो जाती है।

सूर्यमे चन्द्रमाकी अन्तरदशा—इस दशामे आर्थिक लाभ, सुभिक्ष धन-धान्यकी उत्पत्ति, मौज और आमोद-प्रमोद, सज्जनोंको कष्ट और दुष्टोंको सुख प्राप्त होता है। कारखानोंके यह दशा व्यापारीके लिए उत्तम है। पहलेकी खरीदी वस्तुओंमे डेढ गुना लाभ होता है। सट्टा खेलनेवाले भी धन प्राप्त करते हैं। पाट और रूईके

सट्टेमें लाभ होता है, चाँदीके सट्टेमें हानि और सोनेके सट्टेमें लाभ होता है। बीचमें सस्ता भाव होता है, पर इस समय व्यापारियोको घवडाना नही चाहिये । अन्तमें माल लाभ देकर ही रहता है ।

सूर्यमे मगलकी अन्तरदशा—इस दशामें भूमि स्वच्छ और उपजाऊ होती है । नदी किनारेके प्रदेशोकी भूमि वाढ आ जानेसे अधिक उपजाऊ हो जाती है । बीचमें अर्थसकट आता है, पर व्यापारीवर्गकी तत्परताके कारण वह अर्थसकट शीघ्र ही दूर हो जाता है । गुड, सोना, रग एव मू गाके व्यापारमें पूर्ण लाभ होता है । नेताओके पराक्रमकी वृद्धि होती है । राजनैतिक उपद्रवोके कारण कभी-कभी अशान्ति उत्पन्न हो जाती है । जनसाधारणके लिए यह दशा अच्छी होती है ।

सूर्यमे राहुदशा—इस दशामें निवासियोको अच्छी आमदनी होती है, वर्षा समयानुसार यथेष्ट होती है । देशका सम्मान और प्रतिष्ठा निरन्तर वढती जाती है । अनाज सामान्यतया अच्छा उत्पन्न होता है । कपासकी फसल अच्छी होती है । खेतीके कार्योंमें उन्नति होती है, वजरभूमिमें भी अनाज उत्पन्न होता है ।

सूयमे गुरुदशा—इस दशामें सुभिक्ष, वर्षा साधारण, ब्राह्मणोको कष्ट, व्यापारकी वृद्धि एव देश, नगर या गाँवकी उन्नति होती है । वडे नेताओका उस प्रदेशमें आगमन होता है ।

सूर्यमे शनि—इस दशामें वर्षा अल्प होती है, अकालके लक्षण प्रकटरूपमें दिखलायी पडते है ।

सूर्यमे बुध—इस दशामें पर्याप्त वर्षा, सुभिक्ष, व्यापारमें लाभ, सुख-शान्ति और पशुओका भाव महँगा रहता है । गायोमें बीमारी फैलती है, शासकोमें मतभेद होता है ।

सूर्यमे केतु—इस दशामें अन्नकी हानि, अतिवृष्टि या अनावृष्टि, व्यापारमें लाभ और नैतिक पतन होता है । क्रातिविचारोकी वृद्धि, धार्मिक भावनाओका प्रभाव और जन-जागृति होती है ।

सूर्यमे शुक्र—वर्षा समयपर होती है, अनाजका भाव महँगा होता है और नेताओमें कलह होती है ।

सूर्य + सूर्य + सूर्य—सुभिक्ष, समयपर वर्षा, महामारी, व्यापारमें लाभ और धार्मिक नेताओको कष्ट होता है ।

सूर्य + सूर्य + चन्द्र—साधारण वर्षा, अन्नकी महँगाई, व्यापारियोको कष्ट, शीतकी वृद्धि और तृण कष्ट होता है ।

सूर्य + सूर्य + भौम—अतिवृष्टि, या अनावृष्टि, जनताको कष्ट, वस्तुओकी महँगाई और विद्रोह होता है।

सूर्य + सूर्य + राहु—सम्यक् वर्षा, पर फसलका विनाश, दैवी प्रकोप, वस्तुओकी महँगाई होती है ।

सूर्य + सूर्य + गुरु—साधारण वर्षा, फसल अच्छी, धान्य-भाव तेज, जनतामें सुख और शान्ति रहती है ।

सूर्य + सूर्य + शनि—वर्षाका अभाव अथवा असमयपर वर्षा, फसल साधारण, व्यापारियोको लाभ होता है।

सूर्य + सूर्य + बुध—पर्याप्त वर्षा, सुभिक्ष, फलोकी उत्पत्ति विशेष, तृण और रसकी अधिक उत्पत्ति होती है ।

सूर्य + सूर्य + केतु—साधारण वर्षा, दुर्भिक्ष, अन्नकी कमी, वस्तुओका अभाव और गुडकी अधिक उत्पत्ति होती है ।

सूर्य + सूर्य + शुक्र—सुभिक्ष, अच्छी वर्षा, अन्नका भाव सस्ता, देशमें शान्ति और व्यापारियोंको घाटा होता है ।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य—सुख-शान्ति, अनाजका भाव सस्ता, व्यापारियोको घाटा और जनताको सुख होता है ।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + चन्द्र—सुभिक्ष, पर्याप्त वर्षा, धन-धान्यकी वृद्धि, अन्नका भाव सस्ता और धर्मकी वृद्धि होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + भौम—धन-धान्यकी वृद्धि, उत्पात, विद्रोह, सघर्ष, नेताओमें अनैक्य और व्यापारियोको लाभ होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + राहु—धान्याभाव, टिड्डियोका उत्पात, भूकम्प, महामारी, पारस्परिक विद्रोह और साधारणत वर्षा होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + गुरु—धान्यकी खूब उत्पत्ति, व्यापारियोको प्रसन्नता, उद्योगोका विकास और जनताको सुख होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + शनि—वर्षाका अभाव, अन्नकी क्षति, मवेशियोको रोग, व्यापारियोको लाभ और वापसमें सघर्ष होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + बुध—सुभिक्ष, समयपर यथेष्ट वर्षा, व्यापारियोको लाभ, ऐश्वर्य समृद्धि, नेताओका सम्मान और रसकी यथेष्ट उत्पत्ति होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + केतु—साधारण वर्षा, धन-धान्यकी उत्पत्ति, व्यापारियोको लाभ, सट्टेसे हानि और बीमारियाँ उत्पन्न होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + शुक्र—यथेष्ट वर्षा, खनिज पदार्थोकी यथेष्ट उत्पत्ति, लाभ, धन-धान्यकी वृद्धि एव आन्तरिक सघर्ष होता है, नेताओमें ऊपरसे प्रेमभाव रहता है, परन्तु उनमें आन्तरिक द्वन्द्व होता रहता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य—वर्षके आरम्भमे अच्छी वर्षा, धन-धान्यकी वृद्धि और व्यापारमें अल्प लाभ होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + चन्द्र—सुभिक्ष, आनन्द, आमोद-प्रमोद, सस्कृतिका विकास, पारस्परिक सहयोग आदिकी वृद्धि होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + भौम—अवर्षण, अन्नकी अल्प उत्पत्ति, देशमें उपद्रव, सेनामें विद्रोह और उत्पत्ति होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य – सूर्य + राहु—अतिवृष्टि या अनावृष्टि, देशमें उपद्रव, शासनकी वृद्धि, चोर और लुटेरोंकी वृद्धि होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + गुरु—धन-धान्यकी अधिक उत्पत्ति, रोगोकी वृद्धि, व्यापारमें लाभ, रसोका अभाव होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + शनि—आरम्भमें वर्षाका अभाव, मध्यमें अधिक वर्षा, व्यापारियोको लाभ होता है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + बुध—घी, तेल, तिलहनकी अधिक उत्पत्ति, धान्यका अभाव, पशुओको कष्ट होता है।

सूय + सूर्य + सूर्य + सूर्य + केतु—सुभिक्ष, परन्तु वर्षाकी कमी, व्यापारियोको घाटा, महामारी, खनिज पदार्थोकी अधिक उत्पत्ति होती है।

सूर्य + सूर्य + सूर्य + सूर्य + शुक्र—समृद्धि, व्यापारिक विकास, आर्थिक कष्ट, नेताओको सम्मानप्राप्ति, भूकम्प और उद्योगोका विकास होता है।

सूर्य + चन्द्र + भौम + राहु + गुरु—अवर्षण, सूखा, पशुओको कष्ट, अशान्ति, रोग, पीडा और आर्थिक कष्ट होता है।

सूय + चन्द्र + भौम + राहु + शनि—अनावृष्टि, अथवा अतिवृष्टि, दुर्भिक्ष, व्यापारमें हानि, कष्ट, महगाई और पीडा होती है ।

सूर्य + चन्द्र + भौम + राहु + बुध—सुभिक्ष, समयपर यथेष्ट वर्षा, व्यापारमें लाभ, धन-धान्यकी वृद्धि पशुओमें लाभ और सुख होता है ।

सूर्य + चन्द्र + भौम + राहु + केतु—उपद्रव, सूखा, वर्षाका अभाव, इतनी अधिक महगाई जिससे तिगुने दाम होते है ।

सूर्य + चन्द्र + भौम + राहु + शुक्र—धन-धान्यकी वृद्धि, जनताको सुख, व्यापारियोको लाभ और शान्ति रहती है ।

सूर्य + भौम + राहु + गुरु + बुध—जनताको शारीरिक कष्ट, सुखकी प्राप्ति, धन-धान्यकी वृद्धि, घी-का भाव सस्ता और अन्नका भाव सम रहता है ।

सूर्य + भौम + राहु + गुरु + शनि—अनावृष्टि या अतिवृष्टि, धन-धान्यका अभाव, जनताको कष्ट और भूकम्प होता है ।

सूर्य + भौम + राहु + गुरु + केतु—कष्ट, अशान्ति, उपद्रव, उत्पाद, धान्याभाव, अनीतिका प्रचार और नाना तरहकी व्याधियाँ उत्पन्न होती है ।

सूर्य + भौम + राहु + गुरु + शुक्र—सुभिक्ष, समयपर वर्षा, धान्यकी वृद्धि, व्यापारियोको लाभ और आर्थिक समृद्धि होती है ।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + शुक्र—आरम्भमें कष्ट, अन्तमें सुख, सुभिक्ष, शान्ति, सुख, व्यापारमें लाभ और समस्त जनताको सुख प्राप्त होता है ।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + केतु—अन्नका भाव सस्ता, व्यापारियोको हानि, देशमें क्रान्ति और जागृति होती है।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + चन्द्र—लाभ ,हर्ष, सुभिक्ष, समयपर वर्षा, धन-धान्यकी समृद्धि, शान्ति, सुख और स्वास्थ्य अच्छा रहता है ।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + भौम—कष्ट, धन-धान्यकी वृद्धि, महामारी, पराभव तथा अशान्ति रहती है ।

सूर्य + बुध + राहु + गुरु + शनि—भय, आतक, साधारण वर्षा, प्रजाको कष्ट, शारीरिक रोग और धार्मिक नेताओका कष्ट होता है ।

सूर्य + बुध + राहु + शनि + केतु—लाभ, साधारण वर्षा, धन-धान्यकी वृद्धि, खेतीमें हानि और व्यापार साधारण रहता है ।

सूर्य + गुरु + राहु + सून्द्र + भौम—आरम्भमे सूखा, मध्यमें वर्षा और अन्तमे वर्षा अच्छी होती है, सुभिक्ष और फसल अच्छी होती है ।

सूर्य + गुरु + राहु + चन्द्र + केतु—कष्ट, पीडा, भय, आतक, समयपर वर्षा, धान्योत्पत्ति और व्या-पारियोको लाभ होता है ।

सूर्य + शुक्र + राहु + केतु + भौम—आरम्भमें वर्षा, अन्तमें वर्षाका अभाव, वस्तुओंकी महगाई तथा जनताको कष्ट होता है ।

चन्द्रदशाफल

चदे णर-तिरयाणं आरुग्गो सुह तहेव धणवुड्ढी ।
थोवजल तिणुप्पत्ती अमियरसो होइ पुढवीए ।। ११ ।।

चन्द्रकी दशामे मनुष्य और तिर्यञ्चोके आरोग्य, सुख और धनकी वृद्धि होती है। जल कम वरसता है, पर घासकी प्रचुर परिमाणमे उत्पत्ति होती है तथा पृथ्वीमे अमृतरसका सचार होता है।

विवेचन—दशाफलका निरूपण तभी हो सकता है, जव महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा, और प्राणदशाकी अपेक्षासे किया जाय। देश और नगरके फलादेशके लिए जो दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशा आती है, वही वर्ष भरके लिए मानी जाती है। उसमे परिवर्तन समयके अनुसार नही होता। हाँ, शनि नक्षत्र वदलता हो तो वर्षके मध्यमे भी परिवर्तन हो जाता है। अत वर्षारम्भमें दशाओ-को लोकविजययन्त्रके अनुसार निकालकर फलादेश अवगत करना चाहिये।

चन्द्रमाकी महादशामे—मनुष्य और पशुओको सब प्रकारसे आरोग्य, धन-धान्यकी वृद्धि, पृथ्वीमे सब प्रकारसे शान्ति और सुख होता है। व्यापारियोको चाँदी, सीना, रूई कपास और कपडेके व्यापारमें हानि होती है। गुड, चीनी, गेहूँ और वाजराके व्यापारमे दूना लाभ होता है। नेताओमें सहयोग और सहकारिता की भावना रहती है। देशके सुधारके लिए क्रान्ति होती है तथा साधारण जनता भी अपने देशके सुधारमें सहयोग देती है। अनेक ख्याति प्राप्त नेता आकर सुधारकी वाते वतलाते है, समाजमें नैतिकताका प्रचार और प्रसार होता है। कोई व्यक्ति अपने विकास द्वारा नेताके पदको प्राप्त करता है, इस व्यक्तिका प्रभाव उस प्रदेशके समस्त व्यक्तियोपर रहता है। चन्द्रमाकी महादशा देशके अभ्युत्थान और उन्नतिके लिए अत्यन्त लाभप्रद होती है। व्यापार, कृषि-उद्योग और कुटीर-उद्योगोमे उन्नति होती है।

चन्द्रमाकी अन्तरदशामे—दशाका विकास होता है, परन्तु वर्षा इतनी अधिक होती है, जिससे वाढके आ जानेसे नदीतटके प्रदेशोमें नानाप्रकारकी हानियाँ होती हैं। अतिवृष्टिके कारण मकान और पशुओको भी हानि उठानी पडती है। यद्यपि फसल अच्छी उत्पन्न होती है, परन्तु वर्षाकी अधिकताके कारण नाना तरह-के कष्ट उठाने पडते हैं। कफ और वायुका प्रकोप अधिक रहता है तथा मलेरिया ज्वर अधिक कष्ट पहुँचाता है। देश-विदेशके सम्वन्धसे निमोनिया रोग भी अपना प्रकोप बढाता है। साधारणत इस ग्रहकी अन्तर-दशामें प्रजाको सुख और शान्ति ही होती है, धर्मात्मा व्यक्तियोको सम्मान मिलता है। धर्म और समाजके कार्योमें वृद्धि होती है। शिक्षा, उद्योग और व्यवसायमें वृद्धि होती है। चन्द्रमाकी अन्तरदशा नारियोंके लिए भी सुख, शान्ति देती है तथा मानसिक और शारीरिक सुख प्रदान करती है। आम, लीची, नारियल, केला, अमरूद आदि फलोकी उत्पत्ति वहुलतासे होती है, घी, दूध, नमक, अल्पमात्रामे उत्पन्न होता है, परन्तु इन वस्तुओकी भी कमी नही होती है। देशकी समृद्धि और शान्ति मानवमात्रको प्राप्त होती है। खनिज वस्तुओकी उत्पत्ति अधिक होती है तथा ये वस्तुये समुद्रपारके देशोमें भेजी जाती है।

चन्द्रमाकी प्रत्यन्तरदशामे—सव प्रकारसे सुख शान्तिकी प्राप्ति होती है। परन्तु महादशा और अन्तरदशा क्रूर ग्रहकी हो तो क्रूर ग्रहका फलादेश भी प्राप्त होता है और आधा फलादेश अनिष्टकर होता है। क्रूर ग्रहकी महदशा रहनेसे देशमें उत्पात, उपद्रव और महामारी आदि उत्पन्न होते हैं। धन-धान्यकी भी कमी होती है, अकाल और अवर्षणके कारण देशमें हाहाकार छा जाता है। जव महादशाके साथ अन्तरदशा भी पापग्रह—रवि,

मगल, शनि, राहु, केतुकी होती है, तव वर्षारम्भमें अशान्ति और वर्षान्तिमें शान्ति रहती है। धन-धान्यकी कमी रहती हैं, प्रजामें फूट और अशान्ति रहती है। नेताओमें सघर्ष होता है, आपसके सघर्षके कारण साधारण जनतामें भय और आतक व्याप्त हो जाता है। चन्द्रमाकी प्रत्यन्तरदशा रहनेसे थोडी फसल उत्पन्न होती है तथा वर्षा भी थोडी-थोडी समयपर हो जाती है। जव शुभ ग्रह—वुध, गुरु, शुक्र और चन्द्रमा-की महादशा या अन्तरदशा हो तथा चन्द्रमाकी प्रत्यन्तरदशा हो तो देशमें सव प्रकारसे सुख, शान्ति और धन-धान्यकी समृद्धि होती है।

चन्द्रमाकी सूक्ष्मदशामे—सुभिक्ष, शान्ति, धान्यकी समृद्धि, आरोग्य, शान्ति, प्रेम और व्यापारमें लाभ होता है। जव क्रूरग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा, शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशा हो और चन्द्रमाकी सूक्ष्म-दशा हो तो देशके व्यापारमें विकास, खेतीसे लाभ, अच्छी फसल और खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति अधिकतासे होती है। तेल, तिलहन, तिल, तीसी आदि पदार्थ सस्ते विकते हैं, सट्टेके व्यापारियोंको घाटा होता है। क्रूर-ग्रहकी महादशा, क्रूरग्रहकी अन्तरदशा, शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें चन्द्रमाकी सूक्ष्मदशा हो तो देशके औद्योगिक कार्योमें विकास होता है, नैतिक नियमोमें शिथिलाचार तथा धन-धान्यकी समृद्धिमें कमी रहती है। वर्षा आरभमें अच्छी होती है, परन्तु अन्तिम भागमें वर्षाकी कमी रहनेसे फसल खराव हो जाती है। व्यापारियोंको कष्ट होता है। क्रूरगहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा, क्रूरग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें चन्द्रमाकी सूक्ष्मदशा अशुभप्रद होती है। देशमें कलह, सघर्ष, उपद्रव, उत्पात और अकाल वना रहता है। चन्द्रमाकी सूक्ष्मदशा रहनेसे किसी प्रकार जनसाधारणका जीवन व्यापार चलता रहता है। भाद्रपद महीनेमें जलकी वर्षा नही होती है, जिससे फसल सूख जाती है। आश्विनमासमें अनेक प्रकारकी वीमारियाँ भी फैलती हैं।

चन्द्रमाकी प्राणदशा—उत्तम होती है। देशमें धन, धान्य, आरोग्य, ऐश्वर्य और अभ्युदय वर्तमान रहते हैं। शासकोपर जनताका विश्वास वढता है, कारोवारमें वृद्धि होती है। कृषि-उद्योग और मिलोंके कार्योमें प्रगति होती रहती है। चन्द्रमाकी महादशा और चन्द्रमाकी ही प्राणदशा हो तो निवासियोके लिए सुख-शान्ति देनेवाली है। अनैतिकता और भ्रष्टाचारकी कमी होती है, देशोमें धर्म और नैतिक नियमोका प्रचार होता है। निम्नवर्गके लोगोको कुछ कष्ट उठाना पडता है तथा उनमें आपसमें भी वैर-विरोध वढता है। पशुओकी वृद्धि होती है, उनका मूल्य घट जाता है। दूध देनेवाले चौपायोकी कीमत कुछ वढ़ती है, परन्तु वर्षामे उनकी भी कीमत वढ जाती है। कार्त्तिकमासमें ओले गिरनेसे कुछ फसलको क्षति पहुँचती है।

मगलकी महादशा, केतुकी अन्तरदशा, राहुकी प्रत्यन्तरदशा, शनिकी सूक्ष्मदशाके साथ चन्द्रमाकी प्राण-दशा हो तो देशमें नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। मारकाट मच जाती है, महामारीके फैलनेसे महस्रो मनुष्योकी मृत्यु होती है। वर्षा भी वहुत कम होती है, तथा फसल सभी जगह खराव हो जाती है। चोर, लुटेरे और डाकुओका आतक छा जाता है, तृण और धान्यमे पर्याप्त लाभ होता है। जो सग्रह करते है, उन्हें तिगुना लाभ होता है। सोनेका मूल्य वढता है, चाँदीका मूल्य सोनेके अनुपातसे कम ही रहता है। देशमें भय और आतक छा जानेसे व्यापारियोंको भी हानि उठानी पडती है। शासन-प्रवन्ध भी ढीला पड जाता हैं तथा राज-नैतिक पार्टियोमें आपसमें सघर्ष होता है।

वुधकी महादशा, गुरुकी अन्तरदशा, शुक्रकी अन्तरदशा, मगलकी सूक्ष्मदशा और चन्द्रमाकी प्राणदशा देशके लिए सव तरहसे सुख-समृद्धि देनेवाली है। सुभिक्ष, वर्षाका यथेष्ट परिमाणमें होना, व्यापारकी वृद्धि तृण और धान्यकी अधिकमात्रामें उत्पत्ति, देशमें सुख और शान्ति, व्यापारियोको चिन्ता एव सभी प्रकारके उद्योग-धधोंके सचालकोंको लाभ होता है। सोना, चाँदी, गुड, चीनी, गेहू, तिलहन और रत्नोंका भाव घटता

है। वडे-वडे जौहरियोको हानि होती है । यद्यपि औद्योगिक विकासके लिए प्रयत्न किया जाता है, परन्तु देशमें सुख-सामग्रियाँ इतनी अधिक मात्रामे उत्पन्न होती है, जिससे लोगोका उपयोग इस ओर लगता ही नही है। मोती, हीरा, नीलम आदि रत्नोकी उत्पत्ति इस प्रकारकी दशामे अधिक होती है। शुक्रकी प्रत्यन्तरदशाका सयोग रहनेमे देशमे ज्ञान और शिक्षाका प्रचार भी अधिक होता है। शत्रु और विरोधियोका अन्त हो जाता है, देशकी प्रतिष्ठा वहुत वढती है। समुद्रपारके देशोके साथ *व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।* इस दशाके अन्तमें किसी नेता या महापुरुषकी मृत्यु भी होती है, जिससे देशको क्षति उठानी पडती है।

राहुकी महादशा, केतुकी अन्तरदशा, शनिकी प्रत्यन्तरदशा, बुधकी सूक्ष्मदशाके साथ चन्द्रमाकी प्राण-दशा हो तो देशमे साधारणत भय, आतक और अशान्ति रहती हैं, धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है तथा वर्षा भी समयपर होती है, फिर भी देशमें अनेक प्रकारके कष्ट व्याप्त रहते है। वस्त्रव्यवसायमे कमी आ जाती है, वडे-वडे औद्योगिकोको भी घाटा होता है तथा देशको पूजी घटने लगती है। उद्योगपतियोके साथ मजदूरोका सहयोग नही रहता है, इस कारण उपयोगकी वस्तुएँ उचित मात्रामें उत्पन्न नही हो पाती है। भूकम्प, महा-मारी या अन्य प्रकारकी आकस्मिक घटना घटित होती हैं, जिससे देशकी जनसख्याको हानि पहुँचती है। देशकी शासन व्यवस्था भी ढीली पड जाती है तथा जनता स्वेच्छाचारी होकर विचरण करती है। चन्द्रमाकी प्राणदशाके कारण अन्तमे स्थिति सँभल जाती है, जिससे कोई वहुत वडी गड-वडी नही होने पाती।

भौमदशाफल

दुब्भिक्ख रायकट्ठं वाहणहाणी पलीवणं वहुलं।
जुज्झति रायपुरिसा भोमे भूमीय दुक्खभय ॥१२॥

मगलकी दशामें दुर्भिक्ष, राजा—शासनको कष्ट, और हाथी, घोडे प्रभृति वाहनोका विनाश होता है। प्राय अग्निकृत उपद्रव होते हैं, राजगण परम्पर युद्ध करते है और पृथ्वीपर अनेक दु ख तथा भय उत्पन्न होते हैं।

विवेचन—जिस ग्राम या नगरकी जव मगलकी महादशा होती है, उस समय उस ग्राम या नगरमें उपद्रव, उत्पात, दुर्भिक्ष, सेनामे विद्रोह, नेताओमें सघर्ष, धन-धान्यका अभाव और नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। देशके निवासियोमें पारस्पारिक सघर्ष होता है, सक्लेश, अशान्ति, मनमुटाव और अन्न सकटका सामना करना पडता है। पृथ्वीपर अनेक प्रकारके उत्पात होते है, भूकम्प तथा अस्त्र-शस्त्रोका प्रयोग निरन्तर होता रहता है। इस महादशामें आपाढ, कार्त्तिक और माघके महीनोमें प्रजाको कुछ शान्ति मिलती है, अवशेष मासोमे अशान्ति और दु ख प्राप्त होता है। अगहन, माघ, फागुन और ज्येष्ठके महीनोमें वस्तुएं महँगी होती है। व्यापारियोको विशेष लाभ होता है, लाल रगकी वस्तुओके व्यापारमें अधिक लाभ होता है तथा मवेशियो-का मूल्य भी घटता है। कृषक और मजदूरोको इस महादशामे अधिक कष्ट रहता है तथा उनके सगठन भी भग हो जाते हैं। आपसमें अनेक प्रकारके झगडे भी उनमें होते हैं। मिल या वडे-वडे व्यापारके स्वामियोको अनेक प्रकारके कष्टोका सामना करना पडता है।

मगलकी अन्तरदशा भी अनिष्ट कारक होती है। इस दशामे अकाल, अवर्पा होनेसे फसलको क्षति उठानी पडती है। टिड्डी विशेषरूपमें आती है, फसलमें कीडा लगता हैं और नदीतटके देशोमे वाढ आ जानेसे अनेक प्रकारके कष्ट उठाने पडते है। दूध, घी, और नमक आदि रसोकी कमी रहती है, जिससे इन वस्तुओका मूल्य अधिक वढ जाता है। जो व्यवसायी व्यक्ति वैशाखमासमें अनाज एकत्र करके रखता है और

सोना-चाँदीका सचय करता है, वह पौप मासमें दूना लाभ करता है। जनसाधारणको इस अन्तरदशामें अत्यधिक श्रम करनेपर ही भोजन प्राप्त होता है। भूखकी ज्वालाका सामना करना पडता है। वस्त्र-व्यवसाय बहुत ही गिर जाता है तथा इस व्यवसायके करनेवालोको हानि ही उठानी पडती है।

मगलकी प्रत्यन्तरदशामे देशमे अकाल, अवर्षा और महामारी फैलती है। जनतामे असन्तोपकी भावनाके व्याप्त हो जानेसे वर्गसघर्ष आरम्भ हो जाता है, जिसमें समस्त देशवासियोको नाना प्रकारके कष्ट सहने पडते है। मगल स्वभावत क्रूर ग्रह है, इसका स्वभाव धीरे-धीरे कष्ट पहुँचानेका है। नेताओ एव धर्मप्रवर्तकोंके प्रति अविश्वास बढता है तथा समाजमे उनकी प्रतिष्ठा इतनी गिर जाती है, जिससे उन्हें अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखनेमें बडी कठिनाइयोका सामना करना पडता है। अनेक स्थानोपर उल्कापात विद्युत्पात तथा अन्य प्रकार की आकस्मिक घटनाएँ घटती है, जिससे जनताको महान कष्ट होता है। गेहूँ,चना,मटर और उडदके व्यापारमें लाभ होता है, व्यवसायी ज्येष्ठमें इन वस्तुओका सग्रह करते है, उन्हें निश्चय लाभ होता है। बडे-बडे व्यवसायवालोको, जिन्हें सट्टा या फाटका खेलना है, अच्छा लाभ होता है। माघ और फाल्गुनके महीनोमें व्यापारमें अच्छी आमदनी होती है। देशके बडे-बडे व्यापारियोंको सट्टेमे पर्याप्त धन प्राप्त होता है। शुभग्रह की महादशा, अन्तरदशा और सूक्ष्मदशाके होनेपर मगल शान्ति प्रदान करता है। कृपिमे लाभ होता है। यद्यपि वर्पा साधारण ही होती है, फिर भी फसलमें अनुपातत कोई हानि नही होती है।

मगलकी सूक्ष्मदशा आरम्भमें कुछ कष्टकारक होती है तथा मध्यमे अनिष्ट और विपत्ति प्रदान करती है। इस सूक्ष्मदशामे विदेशोसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित होता है। देशका कच्चा और पक्का माल बाहर जाता है, जिससे आर्थिक स्थितिका सतुलन बना रहता है। माघ, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठके महीनोमें भूकम्प होता है तथा मवेशियोमें बीमारियाँ होती है, जिससे सभी व्यक्तियोको परेशान रहना पडता है। जलकी वर्षा अल्प मात्रामें ही होती है। शुक्रकी महादशा और बुध या गुरुकी अन्तरदशामें जब मगलकी सूक्ष्मदशा होती है तो निश्चयत पदवृद्धि, सम्मान और नेताओमें मेल-मिलाप होता है। बडे-बडे व्यापारियोंको सट्टेसे लाभ होता है। परन्तु देशकी मध्यम परिस्थितिके लोगोको सदा ही कष्ट भोगना पडता है। कार्त्तिक, पौष और माघमें महामारीका प्रकोप होता है, जिससे देशमें घोर अशान्ति होती है। प्रजाको सब प्रकारसे कष्टका ही सामना करना पडता है। चन्द्रमाकी महादशा, शुक्रकी अन्तरदशा, बुधकी प्रत्यन्तरदशामें भौमकी सूक्ष्मदशा सुख उत्पन्न करती है। देशमें खनिज पदार्थोकी उत्पत्ति बढती है, धान्यकी पैदावार अधिक है और शाक-सब्जी तथा तरकारियोकी उत्पत्ति अधिक होती है। मेवा और मशालोके व्यापारमें साधारणत लाभ होता है। जो लोग बैल और भैसोका व्यापार करते हैं, उन्हे अपने व्यवसायमें पूरा लाभ होता है। क्रूर ग्रहोकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशाके रहनेसे मगलकी सूक्ष्मदशा हानिकारक और कष्ट देनेवाली होती है। शुभ ग्रहोकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशाके रहनेसे मगलकी सूक्ष्मदशा साधारणत देशकी धन-धान्यमें वृद्धि करती है।

मगलकी प्राणदशा साधारणत अनिष्ट करती है। दुर्भिक्ष, अनावृष्टि, रोग, दु ख, शोक, ग्लानि, और चिन्ता उत्पन्न होती है। फसलमें कीडे लग जाते हैं, जिससे अन्नका सकट सहन करना पडता है। माली,धोबी, कुम्हार आदि जातिके लोगोका व्यवसाय अधिक चलता है। बडे-बडे व्यवसायियोका व्यवसाय मन्दा पड जाता है और उन्हें अपनी आजिविका अर्जन करनेमें अनेक कठिनाइयोका सामना करना पडता है। सोना, ताँबा, लोहा, पीतल और कासा आदि धातुओंके व्यापारमे पर्याप्त लाभ होता है। सोने-चाँदीके व्यवसायी सट्टे द्वारा अपरिमित धनार्जन करते हैं तथा देशके सम्मानको बढाते हैं।

राहुकी दशामे धन-सम्पदादि ऋद्धियोका विनाश होता है, राजा, प्रजा—नागरिक अपने-अपने स्थानसे भ्रष्ट होते हैं, भूकम्प होता है और पृथ्वी कोलाहलसे व्याप्त होती है। नगरका शत्रुओंके द्वारा भग और पशुओका सहार होता है।

विवेचन—राहुकी महादशा आने पर धन-सम्पत्तिका अभाव होने लगता है, वर्षा कम होती है, प्रजा-को नाना प्रकारके दु ख सहन करने पडते है तथा शासकोको भी स्थानच्युत होना पडता है। इस महादशामें चौपायोको सुख रहता है। तृण अधिक उत्पन्न होता है, जिससे चारेकी कमी नही पडती। व्यापारियोका धन लोग लूट लेते है, जिससे उन्हें अनेक प्रकारके कष्ट सहन करने पडते है। श्रावण और आश्विन मासमें वर्षा अत्यल्प होती है, भाद्रपद मासमें वर्षा अच्छी होती है, जिससे फसल साधारणत उत्पन्न हो जाती है। राहुकी महादशाका फल सर्वदा समान नही मिलता है। जिस वर्ष राहु कन्या और मिथुन राशियो पर रहता है उस वर्ष राहुकी महादशा अच्छी रहती है। धन-धान्यकी उत्पत्ति खूब होती है व्यापारमें पूरा लाभ होता है। सोना-चाँदी, कासा-पीत्तल, ताबाँ जस्ता आदि धातुओंके व्यापारमें अच्छा लाभ होता है। इन धातुओके व्यापा-रियोको पौप और माघ महीने अधिक लाभप्रद होते हैं। देशमे शान्ति, सुख और समृद्धि सर्वत्र व्याप्त रहती है। मकर और कुम्भ राशि पर जब राहु रहता है, उस समय राहुकी महादशामें बडे-बडे उपद्रव होते हैं। भूकम्प, युद्ध, प्लेग, हैजा आदि उत्पन्न होते हैं। नदी किनारेके प्रदेशोमें बाढ आजानेसे बडी भारी क्षति उठानी पडती है। देशमें सर्वत्र हाहाकार मच जाता है, फूट, कलह और नाना प्रकारके झगडे निरन्तर होते रहते हैं। देशके किसी बडे नेताकी मृत्यु भी इसी समय होती है।

राहुकी अन्तरदशामें देशमें अवर्षण, दुर्भिक्ष, अशान्ति और नाना तरहके कष्ट होते है। यदि शुभ ग्रह-की महादशामें राहुकी अन्तरदशा रहे तो सभी प्रकारका सुख होता है। केवल निवासियोमे सघर्ष, अनैतिकता और पारस्परिक विरोध होता है। शुभ गुरुकी महाशा रहनेसे राहुका प्रभाव वर्षके अन्तिम महीनो पर पडता है। आरम्भमें वर्ष अच्छा रहता है। खरीफकी फसल अच्छी होती, रवीमें कुछ हानि होती है। फसल-को पाला मार जाता है जिससे गेहूँ, चना आदि कम मात्रामें उत्पन्न होने है। इस अन्तरदशामें गुड और चीनीकी उत्पत्ति अत्यल्प होती है। ईखकी खेती अच्छी नही होती है। धना, जीरा, और सुपाडीकी उत्पत्ति अधिक होती है। व्यापारियोको सट्टेमें अधिक लाभ होता है तथा पौप और माघके महीनेमें सट्टा करने वालो-को अत्यधिक लाभ होता है। जो लोग सोना-चाँदीका सट्टा करते हैं, उनके लिए अगहन और पौप श्रेष्ठ हैं। फाल्गुनमें सोने-चाँदीका व्यापार कुछ ढीला पड जाता है, जिससे व्यापारियोको थोडी हानि भी उठानी पडती है। रेवती, मघा और विशाखा नक्षत्रोमें इस दशामें जो रुई और सन का सट्टा करते हैं, उन्हें निश्चयत लाभ होता है। व्यापारियोको इन नक्षत्रोंमें माल खरीदना चाहिये, बेचनेसे तो हानि होती है। अनाजके व्यापारि-योको बरसातके दिनोमें अधिक लाभ होता है, आश्विनका महीना गेहू, चना और तिलहनके व्यापारके लिए सर्व श्रेष्ठ है।

क्रूर ग्रहोकी महादशामें राहुकी अन्तरदशा हानिकारक रहती है। इसमें आर्थिक सकट देश या नगर के समक्ष आता है, रोग शोक आदि नाना प्रकारके उपद्रव होते है। देशमे दुर्भिक्ष पडता है। तृण, अन्न, रस और घीकी कमी रहती है। चोर, लुटेरोका प्रकोप बढता है, ये सर्वत्र अपना आतक बढाते है। देशकी हालत दिनो-दिन खराब होती जाती है। महामारीका प्रकोप इतना भयकर होता है कि आदमी आदमीको नही पूछता इस दशामे आकस्मिक विपत्तियाँ आती है। अनीति, अत्याचार और पापकी वृद्धि होती है। नगर या देशके पडौसी शासकोंसे अनबन हो जाती है, आपसमे युद्ध या सघर्ष होने हैं। इस दशामे चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ ये

तीनो महीने अच्छे रहते हैं। वरसातके दिनोमे कष्टारम्भ होता है, सूखा पड जानेसे नाना तरहकी व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। जाडेके दिनोमें कुछ वर्षा होती है, जिससे वैशाखकी फसल कुछ उत्पन्न हो जाती है। पौषमें वर्षा होनेसे गेहूकी फसल वहुत अच्छी उत्पन्न होती है।

राहुकी प्रत्यन्तरदशामें देशमे साधारण वर्षा होती है। श्रावण और भाद्रपदमें अच्छी वर्षा होती है। आश्विनमे अतिवृष्टि या अनावृष्टिका योग रहता है, अत फसलको साधारणत क्षति पहुँचती है। व्यापारीवर्गमें वस्तुओके भावोमें अस्थिरताके कारण तहलका मचा रहता है। इस दशामे शासक और शासितोमें वैमनस्य उत्पन्न होता है तथा परस्पर अविश्वासके कारण सघर्ष वढता चला जाता है। जव राहु मेष राशि पर रहता है, उस समय इसकी प्रत्यन्तर दशामे सुभिक्ष होता है। कर्क, मिथुन, कन्या और मीनके राहुकी प्रत्यन्तर-दशामें व्यापारियोको खूव लाभ होता है। कृषकवर्गके लोगोको कष्ट होता है तथा इनकी आर्थिक स्थिति भी विगड जाती है। धनु, मकर, कुम्भ और वृष राशिके राहुमे देश या नगरके उच्च वर्गके व्यक्तियोको सुख-शान्ति मिलती है। धान्योत्पत्ति अच्छी होती है, और देशमें सभी तरहसे आनन्द व्याप्त रहता है। शुभ गृहकी महादशा और ग्रहकी ही अन्तरदशामें राहुकी प्रत्यन्तरदशा वर्षारम्भमें कष्टप्रद और अन्तमें सुखप्रद होती है। आर्थिक दृष्टिसे इस दशामें अशान्ति रहती है। सोने-चाँदीका व्यापार अस्थिर रहता है, वाजारका रुख अच्छा नही रहता, जिससे वडे अच्छे-अच्छे व्यापारी भी इस स्थितिका सामना करनेमें असमर्थ रहते हैं। शुभ ग्रहकी महादशामें क्रूर ग्रहकी अन्तरदशाके साथ राहुकी प्रत्यन्तरदशा साधारणत हानिप्रद होती है। व्यव-सायियोको इस दशामे वहुत हानि पहुँचती है। कई व्यापारियोंका व्यापार तो चौपट हो जाता है तथा वे सव प्रकारसे दुखी जीवन व्यतीत करते हैं।

राहुकी सूक्ष्म दशा भी देशके लिए महान् हानिकारक होती है। इस दशामे वर्षा वहुत कम होती है, राजा और प्रजाको अनेक कष्ट और वीमारियाँ सहन करना पडती हैं। राहुकी सूक्ष्म दशा उस समय अच्छा फल देती है, जव राहु कन्या, मिथुन या मीन राशिपर रहता है और शुभ ग्रहकी महादशा, शुभ ग्रहोकी ही अन्तरदशा और प्रत्यन्तरदशा होती है। जिस वर्ष राहुके साथ मगल हो, उस वर्ष राहुकी महादशा और सूक्ष्म-दशा हो तथा शुभ ग्रहोकी अन्तरदशा और प्रत्यन्तरदशा हो तो निश्चयत देशमे सुख, शान्ति और सुभिक्ष होती हैं। रुई, कपास और अनाज खूव उत्पन्न होता है। देशमें कारोवार और उद्योगोकी वृद्धि होती है। नेताओको सम्मान प्राप्त होता, व्यापार वढता है, सदाचार और नीतिका प्रचार होता है। क्रूर ग्रहोकी महादशा, शुभ-ग्रहोकी अन्तरदशा, शुभग्रहोकी प्रत्यन्तरदशाके साथ राहुकी सूक्ष्मदशा देशमें साधारणत सुख शान्ति उत्पन्न करती है। देशकी धार्मिक स्थिति सुधरती है। प्रेम और वात्सल्य भावका प्रचार होता है। पशुओका मूल्य वढता है। ऊनी कपडोके व्यापारमें अधिक लाभ होता है। रेशमी और सूती वस्त्रोके व्यवसायमें उन्नति होती है। दूध, घी और गुडकी उत्पत्ति खूव होती है। देशका वातावरण सुख-शान्तिसे पूर्ण रहता है। क्रूर ग्रहोकी प्रत्यन्तरदशा, शुभ ग्रहोकी महादशा और अन्तरदशाके साथ राहुकी सूक्ष्म दशा देशमे सुभिक्ष उत्पन्न करती है। आषाढ, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन मासोमें यथेष्ट वर्षा होती है। फसलमें रोग लग जाता है, जिसमे फसल कुछ कम उत्पन्न होती है। राजनैतिक नेताओके साथ धार्मिक नेताओका भी सम्मान वढता है। खाद्य पदार्थोंका भाव वहुत सस्ता हो जाता है। व्यापारियोको साधारण लाभ होता है।

राहुकी प्राणदशा देशके नेताओके लिए अच्छी नही होती। गेहूँ, चना, जौ, वाजरा, तूअर, मूँग, उडद, मसूर और ज्वारकी फसल अच्छी नही होती है। हाँ, धान अच्छा उत्पन्न होता है। वर्षा कम होती है, वायु ज्यादा चलती है। आकाशमें वादल गर्जते हुए दिखलायी पडते है, पर वर्षा नही होती है। आषाढ़के

महीनेमे केवल विजली चमकती हुई दिखलायी पडती है, वादल पृथ्वीकी ओर झुके हुए दिखलाई पडते हैं, किन्तु यो ही निकल जाते हैं। आधे श्रावणके पश्चात् वर्षा होती है, और वह भी कम मात्रामें। शुभ ग्रहोकी महादशा, शुभ ग्रहोकी अन्तरदशा, क्रूर ग्रहोकी प्रत्यन्तरदशा और क्रूर ग्रहोकी सूक्ष्मदशाके साथ राहुकी प्राणदशा साधारणत सुखप्रद होती है। इस दशामें वर्षा कम होती है, परन्तु फसल अच्छी उत्पन्न होती है व्यापारियोंके लिए यह दशा अच्छी होती है। गेहूँ, चना आदि अनाजके व्यापारमें लाभ होता है। सोने-चाँदीके व्यापारमें भी अच्छा लाभ होता है, परन्तु भाद्रपद महीनेमें व्यापारियोको इस व्यापारमें घाटा होता है। क्रूर ग्रहोंकी महादशा शुभ ग्रहोंकी अन्तरदशा, क्रूर ग्रहोकी प्रत्यन्तरदशा और क्रूर ग्रहोकी सूक्ष्म दशाके साथ राहुकी प्राण-दशा अनेक प्रकारके कष्टोको देती है। ज्येष्ठ, श्रावण, माघ और फाल्गुन मास इस दशामें अच्छे होते हैं तथा इन महीनोमें देशमें सभी प्रकारकी सुख-शान्ति रहती है।

गुरुदशाफल

वहुदुद्धा गोमहिसी सस्सुप्पत्ती य हुति वहुमेहा।
रायसुह णत्थि भयं उत्तमवणिया सुजीवे ण ॥ १४ ॥

गुरुकी दशामे गाय और भैंसें बहुत दूध देती हैं, धान्यकी उत्पत्ति अधिक होती है, वर्षा अच्छी होती है, राजाको सुख मिलता है, राज्यमे कही भी भय नही रहता और व्यापारियोको व्यापारमे लाभ होता है।

विवेचन—गुरुकी महादशामें देशमें सर्वत्र धन-धान्यकी वृद्धि होती है, समयपर यथेष्ट वर्षा होती है, घी, दूध, दही आदि पदार्थोंकी वहुलता रहती है। देशमें सर्वत्र शान्ति और सुख व्याप्त रहता है। जनता परस्पर प्रेम और आनन्दके साथ रहती है। सभी मिलकर देशकी उन्नति और विकास करते हैं। समाजमें ज्ञानी और योगियोका आदर होता है, जनताकी रुचि धर्मश्रवणकी ओर बढती है। सभी लोगोकी देशके अभ्युत्थानकी चिन्ता रहती है। व्यापारियोके लिए यह दशा वहुत ही अच्छी होती है। उनका व्यापार देश-विदेशमें खूव वढता है। सोने-चाँदी, गुड मूँगा और रगके व्यापारमें अपरमित लाभ होता है। देशकी आर्थिक स्थिति सुदृढ होती जाती है। धान, गेहूँ, चना, जौ, ज्वार और मक्काकी उत्पत्ति वहुलतासे होती है। जव कर्क, धनु और मीन राशियोपर वृहस्पति रहता है उस समय इसकी महादशामें देशकी अवस्था वडी ही अच्छी और सन्तोषप्रद होती है। राजा-प्रजा सभीको सुख और आनन्द प्राप्त होता है। रोग-शोक आदिका भय दूर हो जाता है। कुम्भ, मकर और सिंहराशिके बृहस्पतिकी जव महादशा रहती है, उस समय देशमें साधारण वर्षा होती है। व्यापारियोको भी हानि उठानी पडती है। धन-धान्यकी उत्पत्ति भी साधारण होती है। अनाजका भाव आरम्भमें सस्ता, किन्तु पीछे महँगा हो जाता है। फसलमें रोग लग जानेके कारण उपज भी कम होती है, अत भाव स्थिर नही रह पाता है।

गुरुकी महादशाके समयमें सवत्सरका राजा भी गुरु हो तो निश्चयत देशमें सोने-चाँदी, मोती, माणिक्य आदि वस्तुओंकी उत्पत्ति होती है। आषाढ, श्रावण इन दोनो महीनोंमें अच्छी वर्षा होती है, जिससे फसल हो जाती है। देशका वातावरण शान्त रहता है। उपद्रव या उत्पात नही होते। माघ और फाल्गुन महीनेमें सोने-चाँदीके व्यापारमें ज्यादा लाभ होता है। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठके महीने व्यापारियोंके लिए अच्छे नही होते। इन महीनोमें वस्तुओंके मूल्य इतने घट जाते हैं, जिससे व्यापारियोको अधिक घाटा होता है। बुध या

पैट्रोल आदिका भाव गिरता है और इन वस्तुओंके व्यवसायियोंको हानि उठानी पड़ती है। महादशाकारक ग्रह जव अपनी राशि या उच्च राशिमे हो और शुभ ग्रहसे भुक्त या दृष्ट हो तो उस समय गुरुकी प्रत्यन्तर-दशा देशके विकासके लिए और भी अच्छी रहती है। इस दशामें अनाज इतना अधिक उत्पन्न होता है कि इसका निर्यात विदेशोंके लिए करना पडता है। अधिक अनाज उत्पन्न होनेके कारण ही कुछ व्यक्ति विदेशोंसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

माघ, फाल्गुन और चैत्र इन महीनोमे उपर्युक्त दशा नवीन योजनाओंको सफल करने या कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए सबसे अच्छी है। देशका ढाँचा वदल जाता है, आर्थिक दृष्टिसे देश वहुत आगे वढ जाता है। जो व्यापारी पुष्य, मघा, उत्तरापाढा और हस्त नक्षत्रमे व्यापार आरम्भ करते है, वे उक्त दशामें सहस्रों रुपये अर्जित कर लेते हैं। आश्लेपा, विशाखा और भरणी नक्षत्रमें व्यापार करनेवाले हानि उठाते हैं। क्रूर ग्रहोंकी अन्तरदशाके साथ गुरुकी प्रत्यन्तर दशा देशके विकासके लिए परमोपयोगी होती है।

गुरुकी सूक्ष्मदशामें देशकी उन्नति, धन-धान्यकी वृद्धि, सुभिक्ष, समयानुसार यथेष्ट जलवर्षा होती है। शुभ ग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी ही अन्तरदशा शुभ ग्रहकी प्रत्यन्तरदशाके साथ, गुरुकी सूक्ष्म दशा सव प्रकारसे कल्याण करनेवाली होती है। मेप राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्म दशा देशमें अनावृष्टि करती है। वृप राशिके वृहहस्पतिकी सूक्ष्मदशा समयानुसार यथेष्ट वर्षा, सुकाल और व्यापारमें विकास करती हैं। मिथुन राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशा रोग, महामारीकी उत्पत्तिमें सहायक, गुडकी महँगाई, रगीन पदार्थो में लाभ और मवेशीको कष्ट देती है। कर्क राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशा देशमें शान्ति, सुख, धान्योत्पत्ति, घी-दूधकी विशेप उत्पत्ति, खनिज पदार्थोंके व्यापारमें लाभ, और कृपिमें विकास करती है। सिंह राशिके वृह-स्पतिकी सूक्ष्म दशा देशमें आधि-व्याधि, झगडे, कलह, अल्पवर्षा और साधारण फसल उत्पन्न करती है। कन्या राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशामें कृपिका विकास, व्यापारियोको लाभ, सन्तोका सम्मान, नेताओका उद्भव और धार्मिकताका प्रचार होता है। तुलाराशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशामें धन-धान्यकी विशेप उत्पत्ति, भूकम्प या आकस्मिक भय, देशमें उपद्रव और व्यापारमे भी घाटा होता है। वृश्चिक राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशा में आतक, भय, अनाचार और द्वेपभाव वढता है, किन्तु फसल अच्छी उत्पन्न होती है। धनु राशिके गुरुकी सूक्ष्मदशामें समयपर यथेष्ट वर्षा, सुकाल, प्रजामें सुख-शान्ति, शिक्षा और विकासकी योजनाओका कार्यरूपमें परिणमन और देशके व्यापारमें विकास होता है।

मकर राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशामें देशमें कष्ट, अतिवृष्टि या अनावृष्टि, व्यापारिक क्षति, व्यापा-रियोमें असन्तोप, और नेताओमें सघर्प होता है। कुम्भ राशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्मदशामें सभी फल प्राय मकर राशिके वृहस्पतिके समान ही होता है, परन्तु इस दशामें व्यापारिक थोडी प्रगति होती है जिससे व्यापारियोका असन्तोप मिट जाता है। मीनराशिके वृहस्पतिकी सूक्ष्म दशामें देशकी समृद्धिका विकास, धन-धान्यकी वृद्धि, और व्यापारमें लाभ होता है।

वृहस्पतिकी प्राणदशामें देशमें सुख-शान्ति, समयपर वर्षा, उद्योगोमें विकास और नेताओका सम्मान होता है। क्रूर ग्रहकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्म दशाके साथ गुरुकी प्राणदशा अशुभ कारक होती है। इस दशामें देशमें उपद्रव, अशाति, मारकाट, सघर्ष, लूट-मार आदि होते हैं। देशकी आर्थिक स्थिति विपम होती जाती है, जिससे समस्त देशको कष्ट उठाना पडता है। अर्थाभावके कारण जनतामें अनेक प्रकार की अनैतिकता आ जाती है। देशका वातावरण क्षुब्ध रहता है और व्यापारमें भी हानि होती है। शुभग्रहोंकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, और सूक्ष्म दशाके साथ वृहस्पतिकी प्राणदशा देशकी उन्नतिकी लिए सभी

तरहसे अच्छी होती है। धन-धान्यकी वृद्धिके साथ देशके उद्योगमे भी विकास होता है। देशमें यथेष्ट वर्षा होने के कारण फसल वहुत अच्छी उत्पन्न होती हैं। सभी निवासी अपनी-अपनी जिम्मेदारीका निर्वाह करते है, जिससे देशमे कल-कारखानोकी खूब स्थापना होती है। राजनैतिक विरोधी पार्टियाँ भी देशके विकासमें सहयोग प्रदान करती है।

मगल + बुध + राहु + शुक्र + गुरु—सुख, शाति, धार्मिक प्रवृत्ति, धान्योत्पत्ति, व्यापारमें लाभ, मवेशियोको रोग, आन्तरिक कलह, समयपर वर्षा और आध्यात्मिक विकास होता है।

चद्र + बुध + गुरु + शुक्र + गुरु—अपार हर्ष, कृषिका विकास, सन और रेशमकी अत्यधिक उत्पत्ति, खनिज पदार्थोंकी अधिक उत्पत्ति, देशके व्यापारका विकास, सट्टेमें व्यापारियोको लाभ, देशमें सर्वत्र शान्ति, मनोरजनके साधनोका विकास, आर्थिक स्थितिका सुदृढ होना एव सुखकी प्राप्ति होती है।

केतु + शनि + मगल + सूर्य + गुरु—कष्ट, धान्यकी क्षति, अशान्ति, उत्पात, रोग और महामारियोका होना, देशमें आर्थिक सकट, रेशमके व्यापारमे क्षति, सोने-चाँदीके व्यापायमे अल्प लाभ, सट्टेके व्यापारमें लाभ, देशके उद्योगोमे विकास और जनतामें मनोमालिन्य उत्पन्न होता है।

शनि + मगल + शुक्र + राहु + गुरु—अनिष्ट, किसी नेताकी मृत्यु, धान्याभाव, अल्पवृष्टि, व्यापारमे लाभ, कृषि-उद्योगोका विकास, देशके पशुओको कष्ट, जनतामे परस्पर स्नेह खनिज पदार्थोके व्यापारमे लाभ, सट्टेके व्यापारमें हानि, विद्रोह और वैमनस्यकी उत्पत्ति होती है। जनतामे सहयोग और सहकारिताकी भावना उत्पन्न होती है।

रवि + चद्र + भौम + राहु + गुरु—समयपर वर्षा, व्यापारकी उन्नति, व्यापारियोको अल्प लाभ, अन्नकी वहुलता, वस्तुओका सस्ता होना और देशके कारोबारमें वृद्धि होती है। यह दशा नवीन योजनाओको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए अत्यन्त उपयोगी है।

शनिदशाफल

मदे णरवइ-मरणं उवद्दव सयललोयमज्झम्मि ।
हियदुस्सीला लोया घरि-घरि हिडति कुलवहुआ ॥१५॥

शनिकी दशामे राजाका मरण और समस्त लोकमे उपद्रव होता है। लोगोका हृदय अत्यन्त दुःशील हो जाता है और कुलबधुएँ दुराचारिणी बनकर घर-घरमे घूमने लगती हैं।

विवेचन—शनिकी महादशामे देशमे उत्पात होता है, नेताओमे सघर्ष होता है, पडोसियोमें लडाई होती है, अन्याय, अत्याचार और दुराचारकी ओर देशवासियोकी प्रवृत्ति वढती है। पडौसी देशसे युद्ध होनेकी भी सभावना रहती है तथा देशके नैतिक पतनके कारण प्रजाको अनेक कष्ट उठाने पडते है। धन-धान्यकी कमी हो जानेसे नारियोको भी भिक्षाटन करना पडता है। शनि महादशाके आरम्भ होते ही देशका वातावरण क्षुव्ध हो जाता है, नाना प्रकारके कलुषित विचारोका प्रचार हो जानेसे जनताको अनेक कष्ट उठाने पडते हैं। देशमे सर्वत्र क्रूर नीतिका प्रचार दिखलायी पडता है, समाजमें फूट घर कर लेती है, जिससे कृषि और व्यापारमे पूरी क्षति उठानी पडती है। जव शनि तुला राशिका होता है, उस समय शनिकी महादशा देशके अभ्युदयमे साधक वनती है। पडौसी राष्ट्रो और देशोसे मित्रता स्थापित होती है। व्यापारमें

पर्याप्त लाभ होता है तथा समुद्रपारके देशोंमें भी व्यापार बढता है। मेष राशिके शनिकी महादशामें देशमें उत्पात, उपद्रव और वज्रपात होते हैं। बिजली गिरनेसे धन-जनकी हानि उठानी पडती है, आकस्मिक दुर्घटनाओका शिकार होना पडता है। मिथुन राशिके शनिकी दशा देशके धन-धान्यका विनाश करती है। वर्षा कम होती है, अथवा बिल्कुल नही होती। सट्टेके व्यापारियोको धनागम होता है। बेकारी अधिक बढती है, जिससे देशमे अशान्ति, कष्ट और नाना प्रकारकी चिन्ताएँ उत्पन्न हो जाती हैं। जीवन एक प्रकारसे नारकीय बन जाता है, देशका वातावरण अत्यन्त विकृत रहता है, फलत सामाजिक जीवनको अनेक प्रकारके धक्के लगते हैं।

कर्क राशिके शनिकी दशामें साधारण वर्षा होती है, देशमें उपद्रव कम होते हैं, किन्तु आन्तरिक अशान्ति ज्यो-की-त्यो बनी रहती है। जनताका आर्थिक स्तर गिरता चला जाता है, जिससे भूख और बेकारी-की समस्या अधिक बढ जाती है। लोहे और जस्तेकी बनी वस्तुओके व्यापारमे लाभ होता है, शेष सभी वस्तुओमें हानि उठानी पडती है। उद्योग और विकासकी योजनाएँ बीचमें ही नष्ट हो जाती हैं। रोटी और तन आच्छादनकी समस्या इतनी अधिक बढती जाती है, जिससे देशमें विषमताका वातावरण पनपता जाता है और अन्तमें समाज या देशको सभी प्रकारकी कठिनाइयोका सामना करना पडता है।

सिंह राशिके शनिकी दशामें देशमें वर्षा होती है, फसल भी अच्छी होती है, परन्तु व्यापार और उद्योगका विकास नही होता, अत देशकी उन्नति नही हो पाती है। नेताओं और महान् व्यक्तियोमें विरोध बढता है, अनैक्य और फूट बढती जाती है। धारासभा और विधानसभाके सदस्योंमें मतभेद होता है, जिससे देशके शासनमें विश्रृंखलता आ जाती है। सोना, चाँदी, ताँबा और पीतलके व्यापारमें अधिक लाभ होता है। कन्याराशिके शनिकी महादशामें अतिवृष्टि या अनावृष्टि होती है, देशमें अकाल पडता है, बाढ आ जाती है और भी अनेक प्रकारके उपद्रव होते है। धान्य भाव बढ़ता है, रुपयोकी कमी प्रत्येक व्यक्तिके पास रहती है। वृश्चिक राशिके शनिकी महादशामें सब प्रकारसे अशान्ति, दरिद्रता और विभिन्न प्रकारके कष्टोका सामना करना पडता है। अनाज भी कम उत्पन्न होता है। भूखकी समस्याको हल करनेके लिए अनेक कष्ट उठाने पडते हैं, सन्तोष और शान्ति बिल्कुल नही प्राप्त हो पाती है।

वृश्चिक राशिके शनिकी दशामें युद्ध और महामारियोका होना स्वाभाविक है। धनुराशिके शनिकी महादशामे देशवासियोकी आर्थिक स्थिति डवाडोल हो जाती है। यद्यपि इस दशामें वर्षा अच्छी होती है, परन्तु फसलको हानि उठानी पडती है। मीन राशिके शनिकी दशामें देशकी अवस्था अत्यन्त दयनीय हो जाती है। अनेक प्रकारकी बीमारियाँ फैलती हैं, जिससे देशका धन-जन यो ही नष्ट हो जाता है। मीनराशिका शनिश्चर ऐसे ही कष्टप्रद होता है, महादशाका स्वामी हो जानेसे यह और भी अधिक भयप्रद हो जाता है। इस दशामें देशमें अनैतिकता बढती है। व्यापारमें भी चोर, डाकू और लुटेरोके उपद्रवके कारण शिथिलता आ जाती है। रोगोकी उत्पत्ति अधिक होती है। प्रजा त्राहि-त्राहि पुकारती है। देशका वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध रहता है। अनाजका मूल्य बढ जाता है, सोने-चाँदीके मूल्यमे पर्याप्त वृद्धि हो जाती है, जिससे व्यापारियोकी अनेक प्रकारसे लाभ होता है। सट्टेवालोके लिए यह समय सर्वोत्तम है। इसमें जितने अधिक धनका सचय करना सभव हो सकता, व्यापारी करते हैं।

कार्तिक, अगहन, पौष और चैत्रमें अनेक प्रकारकी बीमारियाँ होती हैं। युवक और शिशुओकी मृत्यु अधिक होती है। दु खी कुल ललनाओको घर-घर रोटियोंके लिए भिक्षाटन करना पडता है। वातावरणके क्षुब्ध हो जानेसे सभीको तन-मनसे दुखी होना पडता है। जीवन और जगत्की समस्याएँ उपस्थित होती हैं,

सारा मुख किरकिरा हो जाता है। यदि मीनका शनैश्वर एक वर्ष तक विना वक्री राशिपर रहता है, तो जनताको सामान्य लाभके साथ विशेष लाभ भी होता है। सोने-चाँदीका सट्टा खेलने वालोको दुगुना लाभ होता है। घीका भाव कुछ महँगा होता है। नेता और महान् व्यक्तियोका आगमन भी समय-समयपर होता है।

शनिकी अन्तरदशामे देश उन्नति करता है। यद्यपि वर्षा कम होती है, महामारियाँ फैलती हैं, परन्तु अनेक महत्वपूर्ण योजनाएँ इसी दशामे सफल होती हैं। उद्योग-धन्धोका विकास होता है। क्रान्तिकी लहर आती है, जनता उन्नतिको ओर बढती है। कृषिकी उन्नति होती है, सिचाईके लिए नहर आदिका प्रबन्ध किया जाता है। जिस समय मेष राशिमे शनि रहता है, उस समय इस अन्तरदशामे नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। अशान्ति रहती है, विघ्न-बाधाएँ अधिक आती है। नेताओमें, शासकोमे मतभेद होता है। देश उन्नतिकी अपेक्षा अवनतिकी ओर अग्रसर होता है। गेहूँ, चना और चावलकी पैदावार साधारणत अच्छी होती है। व्यापारियोको साधारण लाभ होता है। ऊनी और रेशमी वस्त्रके व्यवसायियोको अधिक लाभ होता है। सोने और चाँदीके व्यापारमें कुछ घाटा रहता है। अगहन, माघ और चैत्रके महीने सोनेके व्यापारके लिए अच्छे होते हैं। इन महीनोमें सर्राफाका बाजार ऊँचा उठता है। हीरा, मोती, पन्ना, मूँगा और नीलम रत्नोका मूल्य बढता है। मिट्टीका तेल और पेट्रोलकी उत्पत्ति अधिक होती है। खनिज पदार्थ इस अन्तरदशामें अल्प परिमाणमें उत्पन्न होते है।

वृप राशिके शनिमें शुभ ग्रहकी महादशा और शनिकी अन्तरदशा होनेपर देशमें सुख-समृद्धि होती है, देशका व्यापार बढता है और समयपर यथेष्ट वर्षा होती है। धर्मकी ओर जनताकी रुचि उत्पन्न होती है। मन्दिर, देवालय और धर्मस्थानोका निर्माण भी देशमे अत्यधिक परिमाणमे होता है। व्यवसायकी उन्नति होनेसे देशकी माली हालत बहुत अच्छी रहती है। मिथुन, सिंह, कन्या, मकर और कुम्भ राशिमें शनिके रहनेपर क्रूर ग्रहोकी महादशामें शनिकी अन्तरदशा देशके लिये भयप्रद, अशान्तिकारक, कष्टप्रद और आर्थिक दृष्टिसे अत्यन्त अशुभ होती है। और शुभ ग्रहोकी महादशामें शनिकी अन्तरदशा सुखकारक धन-धान्यकी उत्पत्तिमें सहायक होनेसे कर्क, तुला और वृश्चिक राशिमें शनिके रहनेपर शुभ ग्रहोकी महादशामें शनिकी उत्तरदशा रहनेसे साधारण शान्ति, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ मासमे उपद्रव, अशान्ति धन-धान्यका अभाव एव क्रूर ग्रहोकी महादशामें अनेक प्रकारके कष्ट, भुखमरी, लुट-खसोट, हत्याएँ, चोरी और अनेक प्रकारके उत्पात होते हैं। वैशाख और ज्येष्ठमें हैजा फैलता है। आश्विनका महीना देशके स्वास्थ्यके लिए अत्यन्त अशुभ है। इस महीनेमे सट्टे-वालोको महान् हानिका सामना करना पडता है। धनु और मीन राशिका शनि शुभग्रहोकी महादशामे देशके लिए शुभ फल देता है। धन-धान्यकी वृद्धि होती है, मेल-मिलाप बढता है। स्वास्थ्य सुधरता है और देशकी आर्थिक स्थिति सुदृढ होती है। इस दशामें आश्विन, माघ और फाल्गुनके महीने देशके विकासके लिए श्रेष्ठ होते हैं। विदेशोसे सम्पर्क बढता है, सम्मानकी वृद्धि होती है। अनाज खूब उत्पन्न होता है। सोने, चाँदी, अभ्रक, कोयला आदिकी नयी-नयी खानोका पता लगता है। प्रकृति देशके अभ्युदयमे सब प्रकारसे सहयोग देती है। देशमें नये-नये नेता उत्पन्न होते है, जो देशको उन्नतिकी ओर ले जाते हैं। क्रूरग्रहकी महादशामें उक्त अन्तरदशा देशके विकासमें बाधक होती है। देशको अनेक सकटोका सामना करना पडता है।

शनिकी प्रत्यन्तरदशा देशके विकासके लिए साधारणत अच्छी होती है। शुभ ग्रहोकी महादशा और शुभ ग्रहोकी अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा देशका विकास करती है। शुभ ग्रहोकी महादशा और क्रूर ग्रहोकी अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा धन-धान्यकी उत्पत्तिमे बाधक, असन्तोष और अशान्ति उत्पन्न करती हैं। क्रूर ग्रहोंकी महादशा, शुभ ग्रहोकी अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा देशकी उन्नतिमें साधारणत उपयोगी होती है।

इसमें किसी नेता या धार्मिक पुरुषकी मृत्यु होती है। देशका शासन असन्तोषकजनक रहता है और चोर लुटेरे एव गुण्डे सव तरहसे जनताको कष्ट पहुँचाते हैं। देशका व्यापार चौपट हो जाता है तथा व्यापारियोको देश छोडकर अन्यत्र चला जाना पडता है क्रूर ग्रहोकी महादशा और क्रूर ग्रहोकी अन्तरदशा देशकी समृद्धि और अभ्युदयके लिए अत्यन्त विघातक होती है। अतिवृष्टि या अनावृष्टिके कारण फसल खराव हो जाती है।

शनिकी सूक्ष्मदशामें अवर्पण, अतिवृष्टि, वाढ, धान्यका अभाव या अल्पपरिमाणमें उत्पत्ति, क्रान्ति, उपद्रव और नाना प्रकारके उत्पात होते हैं। इस सूक्ष्मदशामें व्यापारियोको लाभ नही होता है। व्यापारकी स्थिति विगडती चली जाती है और देशके समस्त व्यापारी कष्ट सहन करते हैं। आर्थिक दृष्टिसे यह वर्प अत्यधिक खराव जाता है, नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। आश्विन, कार्तिक, फाल्गुन और चैत्रमें हैजा, प्लेग जैसे भयकर रोग फैलते हैं, जिससे देशका विनाश होता है। महायुद्ध या छोटे-छोटे घरेलू उद्योगके होनेसे देशका विकास रुक जाता है। धन जनकी पर्याप्त क्षति होती है। मवेशीकी कीमत वढ जाती है। सभी प्रकारके अनाजके व्यापारमें लाभ होता है। अनाज उत्पन्न भी कम होता है। कर्क, वृप, धनु और तुला राशिके शनिमें यह दशा धन-धान्यकी उत्पत्तिके लिए अच्छी होती है। खनिज पदार्थोकी उत्पत्ति भी ज्यादा होती है।

शनिकी प्राणदशामें देशकी उन्नति होती है, धन-धान्यकी वृद्धि भी साधारणत अच्छी होती है। शुभ ग्रहकी महादशा, शुभ ग्रहकी अन्तरदशा और शुभ ग्रहकी सूक्ष्मदशामें यह दशा देशकी उन्नतिके लिए अच्छी होती है। पुष्य, पुनर्वसु मघा, उत्तराफाल्गुनी और उत्तरापाढामें खरीदनेवाले व्यापारियोको सोने-चाँदीके व्यापारमे अच्छा लाभ होता है। आपाढ, श्रावण और भाद्रपद इन तीन महीनोमें वर्पा अधिक होती है। फसल इस दशामे वहुत अच्छी उत्पन्न होती है, देशमें सुख और शान्ति होती है। माघ, फाल्गुन इन महीनोमें अनाजका भाव तेज रहता है, अवशेप महीनोमे सम या मन्दा रहता है। क्रूर ग्रहकी महादशा, क्रूर ग्रहकी ही अन्तरदशा और शुभ ग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें शनिकी प्राणदशा व्यापारके लिए अच्छी होती है। यद्यपि इस दशामे देशके वातावरणमे उथल-पुथल मच जाती है। जनता भुखमरीका कष्ट सहन करती है, परन्तु व्यापारियोका लाभ होता है। साधारणत शनिकी सभी प्रकारकी दशाएँ देशकी उन्नतिमे वाधक होती हैं।

बुधदशाफल

वालित्थीवहुमरण धणणासो रोगसभवो वहुओ।
ठाठभडाण णिवाण सहारो खलु वुहे णेयो ॥ १६ ॥

वुधकी दशामे वालक और स्त्रियोका मरण अधिकतासे होता है, लोगोके धनका नाश होता है और अनेक प्रकारके रोगोकी उत्पत्ति होती है। युद्ध स्थानमे सुभटो और राजाओका सहार होता है।

विवेचन—वुधकी महादशा धन-धान्यके लिए अच्छी होती है। इसमें रोगोकी उत्पत्ति अत्यधिक होती है। इस दशामें स्त्री, वालक और वृद्धोकी मृत्यु अत्यधिक होती है। चेचक, प्लेग, निमोनिया आदि रोग अत्यधिक उत्पन्न होते हैं। स्त्रियोके प्रसवसम्वन्धी अनेक वीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। देशकी अधिकाश जनता रोगसे त्रस्त रहती है। वैमनस्य, विरोध और मनोमालिन्य इस दशामे विशेप रूपसे होता है। बुद्धिकी हीनता इस दशाका प्रधान फल है। देशका वातावरण सर्वदा आतकित रहता है। अविश्वास और असन्तोपकी अग्नि धधकती रहती है। प्रधान नेताओमें सघर्ष होता है, देशका शासनसूत्र हिल जाता है। वडे-वडे व्यापारियों

और उद्योगपतियोको लाभ होता है, परन्तु माल अधिक उत्पन्न होनेसे बाजारमें प्रतिस्पर्धाकी अग्नि धधकने लगती है, जिससे लाभके स्थानपर हानि होनेकी सभावना अधिक रहती है। छोटे-छोटे नेता अपनी शक्तिका प्रदर्शन करते है तथा ऐसे लोग सामने आते है, जिनका अस्तित्व राजनीतिमें कुछ ही दिन पहले दिखलायी पडता है। आषाढ, माघ और फागुनके महीनेमे इस दशामें व्यापार अधिक चलता है, परन्तु व्यापारी अधिक लाभ करनेके फेरमें रहते है, जिससे उन्हे अन्तमें घाटा उठाना पडता है। जो व्यापारी अपने मालको जल्द बेच देते हैं, उन्हें लाभ रह जाता है।

मेषराशिके बुधकी महादशामे देशमें लाभ, धन-धान्यकी उत्पत्ति, शासकोमे मतभेद, नारियोको कष्ट, बच्चोंकी मृत्यु और चेचक आदि रोगोकी उत्पत्ति होती है। इस राशिका बुध देशके पशुओके लिए भी अच्छा नही होता है। पशुओमे अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। भेड, बकरियोको इस प्रकारका रोग उत्पन्न होता है, जिनसे उनका खाना-पीना छूट जाता है और तीन दिनोमे ही उनकी मृत्यु हो जाती है। गाय और घोडोके लिए यह दशा अच्छी होती है, इसमें इनका मूल्य भी बढता है तथा ये चौपाये नीरोग भी रहते है। मेष राशिका बुध चाँदीके व्यापारके लिए अच्छा रहता है, इसमें चाँदीका सट्टा वाले अधिक लाभ उठाते हैं। नेताओंके अभ्युदयकी वृद्धि भी इसी दशामें होती है। वृष राशिके बुधकी महादशामे धन-धान्यकी उत्पत्ति, युद्ध या विग्रह, नेताओमे विरोध, प्लेग और राजयक्ष्माकी उत्पत्ति, शरदीका अधिक पडना और राजनैतिक पार्टियोमे मतभेद होता है। इस दशामें देशमें अशान्ति रहती है, देशका वातावरण क्षुब्ध हो जाता है।

मिथुन राशिके बुधकी महादशामें देशमें सुख और समृद्धि होती है। धन-धान्य पर्याप्तमात्रामें उत्पन्न होते है। जनतामे सगठन और सहयोगकी भावना आती है। शासक धर्म और नीतिके अनुसार शासन करते है। गेहूँ अधिक उत्पन्न होते है, चावलकी फसल अच्छी नही होती। उद्योग और कृषिके कार्योमे विकास होता है। देशमें सुख और शान्ति रहती है। नेताओमे प्रेमभाव रहता है, पडोसी राज्योंमे मित्रता बढती है। शासकोका प्रभाव वृद्धिगत होता है। स्त्रियोंको प्रसूता रोग और बच्चोको चेचक निकलती है। बुध वर्षाधिपति भी हो तो अपनी दशामे देशकी सभी प्रकारसे उन्नति करता है। देशको धनी और सुखी बनाता है। विदेशोंसे देशका व्यापारिक गठबन्धन होता है। देशकी अनेक वस्तुएँ समुद्रपारके देशोमें जाती है। अनाज और कपडेके व्यापारियोको अच्छा लाभ होता है। धर्म और नीतिका प्रसार होता है।

कर्क और सिंह राशिके बुधकी दशामे व्यापारकी वृद्धि होती है। फसल अच्छी नहीं होती। वर्षा अधिक होती है, जिससे बाढ आ जाती है तथा कृषिमें अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। देशमें धन-धान्यकी कमी रहती है। विरोधी राजनैतिक पार्टियाँ सबल होकर देशके शासनको उलटनेका प्रयत्न करती है। ज्येष्ठ, आषाढ और श्रावणमें अनाजका भाव महँगा होता है, फसल कम उत्पन्न होती है, जिससे अनाज अन्य प्रदेशोंसे मगाना पडता है। उद्योग-धधोमे साधारण प्रगति होती है। पौष, माघ और फाल्गुनके महीनेमें देशके व्यापारमें विकास होता है। व्यापारिक सस्थाएँ और सघोका सगठन होता है। जनतामें साधारणत शान्ति रहती है। चौपायोंके व्यापारमें घाटा होता है। बकरी और गायोंका मूल्य घट जाता है। उत्सव और धार्मिक अनुष्ठान इस दशामें अधिक सम्पन्न होते हैं।

कन्या राशिके बुधकी दशा देशकी समृद्धिको बढाती है। वर्षा समयपर यथेष्ट होती है। समुद्रपारके देशोंसे व्यापारिक सम्बन्ध बढता है। देशमें सुख और शान्ति पूर्णरूपसे रहती है। देश या नगरके निवासियो

---

१. भीतिरोगजनको बहुधा–इति पाठान्तरं।

योजनाएँ कार्यान्वित की जाती हैं। ऐश-आरामकी वस्तुओंसे प्रेम उत्पन्न होता है तथा देश या नगरके लोग जुआ, सट्टा या अन्य इसी प्रकारके अर्थोंसे धनार्जन करते हैं। सट्टेके व्यापारियोंको इस प्रकारसे खूब लाभ होता है। यह दशा स्वास्थ्य और धनके लिए सब प्रकारसे अच्छी है। इसमें देशकी आर्थिक स्थिति सुदृढ होती है। वैसाख, ज्येष्ठ, पौष और माघ महीनोंमें देशका सर्वाङ्गीण विकास होता है। राजनीति सफल होती है, शासनमें शान्ति रहती है। नगर या देशमें अनाज खूब उत्पन्न होता है। शरदी अधिक पडती है, माघमें पाला पडनेसे नगर या देशके दक्षिणी-पश्चिमी भागोंमें फसलकी हानि होती है। इस दशामें चावल, उडद, अरहर और मूंगकी फसल खूब उत्पन्न होती है। खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति भी यथेष्ट रूपमें होती है।

तुला, वृश्चिक और धनुराशिके बुधकी महादशा देशके अभ्युदयके लिए अच्छी नही होती। यद्यपि धनुराशिके बुधकी महादशामें फसल बहुत अच्छी होती है, परन्तु देशमें सुख शान्ति नही आने पाती। रोग, विरोध और भय इतने अधिक रूपमें विद्यमान रहते हैं, जिससे निवासियोंको सुख शान्ति नही मिल पाती। देशकी आर्थिक स्थिति अच्छी न रहनेके कारण आपसमें मनमुटाव अधिक रहता है। तुला और वृश्चिक राशिके बुधकी दशामें वर्षा भी यथेष्ट नही होती। फसलमें रोग हो जानेसे देशकी अवस्था अवनतिकी ओर बढती है। ओला गिरना, तूफान आना, आकस्मिक भयोंका आना आदि बातें इस दशामें घटित होती हैं। दुर्घटनाओंके शिकार भी देशवासियोंको होना पडता है। देशका वातावरण इतना दूषित रहता है, जिससे जनताके जान-मालकी रक्षा करना दुष्कर हो जाता है। आषाढ, श्रावण इन दो महीनोंमें वर्षा कम होती है, भाद्रपद और आश्विनमें वर्षा अच्छी होती है। व्यापारके लिए यह दशा अच्छी नही होती।

मकर और कुम्भ राशिके बुधकी महाशा जनताके लिए अत्यन्त अनिष्टकर होती है। देशमें सभी प्रकारकी आधि-व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। नेताओं और शासकोंका प्रभाव घटता है। किसी भी नेताका ऐसा प्रभाव अवशेष नही रह जाता है, जिससे देश में सुव्यवस्था कायम की जा सके। देशभर के श्रेष्ठतम विद्वानो, मनीषियो और विधान विशेषज्ञोंको अनेक प्रकार के कष्ट और अपमान सहन करने पडते हैं। सोने, चाँदी और हीराके व्यापारमें व्यवसायियोंको हानि उठानी पडती है। माघ, फाल्गुन और चैत्रके महिने व्यापारके लिए अच्छे माने गये हैं। मकर राशिके बुधकी अपेक्षा कुम्भका बुध जीवनमे अधिक सुख उत्पन्न करता है। मवेशी और धान्यके सग्रहमे अच्छा लाभ होता है। शिक्षा और उद्योगोंका इस दशामें ह्रास होता है, देशकी नौका अच्छे नेताके अभावमें डूबती हुई-सी नजर आती है। बेकारी अधिक बढ जाती है। अनैतिकता का पूर्ण विकास होता है, विरोधी कार्यकर्त्ताओंमें मतभेद उत्पन्न हो जाता है, जिससे देशकी प्रगतिमें एक बहुत बडी रुकावट उत्पन्न हो जाती है। मशीन और कलकारखानोंकी उन्नति भी इस दशामें होती है।

मीन राशिके बुधकी महादशामें देश उन्नति करता है, परन्तु बुधके समयमें अस्थिरता रहनेसे संघठन और सहयोगकी कमी बनी रहती है। अतिवृष्टि और अनावृष्टि होती है। बाढके आ जानेसे मक्का, ज्वार, बाजरा और धानकी फसलको अत्यधिक सामना करना पडा है। धार्मिक नेताओंमें बहुत बडा संघर्ष होता है। आषाढ और फाल्गुनके महीनोंमें व्यापार खूब जमता है। खनिज पदार्थ विदेशोंमें जाते हैं। विदेशोंके साथ इस दशामें अच्छा सम्बन्ध स्थापित होता है। गेहू, चावल कुछ कम मात्रामें उत्पन्न होते हैं। इस दशामें देशका वातावरण कुछ उत्तेजित-सा दिखलायी पडता है।

बुधकी अन्तरदशामें सुख-शान्ति, यथेष्ट वर्षा, धन्यान्यकी प्रचुर मात्रामें उत्पत्ति, मवेशीको कष्ट,

राजयक्ष्मा, निमोनिया, टाईफाइड जैसी बीमारियोकी उत्पत्ति एव अन्न भाव सस्ता होता हैं। देशके नेताओ का सम्मान वढता हैं। कृषि और विकासकी योजनाएँ कार्यान्वित की जाती हैं। सैनिक शक्ति विकसित होती हैं। शुभ ग्रहकी महादशामें बुधकी अन्तरदशा देशके विकास और उन्नतिके लिए वहुत अच्छी होती है। देशमें अमन-चैन रहता है, जिससे उन्नतिके लिए पूरा अवसर प्राप्त होता हैं। नयी-नयी योजनाएँ तैयार की जाती हैं, परन्तु कार्यमें परिणत उन्हे नही किया जा सकता है। एक ऐसा महान व्यक्ति जन्म लेता है, जिससे आगे चलकर देशकी दिशा रेखा वदल जाती है। इस दशामें चावल और मटरकी उत्पत्ति अत्यधिक होती है। वच्चोको चेचक रोग, नारियोको हैजा अधिक परिमाणमें उत्पन्न होते है। धन, ऐश्वर्य और अभ्युदय के लिए वर्ष अच्छा होता है।

क्रूरकी महादशामें बुधकी अन्तरदशा महामारी भूकम्प, पाला, ओला आदि वाधाओको उत्पन्न करती है। इस दशाके आनेपर सुख-शान्ति मालूम पडती है परन्तु एक दो महीनोके अनन्तर देशका वातावरण विगड जाता है। अनाजका भी अभाव होने लगता है। युद्धकी परिस्थिति आजानेसे जनताको कष्ट का अनुभव होता हैं। यद्यपि पुनरुद्धारका कार्य आरम्भ किया जाता है, परन्तु इस कार्यमें सफलता मिलना असभव ही है। मगल और शनिकी महादशामें बुधकी अन्तरदशा देशके उत्थानके लिए साधारणत अच्छी होती है।

कन्या राशिका वुध, सिंह राशिका सूर्य जव महादशा और अन्तरदशाके रूपमे आपसमें आते हैं। तो देशको अनेक प्रकारके सकटोका सामना करना पडता हैं। मेष राशिके सूर्यकी महाशामें मिथुन राशिके बुधकी अन्तर दशा देशके विकासके लिए वहुत ही अच्छी होती है। वृश्चिक राशिके मगलमें कन्या या मिथुन राशिके बुधकी अन्तरदशा सभी प्रकारका कल्याण करती हैं। मोती और हीरा के व्यापारमे घाटा होता है। सट्टेके व्यापारियोंको लाभ होता है। घी, दूध और नमकका भाव सस्ता होता है। देशमें सभी प्रकारकी मूल्यवान वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं। व्यापारिक सम्बन्ध दूर-दूरके देशोके साथ होता है। तुला राशिके शनिकी महादशामें बुधकी अन्तरदशा देशके स्वास्थ्यके लिए अनिष्टकारक होती है। देशमें अनेक प्रकारकी बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। श्रेष्ठ पुरुषोका अपमान होता है, धार्मिक श्रद्धा घट जाती हैं। और दुराचार, असमयकी प्रवृत्ति वढती जाती है। वृष राशिके चक्रमें बुधकी महादशा कल्याण और अभ्युदयको प्रदान करती है। पशुओको सुख प्राप्त होता है। उनके व्यापारमे दुगुना लाभ होता है। मिट्टीके तेल या पेट्रोलके नवीन स्रोतका पता लगता है। भूगर्भसे अनेक महत्वपूर्ण वस्तुएँ निकाली जाती हैं।

बुधकी प्रत्यन्तरदशामें देशमें उपद्रव होते हैं, गुण्डागिरी वढती है, महिलाओ और साधुओकी इज्जत लूटी जाती है। अन्याय, अत्याचार और स्वार्थका प्रचार वढता जाता है। न्यायालयोकी अवस्था और अधिक गडवडा जाती है, देशका वातावरण दूषित होता जाता है और जान-मालकी रक्षा करना कठिन हो जाता हैं। धनका अभाव देश या नगरके एक हिस्सेसे लेकर दूसरे हिस्से तक वरावर वना रहता हैं। शुभ ग्रहकी महादशा और शुभग्रहकी अन्तरदशाके साथ वुधकी प्रत्यन्तरदशा देशकी उन्नतिके लिए अच्छी होती है। देशके नेताओका सम्मान वढता है, सगठन उत्पन्न होता है तथा देशकी भूमि अधिक उपजाऊ हो जाती हैं। क्रूर ग्रहकी महादशा और शुभ ग्रहकी अन्तरदशामें वुधकी प्रत्यन्तरदशा साधारणत देशके लिए अच्छी होती है। धान्योत्पत्तिका अभाव या अल्पधान्योत्पत्ति होती है।

शुभग्रहकी महादशामें क्रूर ग्रहकी अन्तरदशाके साथ वुधकी प्रत्यन्तरदशा देशके विकासके लिए साधा-

रणत अच्छी होती है। वर्षा समयानुसार यथेष्ट होती है, परन्तु आश्विन और कार्तिकमें वर्षाके कम हो जानेके कारण फसल खराब भी हो जाती है। क्रूर ग्रहकी महादशा और क्रूर ग्रहकी अन्तरदशामें बुधकी प्रत्यन्तरदशा देशके लिए अत्यन्त अशुभ होती हैं। इस दशामें शिक्षाका अभाव हो जाता है, अनेक रोगोका शिकार भी होना पडता है। सूर्य, मंगलमें बुधका प्रत्यन्तर देशके लिए अच्छा होता है, परन्तु चाँदीके व्यापारमें हानि होती है। सट्टे खेलनेवालोको भी लाभ होता है। रेश आदिमें धनका अपव्यय भी किया जाता है।

गुरु और शुक्रकी महादशा और अन्तरदशामें बुधकी प्रत्यन्तरदशा बहुत अच्छी रहती है। देशमें धन-धान्य और ऐश्वर्यकी वस्तुओका विकास होता है। राजनीति और धर्मनीतिका भी पूर्ण विकास होता है। मन्दिर, देवालय और कार्यस्थानोका निर्माण पूर्णरूपसे होता है। शुक्रकी महादशामे चन्द्रमाकी अन्तरदशाके साथ बुधकी प्रत्यन्तरदशा धन-जनके विकासके लिए बहुत अच्छी है, परन्तु इस दशामे स्वास्थ्य अच्छा नही रहता है। केतुकी महादशा और शनिकी अन्तरदशामें बुधका प्रत्यन्तर होनेपर साधारण फसल, देशके अन्य प्रदेशोमे महत्वपूर्ण स्थान और राजनीतिकी प्रगति होती है। औद्योगिक विकासके लिए यह दशा बहुत ही उत्तम होती गयी है। गुड, ईख औरचीनीकी उत्पत्ति अधिक रूपसे होती है। रेशम उत्पन्न करनेकी योजनामे अधिक सफलता प्राप्त होती है। महत्वपूर्ण नयो-नयी योजनाएँ बडे भारी वाद-विवादके वाद स्वीकार की जाती है। कुँओ, नहरो एव अन्य सिचाईके साधनोकी व्यवस्था की जाती है। फसल अच्छी होती है, देशमें सुख और समृद्धिका विकास होता है।

बुधकी सूक्ष्म दशा देशकी उन्नतिमें सहायक होती है। पूर्व और उत्तर भागमें दुष्काल पडता है। गाँव और नगरके फलादेशमें दुष्काल, महामारी और उपद्रव समझना चाहिए। शुभ ग्रहकी महादशा, क्रूर ग्रहकी अन्तरदशा और शुभ ग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें बुधकी सूक्ष्म दशाके अभ्युदयमें साधक होती है। समय पर वर्षा होती है, धन-धान्य प्रचुर परिमाणमें उत्पन्न होते हैं। सदाचार और सयमकी ओर देश या नगर-वासियोका झुकाव होता है। देशके निवासियोको सुख-शान्ति प्राप्त होती है। आपसमें प्रेमभाव उत्पन्न होता है। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ महीने इस दशामें कुछ अशुभ रहते हैं, इन महीनोमें कलह, आशान्ति एव धन-धान्यका अभाव रहता है। व्यापारियोंके लिए ये महीने उत्तम होते हैं, श्वेत औरलालवर्णकी वस्तुओके व्यापारमें दुगुना लाभ होता है। सट्टेके व्यापारियोको स्वल्प लाभ होता है। पौष, माघ और फाल्गुनमें सट्टेके व्यापारी लाभ उठाते हैं, किन्तु साधारणत व्यापारी वर्गको अच्छा लाभ नही होता है। सोनेका वाजार अस्थिर रहता, है, चाँदीमें भी घटा-वढी चलती है। पाट और जूटके व्यापारियोको अगहन महीनेकी खरीदसे लाभ होता है। माघ और फाल्गुनकी खरीदमें स्वल्प लाभ तथा वैशाखकी खरीदमें हानि उठानी पडती है। वस्त्रव्यव-सायियोको साधारण लाभ होता है, कपास, रूई और सूतका वाजार घटता है। पश्चिमी और दक्षिणी भागमे वर्षा अधिक होती है तथा फसल भी अच्छी होती है। कपासकी खेती इस दशामे बहुत ही अच्छी होती है। मसाले और रगोकी उत्पत्तिके लिए यह दशा अच्छी नही है।

बुधकी प्राणदशा देशके लिए अच्छी नही होती है। इसमें रोग, शोक और नाना प्रकारकी विपत्तियाँ आती हैं। यद्यपि कृषि और व्यापारके लिए यह दशा अच्छी है, परन्तु इस दशामें निवासियोको अनेक सकटोका सामना करना पडता है। मवेशियोंके लिये यह दशा महान् कष्ट देती है। व्यापारिकदृष्टिसे यह दशा अधिक उथल-पुथल करती है, वाजारके भाव स्थिर नही रहते। वडे-वडे व्यापारियोको अनेक सकटोंका सामना करना पडता है। भूकम्प, विद्युत्पात, अग्निभय और टिड्डी आगमन आदिके कारण देशको क्षति उठानी पडती है। देशका वातावरण इतना दूषित हो जाता है, जिससे अनैक्य और विरोधके कारण दिन-रात सघर्ष होते रहते

हैं। शासकवर्ग अनीतिमार्गका अनुकरण करता है। शुभ ग्रहोकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्मदशाके रहनेपर बुधकी प्राणदशा देशके अभ्युत्थानमें सहायक होती है तथा कूरग्रहोकी महादशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्मदशाके रहनेपर बुधकी प्राणदशामें युद्ध, सघर्ष, चोरी, कलह आदि अनिष्ट फल होते हैं। यो तो बुधकी सभी प्रकारकी दशाओमे देशमें धन-धान्यको उत्पत्ति होती है, व्यापार और कृपिकी स्थिति सुधरती है तथा सामूहिक रूपसे देशकी उन्नतिमें निवासी भाग लेते हैं। क्रूर ग्रहोकी महादशा या अन्तरदशाके सयोगमें रोग तथा आकस्मिक सकट उत्पन्न होते हैं।

केतुदशाफल

रायाण ठाणभंसो पयासुह तह य बहुघणा बुट्ठी।
सवच्छरपत्थाओ वासुइपुत्ते हवइ देसो ॥ १७ ॥

केतुकी दशामे राजा लोग स्थान भ्रष्ट होते हैं, प्रजा सुखी होती है। सवत्सर पर्यन्त देश वर्षासे युक्त और धन-धान्य पूर्ण रहता है अर्थात् देशमे समृद्धि रहती है।

विवेचन—केतुकी महादशामें देशमें वर्पा अच्छी होती है। धन-धान्यकी समृद्धि होती है। निवासियोको सव प्रकारसे सुख-शान्ति प्राप्त होती है। शासक और नेताओके लिए यह दशा उत्तम नही है। इसमें इन्हें नाना प्रकारके कष्टोका सामना करना पडता है। नवीन निर्वाचनमे पुरानी पार्टियोको पराजित होना पडता है तथा देशका शासन क्रान्तिकारी विचारोके समर्थकोके हाथमे आता है। पुरानी रीतियो और विचार परम्पराएँ समाप्त हो जाती है और इनके स्थानपर नवीन विचार आते हैं, जिससे देश या नगरका कल्याण होता है। विवेकी और सदाचारी शासकके आनेसे प्रजामे सन्तोप और शान्ति उत्पन्न होती है तथा देशका आर्थिक दृष्टिसे विकास और विस्तार होता है।

व्यापारकी दृष्टिसे यह दशा अच्छी होती है। व्यापारियोको इस दशामे अच्छा लाभ होता है। फल, मेवे और अनाजके व्यापारियोको इस दशामें अगहन और पौप मासमें हानि होती है। सोने, चाँदी, पीतल और काँसेके व्यापारियोको आषाढ, श्रावण और भाद्रपद मास अच्छे नही होते। इन महीनोंमें इन व्यापारियोको घाटा होनेकी सभावना है। गुड और चीनीके व्यापारियोको इस वर्पमें अच्छा लाभ होता है। चीनीका भाव तेज होता है तथा ईखकी उत्पत्ति भी इस वर्प कम होती है। वस्त्रव्यवसायियोको इस व्यापारमें साधारणत लाभ होता है। रुई, कपास और सूतके व्यापारमें भी लाभ होता है। कपासका व्यापार खूब चलता है, रुईके कारोबारमें लाभ अधिक नही होता। विदेशोंमे भी व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित होता है, अत व्यापारियोके लिए यह दशा अच्छी होती है।

मेपके केतुकी महादशामें उत्पात, उपद्रव, झगडे, कलह, शासको और नेताओमे मतभेद, उत्तम वर्पा, धान्योत्पत्ति, फसल साधारण, धान्यभावमें तेजी, व्यापारमें विकास, सोनेके भावमे तेजी और कृपि-उद्योगोमे सफलता प्राप्त होती है। यह दशा व्यवसायियोके लिए कुछ ही उत्तम होती है। कृपकोमें भी सूर्य छाया रहता है। गेहूँ, चना, चावल, जौ, बाजरा इतने अधिक परिमाणमें उत्पन्न होते हैं, जिससे देशकी अन्न समस्याका समाधान सहजमें हो जाता है। वृपके केतुकी महादशामें वर्पा साधारण होती है, परन्तु फसल अच्छी हो जाती है। आपाढ और श्रावण इन दोनो महीनोंमें पश्चिमी और दक्षिणी भागमे वर्पा अल्प होती है तथा शेप महीनोमें इन भागोमे वर्पा अधिक होती है। सट्टेके व्यापारियोके लिए भाद्रपद, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष और माघके महीने अच्छे होते है। इन महीनोमें व्यापार करनेमे अच्छा लाभ होता है। वैशाख, ज्येष्ठ और

फाल्गुन मास व्यापारियोंके लिए अच्छे नही है। इन महीनोमें व्यापार करनेवालोको अनेक कष्ट उठाने पडते हैं। रुपयेकी कमी हो जानेसे सूदका बाजार बढ जाता है, अत उक्त महीनोमे व्यापारियोंको अल्प लाभ या लाभका अभाव होता है। यह दशा नेताओ और शासकोके प्रभावको बढाने वाली है, अत राजनैतिक दृष्टिसे देश या नगरका पूर्ण सुधार होता है। धार्मिक नेताओके लिए भी दशा अच्छी है, ये नेता लोग धर्मप्रचारके कार्योको बडे ही सुव्यवस्थित ढगसे सम्पन्न करते हैं।

मिथुन राशिके केतुकी महादशा देशके उत्थानके लिए अत्युत्तम है। इसमें देशका विस्तार और विकास होता है। देशकी सीमा बढती है तथा देशके नेता या शासक अपने देशको आगे बढानेका प्रयत्न करते हैं तथा इन्हें इस प्रयत्नमें पूर्ण सफलता भी प्राप्त होती है। इस दशामें चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ मास देशके लिए उत्तम नही होते। इन महीनोंमें नाना प्रकारके रोग फैलते हैं तथा देशमे आन्तरिक विरोध बढता है, सोना, चाँदी और जवाहिरातके व्यापारमें साधारण लाभ होता है। सट्टेके व्यापारियोंके लिए वैशाख अगहन, पौष, माघ और फाल्गुन अच्छे है। वैशाख और माघमें अच्छा लाभ होता है। व्यापारी लोग इन दोनों महीनोमें पर्याप्त द्रव्य कमाते हैं। यद्यपि मिथुन राशिका केतु आन्तरिक विरोधका साधन बनता है, तो भी इस दशामे देशकी उन्नति होती है। कला-कौशलकी वृद्धि होती है। अन्य देशोंमें प्रतिष्ठा बढती है, नगर या देशके निवासियोका नाम सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। कलाकारोंकी प्रतिष्ठा होती है। समर या या युद्धकी तैयारी भी हो सकती है। नेताओका प्रभाव क्षीण होने लगता है तथा देशके नेतृत्व ऐसे लोगोके हाथमें जाता है, जो अविवेकी और विचारहीन होते हैं। पशुबल या शारीरिक बलके द्वारा ही ये देशके शासन सूत्रको अपने हाथोमें लेना चाहते हैं, पर इसमें इन्हें सफलता नही मिलती।

कर्क राशिके केतुकी महादशामें अतिवृष्टि या अनावृष्टि होती है। नदीकिनारेके प्रदेशोमें बाढ़ भी आ जाती है तथा देशको अतिवृष्टिके कारण अनेक कष्टोका सामना करना पडता है। भाद्रपद और आश्विनमें जल न बरनेसे फसलको अपार क्षति उठानी पडती है। धान और मक्काकी खेती सूख जाती है तथा गेहूँ और चनेकी फसल भी अच्छी नही होती है। तिलहन, जौ, बाजरा और ज्वार आदि अन्न साधारणत अच्छे उत्पन्न होते है। घी और दूधकी कमी रहती है, चौपायो और मनुष्योको शरदीके कारण कष्ट उठाना पडता है। घीके व्यापारमे अच्छा लाभ होता है। इस दशामें मसालोका भाव भी तेज हो जाता है। कागज, लोहा और लकडीके भाव अधिक तेज होते हैं। देशका कारोबार बढता है, सिंचाईका प्रबन्ध किया जाता है। देशमें जलकी कमी हो जानेसे जगली जानवरोको विशेष कष्ट उठाना पडता है। शासक इस दशामें स्वेच्छाचारी हो जाते हैं, देशका स्वास्थ्य बिगड जाता है और अनेक प्रकारकी बीमारियोका सामना करना पडता है। शिशु और माताओके लिए भी यह दशा अच्छी नही है।

सिंहराशिके केतुकी महादशामे पशुओका विकास होता है। धान, कपास और ईखकी खेती अधिक होती है। मिल और कारखानोंकी वृद्धि होती है, नये-नये कारखाने खुलते हैं, जिससे देशकी आर्थिक स्थिति सुधरती है। औद्योगिक केन्द्रोका विकास होता है तथा देशकी समस्त वस्तुओपर नये-नये कर लगाये जाते हैं। इन नवीन करोके कारण जनताको महान् कष्टका सामना करना पडता है। आर्थिक दृष्टिसे यह दशा अच्छी नही होती, इसमें आर्थिक सकट सबके सामने रहता है। व्यापारी वर्गके व्यापारमें बडी उथल-पुथल रहती है, जिससे अनेको व्यापारियोकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। सट्टेके व्यापारियोको खूब सँभलकर चलना चाहिये।

कन्या राशिके केतुकी महादशा देशकी उन्नतिमें अत्यन्त साधक है। इस दशामे नवीन खानोका पता लगता है तथा आर्थिक दृष्टिसे देशका विस्तार होता है। वर्षा समयपर यथेष्ट होती है, जिससे सभी प्रकारके

अनाज प्रचुर परिमाणमे उत्पन्न होते हैं। देशमें सुख-समृद्धि वढती है तथा लोगोमें परस्पर सहयोग और सहकारिताकी भावना आती है। देशकी शिक्षापद्धतिमें सशोधन और परिवर्तन होता है। कलाकारोको सम्मान मिलता है तथा राजनैतिक नेता अपना प्रभुत्व वढाते है। आपाढ, श्रावण और भाद्रपद वर्षके लिए उत्तम माने गये है। इन महीनोमे देशकी आर्थिक स्थिति भी दृढ होती है, विदेशोसे सन्धियाँ होती है तथा कृपकवर्ग कृपि विकासके लिए नवीन योजनाएँ प्रस्तुत करता है, जिन्हे सरकारके सहयोगसे कार्यान्वित किया जाता है। माघका महीना व्यापारियोके लिए वहुत ही अच्छा होता है, सभी प्रकारके व्यापारी इस महीनेमे कुछ अर्जन कर लेते है।

तुला और वृश्चिक राशिके केतुकी महादशा देशकी उन्नतिमे बाधक होती है। इस दशामे वर्षा भी कम होती है और फसल भी अच्छी उत्पन्न नही होती। देशका वातावरण इतना क्षुब्ध रहता है, जिससे किसीको भी शान्ति नही मिलती। सभी वर्ण और वर्गोके लोग कष्ट प्राप्त करते है। ज्येष्ठ, आपाढ और आश्विनमे नाना प्रकारकी बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं तथा देशके पशुओको अनेक प्रकारका कष्ट उठाना पडता है। तुलाराशिके केतुकी महादशा वृश्चिक राशिके केतुकी अपेक्षा कुछ अच्छी होती है। वृश्चिक राशिके केतुकी महादशामें देशमें नाना प्रकारके उपद्रव होते है। देशका व्यापार ढीला पड जाता है। चोर, लुटेरे और गुण्डोकी वढती होती है।

धनुराशिके केतुकी महादशामे देशकी साधारणत उन्नति होती है। वर्षा समयपर होती है, किन्तु आश्विन मासमे वर्षा न होनेके कारण फसल अच्छी नही होती है। मकर और कुम्भराशिके केतुकी महादशामें देशकी उन्नति होती है, सुख-समृद्धि वढती है तथा व्यापारमें भी प्रगति होती है। सट्टेके व्यापारियोके लिए मकर और कुम्भके केतुकी महादशा अच्छी रहती है, जूट और सोनेके सट्टेमें अच्छा लाभ होता है। यो तो सभी प्रकारके सट्टेके व्यापारमे लाभ होता है, परन्तु विशेपरूपसे सोनेके सट्टेके व्यापारमे ज्यादा लाभ होता है। देशका वातावरण सट्टेके अनुकूल हो जाता है। खनिज पदार्थोमें भी व्यापारियोको पर्याप्त लाभ होता है, व्यापारकी स्थिति सुदृढ होती जाती है। मीनराशिके केतुकी दशामे देशमे अल्पवर्षा, सुभिक्ष, धान्यभाव सस्ता और विदेशोसे अनेक वस्तुओका आयात किया जाता है।

केतुकी अन्तरदशामे देशकी समृद्धि वढती है। नेताओमे सघर्ष होता है, नवीन निर्वाचन द्वारा नये शासकवर्ग चुने जाते है। विरोधी पार्टियोमें पूरा सघर्ष होता है, जिससे देशका वातावरण दूपित होता जाता है। शासकोमे निश्चयत परिवर्तन होता है। ऊन, रुई और चमडेके व्यापारमे पूरा लाभ होता है। पशुओको अनेक प्रकारकी बीमारियोका सामना करना पडता है, अनेक पशु मृत्युको भी प्राप्त होते है। सोना, चाँदी और ताँबेके व्यापारमे कुछ घाटा होता है, जूट और रेशमके व्यापारमे भी हानि ही उठानी पडती है। आपाढ, श्रावण और भाद्रपद महीनेमे व्यापार वहुत ही ढीला हो जाता है, जिसमे सभी प्रकारके व्यापारियोको हानि उठानी पडती है।

शुभग्रहकी महादशामे केतुकी अन्तरदशा देशके धन-धान्यको बढाती है। समयपर वर्षा होती है, शासनमे सुधार होता है। नेताओमे विरोध बढता है। व्यापारियोके लिये यह दशा अच्छी होती है। राजनैतिक नेताओं और धारासभाके सदस्योके लिये यह दशा अच्छी नही होती। देशके धनिक नेताओको भी कष्ट उठाना पडता है। वस्तुओंके भाव महंगे रहनेसे साधारण जनताको भी कष्ट होता है तथा सभी लोग कुछ आतंकित और परेशान रहते है। यद्यपि इस दशामे तृण अच्छा उत्पन्न होता है, अनाज भी पर्याप्तमात्रामें उत्पन्न होता है फिर भी देशमे अशान्ति रहती है। वस्तुओका अभाव भी कष्ट बढानेमें सहायक होता है।

क्रूरग्रहकी महादशामे केतुकी अन्तरदशा कष्टकारक होती है, इसमें विरोधियो द्वारा नेताओकी मृत्यु होती है। आन्तरिक सघर्ष बढता है तथा देशका वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध रहता है। विदेशोंसे भी सघर्ष मोल लेना पडता है। अनेक विदेशीय शासक अकारण शत्रु बन जाते हैं। यद्यपि व्यापारियोंके लिए यह दशा उत्तम है, व्यापारी इसमें हर प्रकारसे लाभ उठाते है तथा सट्टेमें लाखो रुपये कमाते है। देशकी आन्तरिक अशान्ति उन्नतिमें बाधक रहती है, जिससे पूर्व निर्मित सभी योजनाएँ असफल हो जाती हैं। शुभग्रहोसे युक्त केतुकी महादशा उद्योगोकी उन्नतिके लिए अच्छी होती है। परिश्रम करनेवाले मजदूर इस दशामें विशेष सुखी रहते हैं, उन्हें धन, यश और पुरस्कार प्राप्त होते हैं। सेनाके लिए यह दशा अच्छी नही होती, इसमें याता-यातके साधनोमें ढिलाई आती है। जल, थल और आकाशमे गमन करनेवाली सवारियोका निर्माण अधिक होता है। देशके राजदूत विदेशोमें अच्छी कीर्त्ति अर्जित करते है तथा देशके कार्योंको आगे बढ़ाते हैं।

केतुकी अन्तरदशा देशकी नैतिक उन्नतिके लिए अच्छी नही होती। इसमें देशका नैतिक पतन होता है। पारिवारिक और सामाजिक आदर्श गिर जाता है, अनैतिकता जीवनमे अधिक आ जाती है। स्वार्थ उत्पन्न हो जानेसे देशके कर्णधारोमें खुलकर सघर्ष उत्पन्न होता है तथा देशके विकासकी योजनाएँ असफल हो जाती है। क्रूरग्रहसे युक्त और द्रष्ट होनेपर केतुकी अन्तरदशामें भयकर युद्ध होता है। देशके कर्णधार यद्यपि इस युद्धको टालनेका यत्न करते है, परन्तु युद्ध अवश्य ही होता है। देशका भाग्य अनिश्चितप्राय रहता है, अत इस दशामें अधिक सभलनेकी आवश्यकता है।

केतुकी प्रत्यन्तरदशा देशकी आर्थिक स्थितिको खराब करती है। वस्तुओके तेज होनेसे देशवासियों-को अनेक प्रकारका कष्ट उठाना पडता है। इसमे विलास और मनोरजनकी वस्तुएँ अधिक उत्पन्न होती हैं। भोजन और वस्त्रका कष्ट साधारणत जनताको रहता है। यद्यपि इस दशामें वर्षा होती है, फसल भी उत्पन्न होती है, परन्तु फिर भी देशकी आर्थिक स्थिति बिगडती जाती है, जिससे निवासियोंको अनेक प्रकारके कष्ट सहन करने पडते हैं। शुभग्रहकी महादशा, क्रूरग्रहकी अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा रोग और महामारीको उत्पन्न करती है। देशमें कलह, वैर-विरोध और झगडोको उत्पन्न करती है। शुभग्रहकी महादशा और शुभ ग्रहोंकी ही अन्तरदशामें यह प्रत्यन्तरदशा देशकी समृद्धिको बढाती है। फसल अच्छी उत्पन्न होती है। निवासियोको शान्ति मिलती है। आषाढ और आश्विनमें हैजा और टाईफाइड उत्पन्न होते हैं, जिससे जनताको अधिक कष्ट उठाना पडता है। कार्त्तिक और अगहनमें कफका प्रकोप अधिक होता है, जिससे सामूहिकरूपमें निमोनिया देशके अधिकाश भागमें उत्पन्न होता है।

केतुकी सूक्ष्मदशा देशकी उन्नतिमें साधक होती है। देशकी सैनिक-शक्ति विशेषरूपसे बढती है। अस्त्र-शस्त्रोका निर्माण विशेषरूपसे होता है। सैनिक-शिक्षाका प्रचार भी देशमें सर्वत्र होता है। हिंसा और अधर्मकी ओर जनताका ध्यान अधिक जाता है, जिससे नैतिक पतन होनेसे देशको अनेक कष्टोका सामना करना पडता है। व्यापारियोके लिये भी यह दशा अच्छी नही है। व्यापारी वर्गको इस दशामें अत्यल्प लाभ होता है। वस्तुओंके भावोंमें अस्थिरता रहनेके कारण अनेक व्यापारियोको अपार क्षति होती है। देशमें धनिक व्यक्तियोको अधिक कष्टका सामना करना पडता है। धर्मात्माओके ऊपर अनेक प्रकारकी विपत्ति आती है तथा धर्म-कर्म भ्रष्ट होता है। जनताकी श्रद्धा भी धर्मसे उठती है, दान-पूजाकी ओर बहुत ही कम लोग आकर्षित होते हैं।

शुभग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा और शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें केतुकी सूक्ष्मदशा देशकी आर्थिक, सास्कृतिक और राजनैतिक उन्नतिमें परम साधक होती है। इस दशामें देशका व्यापारिक विकास

भी होता है तथा देशकी उत्पन्न हुई वस्तुएँ विदेशोमें भी भेजी जाती हैं। अन्न, घी, दूध, तेल, वस्त्र आदि वस्तुओकी उत्पत्ति अच्छी होती है। हाँ, आन्तरिक कलह इस दशामें भी वना रहता है तथा देश-निवासियोको पारस्परिक वैमनस्यके कारण अनेक कठिनाइयोका सामना भी करना पडता है। क्रूरग्रहकी महादशा, शुभ-ग्रहकी अन्तरदशा और क्रूरग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें केतुकी सूक्ष्मदशा देशकी समृद्धिके लिये अत्यन्त वाधक होती है। इसमें वर्षा भी अल्प होती है, फसल भी अच्छी नही होती तथा व्यापार भी ठीक तरहसे नही चलता है। नेताओमें सघर्ष रहनेसे देशको सव प्रकारसे हानि उठानी पडती है। इस दशाके अगहन मासमे किसी नेता या शासककी मृत्यु होती है। यह दशा देशमे उत्पात और उपद्रवकी सूचक है।

केतुकी प्राणदशामे देश रसातलको जाता है। कर्णधार अपने ही स्वार्थको देखते हैं, अत देशकी उन्नति नही होती। यद्यपि वर्पाकी कमी नही रहती, फिर भी देशका आर्थिक-विकास नही हो पाता। नवीन योजनाओका सफल होनेके पहले ही गला घोट दिया जाता है, जिससे देशका समुचित विकास नही होता। धार्मिक नेताओमें भी अपार शैथिल्य आ जाता है, जिससे वे अकर्मण्य वनकर चुप-चाप जीवनके दिन पूरे करते रहते हैं। देशकी जनताकी उन्नति इस दशामे नही हो पाती। कृषिके विकासकी योजनाएँ भी कार्यान्वित नही की जाती हैं। व्यापारके लिए यह दशा अच्छी है, यद्यपि विदेशोसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित नही किया जाता है, फिर भी देशमे व्यापारका पूरा विस्तार होता है। अनेक प्रमुख व्यापारिक केन्द्रोपर सरकारकी ओरसे डिपो खोले जाते हैं, जिससे व्यापारी वर्गको प्रोत्साहन मिलता है।

शुभग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा, शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशा और शुभग्रहकी सूक्ष्मदशामें केतुकी प्राणदशा देशकी उन्नतिमें साधक वनती है। इस दशामें देशमें पर्याप्त वर्षा होती है, फसल भी खूव उत्पन्न होती है तथा कल-कारखानोकी स्थापनाकी जाती है। वेकारोको रोजीसे लगाया जाता है और सभी व्यक्तियोको कार्य मिल जाता है। इस दशामें अनाजका भाव सस्ता रहता है, घी, दूध, नमक, तेल आदि वस्तुओका भाव भी सस्ता ही रहता है। सट्टेके व्यापारियोको इस दशामें अधिक लाभ नही होता, वल्कि उल्टी हानि ही उठानी पडती है। साधारण व्यापारियोको पर्याप्त लाभ होता है। सोना, चाँदी, जवाहिरातका भी भाव सस्ता ही रहता है तथा देश-निवासियोको सब प्रकारसे सुख मिलता है। आपसमे प्रेमभाव भी वढता है, अत सभीका सहयोग देशके विकासके लिए प्राप्त होता है, सभी मिलकर देशकी उन्नतिमें लगते हैं। माघ और फाल्गुनके महीने इस दशामें देशकी उन्नतिके लिए वहुत ही अच्छे हैं। इस दशामें देशकी पूरी उन्नति होती है तथा विदेशोमें देशका सम्मान वढता है। जो व्यक्ति इस दशामें किसी भी प्रकारका व्यापार करते हैं, वे अवश्य ही लाभ उठाते हैं।

क्रूरग्रहोकी महादशा, क्रूरग्रहकी अन्तरदशा, क्रूरग्रहकी प्रत्यन्तरदशा और क्रूरग्रहकी सूक्ष्मदशामें केतुकी प्राणदशा देशकी उन्नतिमें वाधक होती है। इसमें निश्चयत महामारी पडती है, जिससे लाखोकी संख्यामे युवकोकी मृत्यु होती है। आषाढ और श्रावणमें वर्षा अधिक होती है, जिससे फसलको हानि पहुँचती है। भाद्रपद और आश्विन महीनेमें वर्षा कम होती है, इसमें भी फसलको क्षति पहुँचती है। देशका वातावरण क्षुब्ध रहता है। अत शासनसूत्रके परिवर्तनकी वहुत वडी सभावना है। नवीन आर्थिक योजनाओको इस दशामें सफल नही किया जा सकता है। शुभग्रहकी अन्तरदशाके साथ केतुकी प्राणदशा देशके विकासमें सहायक होती है, धन-धान्यकी समृद्धि करती है तथा व्यापार और नवीन उत्पादनके लिए वडी सहायक होती है। शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशाके साथ ही केतुकी प्राणदशा भी विकासमें अत्यन्त सहायक होती है।

सुक्के मिच्छाण जयो वहुसस्सा मेहसंकुलो य नभो।
उत्तमजाईपीडा धण-धण्णसमाउला पुहवी ॥ १८ ॥

शुक्रकी दशामें म्लेच्छो—हीनाचरणी राजाओंकी जय और धान्यकी अधिक उत्पत्ति होती है। आकाश मेघसे आच्छन्न रहता है, उत्तम जातिवाले लोगोको पीडा होती है और पृथ्वी धन-धान्यसे समाकुल रहती है।

विवेचन—शुक्रमहादशामे शासकोकी कीर्ति दिगदिगन्तमे व्याप्त हो जाती है, धन-धान्यकी उत्पत्ति प्रचुर परिमाणमें होती है। वर्षा समयपर यथेष्ट होती है तथा देशका समुचित विकास होता है। धार्मिक व्यक्तियोको कष्ट उठाना पडता है। फसल वहुत अच्छी उत्पन्न होती है, जिससे प्रजाको सब प्रकारसे सुख होता है। इस महादशामे आर्थिकदृष्टिसे देशका पूर्ण विकास होता है तथा भौतिकदृष्टिसे देशकी शक्तिका पूर्ण विकास होता है। विदेशोमें देशका स्थान महत्त्वपूर्ण होता है और सर्वत्र प्रशसा की जाती है। परराष्ट्र-नीतिमें देशको अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। सभी कामोमें देशकी उन्नति होती है।

मेषराशिके शुक्रकी महादशामें देशका व्यापारिक विकास होता है, शासकोको शासनमे पूर्ण सफलता मिलती है। यद्यपि देशके विकासमें अनेक प्रकारकी वाधाएँ आती हैं, परन्तु वे वाधाएँ निकल जाती हैं और कार्य सफल हो जाता है। नेताओंके साथ सामान्य जनताका भी सहयोग रहता है, जिससे कार्य होने मे वाधा नही आने पाती। खनिज पदार्थोंकी उत्पत्ति इस दशामें अधिक होती है। कोयला, मिट्टीका तेल और पेट्रोल अन्य वर्षोंकी अपेक्षा अधिक उत्पन्न होते हैं। सोना और चाँदी भी अधिक परिमाणमें निकलते हैं। सगमरमर तथा अन्य प्रकारके श्रेष्ठ पत्थर भी खानोसे अधिक निकलते हैं। अभ्रकके व्यापारमें अच्छी मुनाफा होती है। वृषराशिके शुक्रकी दशा देशकी उन्नतिके लिये अत्यन्त उत्तम है, इस दशामें देशमें सभी प्रकारकी उन्नतियाँ होती है। उत्सव, मगल एव नृत्य-गान वर्षभर होते रहते हैं। वैज्ञानिक अनुसन्धान, नवीन कल-कारखानोकी स्थापना, देशकी भौगोलिक सीमाओमें सशोधन और परिवर्द्धन एव अन्य देशोमें देशका महत्त्व प्रकट होता है। वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ मासमें देशकी उन्नति अत्यधिक होती है। इन महीनोंमें व्यापारिक सम्बन्ध समुद्रपारके देशोंसे स्थापित होता है तथा विदेशोमें अनेक वस्तुओका आयात और देशकी निर्मित वस्तुओका निर्माण किया जाता है। इस दशामें देशमें धन-धान्यकी पर्याप्त वृद्धि होती है। अन्याय और अनीतिसे भी धनार्जन किया जाता है, जिससे धर्मात्माओको अनेक प्रकारसे कष्ट भोगना पडता है। हिंसाके साधनोका विकास उत्तरोत्तर होता जाता है, जिससे धार्मिक और सास्कृतिक क्षति निरन्तर होती रहती है।

मिथुन और कर्कराशिके शुक्रकी महादशामें खण्ड वृष्टि, सग्राम, पशुओकी तेजी, नमक, कपूर श्वेत-वस्त्र और घी महगे होते हैं। वायुरोगकी पीडा अधिक भोगनी पडती है। प्रजा भयसे त्रस्त हो जाती है, इससे लोगोको देशान्तरमें जाना पडता है तथा नेताओंमें पारस्परिक विरोध भी वढता है। यद्यपि देशका राजनैतिक वातावरण क्षुब्ध रहता है, पर आर्थिक अवस्था अच्छी रहनेके कारण गृहयुद्ध नही होने पाता। इस दशामें व्यापारियोको भी विशेष लाभ नही होता है। सोना, चाँदी और जवाहिरातके व्यापारमें अवश्य कुछ लाभ होता है।

कन्या और तुलाराशिके शुक्रकी महादशामें देशका पूर्ण विकास होता है। धन-धान्यकी वृद्धि होती है। देशकी नवीन योजनाएँ सफल होती हैं तथा उन्नतिके लिए नवीन योजनाओका निर्माण किया जाता है।

समस्त पृथ्वी गेहु, जौ, चावल, फल आदिसे युक्त हो जाती है। इस दशामे व्यापारियोको प्रचुर लाभ होता है तथा देशमे सर्वत्र सुख-शान्ति दिखलायी पडती है। वृश्चिक और धनराशिके शुक्रकी महादशामे देशका पूर्ण विकास होता है, धन-धान्यकी उत्पत्ति होती है। वर्षा यथेष्ट परिमाणमें होती है। मकर, कुम्भ और मीनराशिके शुक्रकी महादशामे देशमे खण्ड वृष्टि, सामान्यत धन-धान्यकी उत्पत्ति, आर्थिक सकट, सैनिक शक्तिका विकास और देशमे सुख-समृद्धिकी उत्पत्ति होती है। देशका वातावरण इस प्रकारका रहता है जिसमे आर्थिक विकासमें सहायता मिलती है। इस दशामे पौष, माघ और फाल्गुनके महीने देशोन्नतिके लिए अच्छे होते है। गाय, भैंसे और बकरियाँ अधिक दूध देती है। देशको सम्मान और ख्याति प्राप्त होती है।

शुक्रकी अन्तरदशा साधारणत अच्छी होती है। इस दशामे नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते है। आर्थिक दृष्टिसे यह दशा प्राय अच्छी रहती है विदेशोसे आर्थिक सम्बन्ध स्थापित होता है। देशमें अनेक औद्योगिक केन्द्र खोले जाते है। नैतिक उन्नतिके लिए भी पर्याप्त प्रयत्न किया जाता है। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावणमासमे देशका पूर्ण विकास होता है। नेताओको सम्मान भी इस दशामे मिलता है। शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्रमें अनेक नवीन योजनाएँ इसी दशामे प्रस्तुत की जाती है। व्यापारिक वैभव बढानेका अवसर भी इसी दशामें प्राप्त होता है। शुक्रग्रहकी महादशामे शुक्रकी अन्तरदशा देशके सर्वाङ्गीण विकासके लिए उत्तम है। इसमें दक्षिणी और पश्चिमी भागमें वर्षा अधिक होती है, जिससे फसलको कुछ क्षति भी पहुँचती है। पूर्वी और उत्तरी भागमे फसल बहुत ही अच्छी होती है। निवासियोकी सर्वाङ्गीण उन्नति भी इसी दशामें होती है। स्वास्थ्य, आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य और अभ्युदयोकी प्राप्ति इसी दशामें होती है। इस दशाके आरम्भके चार महीने बहुत ही अच्छे होते हैं और अवशेष आठ महीनोंमे देशकी समृद्धि उतनी नही हो पाती, जितनी पहले हुयी थी। क्रूरग्रहकी महादशामे शुक्रकी अन्तरादशाकी उन्नतिमे बाधक होती है। इसमे फसल अच्छी उत्पन्न नही होती और न जनतामे प्रेमभाव ही रहता है।

शुक्रकी प्रत्यन्तरदशामे देशमे सुभिक्ष होती है, नेताओ और शासकोमे मतभेद होता है। अनेक प्रकार-की जातीय और वैयक्तिक उन्नतिके लिए सभाएँ स्थापित होती है, जिनमे शिक्षा और उद्योग सम्बन्धी कार्य सम्पन्न किये जाते है। देशका आर्थिक ढांचा सबल होता है, सिंचाईके लिए नहर और बांध बांधनेकी योज-नाएँ कार्यरूपमे परिणत की जाती है। गृह-उद्योग और कुटीर उद्योगोका विकास होता है। यद्यपि खाद्य समस्या हल हो जाती है, परन्तु जनसख्या आदि बढ जानेसे देशमे खाद्यान्नका अभाव रहता है, जिससे विदेश-से अनाज मगाना पडता है। देशकी राजनीति गन्दी रहती है, ऐसे व्यक्ति इसमे घुस जाते है, जिन्हे अपना उल्लू ही सीधा करना होता है। वैज्ञानिक अनुसधानोके लिए यह दशा बहुत अच्छी है। इसमे सोना, लोहा, चांदी और कांसेके व्यापारसे पर्याप्त लाभ होता है। हल्दी, धनिया और जीरा आदि मसालोंके व्यापारमें घाटा उठाना पडता है। पौष और माघ महीनेमे देशकी आर्थिक स्थिति बिगड जाती है। परराष्ट्रनीतिके विषम हो जानेसे बाह्य सघर्षके साथ आन्तरिक सघर्ष भी उठाना पडता है। यद्यपि देशका वातावरण क्षुब्ध रहता है, पर इसमे उन्नति करनेके लिए किसी प्रकारकी बाधाएँ नही आती है।

शुभग्रहकी महादशा और शुभग्रहकी अन्तरदशामें शुक्रकी प्रत्यन्तरदशाके रहनेसे देशमे खण्ड वृष्टि, साधारणत अन्नकी उपज, व्यापारमे लाभ और रोगोकी उत्पत्ति होती है। घी और चावलका भाव सस्ता होता है। सोना, कांसा, सुपारी और रुईका भाव महँगा होता है। इस दशामें व्यापारियोको विशेष लाभ नही होता है, सट्टेका व्यापार करनेवालोंके धनका ह्रास होता है। धोखा, चोरी और दन्द-फन्द उत्पन्न होना इस दशाकी विशेषता है। इस दशामें किसी धार्मिक नेताका जन्म होता है, वह नेता साधारण नहीं होता,

बल्कि विशेष प्रभावशाली होता है। आपाढ़ और श्रावणमें इस दशाके आनेपर भावोंमें चोरी होती है, वर्षा भी समयपर नही हो पाती है, इसमें कष्ट उठाना पडता है। छत्रभग या सिंहासनसे च्युत होनेका समय भी यही है। जो राजा मूलदशामें भी स्वेच्छानुकूल शासन करते हैं, उनका राज्य-सिंहासन दूसरोंके अधिकार-में जल्द ही चला जाता है। क्रूरग्रहकी महादशा और क्रूर-ग्रहकी अन्तरदशामें वह प्रत्यन्तरदशा देशकी उन्नति-में अत्यधिक बाधक होती है। इसके आते ही देशके नेताओंमें सघर्ष आरभ हो जाता है तथा देशके विकासकी योजनाएँ यो ही रखी रह जाती हैं। व्यापारियोके लिए भी महादशा अच्छी नही है, इसमें सभी व्यवसायियों-को हानि ही उठानी पडती है। देशका व्यापार बिलकुल ठप हो जाता है। इस दशामें देशको दुर्घटनाओका शिकार अधिक होना पडता है। पूर्वीय और दक्षिणी भागमें दुष्काल भी पड सकता है। वस्त्र उद्योगकी गति शिथिल हो जाती है।

शुक्रकी सूक्ष्मदशामें नगर या देशमें अनेक नवीन कार्य होते हैं नये-नये कल-कारखाने स्थापित किये जाते हैं। चना, मूग, उडद और द्विदल अनाज निश्चत महगे होते हैं। देशके कारोबारकी वृद्धि होती है, राज-नीतिके क्षेत्रमें उथल-पुथल होती है। अनुसन्धानशालाओ द्वारा देशके विकास और अभ्युत्थानके लिये अनेक क्रियात्मक कार्य करनेका योग इसी दशामें आता है। अत्र शुक्रकी सूक्ष्मदशा सुकाल करती है, समयपर यथेष्ट वर्षा होती है तथा खनिज पदार्थोकी उत्पत्ति परिमाणमें होती है।

शुभग्रहकी महादशा, शुभग्रहकी अन्तरदशा और शुभग्रहकी प्रत्यन्तरदशामें शुक्रकी सूक्ष्मदशा देशमें अनेक नवीन कार्योकी प्रगतिके लिए बडी ही महत्त्वपूर्ण है। इस दशामें विदेशोंसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित होता है, देशका आर्थिक विकास होता है। यद्यपि राज्यकी ओरसे नये-नये कर लगाये जाते हैं, जिससे जनता-को थोडा कष्ट होता है। परन्तु देशके सामूहिक विकासके लिए यह दशा अच्छी ही रहती है। क्रूरग्रहोंकी महादशा, क्रूरग्रहोकी अन्तरदशा और क्रूरग्रहोकी प्रत्यन्तरदशाके साथ शुक्रकी सूक्ष्मदशामें देशमें दुष्काल, अवर्षण, धान्योत्पत्तिमें कमी, चौपायोंका अभाव या कष्ट और देश-निवासियोको नाना प्रकारके रोग होते है। राजयक्ष्मा इस दशामे बहुलतासे उत्पन्न होता है, जिससे देशमें आतक छा जाता है। कई प्रकारकी नयी वस्तुएँ आविष्कृत होती है, जिससे देशका अमर यश सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। देशकी आर्थिक-स्थिति अच्छी नही रहती है, व्यापारियोको भी इस दशामें लाभ नही होता। ज्येष्ठ, आपाढ़ और श्रावण मासमें विचित्र घटनाएँ घटती हैं। पडोसी राज्योंसे सघर्ष होता है, जिसमें विजयश्री अपने ही देशको प्राप्त होती है। माघ और फाल्गुनका महीना व्यापारियोंके लिए अच्छा होता है।

शुक्रकी प्राणदशा शुभग्रहोकी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्मदशाके सहयोगसे देशकी उन्नतिमें साधक होती है। इसमें सुभिक्ष सुवर्षा और धान्यभाव सस्ता होता है। सोने-चाँदीका भाव भी सस्ता होता है। आर्थिकदृष्टिसे यह दशा कुछ कष्टकारक रहती है। बाजारमें भी रुपयोका अभाव दिखलायी पडता है, जिससे सूदकी दर बढ जानेसे व्यापारियोके लिए यही एक टेढ़ी समस्या उत्पन्न हो जाती है। जगल, बगीचे और मैदानोंकी तरक्की होती है। नगर और देशकी आर्थिक-स्थिति अत्यन्त बिगड जाती है, जिससे प्रजाको कष्ट होता है। क्रूर ग्रहोकी महादशा क्रूरग्रहोकी अन्तरदशा और क्रूरग्रहोकी प्रत्यन्तरदशामें यह प्राणदशा देशके मनुष्य और पशुओंके लिए अत्यन्त कष्टकारक और भयप्रद होती है। बडे-बडे रोग और व्याधियाँ इसी दशामें उत्पन्न होती हैं। युद्ध होनेका योग भी इसी दशामें आता है। देशकी सामरिक शक्तिका विकास भी होता है। सैनिकशक्ति बढती है, अस्त्र-शस्त्रोका उत्तरोत्तर निर्माण भी होता है। अत यह दशा देशकी शान्तिके लिए अच्छी होती।

फलादेशमे विशेष विचार

पुव्वाइदिस-चउक्के जे गह विचरंति चउसु विदिसासु।
अङ्गारय-तम-सणिया परचक्कभयङ्करा घोरा ॥१९॥

पूर्वादि चारो दिशाओ और ईशान आदि चारो विदिशाओमे जो ग्रह विचरते हैं, उनमे मङ्गल-राहु और शनि क्रूरग्रह हैं और परचक्र—विदेशी आक्रमणसे भय उत्पन्न करनेवाले हैं।

विवेचन—विशेष फलादेश अवगत करनेके लिए ग्रहोका स्वरूप, स्वभाव और गुण अवगत करना अत्यावश्यक है। अत यहाँपर नव ग्रहोका सक्षिप्त स्वरूप दिया जाता है।

सूर्य—पूर्वदिशाका स्वामी, पुरुप, समवर्ण, पित्त-प्रकृति और पापग्रह है। सूर्य आत्मा, स्वभाव, आरोग्यता, राज्य और देवालयका सूचक तथा सिद्धकारक है। पिताके सम्बन्धमें सूर्यसे विचार किया जाता है। नेत्र, कलेजा, मेरुदण्ड और स्नायु आदि अवयवोपर इसका प्रभाव पडता है। इससे शारीरिक रोग, सिरदर्द प्रपच, क्षय, महाज्वर, अतिसार, मन्दाग्नि, नेत्र-विकार, मानसिकरोग, उदासीनता, खेद, अपमान एव कलह आदिका विचार किया जाता है। यह सिहराशिका अधिपति है। सिहके १ अशसे २० अश तक सूर्यका मूल त्रिकोण और २१ से ३० अश तक स्वक्षेत्र कहलाता है। इससे वर्पाकी स्थितिका भी विचार किया जाता हैं। मेपराशिके १० वे अशमें परमोच्च होता है।

चन्द्रमा—पश्चिमोत्तरदिशाका स्वामी, स्त्री, श्वेतवर्ण और जलग्रह है। वात-श्लेषमा इसकी धातु और यह रक्तका स्वामी है। माता-पिता, चित्तवृत्ति, शारीरिकपुष्टि, राजानुग्रह, सम्पत्ति और चतुर्थ स्थानका कारक है। चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा वली और मकरसे छ राशिमे इसका चेष्टावल होता है। इससे शारीरिकरोग, पाण्डुरोग, जलज तथा कफज रोग, पीनसा, मूत्रकृच्छ, स्त्रीजन्यरोग, मानसिकरोग, व्यर्थ भ्रमण, उदर एव मस्तिष्कका विचार किया जाता हैं। कृष्णपक्षकी ६ से शुक्लपक्षकी १० मी तक क्षीण चन्द्रमा रहनेके कारण पापग्रह और शुक्लपक्षकी १० मीसे कृष्णपक्षकी ५ मी तक पूर्व ज्योति रहनेसे शुभग्रह वली माना जाता है। वली चन्द्रमा ही चतुर्थमासमें पूर्वफल देता है। यह राशिका स्वामी है। वृपराशिके ३ अश तक परमोच्च है और इसी राशिके ४ के अशसे ३०वे अश तक मूल त्रिकोण है।

मगल—दक्षिणदिशाका स्वामी, पुरुपजाति, पित्तप्रकृति, रक्तवर्ण और आदि है। यह स्वभावत पापग्रह है, धैर्य तथा पराक्रमका स्वामी है। तीसरे और छटवे स्थानमें वली और द्वितीयमे निष्फल होता है। दशम स्थानमें दिग्वली और चन्द्रमाके साथ रहनेसे चेष्टावली होता है। यह भ्रातृ और भगिनी कारक है। मेप और वृश्चिकराशिका स्वामी है। इसका मेपके १८ अश तक मूल त्रिकोण है और इससे आगे स्वक्षेत्र है। नगरकी महादशा मगलकी होनेपर विशेपत सेनाकी प्रगति होती है। सेना और स्वक्षेत्रका निरीक्षण यही ग्रह करता है।

वुध—उत्तरदिशाका स्वामी, नपुसक, त्रिदोष प्रकृति, श्यामवर्ण और पृथ्वी तत्त्व है। यह पापग्रहोके—सूर्य, मंगल, राहु, केतु और शनिके साथ रहनेसे अशुभ और शुभ ग्रहो—पूर्ण चन्द्रमा, गुरु, और शुक्रके साथ रहनेसे शुभफलदायक होता है। यह ज्योतिषविद्या, चिकित्साशास्त्र, शिल्प, कानून, वाणिज्य और चतुर्थ तथा दशम स्थानका कारक है। चतुर्थ स्थानमें रहनेसे निष्फल होता है, इससे जिह्वा और तालु आदि उच्चारणके अवयवोका विचार किया जाता है। वाणी, गुह्यरोग, सग्रहणी, वुद्धिभ्रम, मूक, आलस्य, वातरोग एव कुष्ठरोग आदिका विचार विशेपरूपसे किया जाता है। यह मिथुन और कन्याराशिका स्वामी

है। इसको कन्याके १५ अंशपर उच्च माना गया है। इसका कन्याके १६ अंशसे २० अंश तक मूल त्रिकोण और १२ अंशसे ३० अंश तक स्वक्षेत्र होता है।

गुरु—पूर्वोत्तरदिशाका स्वामी, पुरुषजाति, पीतवर्ण और आकाशतत्त्व है। यह लग्नमें बली और चन्द्रमाके साथ रहनेसे चेष्टाबली होता है। यह चर्बी और कफ धातुकी वृद्धि करनेवाला है। इससे पुत्र, पौत्र, विद्या, गृह, गुल्म, सूजन आदि रोगोंका विचार किया जाता है। यह धनु और मीन राशिका स्वामी होता है। कर्कके ५ अंशपर उच्च होता है। इसका धनुराशिके १ अंशसे १३ अंशतक मूलत्रिकोण और १४ अंशसे ३० अंशतक स्वगृह होता है।

शुक्र—दक्षिण-पूर्वका स्वामी, स्त्रीजाति, श्याम, गौरवर्ण एवं कार्यकुशल है। इस ग्रहके प्रभावसे जातकका रंग गेहुआ होता है। छठे स्थानमें निष्फल एवं सातवेंमें अनिष्टकर होता है। यह जलग्रह है, इसलिये कफ, वीर्य आदि धातुओंका कारक ग्रह माना गया है। मदनेच्छा, गानविद्या, काव्य, पुष्प, आभरण, नेत्र, वाहन, शय्या, स्त्री, कविता आदिका कारक है। सांसारिक सुखका विचार इसी ग्रहसे किया जाता है। यह वृष और तुलाका स्वामी है। मीनके २७ अंशपर इसका उच्च होता है। तुलाके १ अंशसे १० अंश तक मूल त्रिकोण और इसी राशिके ११ अंशसे ३० अंश तक इसका स्वक्षेत्र है।

शनि—पश्चिमदिशाका स्वामी, नपुंसक, वातश्लेष्मिकप्रकृति, कृष्णवर्ण और वायुतत्व है। यह सप्तम स्थानमें बली और वक्रीग्रह या चन्द्रमाके साथ रहनेसे चेष्टाबली होता है। इससे विदेशीय भाषाओंके अध्ययनका विचार किया जाता है। रातमें बालकका जन्म होनेपर शनि मातृ और पितृ कारक होता है। इससे आयु शारीरिकबल, उदारता, विपत्ति, योगाभ्यास, प्रभुता, ऐश्वर्य, मोक्ष, ख्याति, नौकरी एवं मूर्च्छादि रोगोंका विचार किया जाता है। यह मकर और कुम्भराशिका स्वामी होता है। तुलाके २० अंशपर इसका उच्च माना जाता है। इसका कुंभ के १ अंश से लेकर १० अंश तक मूल त्रिकोण और इसी राशिके ११ अंश तक स्वक्षेत्र है।

राहु—दक्षिण दिशाका स्वामी, कृष्णवर्ण और क्रूरग्रह है। जिस स्थानपर राहु रहता है, यह उस स्थानकी उन्नतिको रोकता है। इसका वृषराशिमें उच्च, मेषमें स्वग्रह और कर्कमें मूल त्रिकोण है। वृश्चिक-राशिमें यह नीचका माना जाता है।

केतु—कृष्ण वर्ण और क्रूर ग्रह है। इससे चर्म रोग, मातामह, हाथ-पाँव और क्षुधा जनित कष्ट आदिका विचार किया जाता है। यह वृश्चिक राशिमें उच्चका और वृष राशिमें नीचका माना जाता है।

विशेष—यद्यपि बृहस्पति और शुक्र दोनों शुभ ग्रह हैं, पर शुक्रसे सांसारिक और व्यवहारिक सुखोंका तथा बृहस्पतिसे पारलौकिक एवं आध्यात्मिक सुखोंका विचार किया जाता है। शुक्र प्रभावसे मनुष्य स्वार्थी और बृहस्पतिके प्रभावसे परमार्थी होता है। शुक्रकी महादशा या अन्तरदशामें देशमें स्वार्थकी भावना विशेष रूपसे उत्पन्न होती है। बृहस्पतिकी दशामें देशमें सहयोग, परोपकार और त्यागकी भावना उत्पन्न होती है।

शनि और मंगल ये दोनों भी पाप ग्रह हैं, पर दोनोंमें अन्तर यही है कि शनिके क्रूरग्रह होने पर भी उसका अन्तिम परिणाम अच्छा होता है, यह दुर्भाग्य और यन्त्रणाएँ उत्पन्न करता है, परन्तु इसकी दशामें देशकी प्रगति ही होती है। मंगल उत्तेजना देनेवाला है, उमंग और तृष्णासे परिपूर्ण कर देनेके कारण सर्वदा दुःखदायक होता है। इसकी दशामें देशका विकास नहीं होता। युद्ध और सैनिक शक्तिका प्रदर्शन भी इसी ग्रहकी दशामें होता है।

देशांकालका निरूपण करते समय ग्रहोके बलाबलका भी विचार कर लेना अत्यावश्यक है, बलवान् ग्रहकी दशामे देशमें सुख, शान्ति और आनन्द वर्तमान रहता है। निर्बल ग्रहकी दशामे देशका पतन होता है। जिस वर्ष वृहस्पति, शनि और मगल एक साथ रहते है, उस वर्ष दुष्काल पडता है तथा युद्ध होता है। मगलके राशि परिवर्तन पर वर्षा, वृहस्पतिके उदयमे वर्षा, शुक्रके अन्तमे वर्षा और शनैश्चरकी तीनो अवस्थाओमे वर्षा होती है। शुक्रके अन्तमें मगलका उदय हो तो भुजाओमें युद्ध, कही वर्षा और कही दुष्काल होता है। मेष और वृश्चिकके वीचमे मगल स्थित हो तो दो मास तक धान्य तेज रहते है। सूर्य, राहु, शनि और मगल इनका जब मध्यराशिमे उदय होता है, तो धन-धान्य और सुवर्णका विनाश होता है। मीन राशिपर शनि, कर्कपर गुरु और तुलापर मगल जव रहता है तो देशमें उपद्रव होते हैं। सूर्य राशिसे आगे मगल हो तो वर्षाको रोकता है, और चन्द्रमासे मगल, वुध, गुरु और शुक्र ये चारो ग्रह दक्षिण होते हैं तो वृष्टिका नाश करते हैं। मगलके वक्री होनेसे अनावृष्टि, वुधके वक्री होनेसे धनका क्षय, गुरुके वक्री होनेसे रोगकी उत्पत्ति, शुक्रके वक्री होनेसे प्रजा सुखी, और शनिके वक्री होनेसे प्रजाको कष्ट होता है। राहुके वक्री होने पर अग्निका उपद्रव विशेष रूपसे होता है। मगलके वक्री होने पर युद्ध भी होते हैं। शनि और मगलका वक्री होना युद्ध, दुर्भिक्ष, अनावृष्टि और उत्पात आदिका सूचक है। श्रावणमें शनि वक्री हो और मगलका अस्त या उदय हो तो दो महीनेके पश्चात् निश्चय युद्ध होता है।

क्रूर[1] और शुभ ग्रहोका दशाफल

कूरा कुणति दुक्ख सेसा सव्वे सुहंकरा णेया ॥१९½॥

अर्थ—क्रूर ग्रहोकी दशामे दु ख होता है और शेप शुभ ग्रहोकी दशामे सुख होता है।

विवेचन—चन्द्रमा, वुध, गुरु और शुक्र अपनी,अपनी उच्चराशि, स्वराशि और मूलत्रिकोणमें रहने पर देशमें सुभिक्ष, धन-धान्यकी वृद्धि, उद्योग और शिल्पकी वृद्धि एव देशका सर्वाङ्गीण विकास करते हैं। इन ग्रहोकी दशामें प्रजाको सुख मिलता है। चन्द्रमा सौम्य ग्रहोसे युक्त अपनी दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा और प्राणदशामें शुभ फल देता है। अमृतनाडी पर जव चन्द्रमा शुभ ग्रहोसे युक्त होकर अपनी सूक्ष्मदशामे आता है, उस समय सुभिक्ष होती है। वस्त्र-व्यवसाय और घी-व्यवसायमें अच्छा लाभ होता है। देशमें धन-धान्यकी वृद्धि होती है तथा शत्रुभय दूर हो जाता है। गुरुकी दशा और उत्तरदशादिमें भी उत्तम फल प्राप्त होता है। जिस वर्ष गुरु, शनि, मगलसे युक्त या द्रष्ट रहता है, उस वर्ष वर्षा अच्छी नही होती। देशमें विग्रह, दुर्भिक्ष, आर्थिक सकट एव उपद्रव होते हैं। चन्द्रमा और वुध दोनो ही अपनी-अपनी दशामें देशकी सास्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक उन्नति करते हैं। देशका वातावरण शान्त और पवित्र रहता है, अत इन दोनो ग्रहोको देशकी उन्नतिमें सवसे अधिक सहायक समझना चाहिये।

शुक्र और गुरु भी अपनी-अपनी दशा या अन्तरदशामें उन्नति करते हैं, परन्तु इनकी दशामें देशका सर्वाङ्गीण विकास नही हो पाता है। इनकी दशाओमें तिल, वस्त्र, सर्प, कपास और सुपाडी आदि पदार्थ सस्ते होते हैं, जिससे व्यापारियोको हानि उठानी पडती है।

शनि और मगलकी दशामें देशमें अशान्ति, कष्ट, उत्पात, आकास्मिक भय और अकाल पडते हैं। यद्यपि शनिकी महादशा स्वराशिके शनिमें देशके विकासमे सहायक होती है। निवासियोकी वौद्धिक और मानसिक प्रगतिमे महादशा अत्यन्त सहकारो मानी जाती है। मगलकी दशामे अकाल, अनावृष्टि या अतिवृष्टि,

---

१. 'अकुला कुणति दुक्खं'–इत्यपि पाठान्तर—

धन्योत्पत्तिकी कमी और नाना प्रकारके सकट सहन करने पडते हैं। देशका वातावरण क्षुब्ध रहता है। यद्यपि शनि, मगल और गुरुके विशेष योग द्वारा ही शुभाशुभ फल ज्ञात किया जा सकता है तो भी ग्रहवेध या दृष्टिका विचार विना किये ही ग्रहोकी राशियोके शुभाशुभत्व परसे ही फल वतलाया जा सकता है। राहु और केतुकी दशाएँ देशके लिए उत्तम नही होती हैं तथा इन दशाओमें देशकी अवनति ही होती है। यों तो आगे किये जाने वाले विचारपरसे ही दशाओका विशेष फलादेश वतलाया जा सकेगा, पर साधारणत राहु और केतुकी दशा अनिष्टकर ही होती है। इनमें अतिवृष्टि, अन्तरवृष्टि, अकाल और महामारी आदि फल घटित होते हैं।

क्रूरग्रहोके शुभफलका विचार

समुह-दाहिण-वामा दिट्ठीए सुहयरा हुंति ॥२०॥

अर्थ—क्रूर ग्रह भी सम्मुख, दक्षिण और बायी दृष्टिसे सुखदायक होते हैं। यो तो शुभग्रहोको दृष्टिका फल शुम और अशुभ ग्रहोकी दृष्टिका फल अशुभ होता है।

विवेचन—ग्रहोकी दृष्टि तीन प्रकारकी होती हैं—सम्मुख, दक्षिण और वाम। चन्द्र, गुरु और शुक्र शुभ ग्रह हैं। बुध शुभ ग्रहोके साथ रहनेसे शुभ ग्रह और पाप ग्रहोंके साथ रहनेसे पाप ग्रह होता है। क्षीणचन्द्र—कृष्णपक्षकी १० मीसे क्षुक्लपक्षकी रात्रि तक भी पाप ग्रह माना जाता है। कृष्णपक्षकी चतुर्दशी, अमा वस्या और शुक्लपक्षकी प्रतिपदाका चन्द्रमा अत्यन्त अशुभ समझा जाता है।
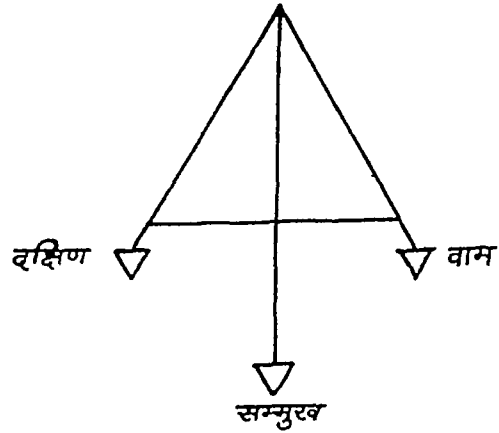
ग्रह दृष्टिसूचक चक्र

१ सम्मुख दृष्टि—पूर्वसे पश्चिम और पश्चिमसे पूर्वको होती है।
२ सम्मुखदृष्टि—उत्तरसे दक्षिणमें और दक्षिणसे उत्तरको होती है।
३ दक्षिणदृष्टि—पूवसे उत्तर, उत्तरसे पश्चिम, पश्चिमसे दक्षिण और दक्षिणसे पूर्वको होती है।
४ वाम दृष्टि—पूर्वसे दक्षिण, दक्षिणसे पश्चिम, पश्चिमसे उत्तर, उत्तरसे पूर्वको होती है।

ग्रहदृष्टिका नाम ही वेध है। देश, काल और वस्तु इन तीनोमें ग्रहवेध द्वारा शुभाशुभफलको जानना चाहिये। देशका नक्षत्र क्रूर ग्रहसे विद्ध हो तो अशुभफल, शुभ ग्रह विद्ध हो तो शुभफल होती है। वस्तु और समयके अनुसार भी शुभाशुभत्व अवगत करना चाहिये।

दिशा-दृष्टिचक्र
पूर्व
ईशान
अग्नि
उत्तर
दक्षिण
वायु
नैऋत्य
पश्चिम
विदिशा-दृष्टिचक्र
पूर्व
ईशान कोण
अग्नि कोण
उत्तर
दक्षिण
वायव्य कोण
नैऋत्य कोण
पश्चिम
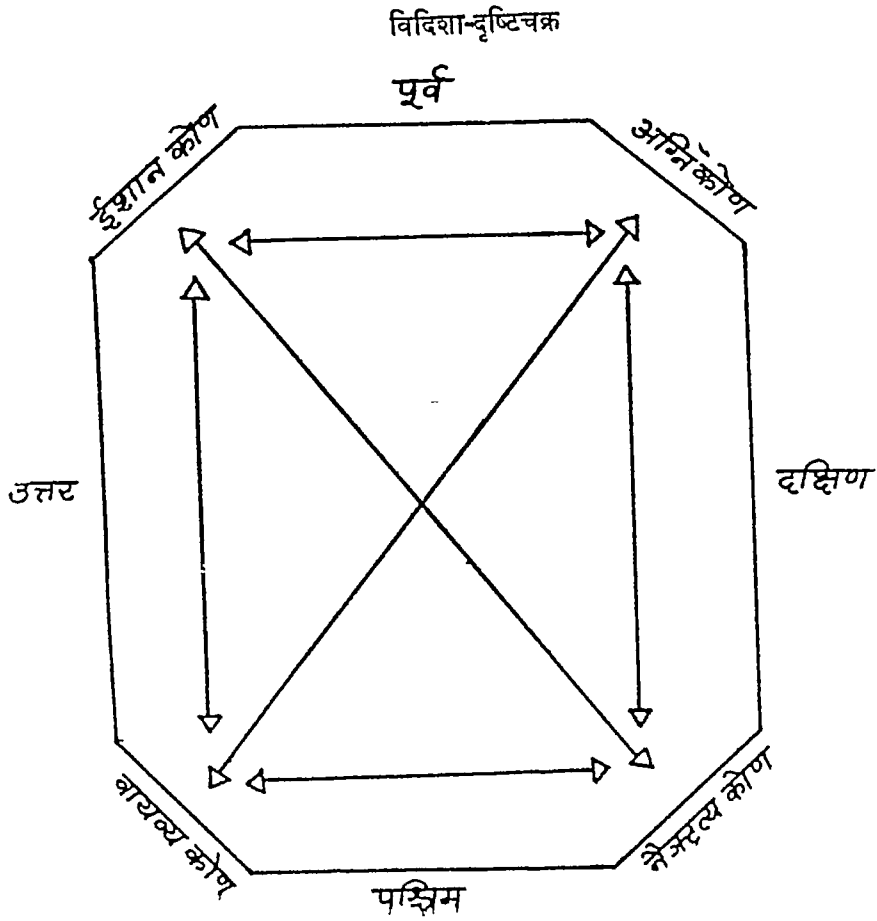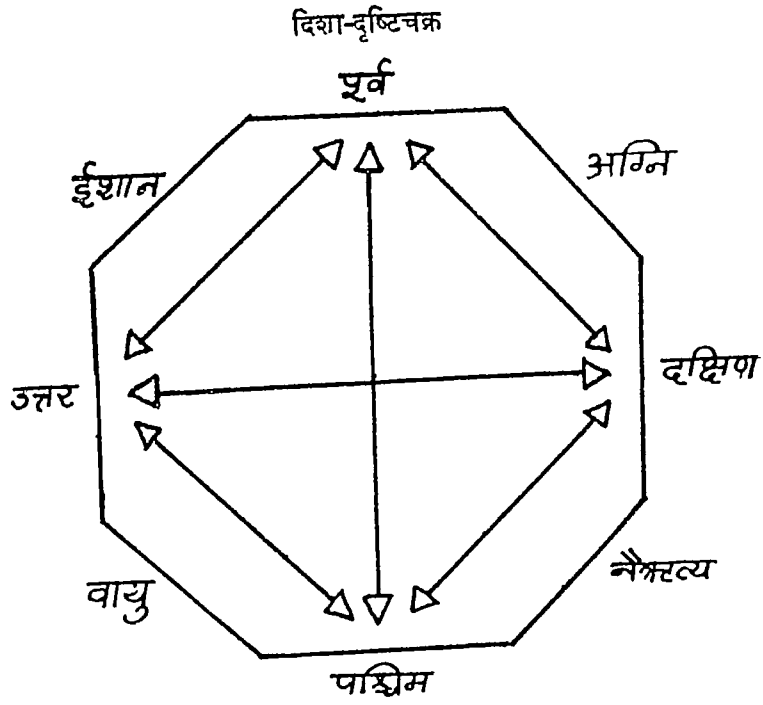
१ सम्मुख दृष्टि—अग्निसे वायुकोण, वायुकोणसे अग्निकोण, नैऋत्यमे ईशानकोण और ईसानकोणसे नैऋत्यकोणकी ओर होती है।

२—दक्षिण दृष्टि—अग्निसे ईशानकोण, नैऋत्यसे अग्निकोण, वायुमे नैऋत्यकोण और ईशानसे वायु कोणकी ओर होती है।

३—वामदृष्टि—ईशानमे अग्निकोण, अग्निसे नैऋत्यकोण, नैऋत्यकोणसे वायुकोण और वायुसे ईशान कोणकी ओर होती है।

वेधचक्र (सर्वतोभद्र)

अ	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	आ
भरणी	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	मघा
अश्विनी	ल	लृ	वृष	मिथुन	कर्क	ॡ	म	पूर्वाफाल्गुनी
रेवती	च	मेष	ओ	नंदा	औ	सिंह	ट	उत्तराफाल्गुनी
उत्तराभाद्रपद	द	मीन	रिक्ता	पूर्वा	भद्रा	कन्या	प	हस्त
पूर्वाभाद्रपद	स	कुम्भ	अः	जया	अं	तुला	र	चित्रा
शतभिषा	ग	ऐ	मकर	धन	वृश्चिक	ए	त	स्वाति
धनिष्ठा	ऋ	ख	ज	भ	य	न	ॠ	विशाखा
ई	श्रवण	अभिजित्	उत्तराषाढा	पूर्वाषाढा	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा	इ

१ उपर्युक्त चक्रमें सीधी खडी और आडी रेखाएँ तो सम्मुखवेधकी सूचक है।

२ तिर्छी रेखाएँ दक्षिण और वामवेधकी सूचक हैं।

३ कृत्तिकादि सात नक्षत्र पूर्व दिशाके हैं, तथा अनुराधादि सात नक्षत्र पश्चिम दिशाके हैं। पूर्वसे पश्चिम और पश्चिमसे पूर्वको सम्मुख वेध माना जाता है। धनिष्ठादि सात नक्षत्र उत्तर दिशाके और मघादि सप्त नक्षत्र दक्षिण दिशाके हैं। अत दक्षिणसे उत्तर और उत्तरसे दक्षिण सम्मुख वेध जानना चाहिये।

४ तिर्छी रेखाके चिह्न दक्षिण और वामवेधके हैं ।

५. कृत्तिकादि सात नक्षत्रोका दक्षिणवेध धनिष्ठादि उत्तर दिशाके नक्षत्रोकी ओर होता है ।

६ कृत्तिकादि सात नक्षत्रोका वामवेध मघादि सात नक्षत्रोकी ओर होता है ।

७ उत्तर दिशाके सात नक्षत्रोका दक्षिणवेध अनुराधादि सात नक्षत्रोकी ओर होता है और वामवेध कृत्तिकादि सात नक्षत्रोकी ओर होता है ।

८ अनुराधादि पश्चिम दिशाके सात नक्षत्रोका दक्षिणवेध मघादि सात नक्षत्रोकी ओर होता है और वामवेध धनिष्ठादि सात नक्षत्रोकी ओर होता है ।

९ दक्षिण दिशाके सात नक्षत्रोका दक्षिणवेध कृत्तिकादि सात नक्षत्रोकी ओर और वामवेध अनुराधादि सात नक्षत्रोकी ओर होता है ।

१० कृत्तिका नक्षत्रका सम्मुख वेध श्रवण नक्षत्रपर, दक्षिणवेध भरणी नक्षत्रपर और वामवेध अनुराधा नक्षत्रपर होता है ।

११ श्रवणका सम्मुखवेध कृत्तिकापर, वामवेध धनिष्ठापर और दक्षिणवेध मघापर होता है ।

१२ भरणीका सम्मुख वेध मघा नक्षत्रपर, वामवेध कृत्तिकापर और दक्षिणवेध अनुराधापर होता है ।

१३ सूक्ष्मवेध नक्षत्रोके चरणोका होता । एक नक्षत्रमें चार चरण होते हैं, अत प्रथम और चतुर्थका, द्वितीय और तृतीयका तथा चतुर्थ और प्रथम चरणका वेध होता है ।

१४ जिस नक्षत्रपर ग्रह स्थित है, वह ग्रह उपर्यक्त प्रकारसे सम्मुख, दक्षिण और वामवेध करता है ।

१५ जिसका जन्म नक्षत्र, दिशा नक्षत्र, देश नक्षत्र, नगर नक्षत्र, ग्राम नक्षत्र और वस्तु नक्षत्र क्रूर ग्रहोमे विद्ध हो तो अशुभ फल अवगत करना चाहिये । शुभ ग्रहसे विद्ध होनेपर शुभ और मिश्रित ग्रह शुभ और पाप दोनो प्रकारके ग्रहोसे विद्ध होनेपर मिश्रित फल समझना चाहिये ।

वेध या दृष्टिमे निम्न परिस्थिति परिवर्तन भी हो जाता है —

१ वक्री ग्रहका वेध दक्षिणकी ओर ही माना जाता है ।

२ शीघ्रगामी ग्रहकी दृष्टि वायी ओर होती है ।

३ समचालसे चलनेवाले गहकी दृष्टि (वेध) वाम, सम्मुख और दक्षिण तीनो ही ओर होती है ।

४ सूर्य, चन्द्र, राहु और केतु सदा समचालसे चलते हैं, अत चारो ग्रहोकी सदा तीनों प्रकारकी होती है ।

५ मगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इनकी चाल सदा वदलती रहती है, अत इनकी दृष्टिमें भी परिवर्तन होता रहता है । इन ग्रहोसे जो-जो ग्रह वक्री हो उनकी दृष्टि दक्षिण ओर और जो शीघ्रगामी हो, उनकी दृष्टि वायी ओर होती है ।

६ ग्रहोका वेध गजेन्द्रके दांतके सस्थानकी भांति दोनो ही तरफ अर्थात् वायी और दक्षिण ओर राशि, अक्षर, स्वर, तिथि और नक्षत्र इन पांचोका होता है ।

७ सम्मुख वेधसे केवल सामनेका नक्षत्र ही वेधा जाता है ।[1]

---

१ यस्मिन् ऋक्षे स्थित खेटस्ततो वेधत्रयं भवेत् । ग्रहदृष्टिवशेनात्र वामसम्मुखदक्षिणे ॥
क्रूरैः भौमं तथा क्रान्तं विद्धं क्रूरग्रहेण यत् । शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नत ॥
वक्रे दक्षिणा दृष्टिर्वामदृष्टिश्च शीघ्रगे । मध्यचारे तथा मध्या ज्ञेया भौमादिपञ्चके ॥
राहुकेतू सदा वक्रौ शीघ्रगौ चन्द्रभास्करौ । गतेरेकस्वभावत्वादेषां दृष्टित्रयं सदा ॥
क्रूरा वक्रा महाक्रूरा सौम्या वक्रा महाशुभा । एवं सहजस्वभावेन सौम्या क्रूराश्च शीघ्रगा ॥
—नरपतिजयचर्या पृ० ५६-५७

८ वस्तुका नक्षत्र सौम्यग्रहसे विद्ध रहनेसे वस्तुएँ सस्ती और क्रूर ग्रहसे विद्ध रहनेसे वस्तुएँ महँगी होती हैं।

सूर्य, चन्द्र और मंगलकी दृष्टिका फल

सूरो वि हरइ तेय संमोहं जणइ राय-लोयाणं।
सोमो करइ सोम्मं भोमो अग्गी अईसारो ॥ २१ ॥

अर्थ—सूर्यकी सम्मुख दृष्टि राजा प्रजाके तेजको नष्ट करती है। और उनमे समोह उत्पन्न करती है। चन्द्रमाकी सम्मुख दृष्टि शातिदायक होती है और मगलकी सम्मुख दृष्टि—वेध अग्निभय और अतीसार रोगको उत्पन्न करती है।

विवेचन—ग्रन्थान्तरोमें सूर्यकी दृष्टिका फल मनस्ताप, पीडा, शक्ति और पौरुपका अभाव एव राजाओ, शासकोमें विग्रह होना वतलाया गया है। जिस ग्राम नक्षत्र, या वस्तु नक्षत्रसे सूर्यका वेध होता है, उस ग्रामके मुखियाकी शक्ति क्षीण हो जाती है, उसका पुरुपार्थ घटने लगता है तथा उनके स्थानपर अन्य मुखियाका चुना जाना भी सभव है। यदि वस्तु नक्षत्र सूर्यसे विद्ध हो तो वह वस्तु तेज होती है, उसका अभाव होता है तथा उसके मूल्यमें वृद्धि अधिक हो जानेसे व्यापारियोको अधिक लाभ होता है। जो व्यापारी सूर्यके विद्ध नक्षत्र नामवाली वस्तुओको सचय करते हैं, वे अवश्य ही उन वस्तुओसे लाभ उठाते हैं। सूर्य विद्ध नगर या ग्रामके निवासियोको भी कष्ट भोगना पडता है, उनका भी वल-पौरुप घट जाता है।

चन्द्रमाके वेधमें शान्ति-सुखकी प्राप्ति होती है। क्षीण चन्द्रमाके वेधमें अशुभ फल होता है। देश निवासियोंको नानाप्रकारके कष्ट भोगने पडते हैं। सूर्यचन्द्रमाके वेधमें लाभ, हर्प, उन्नति और सुभिक्ष आदि फल होते हैं। नेताओ, मुखियाओ और शासकोकी शक्ति वढती है। उनका प्रभाव इतना अधिक वढ जाता है, जिससे अन्य देश, नगर और ग्रामके शासक भी उनका सम्मान और प्रशसा करते हैं। देशमे धन-धान्यकी पूर्ण वृद्धि होती है। व्यापारियोको लाभ होता है। यद्यपि धन-धान्यकी वृद्धि होनेके कारण निवासियोको सव प्रकारका सुख प्राप्त होता है तो भी मानसिक चिन्ता कुछ रह जाती है। देशके अनुसन्धानोंमें अधिक प्रगति होती है। नयी-नयी वस्तुये आविष्कृत होकर सामने आती हैं, जिससे देशकी प्रतिष्ठा वढती है। खाद्यन्न पर्याप्त मात्रामें उत्पन्न होते हैं। घी, दूध और फलोकी उत्पत्ति खूव होती हैं। अत पूर्णचन्द्रमासे विद्ध गाँव, नगर, देश और दिशामें सभी प्रकारका सुख प्राप्त होता है।

पूर्ण चन्द्रमासे जिस वस्तुका वेध होता है, उस वस्तुमें व्यापारियोको अधिक लाभ नही होता। यदि शुभ ग्रह भी चन्द्रमाके साथ हो तो निश्चयत वह वस्तु सस्ती होती है, जिससे वेचनेवालोको हानि और खरी-दने वालोको लाभ होता है। देशमें इस वस्तुकी उत्पत्ति भी साधारणत अच्छी होती है। क्षीण चन्द्रमाका फल उपर्युक्त फलसे विल्कुल विपरीत घटता है। चन्द्रमाके स्वक्षेत्रमें रहनेपर पूर्ण फल, मित्रकी राशिमें रहनेपर तीन चौथाई समकी राशिमें रहनेसे आधा फल तथा शत्रुकी राशिमे होनेपर चौथाई फल घटता है।

मगलके विद्ध होनेपर रोग, पीडा, उत्पात और उपद्रव आदि फल होते है। जिस देश, गाँव या नगरका नक्षत्र मगलसे विद्ध रहता है, वह गाँव, नगर या देशमें अग्नि-प्रकोप अधिक होता है। स्थान-स्थानपर अग्नि लगी हुई दिखलायी पडती है। जगह-जगह चोरियाँ होती हैं, चोरो और लुटेरोंका उत्साह वढता है। इन्हें अपने पेशेमें अधिक सफलता मिलती है। मगलसे विद्ध होना गाँवकी आर्थिक उन्नतिके लिए साधारणतः अच्छा है। देश या गाँवमें नानाप्रकारके उपद्रव होते हैं। द्रव्यहानि, रोग, पीडा आदि फल भी घटित होते

है। यदि अपनी राशिमे स्थित होकर मंगलने वेध किया हो तो पूर्णत अशुभ फल मित्रकी राशिमें स्थित होकर वेध करनेसे तीन चौथाई अशुभ फल, समग्रहकी राशिमें स्थित होनेसे आधा फल और शत्रु की राशिमें स्थित होनेसे चौथाई अशुभ फल प्राप्त होता है। शुभ ग्रहसे युक्त या द्रष्ट होकर मगल वेध करे तो कुछ अच्छा होता है। निवासियो, शासको, नेताओ और मजदूरोको इस वेधसे लाभ होता है। कलाकारोको सम्मान प्राप्त होता है।

जिस वस्तुका मगलसे वेध होता है, वह वस्तु महगी होती है। व्यापारियोको इस वेधसे उस वस्तुमें अपार लाभ होता है। क्रूर ग्रह द्रष्ट मगलसे जव वेध होता है, तो और भी अधिक लाभ होता है। इस वस्तु-की उत्पत्ति वहुत कम होती है तथा देश इस वस्तुके अभावमे कष्ट पाता है। इस वस्तुकी उत्पत्तिमें अनेक रोग और वाधाएँ उत्पन्न होती हैं। यदि सुवर्णका वेध मगलसे होता है तो इसकी उत्पत्ति देशमे कम होती है, विदेशोसे इसका आना भी रुक जाता है। अतएव मगलका वेध अच्छा नही होता है।

बुध और गुरुकी दृष्टिका फल

वुद्धिकरो वुद्धिकरो वुद्दो वि लोयाण [तह य] दुक्खहरो ।
कोस कोट्ठागार पूरेइ सुरगुरू तुट्ठो ॥२२॥

अर्थ—वुध ग्रह वुद्धिकारक है, धन-धान्यकी वृद्धि करता है तथा लोगोके दुखोको दूर करता है। सन्तुष्ट वृहस्पति राज्यके कोष और भण्डारोको समृद्ध बनाता है।

विवेचन—बुधसे विद्ध देशमें समयपर वर्षा होती है। व्याधियोका अभाव, सम्मान-प्रतिष्ठाकी वृद्धि वैज्ञानिक प्रगति, कृषि और उद्योगोका पूर्ण विकास एव नेताओका प्रभाव वढता है। बुध जिस वस्तुका वेध करता है, उस वस्तुके व्यापारमें लाभ अल्प होता है। इस वस्तुकी उत्पत्ति भी अधिक परिमाणमे होती है तथा इस वेधसे देशमें सभी प्रकारकी सुख-शान्ति होती है। पापग्रहसे युक्त या दृष्ट वुधका वेध देशमे अराजकता, अशान्ति और महामारीको उत्पन्न करता है। शुभ ग्रहसे युक्त या दृष्ट वुधके वेधसे देशमे सुराज्य, सुव्यवस्था, आर्थिक विकास और धन-धान्यकी समृद्धि होती है। स्वगृही वुधका वेध देशमें शान्ति, व्यापारमे वृद्धि और सम्मानकी वृद्धि करता है। नेताओमें सहयोगकी भावना उत्पन्न करता है, जिससे देशका आर्थिक विकास होता है। नारियोकी प्रतिष्ठाके लिए इस ग्रहका वेध अत्यन्त सहकारी होता है। नारियो राजनीतिमे आगे आती हैं तथा देशके कार्योमें भाग लेती है। उच्चका वेध पचायती राज्यकी व्यवस्थाके लिये उपयोगी होता है। नीचराशिके वुधका वेध देशके सास्कृतिक विकासके लिए अहितकर होता है। वुध देशकी राजनीतिमें गडबडी पैदा करता है, परन्तु इसके वेधमें देश उन्नति करता है।

गुरुका वेध देशके धन धान्यकी वृद्धि करता है। जिस देशके नक्षत्रको गुरु वायी ओर वेध करता है, उस देशमें अराजकता तो बढती है, पर धन-धान्यकी वृद्धि पूर्णरूपसे होती है। दक्षिण दृष्टिसे होनेवाले गुरुके वेधमें देशमें सुव्यवस्था और आर्थिक शक्तिका विकास होता है। सम्मुख दृष्टिसे होनेवाले वेधमें देशकी राज-नीति सुदृढ होती है, नवीन योजनाएँ सफल होती है। और नयी-नयी योजनाएँ प्रस्तुत की जाती है। स्वक्षेत्री गुरुका वेध देशका विदेशोमें सम्मान वढाता है। विदेशीय नीति सफल होती है, मुखिया, सरपञ्च, प्रधानमत्री या राष्ट्रपतिका प्रभाव स्वदेशके साथ विदेशमे भी वढता है। उच्चके वृहस्पतिके वेधमें कूटनीतिमे सफलता मिलती है। योजनाएँ सफल नही हो पाती, आर्थिक दृष्टिसे कुछ वाधाएँ आती है, जिनका हल होना कठिन होता है। नीच राशिके वृहस्पतिके वेधमें देशकी आर्थिक क्षति होती है, वर्षा भी साधारण होती है तथा वैदे-

शिक व्यापारिक नीतिमें असफलता प्राप्त होती है। यो गुरुका सम्मुख और दक्षिण वेधमें समृद्धि और अभ्युदय के लिए अच्छा होता है।

शुक्र और शनिके वेधका फल

सुक्को राय-पयाण वुड्ढिकरो जणियजणमणाणंदो।
मंदो णरवइकट्ठं दुब्भिक्खभयकरो घोरो ॥२३॥

अर्थ—शुक्रके वेधमे राजा-प्रजाकी वृद्धि, सर्वाङ्गीण उन्नति, मनुष्योको आनन्द और सुख प्राप्त होता है। शनिके वेधमे मनुष्य और पशुओको कष्ट, भयकर दुर्भिक्ष और घोर दुष्काल पडता है—शनिके वेधमें अनावृष्टि, अतिवृष्टि, दुर्भिक्ष और नाना प्रकारके सकट आते हैं।

विवेचन—स्वराशिके शुक्रके वेधमें देशमें समयपर यथेष्ट वर्षा, धन-धान्यकी उत्पत्ति, देशके निवासियोको सुख-शान्ति तथा भौतिक सुखोकी प्राप्ति होती है। इस वेधमें फसल बहुत अच्छी उत्पन्न होती है। उच्चराशिके शुक्रके वेधमें देशका प्रभुत्व बढता है, विदेशोमें देशको सम्मानित स्थान प्राप्त होता है तथा राजनैतिक नेताओका प्रभुत्व बढता है। मूलत्रिकोणके शुक्रके वेधमें देशकी आर्थिक स्थिति विकसित होती है तथा देशमें सुख शान्ति उत्पन्न होती है। जब शुक्र दक्षिणकी ओरसे वेध करता है, उस समय देशमें सभी सुखके साधन अनायास ही एकत्र हो जाते हैं तथा नर-नारियोको सभी प्रकारका सुख मिलता है। आर्थिक स्थिति सबल होती है तथा नये-नये कर लगाये जाते हैं, जिससे साधारण जनताको कुछ कष्ट होता है, परन्तु देशकी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी रहती है, जिससे सभीको सुख प्राप्त होता है। शासकवर्ग और नेताओमें भी सहयोग उत्पन्न होता है। वायी ओरसे होने वाले वेधमें देशको साधारण हानि उठानी पडती है, यद्यपि इस वेधमें शासकोकी शक्ति दृढ होती है तथा नवीन शासकवर्ग भी आकर अपनी शक्तिको दृढ करते हैं। यदि किसी गाँव या नगरके साथ शुक्रका वेध हो तो उस गाँव या नगरकी भी अत्यधिक उन्नति होती है। सुव्यवस्था इतनी अच्छी होती है, जिससे वहाँ पर किसीको किसी भी तरहका कष्ट नही उठाना पडता है। शुक्र स्वभावत शुभ ग्रह है, अत अशुभ ग्रहोसे युक्त या दृष्ट होने पर भी देशकी सर्वाङ्गीण उन्नतिमें शुक्र सहायक है। धनु और मीन राशिके शुक्रके वेधमें देशका आर्थिक विकास होता है तथा नवीन-नवीन योजनाएँ कार्यरूप में परिणत की जाती हैं। नीच राशिके शुक्रके वेधमें देशका आर्थिक ढाँचा ढीला पडता है। नवीन योजनाओको सफल या कार्यान्वित करनेका अवसर निवासियोको कही मिल पाता है। उच्च राशिके शुक्रका गुरुसे सयोग होने पर देशमें पर्याप्त सुख सामग्री बढती है। सिचाईका प्रबन्ध भी इसी दिशासे होता है। विधानमें परिवतन भी इसी दशामें होता है। शासकोमें अनुशासनकी भावना आती है, इसीसे शासनसूत्र सुदृढ होता है। नागरिकोके अधिकारोंकी वृद्धि होती है तथा उच्च अधिकारी सभी प्रकारसे आगे बढकर उन्नति करते है।

शनिका वेध, देशके लिए अच्छा नही होता। इसमें देशके मनुष्य और पशुओको अनेक प्रकारके रोग, उपद्रव और अनेक प्रकारके कष्ट उठाने पडते थे। यह वेध जिस देश या नगरमें होता है, उस नगरमें अराजकता, असन्तोष और असहयोगकी भावना उत्पन्न होती है। देशके विकासके लिए शनिका वेध अच्छा नही होता तथा इसमें उस देशमें नाना तरहके उपद्रव और उत्पात होते रहते हैं। जनता सर्वथा भय और आतक से त्रस्त रहता है। यद्यपि देशमें वर्षा कम होती है, फसल भी साधारण होती है, फिर भी इस वेधमें देशका आर्थिक ढाँचा टूटने नही पाता। आर्थिक दृढता रहनेसे ही देशके कार्योकी विशेष प्रगति होती हैं। उत्तरकी ओरसे होनेवाला वेध पशुओकी उन्नतिमें अत्यन्त वाधक है। पशुओमें अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं,

जिससे उनकी मृत्यु होती रहती है। कलह, विसंवाद, फूट और वैर-विरोध आदि फलादेश भी इसी वेधमें उत्पन्न होते हैं।

दक्षिण या सम्मुखकी ओरसे होनेवाला शनिका वेध देशनिवासियोके लिए सर्व प्रकारसे सुखदायक होता है। कपास, रुई और बादाम आदिकी फसलें इस दशामें अच्छी उत्पन्न होती हैं। घी, दूध और नारियलके व्यापारमें व्यवसायइयोको अच्छी ख्याति और अच्छा धन मिलता है। देशके जो कार्य कभी भी पूरे नही होते है, वे इस प्रकारके वेधकी स्थितिमे पूर्ण हो जाते हैं। शनि अशुभ होनेपर वेधकी अवस्थामें अच्छा लाभ देता है। सम्मुखकी दृष्टि कार्य साधनके लिए अच्छी होती। धन-धान्यकी उत्पत्तिमें यद्यपि यह समय देशमें आर्थिक विकासमे बाधक है, तो भी देशके व्यापारमें शिथिलता नही आने पाती है।

शनिका वेध होनेसे दुर्भिक्ष, वर्षाका अभाव, कल-कारखानोकी रुकावट तथा बडे-बडे नेताओकी मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट भोगना पडता है। जब शनि अपनी मूल त्रिकोणकी राशिका होता है, उस समय इसके वेधमें देशकी धन-धान्यकी सामग्री बढती है। देशमें व्यापारिक प्रगति होती है। शासक सहयोग और सहकारिताके आधारपर व्यापारिक केन्द्रोकी स्थापना करते हैं तथा दूध देनेवाले पशुओका व्यापार विदेशोके साथ भी हो सकता है। इसमें जनतामें अविश्वास और असन्तोषकी भावना बढती है तथा कुछ लोग देशके शासनको उलट देनेका पूर्ण प्रयास करते है, परन्तु ये अपने पुरुषार्थमे सफल नही हो पाते। उडद, मूँग, मसूर, मौठ और चना आदि दालवाले अनाजोकी उत्पत्ति सामान्यत अच्छी होती है। स्वराशिके शनिके वेधमें देशमे भयकर अकाल पडता है तथा हल-चल उत्पन्न हो जाती है। अनुशासनहीनताकी प्रवृत्ति भी इसी वेधमें उत्पन्न होती है। महाजन, सेठ और पूँजीपतियोको भी इस वेधमें कष्ट सहन करनेका अवसर मिलता है। शनिसे विद्ध देश, नगर या ग्राम अच्छा नही होता।

राहु और केतुके वेधका फल

राहू खप्पररज्जं धुवं विणासेइ उत्तमवहूणं।
दुप्पयपसुसंहारो अइअरित्तणासकरो केऊ ॥ २४ ॥

अर्थ—राहुका वेध खर्पर राज्यका और उत्तम वधुओका नाश करता है और केतुका वेध मनुष्य और पशुओका विनाश करता है। राहु वेधका फल उत्तम मनुष्योको पीडा होना भी बतलाया गया है।

विवेचन—राहुका वेध जब किसी नगर, गाँव, देश या राष्ट्रके साथ होता है, तो वह उस नगर, गाँव, देश या राष्ट्रका विनाश करता है। उसके शासनमें शिथिलता आती है, नेताओमें वैर-विरोध उत्पन्न होता है। अपनी राशिमे रहनेपर राहुका वेध देशके व्यापार, उद्योग, वृद्धि आदिके लिए अच्छा नही होता। उच्च राशिके राहुका वेध देशके व्यापारके लिए अच्छा माना जाता है तथा देशकी अखण्डता भी कायम रखता है। अराजकता और उपद्रव नीच राशिके राहुके वेधमें होते है। यह देशको रसातलकी ओर ले जाता है। शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट राहुका वेध देशकी उन्नतिमे सहायक होता है। वर्षा समयपर होती है, फसल भी बहुत अच्छी होती है तथा देशके नाताओका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। परन्तु धार्मिक नेताओको राहुके वेधमें अनेक प्रकारके कष्ट सहन करने पडते हैं। उत्तम सज्जन पुरुषोको दुष्टो द्वारा अनेक तरहके दु ख दिये जाते हैं।

केतुका वेध जिस स्थानके साथ होता है, उस स्थानके पशु और मनुष्योका विनाश, कष्ट और क्लेशकी वृद्धि, शारीरिक शक्तिकी क्षीणता, अर्थाभाव, पाखण्डका प्रचार और अन्धविश्वास बढते हैं। देशका घन व्यय होता है, फसल अच्छी पैदा नही होती, जिससे धान्यका भाव बढता जाता है। जनताको अनेक प्रकारकी पीडाएँ उत्पन्न होती हैं। देशकी भौगोलिक सीमाओपर सघर्ष और युद्ध भी इसी वेधमें होता है। केतु शनि-के साथ रहकर जब वेध करता है, तो उस समय देशके धनका नाश होता है। पशुओका मरण और खण्ड-वृष्टि होती है। शुक्र, गुरु और बुधके साथ रहकर जब केतु वेध करता है तो देशमें साधारणत शाति, आर्थिक विकास और नवीन योजनाओकी कार्यरूपमें परिणति होती है। यद्यपि ये योजनाएँ सफल नही होती हैं। चन्द्रमाके साथ रहकर केतु जब वेध करता है तो देशका सर्वाङ्गीण विकास होता है, परन्तु नेताओमें मन-मुटाव रहनेके कारण आर्थिक अभाव बना ही रहता है। सूर्यके साथ रहकर केतु जब वेध करता है तो व्यापार-के लिए अत्यन्त अशुभ होता है। जनता भूख और प्याससे त्रस्त होकर देश छोड देती है और अन्य देशोकी शरण जाती है। धान्यका भाव अधिक महगा रहता है। सोना, चाँदी, कासा, पीतल आदि धातुओका भाव अधिक नही बढता है। नवीन वैज्ञानिक अनुसन्धानो द्वारा देशकी प्रतिष्ठा विदेशो तक पहुँचती है। उच्च राशि-के केतुका वेध भयकारक, अल्प धान्योत्पादक और सहयोगसूचक हैं। देशके केन्द्रीयकरणमें सहा-यक होता है।

देश, नगर और गाँवका अन्य प्रकारसे फलादेश

देसा अवरुद्धकरा सत्तुगहा हुति सामिभुत्तकरा।
तह णरवराण पीडा गामे सेणाण णासकरा ॥२५॥

अर्थ—जब देश, नगर, ग्राम शत्रु ग्रहोके योगसे युक्त हो जाते हैं, तो वहाँके मनुष्य और पशुओको पीडा होती है और ग्राममे सेनाका नाश होता है। स्वराशि अधिष्ठित ग्रहोके वेधमे देश, नगर, गाँव और राष्ट्रके व्यक्तियोको कष्टोसे मुक्ति मिलती है।

विवेचन—जब शुभ और क्रूर ग्रह सम्मुख वेध करते हैं, उस समय निश्चयसे दुर्भिक्ष होता है। ग्रहों-का युद्ध हो तो राजाओमें भी युद्ध, ग्रहोकी वक्रतामें देशमें विभ्रम, और ग्रहोंके वेधमें सब लोगोमें पीडा होती है। ज्येष्ठ महीनेमें सूर्यके साथ पाँच ग्रह हो तो श्रावणमें वर्षाका अभाव होता है तथा छत्र भग भी होता है। शनि और मगल सप्तमी तिथिको वक्री हो तो लोकमें हाहाकार मच जाता है तथा इसका फल दक्षिण दिशा-की ओर विशेष रूपसे घटता है। यदि शुक्रके ग्रहमें शनि, मगल और गुरु ये तीन ग्रह हो अथवा गुरु और शुक्र इकट्ठे हों तो वर्षा अथवा युद्ध होता है। कार्त्तिक महीनेमें नवमीके दिन पाँच ग्रह एक राशिपर एकत्र हों तो असमयमें अधिक वर्षा होती है। मार्गशीर्षमें शनिके साथ पाँच ग्रह एक साथ रहें तो अधिक रोग होता है। मार्गशीर्षकी पूर्णिमाके दिन पाँच ग्रहोंका योग हो तो युद्धकी स्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा देशमें महामारी भी फैलती है। राहु, मंगल, सूर्य और शनि ये चारो क्रूर ग्रह एक साथ हों तो ग्राम, नगर और देशके लिए अत्यन्त कष्ट होता है। वृहस्पतिसे पाँचवे स्थानमें सूर्य, मगल, शनि और राहुका योग दुर्भिक्ष उत्पन्न करता है। यदि शनिसे पाँचवे स्थानमें राहु, केतु, मगल और सूर्य ये चार ग्रह हो तो दुर्भिक्ष अवश्य होती है। शनि और राहुसे तीसरे स्थानमें क्रूर ग्रह हों तो सुख उत्पन्न होता है और पचम स्थानमें क्रूर ग्रह हो तो दुःख और दुर्भिक्ष होती है। वृहस्पति, राहु, शनि और मगल इनमेंसे कोई भी ग्रह तृतीय और पंचममें

हो तो धान्य खरीदना, बेचना चाहिये अर्थात् तृतीय भावमें अनाज खरीदनेसे लाभ होता है और पचम भावमें बेचनेसे लाभ होता है। यदि वृहस्पतिसे सातवे, बारहवें, पाँचवे और दूसरे स्थानमें शनि, राहु, मगल और सूर्य इनमेंसे कोई भी ग्रह हो अथवा उसकी दृष्टि हो तो देशका विनाश होता है।

मगलकी राशिमें मेष और वृश्चिकमें कोई भी ग्रह हो तो छ महीने तक तृण और अनाज महँगे होते हैं। शुक्रकी राशिमें मगल हो तो दो महीने तक और चन्द्रमा या सूर्य हो तो रोग और अशुभ होता है। शनि या राहु हो तो सब धान्य महँगे होते है तथा राजविग्रह होता है। बुधकी राशि—मिथुन और कन्यामें रवि या चन्द्रमा हो तो सब राजाओमें विरोध होता है। शुक्रकी राशिमें—वृष और तुलामे बुध हो तो कल्याण होता है। चन्द्रमाकी राशि—कर्कमें शुक्र हो तो पाखण्डियोकी वृद्धि तथा धान्य महँगे होते हैं। रविकी राशि—सिहमें शुक्र हो तो पशुओका भाव तेज होता है। बुधकी राशि—मिथुन और कन्यामें शनि या चन्द्रमा हो तो सभी प्रकारके अनाज महँगे होते हैं, देशमें अवर्षाके कारण फसल अच्छी नही होती। शुक्रकी राशि—वृष और तुलामें गुरु या मगल हो तो कपास महँगा, शनिकी राशि—मकर और कुम्भमे राहु या शनि हो तो घी और अनाज दोनो ही महँगे और चन्द्रमा और सूर्य अपनी-अपनी राशिमे अथवा सूर्यकी राशिमें चन्द्रमा और चन्द्रमाकी राशिमें सूर्य हो तो सुभिक्ष और धान्य भाव सस्ता होता है। इस प्रकारकी ग्रहस्थितिमें पशुओका विनाश, धान्यकी वृद्धि, गुडका भाव महँगा होता है। गुरुके क्षेत्रमें शनि या राहु हो तो पशुओका विनाश और चारेका अभाव होता है। गुरुकी राशिमें मगल हो तो शासकोमें विरोध, बुध हो तो बहुत वर्षा, शुक्र हो तो सुभिक्ष और शनि हो तो देशमें विग्रह, अराजकता और उत्पातकी वृद्धि होती है।

मगलकी राशिमें राहु, मगल, सूर्य और शुक्र हो तो छ महीने तक गुड, कपास, घी, दूध मँहगे होते हैं। शुक्र, मगल और चन्द्रमा हो तो मोती, पशु और शख तेज होते है तथा इसी राशिमें शुक्र हो तो धान्य मँहगे होते हैं। शनिकी राशिमें चन्द्रमा और सूर्य हो तो वस्त्र मँहगे होते हैं। गुरुकी राशिमें सूर्य और मगल हो तो देशके निवासियोंको कष्ट होता है। मगलकी राशिमें चन्द्रमाका उदय हो तो तृण, धान्य और रसकी वृद्धि होती है। शुक्रकी राशिमें चन्द्रमाका उदय हो तो सुभिक्ष तथा धान्य भाव सस्ता होता है। रविकी राशिमें शनि, सोम और शुक्रका उदय हो तो बहुत वृद्धि होती हैं। चन्द्रमाकी राशिमें शुक्र, चन्द्रमा और बुधका उदय हो तो दुर्भिक्ष होती है। अतिवृष्टि होनेसे बाढ आती है, जिससे जनताको अनेक प्रकारके कष्ट भोगने पडते है। बुधकी राशिमें राहु और शनिका उदय हो तो पशुओका क्षय, प्रजाकी पीडा और धान्य मँहगे होते हैं। शुक्रकी राशिमें चन्द्रमा, सूर्य और शनिका उदय हो तो शासकोमें सघर्ष होता है देशमें आन्तरिक सघर्ष और युद्ध भी होता है तथा अनाजका भाव मँहगा होता है। शनि राशिमें मगल और सूर्यका उदय हो तो घी, गुड, लाल वस्त्रकी उत्पत्ति अधिक होती है। शनिकी राशिमें शनि और शुक्रका उदय होता है तो तृण, काष्ठ और लोहेका भाव मँहगा होता है। ग्रहोके वेधका फलादेश अवगत करनेके लिए मित्रामित्र चक्र नीचे दिया जाता है।

ग्रहोंका निसर्गमैत्रीविचार—सूर्यके मगल, चन्द्रमा और वृहस्पति मित्र; शुक्र और शनि शत्रु एव बुध सम हैं। चन्द्रमाके सूर्य और बुध मित्र, वृहस्पति, मगल, शुक्र और शनि सम हैं। मगलके सूर्य, चन्द्रमा एव वृहस्पति मित्र, बुध शत्रु, शुक्र और शनि सम हैं। बुधके सूर्य और शुक्र मित्र, शनि, वृहस्पति और मगल सम एव चन्द्रमा शत्रु है। वृहस्पतिके सूर्य, मगल और चन्द्रमा मित्र, शनि सम एव शुक्र और बुध शत्रु है। शुक्रके शनि, बुध, मित्र, चन्द्रमा, सूर्य शत्रु, और वृहस्पति, मगल सम हैं। शनिके सूर्य, चन्द्रमा और मगल शत्रु, वृहस्पति सम एवं शुक्र और बुध मित्र है।

निसर्गमैत्रीचक्र

ग्रह	मित्र	शत्रु	उदासीन—सम
सूर्य	चन्द्र, मगल, गुरु	शुक्र, शनि	वुध
चन्द्र	रवि, वुध	×	गुरु, मगल, चन्द्र, शनि
मगल	रवि, चन्द्र, गुरु	वुध	शुक्र, शनि
वुध	सूर्य, शुक्र	चद्र	शनि, गुरु, मगल
वृहस्पति	सूर्य, मगल, चद्र	शुक्र, वुध,	शनि
शुक्र	शनि, वुध	सूर्य, चन्द्र	गुरु, मगल
शनि	शुक्र, वुध	सूर्य, चद्र, मगल	गुरु

तात्कालिक मैत्री-विचार—जो ग्रह जिस स्थान पर रहता है, वह उससे दूसरे, तीसरे, चौथे, दसवें, ग्यारहवे और बारहवें भावके ग्रहोके साथ मित्रता रखता है—तात्कालिक मित्र होता है और अन्य स्थानोंमें १, ५, ६, ७, ८, ९ के ग्रह शत्रु होते है।

देश, नगर, गाँव और राष्ट्रका फलादेश जाननेके लिए ग्रहोके वेधका शुभाशुभ फल मित्र और शत्रुओ-का विचार कर ही निर्णय करना चाहिये।

वेधका विशेष फल

अक्कजराहू मिलिया कत्तरिजोगेण एगससिद्विया।
जं जं णक्खत्तं वेधइ तत्थेव करेइ सहारो ॥ २६ ॥

अर्थ—कर्त्तरीयोगसे शनि, राहु मिल जायें और साथमे चन्द्रमा भी हो, इस स्थितिमे जिस-जिस गाँव, नगर, देशके नक्षत्रको वेधते हैं, उस-उस गाँव, नगर और देशका विनाश होता है।

विवेचन—ग्रहोका वलावल जाननेके लिए उनकी आठ अवस्थाएँ मानी गयी हैं—दीप्त, स्वस्थ, हर्षित, शान्त, शक्त, लुप्त, दीन और पीडित। ग्रह अपनी उच्च राशिमें दीप्त, अपनी राशिमें स्वस्थ, मित्रकी राशिमें हर्षित, शुभ ग्रहके वर्गमें शान्त, षड्वल या षोडशवर्गमें गणितागत ग्रह शक्त, रविसे युक्त ग्रह लुप्त, अपनी नीच राशिमें दीन और पापग्रह तथा शत्रुग्रहकी राशिमें पीडित होता है। जो ग्रह दीप्त, स्वस्थ, हर्षित, शान्त और शक्त अवस्थाओका होता है वही उत्तम माना जाता है। वेध करनेवाला ग्रह जिस अवस्थाका होता है, फलादेश वैसा ही अवगत करना चाहिये। यदि वेध करनेवाला ग्रह हर्षित, शान्त और दीप्त अवस्थाका होता है तो जिस स्थानका वेध कर रहा है, उस स्थानपर सुख-समृद्धि होती है। व्यापारमें लाभ होता है, देशको अनेकानेक श्रेष्ठ वस्तुएँ स्वत प्राप्त हो जाती हैं। धन-धान्यकी वृद्धि होती है, समय पर वर्षा होती है। अशुभ ग्रहका वेध होनेपर नाना तरहके कष्ट और झझट आते है।

जिस समय राहु और शनिमें कर्त्तरियोग हो अर्थात्—राहुसे शनि दूसरे या बारहवे भावमे स्थित हो अथवा शनिसे राहु दूसरे या बारहवे भावमें पडता हो तो यह कर्त्तरियोग कहलाता है। इस योगके रहनेपर चन्द्रमा भी राहु या शनिके साथमें हो तो ये ग्रह जिस गाँव या नगरके नक्षत्रका वेध करते हैं, उस गाँव या नगरके मनुष्य और पशुओका नाश होता है अथवा चन्द्रमासे दूसरे शनि और बारहवे राहु हो या चन्द्रमासे दूसरे राहु और बारहवे शनि हो तो शनि और राहुसे जिस-जिस नगर या गाँवका नक्षत्र वेधा जाता है, उस-उस नगर और गाँवका विनाश होता है। वहाँ शृगाल, कुत्ते और भेडिये निवास करते है।

कृत्तिका नक्षत्रसे किसी ग्रहका वेध हो तो चावल, जौ, मणि, हीरा, धातु, तिलका वेध माना जाता है अर्थात् शुभ-ग्रहसे वेध होनेपर ये वस्तुएँ सस्ती होती हैं और पर्याप्त मात्रामें उत्पन्न भी होती हैं, किन्तु आठ महीने तक दक्षिण दिशामे दु ख रहता है। रोहिणीमें वेध हो तो सब प्रकारके धान्य, रस, ऊनी वस्त्र आदिका वेध माना जाता है। यदि शुभ ग्रहसे वेध हो तो ये वस्तुएँ सस्ती होती हैं और इनकी उत्पत्ति भी अधिक होती है। किन्तु पूर्व दिशामें सात दिन तक भय, आतक और दु ख व्याप्त रहता है। आपसमें वैर-विरोध बढता है और अराजकता भी फैलती है।

मृगशिरसे किसी ग्रहका वेध हो तो घोडा, भैंस, गौ, लाख, कोद्रव, गधा, रत्न, सुपाडी और जौका वेध माना जाता है। ये वस्तुएँ भी ग्रहोकी स्थितिके अनुसार सस्ती या महँगी होती हैं, परन्तु उत्तर दिशामें आठ दिनतक पीडा होती रहती है। आर्द्रासे किसी भी ग्रहका वेध हो तो तेल, लवण, क्षार, रस, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुओका वेध माना जाता है। इन वस्तुओकी स्थिति और भाव भी ग्रहोके शुभाशुभत्वके अनुसार समझना चाहिये। इस वेधमें पश्चिम दिशामे एक महीनातक कष्ट उठाना पडता है। पुनर्वसुसे किसी ग्रहका वेध हो तो सोना, कपास, रूई, ज्वार, रेशमी वस्त्र और सूती वस्त्रका वेध माना जाता है। इन वस्तुओ-की अवस्थाओ और भावको ग्रहोके बलाबलानुसार अवगत करना चाहिये। यह वेध उत्तर दिशाके लिए अशुभ और भयकारक है। पुष्य नक्षत्रसे किसी ग्रहका वेध हो तो सोना, घी, चाँदी, चावल, लवण, सरसो, तेल, हीग, जीरा, धनिया आदि वस्तुओके साथ वेध माना जाता है। इन वस्तुओकी उपज और भाव वेध करने-वाले ग्रहके स्वभाव, गुण, बल और अवस्थाके अनुसार अवगत करना चाहिये। यह वेध दक्षिण दिशाके लिए अशुभ होता है। आश्लेष नक्षत्रसे किसी ग्रहका वेध हो तो गेहूँ, सोठ, मिर्च, कोदो और चावलके साथ वेध होता है, इस वेधमे पश्चिम दिशामे एक मासतक दु ख रहता है। मघासे किसी ग्रहका वेध हो तो तिल, तेल, घी, पुवाल, चना, अलसी, मूग, कागुके साथ, पूर्वाफाल्गुनीसे वेध हो तो कबल, रेशमी वस्त्र, ज्वार, तिल, चाँदी और रूईके साथ, उत्तराफाल्गुनीमें उडद, मूग, चावल, कोद्रव, नमक, सज्जी और सोडाके साथ, हस्तमे चन्दन, कपूर, देवदार, अगर, रक्तचन्दन, कद आदि वस्तुओंके साथ, चित्रामें सोना, रत्न, मूँग, उडद, मूगा, घोडा, हाथी, मोटर, आदिके साथ, स्वातिमें सुपाडी, मिर्च, सरसो, तैल, राई, हीग, खर्जूर, छोहारा आदि वस्तुओके साथ, विशाखामें जौ, चावल, गेहूँ, मूंग, राई, मसूर, मैथी आदि वस्तुओके साथ, अनुराधामे अरहर, अन्य विद्वल, चावल, मूंग, कगु आदिके साथ, ज्येष्ठामें गुग्गुल, गुड, ईख, लाख, कपूर, पारा, हीग, कोसा आदि वस्तुओके साथ, मूलमे श्वेत वस्तु, रस, धान्य, सैंधा नमक, कपास आदि वस्तुओंके साथ, पूर्वाषाढामें अजन, तुष, धान्य, घी, कदमूल, चावल आदि वस्तुओके साथ, उत्तराषाढामें घोडा, बैल, हाथी, लोहा आदि वस्तुओके साथ, अभिजित्में द्राक्षा, खर्जूर, सुपाडी, इलायची, मूंग, जायफल और घोडा आदि सवारीके साथ, श्रवणमें अखरोट, चिरौंजी, पीपल, सुपाडी, जौ, तुष, धान्य आदिके साथ, धनिष्ठामें सोना, चाँदी, पीत्तल, कासा, ताँबा आदि धातुएँ, मणि, रत्न और मोती आदिके-साथ, शतभिषामें तेल, कोद्रव, आवला, मद्य, आदि वस्तुओके साथ, पूर्वाभाद्रपदमे प्रियगु, जायफल, जावित्री, कस्तूरी, केसर, देवदारु

और सभी प्रकारकी औषधियाँ आदिके साथ, उत्तराभाद्रपदमें गुड, चीनी, खली, मिश्री, तैल, तिल, चावल, घी, मणि आदिके साथ, रेवतीमें श्रीफल, नारियल, मोती, मणि आदि वस्तुओंके साथ, अश्विनीमें चावल, ऊँट, घी, गेहूँ, ज्वार आदि वस्तुओंके साथ एव भरणीमें तुष, धान्य, ज्वार, मिर्च और औषधियोंके साथ वेध होता हैं। इन वेधोंका फलादेश ग्रहोंके बलाबल और शुभाशुभत्वके अनुसार अवगत करना चाहिये।

वेध द्वारा वस्तुओंका मूल्य, भाव आदिका भी निर्णय किया जा सकता है। सबसे प्रथम योग्य देश, काल और पण्य इन तीनोंके वेधका विचार करना चाहिये। देशके तीन भेद हैं—देश, मडल और स्थान। कालके भी तीन भेद हैं—वर्ष, मास और दिन। पण्यके भी तीन ही भेद बताये गये हैं—धातु, मूल और जीव।

देशके स्वामी राहु, शनि और बृहस्पति हैं। मडलके स्वामी केतु, सूर्य और शुक्र हैं तथा स्थानके स्वामी चन्द्रमा, मगल और बुध हैं। वर्षके स्वामी राहु, केतु, शनि और बृहस्पति हैं। महीनेके स्वामी मगल, सूर्य, शुक्र और बुध हैं तथा दिनका स्वामी चन्द्रमा है। धातुके स्वामी शनि, राहु और मगल हैं, जीवके स्वामी बुध, चन्द्रमा और बृहस्पति हैं तथा मूलके स्वामी केतु, शुक्र और सूर्य हैं। राहु, केतु, सूर्य बृहस्पति और मगल ये पुरुषसज्ञक, शुक्र और चन्द्रमा स्त्रीसज्ञक एव शनि और बुध नपुसकसज्ञक हैं। श्वेत वर्णके स्वामी शुक्र और चन्द्रमा, रक्तवर्णके स्वामी मगल और सूर्य, पीतवर्णके स्वामी बुध और गुरु एव कृष्णवर्णके स्वामी केतु, राहु और शनि हैं।

ऊपर जो देश आदिके स्वामी ग्रह बतलाये गये हैं, उनमेंसे जो ग्रह, वक्र, उदय, उच्च और क्षेत्र इन चारों प्रकारके बलोंमेंसे जो अधिक बलवाला होता है, वह बलवान् माना जाता है। ग्रह अपनी राशिपर हो तो पूर्ण, मित्रकी राशिपर हो तो तीन चौथाई, समग्रहकी राशिपर आधा और शत्रु ग्रहकी राशिपर चतुर्थांश बलवान माना जाता है।

जितने दिन ग्रह वक्री या उदय रहे, उसका आधा समय बीत जानेपर वक्री या उदयका मध्यफल होता है। इस समय ग्रह पूर्व बलवान् माना जाता है। इस मध्यकालसे जितना आगे या पीछे रहे उतना न्यून बल त्रैराशिकसे निकाल लेना चाहिये।

ग्रह उच्च राशिमें परमउच्च अंशपर पूर्ण बली तथा नीच राशिमें परम नीच, मेषपर हीनबली होता है। इन दोनोंके मध्यका त्रैराशिक द्वारा गणितसे निकाल लेना चाहिये।

इस प्रकार जो देश आदिके स्वामी हैं, वे ग्रह अपने-अपने देश आदिको वेधनेवाले ग्रहके स्वामी, मित्र, शत्रु या सम हैं, इसपरसे यत्नपूर्वक विचार करना चाहिये। देश आदिका वेध करनेवाला ग्रह अशुभ हो तो अशुभ फल, स्वय वेध करनेवाला हो तो चतुर्थांश फल, वेधकर्त्ता मित्र ग्रह हो तो आधा फल, समान ग्रह हो तो तीन चौथाई और शत्रु ग्रह हो तो पूर्णफल प्राप्त होता है। देश आदिका वेध करनेवाला ग्रह शुभ हो तो शुभ फल देता है। स्वामी स्वय वेधकर्त्ता हो तो पूर्णफल, मित्र ग्रह हो तो तीन-चौथाई फल, समग्रह हो तो आधा फल और शत्रुग्रह हो तो चौथाई फल होता है। वेधकर्त्ता ग्रह परिपूर्ण दृष्टिसे देखे तो उसीके अनुसार फल अवगत करना चाहिये।

मेषादि द्वादश राशि चक्रमें वेधकर्त्ताकी दृष्टि जिस वर्ण, स्वर आदिकी राशिपर हो तो वह दृष्टि उसके वर्ण, स्वर आदिपर भी मानी जाती है। सर्वतोभद्र चक्रमें स्वर और वर्णकी तिथिका वेध होनेसे स्वर और वर्ण भी वेधे जाते हैं और उन तिथिवर्णोंकी राशिपर वेध हो तो उन तिथि स्वर और वर्णपर भी दृष्टि होती है। वेधकर्त्ता ग्रह चाहे अशुभ हो या शुभ परन्तु तिथिको शुक्लपक्षमें वेधे तो पूर्वोक्त वेधफल जितना हो उतना पूर्व

फल देता है और कृष्णपक्षमें वेधे तो आधा फल देता है। अपने-अपने अशोमें ग्रहकी पूर्ण दृष्टि समझनी चाहिये। वेधकर्त्ता ग्रहकी दृष्टि न हो और केवल वेध ही हो तो कुछ भी शुभाशुभ फल नही होता।

यदि वेधकर्त्ता ग्रह वर्ण आदि पाँचोको पूर्व दृष्टिसे देखे और वेधे तो शुभ-ग्रह पाँच विश्वा और क्रूर ग्रह चार विश्वा फल देते हैं। वर्ण, स्वर, तिथि, नक्षत्र और राशि इन पाँचोमे वेधकर्त्ता ग्रहकी जितने पाद दृष्टि हो उसके अनुसार ग्रहोंके विश्वे कहना चाहिये। इस प्रकार जहाँ शुभ और अशुभ दोनो प्रकारके ग्रहोके विश्वे प्राप्त हो, वहाँ उन दोनोका परस्पर अन्तर करे, इसमें शेष शुभग्रहोके विश्वा रहें तो शुभ फल और क्रूर ग्रहोंके रहें तो अशुभ फल जानना चाहिये। जिस वस्तुका वेध द्वारा निर्णय करना हो उस वस्तुका उस समय जो भाव हो उसके बीस विश्वे अर्थात् बीस भाग कल्पना करे, उनमेंसे एक भाग तुल्य विश्वे मानकर पूर्वोक्ति क्रमसे प्राप्त शेष विश्वोको, शुभ ग्रहके हो तो उसमे जोड दे और क्रूर ग्रहके हो तो घटा दे। ऐसा करनेसे यदि बीससे जितने अधिक हो, उतने विश्वे वस्तु मन्दी और जितने न्यून हो, उतने विश्वे वस्तु महगी होती है। तात्पर्य यह है कि वस्तुके विश्वे बढे तो वस्तुकी वृद्धि और मूल्यकी हानि एवं विश्वे घटे तो वस्तुकी हानि और मूल्य-की वृद्धि होती है।

सर्वतोभद्र चक्रके अलावा सप्तशलाका चक्रसे भी तेजी मदी, देशका सुभिक्ष दुर्भिक्ष, वर्षा-अवर्षा आदि-का ज्ञान किया जा सकता है।

सप्त शलाका चक्र बनाकर उसपर कृत्तिकासे लेकर अभिजित् सहित भरणी तक २८ नक्षत्र रखकर वेध का विचार करना चाहिये। तथा जो जो ग्रह जिस-जिस नक्षत्रपर हो, उसे भी स्थापित कर देना चाहिये। एक एक शलाकामें आमने-सामने कोई भी दो ग्रहके आनेसे वेध होता है। किन्तु रविसे शनि और चन्द्रसे बुधका वेध नही होता।

(चन्द्रमा) सप्तशलाका चक्र

उदाहरण—भरणी नक्षत्रपर रवि, शुक्र हैं और मघापर गुरु है, अत इनका परस्पर वेध हुआ माना जायगा। मृगशिरापर चन्द्रमा है और उत्तराषाढापर शनि है, अत इन दोनोंका भी परस्पर वेध माना जायगा। वस्तुके स्वामीका वेध यदि शुभ ग्रहसे हो तो भाव मन्दा, रवि-मगलसे हो तेज, शनि-केतुसे अधिक घट-बढ एव राहुसे सम रहता है।

देश, नगर, ग्रामके नक्षत्रानुसार राशि ज्ञातकर उसके स्वामीके वेधसे शुभाशुभ फल अवगत करना चाहिये। नगर, ग्राम या देशका स्वामी शुभग्रहसे विद्ध हो तो उस नगर या ग्रामका कल्याण और क्रूर ग्रहसे विद्ध हो तो कष्ट होता है। नाना प्रकारकी विपत्तियाँ आती हैं। प्रमुख-प्रमुख वस्तुओंके स्वामियोंकी तालिका दी जाती है।

गेहूँ, जूट, सन, लकडी आदिका स्वामी सूर्य, औषधि, ज्वार, चावल, चाँदी, घी, नमक, मोती, जवाहिरात, चीनी, कपास, रुई तथा कपडोंके स्वामी चन्द्र और शुक्र, अलसी, तम्बाकू, गुड, मिरच, लाल वस्त्र तथा ताँबेका स्वामी मगल, हरे धान्य, फल, फूल, शेयर, नोट, हुण्डी, निबन्ध, लेख, कागजात और पुस्तकका स्वामी बुध, हल्दी, सुवर्ण, मधुर रस और चनाका स्वामी गुरु, एव बिनोला, तिल, मूँगफली, अफीम, खसखस, लोहा और पत्थरका स्वामी शनि होता है। जिन वस्तुओंकी तेजी-मन्दी जाननी हो उनके स्वामीका निर्णय प्राय उनके रग और गुणसे करना चाहिये। राशि प्रथम अक्षरसे जाननी चाहिये।

शनि और राहुके साथ मगल और रविसयोगका फल

अगारो अग्गिकरो अण्णविणासो य जतुपीलयरो।
तत्थ विदिसाविभागे दुक्ख वणियाण णिवमरण ॥ २७ ॥

अर्थ—राहु या शनिके साथ मगल सयुक्त हो तो अग्निका भय होता है तथा राहु या शनिके साथ सूर्य हो तो अन्नका नाश होता है और प्राणियोंको पीडा होती है। इस योगसे विदिशाओंमें व्यापारियोंको दु ख और राजाओंका मरण होता है।

तिथियोंपरसे समय-कुसमयका विचार

तिहिक्खयो सियपक्खे भद्दवयपोसमाहमासाणं।
णिवमरण दुब्भिक्ख विहिकुलहाणिं च मासेसु ॥ २८ ॥

अर्थ—भाद्रपद, पौष और माघ महीनेमें शुक्लपक्षमें तिथिका क्षय होना—घटना राजाका मरण, दुर्भिक्ष, विधिकुल—ब्रह्मवशकी हानि आदि फलोंको उत्पन्न करता है।

विवेचन—वर्षका शुभाशुभ जाननेके लिए ज्योतिष शास्त्रमें तिथिक्षय, तिथिवृद्धि और तिथियोंके साथ वारके सम्बन्धका विचार किया गया है।

चैत्र शुक्ला अष्टमीके दिन बुधवार या मगलवार हो तो वर्षा नही होती है अथवा अत्यल्प वर्षा होती है। चैत्र शुक्ल पञ्चमीको रोहिणी नक्षत्र हो तथा आकाश बादलोंसे आच्छादित हो तो वर्षा अच्छी होती है। फसल भी अच्छी होती है। चैत्र शुक्ला द्वितीयाको चारो दिशाओंमें वायु चले और बादल न हो तो अनावृष्टि होती है। चैत्र शुक्ला पूर्णमासीके दिन स्वाति नक्षत्र हो और बादलोंके साथ बिजली भी चमके तो खण्डवृष्टि होती है। शासकोंमें विरोध होता है तथा प्रजाको अनेक प्रकारके कष्ट उठाने पडते हैं। चैत्र शुक्ल पक्षमें द्वितीया, पचमी या दसमीका अभाव हो तो देशमें उपद्रव होता है, अन्नभाव सस्ता होता है।

वैशाखमासके कृष्णपक्षमे प्रतिपदाकी वृद्धि हो तो धान्यका विनाश और नक्षत्रकी वृद्धि हो तो खूब वर्षा होती है। वैशाख कृष्णा पचमीके दिन रविवार हो तो आगामी वर्ष सक्रान्तिके दिन वर्षा नही होती है। वैशाख शुक्ला पचमीके दिन शनिवार और आर्द्रा नक्षत्र हो तो सब वस्तुएँ सस्ती होती है और भाद्रपदमे खूब वर्षा होती है। वैशाख शुक्ला पचमीको रविवार, सोमवार आदि जो भी वार पडे उसके अनुसार क्रमश मन्दवृष्टि, अतिवृष्टि, युद्ध, वायु, सुभिक्ष, कलह और अनाजका नाश होता है। वैशाख शुक्ला सप्तमीको धनिष्ठा या श्रवण नक्षत्र हो तो काली वस्तु महँगी और सफेद वस्तु सस्ती होती है। अक्षय तृतीयाके दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, कृत्तिका हो तो मध्यम वर्षा और मृगशिर नक्षत्र हो तो दुष्काल पडता है। वैशाख मासमें यदि पांच मगल हो तो सर्वत्र भय, वर्षाका अभाव और धान्य भाव तेज होता है। वैशाख शुक्ला अष्टमीको शनिवार हो तो सूखा, प्रजाका नाश और छत्रभग होता है। वैशाखमासकी नवमी मगलवारको रोहिणी, तीनो उत्तरा, मघा या रेवती नक्षत्र हो तो पृथ्वीपर नाना प्रकारके उपद्रव होते है। वैशाख चतुर्दशीके दिन गुरुवार या शुक्रवार हो तो पृथ्वीपर खूब धान्य पैदा होता है। वैशाखकी अमावस्याको रेवती नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, रोहिणी हो तो दुख, अश्विनी हो तो मध्यम, भरणी हो तो कष्ट, कृत्तिका हो तो जलवर्षा, लूटखसोट एवं आर्द्रा हो तो भयकर दुष्काल पडता है। अक्षय तृतीयाके दिन गुरुवार और रोहिणी नक्षत्र हो तो सभी प्रकार धान्य खूब उत्पन्न होते है, भाव भी इनका सस्ता रहता है।

जेष्ठ मासके प्रथम पक्षकी प्रतिपदा रविवारको हो, तो पवन अधिक चले, मगलवारकी हो तो व्याधि करे, बुधवारकी हो तो दुर्भिक्ष और खण्ड वर्षा, गुरु या शुक्रवारकी हो तो धन-धान्यकी पूर्णता और शनिवारकी हो तो जलका अभाव, प्रजाको कष्ट एव छत्रभग होता है। ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया और तृतीया आर्द्रा नक्षत्र युक्त हो तो बडा दुर्भिक्ष, प्रजाको कष्ट एव धान्य भाव महँगा होता है। ज्येष्ठ कृष्ण दशमीको रेवती नक्षत्र हो तो सुखकारक, एकादशीको हो तो खण्डवृष्टि, द्वादशीको हो तो कष्टदायक है। ज्येष्ठ शुक्ला दशमी शनिवारको हो तो वर्षाका निरोध, गायोका विनाश, प्रजाको शोक और व्याकुलता होती है। ज्येष्ठ पूर्णिमाके दिन मूल नक्षत्र आ जाय तो सर्वत्र धन-धान्यकी वृद्धि एव जलकी वर्षा होती है। देशके नवीन उत्थानके लिए नयी-नयी योजनाएँ बनाई जाती है।

आषाढ शुक्ला प्रतिपदाके दिन पुनर्वसु नक्षत्र जितनी घटी हो उतने ही प्रमाण वर्षा हो, १५ घटी रहनेसे एक मास, ३० घटी होनेसे दो मास, ४५ घटी होने पर तीन मास और ६० घटी प्रमाण होने पर चार मास वर्षा होती है। आषाढ कृष्ण दशमीके दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, एकादशीको हो तो मध्यम और द्वादशीको हो तो दुर्भिक्ष होता है। त्रयोदशीके दिन रोहिणी हो तो पवन चले और चतुर्दशीको हो तो राजयुद्ध, प्रजाको शोक एव फसलकी कमी होती है। आषाढ शुक्ला पञ्चमीको रविवार आदिमेसे जो वार हो उसके अनुसार क्रमश वर्षा, अच्छी वर्षा, अति वर्षा, उर्ध्ववायु, प्रधान, प्रलय और विनाश ये फल होते है। आषाढ शुक्ला नवमी शनिवारको अनुराधा नक्षत्र हो तो क्वचित् धान्याभाव और धान्योत्पत्ति होती है। आषाढके प्रथम पक्षमे प्रतिपदादि तीन तिथियोमे श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्र हो तो धान्य सग्रह करना अच्छा है, लाभ होता है। आषाढ कृष्ण षष्ठीको शनिवार हो तो गेहूँ खरीदनेसे कार्तिकमें दूना लाभ होता है। आषाढमे अष्टमी शनिवारको रेवती नक्षत्र हो तो वर्षा न हो और बडा कष्ट हो। आषाढ शुक्ल एकादशीको शनिवार हो तो फसलको चूहोंका उपद्रव, रविवार हो तो टिड्डीका उपद्रव और मगल हो तो अन्य नाना प्रकारके उपद्रव होते है। धान्यका भाव महँगा होता है और दुष्काल पडता है। आषाढ शुक्ला एकादशीको सोम, गुरु या शुक्र हो तो खूब जल्दी वर्षा, सुभिक्ष और पृथ्वी धन-धान्यसे पूर्ण होती है। आषाढ मासमे कर्क सक्रान्तिके दिन शनिवार हो तो दुर्भिक्ष और धान्य भाव महँगा होता है। चतुर्दशीके दिन सोमवार हो तो धान्य और तृणका

अभाव होता है। आषाढ़ी पूर्णिमाके दिन पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रके होने पर देशमें सुभिक्ष, मांगलिक कार्योंकी सम्पन्नता, मूल नक्षत्र होने पर दुर्भिक्ष, रसका अभाव और उत्तराषाढ़ा होने पर सुकाल होता है।

श्रावण कृष्णा प्रतिपदाके दिन गुरुवार हो तो मूंग, उड़द, तिल और तैल महगे होते है। श्रावणकी नवमी शनिवारके दिन हो तो संताप, देशमें उपद्रव और अराजकता बढ़ती है। श्रावणमासमें दशमी शनिवार-के दिन सिंह संक्रान्ति हो तो पृथ्वी मेघोंसे दुःखी, वर्षाकी अधिकता होती है। श्रावण कृष्णा एकादशीके दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो मध्यम वर्षा, रोहिणी हो तो सुभिक्ष और मृगशिरा हो तो दुर्भिक्ष होती है। श्रावण शुक्लपक्षमें किसी तिथिका क्षय हो तो कार्त्तिक मासमें निश्चय छत्रभंग होता है। श्रावण कृष्णा प्रतिपदाके दिन धृति योग हो तो धान्यका सग्रह करना उचित है और अवशेष योगोंके होनेपर विक्रय करना उचित है। श्रावण या भाद्रपदके कृष्णपक्षकी प्रतिपदाके दिन श्रवण या धनिष्ठा नक्षत्र हो तो लोकमे निश्चय सुभिक्ष होती है। इस महीनेकी कृष्णा द्वादशीके दिन मघा या तीनो उत्तराओंमेंसे कोई नक्षत्र हो और वर्षाका योग हो तो अल्प जल वर्षा होती है। त्रयोदशीके दिन रविवार और रेवती नक्षत्र हो तो देशमें धन-धान्यकी खूब उत्पत्ति होती है, प्रजा सुखी रहती है तथा ऐश्वर्यकी वृद्धि होती है। श्रावण कृष्णा सप्तमीके दिन सोमवार हो तो पृथ्वी जलसे पूर्ण, व्यापारकी उन्नति एव रस-धान्यकी उत्पत्ति होती है। श्रावण कृष्णा चतुर्दशी आर्द्रा नक्षत्रसे युक्त हो तो धान्यका सग्रह करना उचित है। अमावस्याके दिन विशाखा आदि आठ नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष, शतभिषा आदि ग्यारह नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो शुभ और पुष्यादि चार नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो वर्ष मध्यम होता है। उस दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो ईति उपद्रव होता है। आर्द्रा, शत-भिषा, चित्रा, स्वाति, कृत्तिका और भरणी इन नक्षत्रोंमें यदि अमावस्या आ जाय और नक्षत्रके प्रमाणसे तिथिके घटी-पल कम हो तो अन्न सचय करनेसे लाभ होता है। श्रावण पूर्णिमाको स्वाति नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, धन-धान्यकी वृद्धि और देशके व्यापारकी वृद्धि होती है।

भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदाके दिन गुरुवार और श्रवण नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, समयपर यथेष्ट वर्षा, एव धन-धान्यकी वृद्धि होती है। भाद्रपद कृष्णा अष्टमीको रोहिणी नक्षत्र हो तो शुभ फल, शुक्लपक्षमें नवमीको रविवार और मूल नक्षत्र हो तो भय, आतक और अकाल पडता है। भाद्रपद कृष्णा द्वितीया सोमवारको हो तो धान्यकी प्राप्ति और पशुओंकी वृद्धि, चतुर्थी शनिवारको हो तो देशभग और दुर्भिक्ष एव अष्टमी शनिवार और अश्लेषा नक्षत्रमें पडे तो वर्षाका अभाव होता है। भाद्रपद शुक्ला चतुर्थीको बृहस्पति, शुक्र या सोमवार पडे और साथ ही उत्तराफाल्गुनी, हस्त या चित्रा नक्षत्र हो तो निश्चय ही सुभिक्ष, समयपर वर्षा, शान्ति और धान्यभाव सस्ता होता है। भाद्रपद तृतीयाके दिन मगलवार और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो आकाशमें केवल बादल दिखलायी पडते हैं, वर्षा नही होती। भाद्रपदकी अमावस्याको रविवार हो तो घी महगे हों, मगल या बुधवार हो तो धान्य महँगे और शनिवार हो तो तैल महँगे होते हैं। गुरुवार हो तो अच्छी वर्षा, सुभिक्ष, कल्याण, दुःखका नाश, प्रजा सुखी और आरोग्यता होती हैं। अमावस्याके दिन शुक्रवार हो तो उन्नत मेघ, कृषिमे उन्नति और चोरोंका उपद्रव होता है।

आश्विन शुक्ला प्रतिप्रदाको शनिवार हो तो धानका सग्रह करना अच्छा होता है। आगे धान्य भाव महँगा होता है। शुक्ल द्वितीया सोमवार और मूल नक्षत्रमें पडे तो भी धान्यका सग्रह करना लाभदायक होता है। तृतीयाके दिन मगल या शनिवार हो तो पृथ्वीपर गर्मी प्रबल पडती है, दूसरे वार हों तो धान्य भाव सस्ता होता है। चतुर्थीको रविवार हो तो घी बेचना और अनाज खरीदना लाभदायक होता है। आश्विन शुक्ला सप्तमी शनिवारको श्रवण या घनिष्ठा नक्षत्र हो तो जगत्में सुख और शान्ति होती है। विदेशोंसे

मैत्री भाव स्थापित होता है। शुक्ला अष्टमीको बुधवार और नवमीको मगलवार हो तो घी, मूँग, कपास, उडद आदिका खरीदना अच्छा होता है। आश्विन शुक्ला एकादशीको शनिवार हो तो चोरोका उपद्रव, छत्र-भग और अनेक प्रकारका उत्पात होता है।

कात्तिक शुक्ला प्रतिपदाको बुधवार हो तो कही वर्षा और कही अनावृष्टिके कारण वर्ष मध्यम फल-दायक होता है। कात्तिक शुक्ला प्रतिपदा बुधवार हो तो धान्यका भाव दूना, तिगुना और चौगुना भाव होता है। कात्तिक शुक्ला सप्तमीको शनिवार हो तो धान्यका विनाश और श्वेत वस्तु महँगी हो और तीन मासमे दुगुना लाभ हो। कात्तिकमें रविवार आर्द्राका योग हो तो राजाओमे युद्ध, देशमे अशान्ति तथा रविवार और रोहिणीका योग हो तो आगे वर्षाका रोध होता है। कात्तिक पचमीको आर्द्रा हो तो तृणका सग्रह करना उचित होता है। कात्तिकमें मगलवारको मूल नक्षत्र हो तो मागलिक कार्योके अनुकूल नही होता। कृष्णा सप्तमीको शनिवार हो तो अन्न महँगा होता है। कात्तिक कृष्णा दशमी शनिवारको हो तो रोग, शोककी वृद्धि, एव शनिवार और मघा नक्षत्र हो तो घी और सुपाडी महँगे होते है। कात्तिककी अमावस्याको यदि शनिवार हो तो धान्यका विनाश, मगलवार हो तो पृथ्वीपर अग्निका उपद्रव, रविवार हो तो राजाओमें युद्ध होता है।

मार्गशीर्ष चतुर्थीको रेवती नक्षत्रके दिन मगलवार हो तो प्रत्येक गाँवमे अग्निभय और जगत्मे क्लेश होता है। मार्गशीर्ष द्वादशीको मगलवार हो और इस दिन सूर्यसक्रान्ति हो तो अगला वर्ष अत्यन्त अशुभ-कारक होता है। पचमीको गुरुवार हो तो पाँच मास सुभिक्ष, प्रतिपदाको पुष्य नक्षत्र हो तो पशुओको कष्ट और अगले वर्षमे वर्षाका अभाव, तृतीयाको पुनर्वसु तथा आर्द्रा नक्षत्र हो तो धान्य सस्ते और राजा प्रजा प्रसन्न रहते है। इस महोनेमे शुक्लपक्षमे चतुर्थी और अष्टमीका क्षय होना और वृद्धिका होना अशान्तिकारक है।

पौष शुक्ला चतुर्थीको शनिवार हो तो तीन मास दु ख रहता है। पौष सप्तमी सोमवारको हो तो भैंसोको रोग उत्पन्न होता है। पौष नवमीको शनिवार हो तो जब तक सूर्य आर्द्रामे न आवे तब तक धान्य सग्रह करना उचित है। पौष शुक्ला एकादशीको कृत्तिका हो तो लाल वस्तुओके व्यापारमे अच्छा लाभ होता है। पौष अमावस्याको पूर्वाषाढा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र हो और शनि, रवि या मगलवार हो तो अगले वर्षके लिये अशुभ सूचक है। पौष पूर्णिमाको पुष्य नक्षत्र हो तो देशमे धन-धान्यकी उत्पत्ति खूब होती है।

माघ मासकी प्रतिपदाको बुधवार हो तो तीन महीने तक वस्तुएँ तेज होती है और अगला अर्ष अच्छा नही रहता। माघ कृष्णा प्रतिपदा, द्वितीया या तृतीयाका क्षय हो तो देशके व्यापारियोको अच्छा लाभ होता है। माघ शुक्ला सप्तमी रविवार या सोमवारको हो तो दुर्भिक्ष, राजाओमें विग्रह और शनिवारको हो तो धन-धान्यकी उत्पत्ति, आरोग्यता और सुभिक्ष होता है। माघ मासकी प्रतिपदाको शनिवार हो तो रोग, देशमें सहयोगका अभाव, उपद्रव और नाना प्रकारके उत्पात होते है। बृहस्पति या रविवार हो तो यह वर्ष बहुत अच्छा रहता है, धन-धान्यकी वृद्धि होती है। माघकी चतुर्थी शनिवारको हो तो दुर्भिक्ष, मृत्यु, चोर और अग्निका भय होता है। माघ शुक्ला अष्टमीको कृत्तिका नक्षत्र न हो तो श्रावण वर्षाकी कमी रहती है। माघ शुक्ला सप्तमीको भरणी नक्षत्र हो तो अराजकता फैलती है, अनेक तरहके कर लगाये जाते है, जिससे प्रजामें असन्तोष बढता है। गुप्त षडयन्त्र भी होते है। देशका वातावरण बहुत ही क्षुब्ध रहता है। माघके कृष्ण पक्षमें नक्षत्रकी वृद्धि हो और शुक्ल पक्षमें नक्षत्रका अभाव हो तो देशमें सुख-शान्ति रहती है। इस महीनेमें तिथिवृद्धि भी होती है, जिससे देशमें सुख-शान्ति रहती है। यदि माघ मासके शुक्ल पक्षमें तिथि क्षय हो तो देशके लिए अत्यन्त अनिष्टकारक होता है। इस पक्षमें तिथि क्षय होनेसे महामारी, रोग, उपद्रव और नाना-प्रकारके उत्पात होते हैं।

फाल्गुन कृष्णा षष्ठीको चित्रा नक्षत्र हो तो तीन महीने तक सुभिक्ष, और स्वाति नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष होती है। फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशीको रविवार युक्त आर्द्रा नक्षत्र हो तो तीन महीने तक वर्ष कष्टदायक होता है और सोमवार हो तो सुभिक्ष होती है। फाल्गुनके कृष्णपक्षमें प्रतिपदाको शतभिषा नक्षत्र हो तो उसके घटी नक्षत्रोंके प्रमाण वर्षका स्वरूप अवगत करना चाहिये। फाल्गुन पूर्णिमाके दिन चारो प्रहरोमें पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो चार महीने सुभिक्ष रहे। यदि दो प्रहर मघा नक्षत्र हो तो दो महीने महँगे रहते हैं। यदि इस दिन मघा नक्षत्र पूर्ण हो तो चारो ही महीने महँगे होते हैं। दो प्रहर प्रथम पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो और आगेके दो प्रहर उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो दो महीने सुभिक्ष और सुख होता है। फाल्गुन कृष्ण पक्षमें तिथिका वढना और शुक्लपक्षमे तिथिका घटना देशकी उन्नतिके लिए वाधक है। यदि फाल्गुनशुक्ला चतुर्थी शनिवारको पडे तो अकाल, रविवारको पडे तो खण्ड वृष्टि, सोमवारको पडे तो सुभिक्ष, मगलवारको पडे तो उपद्रव, महँगाई, अनाचार और लूट-खसोट, वुधवारको पडे तो शान्ति, सुख, घृतादि पदार्थोंकी वहुलता और उद्योगोंका विकास, गुरुवारको पडे तो सुकाल, सुव्यवस्था, सम्मान और प्रतिष्ठा एव शुक्रको पडे तो समयपर वर्षा, शान्ति, प्रेम और वहुधान्योत्पत्ति होती है। फाल्गुन कृष्णा पचमी और अमावस्या इन तिथियोको वादल और प्रकृतिके अन्य वातावरणसे सुभिक्ष, दुर्भिक्ष और समय-असमयका विचार करना चाहिये।

मासक्षयका फल

मासक्खओ य पुण्णिम तुल्ला य अहियतरी हीणा।
दुब्भिक्ख च महग्घ सुमहग्घं होइ सुब्भिक्ख ॥ २९ ॥

अर्थ—क्षय मास हो या पूर्णिमाका क्षय हो तो दुर्भिक्ष और महँगाई होती है, पूर्णिमा सम्पूर्ण हो तो समान भाव और अधिक या विशेष अधिक या कम हो तो सुभिक्ष होता है।

विवेचन—जिस वर्ष क्षय मास पडता है, उस वर्ष देशमें दुर्भिक्ष, महँगाई, उपद्रव और अनेक प्रकार के सकट आते हैं। जिस महीनेमें दो सक्राति होती हैं, उसमें क्षयमास होता है और जिसमें सूर्य संक्रान्ति नही होती है वह अधिक मास कहलाता है। क्षयमास कार्त्तिकादि तीन महीनोमें ही होता है और जव कभी क्षय मास होता है तो उस वर्षमें दो अधिक मास होते हैं। अधिक मासकी स्थितिमें दो श्रावण हो तो दुष्काल, पृथ्वीका नाश और प्रजाका क्षय, दो भाद्रपद हो तो इच्छित धान्य प्राप्ति, दो आश्विन हो तो सैन्य, चोर और रोग भय तथा दक्षिण दुर्भिक्ष, दो कार्त्तिक हो तो सुभिक्ष परन्तु युद्धसे मनुष्योंको कष्ट, दो मार्गशीर्ष हो तो परम सुख, दो पौष हो तो सुभिक्ष, और राजाओको जय, दो माघ मास हो तो राजाओको भय, दो फाल्गुन हो तो सुभिक्ष, क्षत्रियोको कुशल, दो चैत्र हो तो शुभ, धान्य प्राप्ति और व्यापारसे लाभ, दो वैशाख हों तो धान्य की निष्पत्ति और क्वचित् अशुभ, दो ज्येष्ठ मास हो तो राजाका विनाश और धान्यकी उत्पत्ति एव दो अषाढ हो तो व्यथा और खण्ड वृष्टि होती है। गणित ज्योतिषके सिद्धान्तानुसार चैत्रादि सात महीनेके ही अधिक मास होते हैं, परन्तु जिस वर्ष क्षयमास पडता है, उस वर्ष वारह महीनोंमेंसे कोई भी दो महीने अधिक मास हो सकते हैं।

जिस वर्ष कार्त्तिक क्षयमास होता है, उस वर्ष देशमें भयकर दुर्भिक्ष, अवर्षण, उत्पात, अराजकता और खण्ड वृष्टि होती है। देशका व्यापार भी ठप हो जाता है और सारी प्रगति रुक जाती है। मार्गशीर्ष क्षय मास होनेपर धन-धान्यकी कमी, अतिवृष्टि या अनावृष्टि, वाढ, फसलमें कीडाका लगना आदि फल होते हैं। पौषमासका क्षय होनेपर आन्तरिक कलह, फसलकी क्षति, उपद्रव एव शासकोका प्रभाव क्षीण होता है।

प्रत्येक महीनेकी पूर्णिमाका क्षय होना अच्छा नही माना जाता है। पूर्णिमा जितनी अधिककी घटी-प्रमाण होती है, उतनी ही वस्तुओकी महँगाई होती है। एक ही पक्षमे दो तिथियोका क्षय हो तो अनाज महँगा और लोकमे वैरभाव बढता है। पक्षका क्षय हो तो शासककी मृत्यु, उपद्रव और राज्यके सामने आर्थिक सकट प्रस्तुत होता है। श्रावणमें पचमी, भाद्रपदमें सप्तमी, आश्विनमें नवमी और कार्त्तिकमें पूर्णमासीका क्षय हो तो अनिष्ट होता है। जिस महीनेमें शुक्लपक्षको तृतीया या चतुर्थीका क्षय हो तो उस महीने मूग और घी विशेष रूपसे महँगे होते हैं। जिस महीनेमें दसमीका क्षय होता है, उस महीनेमें घी महँगा होता है। शुक्लपक्षमें प्रतिपदा, पचमी या चतुदशी बढे तो सुभिक्ष और घटे तो दुर्भिक्ष होता है। जिस वर्षमें चतुर्दशीके घटचात्मक प्रमाणकी अपेक्षा आषाढ़ी पूर्णिमाका घटचात्मक मान कम हो तो अन्न महँगा, सम हो तो समान और अधिक हो तो अन्नभाव सस्ता होता है।

मासनक्षत्रका फल

मासरिक्खा य पुण्णमि महिला-गोउलसुहा य अहियतरा ।
सुभिक्ख सुमहग्घं रिक्खाभावे महग्घयरं ॥ ४० ॥

अर्थ—मास नामक नक्षत्र यदि पूर्णिमाको आये तो स्त्रियोको आनन्द और चौपाये सुखी होते हैं। दूध-घीकी वृद्धि होती है सुभिक्ष और समर्घता होती है। यदि मास नक्षत्र पूर्णिमाको न पडे तो उस मासमे महँगाई होती है।

विवेचन—मास नक्षत्रसे तात्पर्य यह है कि प्रत्येक महीनेकी पूर्णिमासीको वह नक्षत्र अवश्य पडता है। जैसे चित्रा नक्षत्रसे चैत्र, विशाखासे वैशाख, ज्येष्ठासे जेष्ठ, उत्तराषाढासे आषाढ, श्रवणसे श्रावण आदि मास होते हैं।

मासनक्षत्रबोधक चक्र

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्त्तिक	अगहन	पौष	माघ	फाल्गुन
चित्रा	विशा-खा	ज्येष्ठा	उत्तराषाढा	श्रवण	पू० भाद्रपद	अश्विनी	कृत्तिका	मृगशिर	पुष्य	मघा	उत्त० फाल्गुनी

मासनक्षत्रके पूर्णिमाको आनेसे देशमें सुखसमृद्धि, व्यापारमें वृद्धि, जनतामें प्रेम और सहयोग, नर-नारियोको आनन्द, पशुओको सुख एव देशका आर्थिक विकास होता है। जिस पूर्णिमाको मासनक्षत्र नही आता, उस महीनेसे आगेके महीनोमें वस्तुओके भाव घटते हैं। घी, गुड और चाँदीका भाव कुछ तेज होता है। मासनक्षत्रके घटी दलोके प्रमाणसे भी वस्तुओके भावोका निश्चय किया जाता है। जिस पूर्णिमासीको मासनक्षत्र न पडकर आगेवाला नक्षत्र पडता है, उस पूर्णिमासीका दिन वस्तुओके सस्ते भावका सूचक होता है। जिस पूर्णिमामे पहलेवाला नक्षत्र पडता है, उस पूर्णिमाका दिन वस्तुओकी महँगाईका सूचक होता है। मासनक्षत्रपरसे देशके स्वास्थ्य, आयु, आरोग्य और ऐश्वर्यके सम्बन्धमे भी निश्चय किया जाता है। इसप्रकार सभी दृष्टियोंसे लोकविजय-यन्त्र द्वारा वर्षका शुभाशुभ फल अवगतकर सावधानीपूर्वक अपना जीवनयापन करना चाहिये।

परिशिष्ट १

लोकविजय-यन्त्रके अतिरिक्त अन्य यन्त्रोके द्वारा भी वर्षाका परिज्ञान प्राप्त किया जाता है। यहाँ आवश्यक समुद्र-चक्र, नाडी-चक्र, कुम्भ-चक्र, कुलाल-चक्र, विजय-चक्र आदि कतिपय चक्रोको अकित किया जाता है। इससे वर्षा एव सुभिक्षके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त होनेमें सुविधा होती है।

समुद्रचक्र

चक्रमें अनुमान-विधि और फलादेश

मेष सङ्क्रान्तिसे राशिचक्र लिखकर उनमे २८ नक्षत्रोका स्थापन करना चाहिए। प्रारम्भमें दो नक्षत्र समुद्रमे लिखे। तदनन्तर एक-एक लिखना चाहिए। अर्थात् तटपर एक, समुद्रपर दो, पर्वत-शृङ्गपर एक और सन्धिमें एक इस क्रमसे नक्षत्रोकी स्थापना करनी चाहिए।

इस क्रमानुसार स्थापित नक्षत्रोमें चार सागर, आठ तट, आठ सन्धि और चार गिरि शृङ्ग होते है। फलादेश रोहिणी नक्षत्रके अनुसार ज्ञात किया जाता हैं। रोहिणी यदि सन्धि स्थानोमे हो तो खण्ड-वृष्टि, पर्वत पर हो तो विन्दुमात्र वर्षा, तटपर होनेसे सुवर्षा और समुद्रपर होनेसे महावृष्टि होती है।

समुद्रचक्रके निर्माणकी अन्य विधि यह है कि कृतिकासे प्रारम्भकर नक्षत्रोको दो, दो, एक और पुन दो इस क्रमसे विभक्त करे और इन चारो भागोको सिन्धु, तट, गिरि एव सन्धि इस चक्रमें, बाँट दें। शनि और चन्द्रमा अथवा सूर्य और मङ्गल गिरिपर स्थित हो तो प्रचुर वर्षा, सुभिक्ष और धान्यकी समृद्धि होती है।

मेष-सक्रान्तिके दिन जहाँ दैनिक नक्षत्र दिखलाई पडे उसोके अनुसार वर्षा और सुभिक्षका विचार करना चाहिए। समुद्र-नक्षत्र होनेसे अतिवृष्टि, तटका नक्षत्र होनेसे सुवृष्टि, सन्धिका नक्षत्र होनेसे खण्ड वर्षा और पर्वतका नक्षत्र होनेसे वर्षाभाव होता है।

सप्तनाडी-चक्र

दिशा	दक्षिणमें निर्जलनाडी			मध्य	उतरमे सजल नाडी		
नाडीके नाम	चण्ड	समीरा	दहना	सौम्या	नीरा	जला	अमृता
स्वामी	शनि	गरु या सूर्य	मगल	सूर्य या गुरु	शुक्र	वुघ	चन्द्रमा
नक्षत्र	कृत्तिका विशाखा अनुराधा भरणी	रोहिणी स्वाति ज्येष्ठा अश्विनी	मृगशिर चित्रा मूल रेवती	आर्द्रा हस्त पू० षा० उ भाद्र	पुनर्वसु उ० फा० उ० पा० पू० भा०	पुष्य पू०फा० अभिजित् शतभिपा	अश्लेषा मघा श्रवण घनिष्ठा

चक्र-निर्माण-विधि और फलादेश

शनि, गुरु, मगल, सूर्य, शुक्र, बुध और चन्द्रमाकी क्रमश चण्डा, समीरा, दहना, सौम्या, नीरा, जला और अमृता ये सात नाडियाँ मानी गई हैं। कृत्तिकासे प्रारम्भकर अभिजित् सहित २८ नक्षत्रोको सातो नाडियोमें चार वार घुमाकर विभक्त करना चाहिए। कृत्तिकासे अनुराधा तक सरल क्रमसे और मघासे घनिष्ठा तक विपरीत क्रमसे नक्षत्रोकी स्थापना करनी चाहिए। सातो नाडियोके मध्यमे सौम्य नाडीकी स्थिति है और इसके आगे पीछे तीन तीन नाडियाँ हैं। दक्षिण दिशाकी नाडियोंकी सज्ञा क्रूर है और उत्तर दिक्षाकी सौम्य है। मध्यमें रहनेवाली मध्यनाडी कहलाती है।

चण्ड नाडीमें दो, तीनसे अधिक स्थित हुए गह प्रचण्ड वायुके सूचक है। समीर नाडीमें स्थित होनेपर वायु और दहना नाडीमें स्थित होनेपर उष्मा—गर्मीके सूचक हैं। सौम्या नाडीमे स्थित होनेसे समता, नीरा नाडीमें स्थित होनेपर मेघोका सञ्चय, जलानाडीमें प्रविष्ट होनेपर वर्पा एव अमृता नाडीमे ग्रहोके प्रविष्ट होने पर अतिवृष्टि होती है। मगल ग्रह जिस सज्ञक नाडीमें स्थित रहता है उसी सज्ञक नाडीका फल घटित होता है।

गुरु, मगल और सूर्य पुरुष-ग्रह हैं, चन्द्रमा और शुक्र स्त्रीग्रह हैं तथा शनि और बुध नपुसक ग्रह कहलाते हैं। पुरुषग्रहोके सयोग होनेसे धूम्र, स्त्री और पुरुप ग्रहोके सयोगसे वर्पा एव स्त्रीग्रहोके सयोगसे वादल दिखलाई पडते हैं। जिस नाडीमें क्रूर और सौम्य ग्रह सयुक्त हो और इनके साथ जिन दिन चन्द्रमाका सयोग होता है, उस दिन अच्छी वर्पा होती है। जब एक ही नक्षत्रपर कई ग्रह सयुक्त होते हैं तो महावृष्टि होती है। चन्द्रमा जव पाप-ग्रहोके साथ स्थित रहता है तो वर्पा कम होती है और आकाशमें वादल छाये रहते हैं।

चन्द्रमा सौम्य एव क्रूर ग्रहोके साथ जव अमृतनाडीमें स्थित रहता है तो एक, तीन, पाँच या सात दिनो तक लगातार वर्षा होती है। जला नाडीमें चन्द्रमाके स्थित होनेसे दो दिनोतक लगातार वर्पा होती है। जब चन्द्रमा केवल क्रूर ग्रहोसे युक्त होकर जलानाडीमें स्थित रहता है तो तीन दिनोतक वर्षा होती है। जव सभी ग्रह अमृता नाडीमें स्थित हो तो १८ दिन प्रमाण वर्पा होती हैं। जलानाडीमें सभी गहोके स्थित होनेसे वर्ष में वारह दिन वर्पा और नीरा नाड़ीमें ग्रहोके स्थित होनेसे छ दिनोतक वर्पा होती है।

मध्यनाडीमें समस्त ग्रहोंके स्थित होनेसे वर्षा और सुभिक्ष होती है तथा तीनों दिनोतक लगातार घोर वर्षा होती है। अधिक शुभ ग्रहोंके योगमें निर्जलानाडी भी जलप्रदायिनी होती है और अधिक क्रूर ग्रहोंके योगमें सजला नाडी भी वर्षाभाव उत्पन्न करती है। जला नाडीमें स्थित चन्द्र और शुक्र यदि क्रूर ग्रहोंसे मुक्त हों तो अल्प वर्षा होती है और शुभग्रहोसे मुक्त हो तो उत्तम वर्षा होती है। जलानाडीमें स्थित चन्द्रमा वर्षाका सूचक है।

राशिचक्रयोगानुसार वर्षा-विचार

मिथुन राशिपर मगल और गुरु, तुला राशिपर शनि और धन राशिपर राहु स्थित हो तो अत्यधिक वर्षा होती है। कर्कपर गुरु, सिंहपर शुक्र, तुलापर मगल और मीन राशिपर शनिके स्थित होनेसे तृण और धान्य का तो अभाव होता ही है पर वर्षा भी नही होती। सिंहमे सूर्य, तुलामें मगल और कर्क राशिमें बृहस्पतिके होनेसे आंधी और तूफान आते हैं—अनाज महँगा होता है, ग्राम, नगर और देशवासियोंको कष्ट होता है। मीनराशिमे शनि, कर्कमें गुरु और तुलामें मगलके स्थित होनेसे अथवा मीन राशिमें शुक्र, चन्द्रमा और मगलके स्थित होनेसे दुर्भिक्ष होता है।

वर्षाकालमें सूर्यसे आगे मगलके रहनेपर अनावृष्टि, शुक्रके आगे रहनेपर वर्षा, बुधके आगे रहनेपर गर्मी और गुरुके आगे रहनेपर वायु चलती है। सूर्य-मगल, शनि-मगल और गुरु-मगलसे अवर्षा होती है। बुध, शुक्र और गुरु-बुधका योग अवश्य वर्षासूचक है। क्रूर ग्रहोसे अदृष्ट और अयुत, बुध और शुक्र एक राशिमे स्थित हो और उनपर बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो महावृष्टिकी सूचना मिलती है।

क्रूर ग्रहोसे अदृष्ट और अयुत, गुरु एव शुक्र एक स्थानपर स्थित हो और उनपर बुधको दृष्टि हो तो उत्तम वर्षा होती है। शुक्र और चन्द्रमा अथवा मगल और चन्द्रमा यदि एक राशिपर स्थित हो तो जलका पूर्ण योग बनता है। शनि और मगलका एक राशिपर स्थित होना महावृष्टिका कारण है। इस योगके होनेसे वर्षा और फसल अच्छी होती है। एक राशि अथवा एक ही नक्षत्रपर राहु और मगल स्थित हो तो ये दोनों वर्षाके अभावकी सूचना देते हैं। एक स्थानमें यदि गुरु और शुक्र स्थित हों तो असमयमें वर्षा होती है। सूर्यके आगे बुध या शुक्रके स्थित रहनेसे भी वर्षा कालमे निरन्तर वर्षा होती है।

मगलके आगे सूर्यकी गति हो तो वह वर्षाको अवरुद्ध नही करता। यदि सूर्यके आगे मगल हो तो वह वर्षाको तत्काल अवरुद्ध होनेकी सूचना देता है। बृहस्पतिसे आगे शुक्रके होनेपर अवश्य वर्षा होती है, किन्तु शुक्रके आगे बृहस्पतिके रहनेसे वर्षाभाव होता है।

बुधके आगे शुक्रके होनेपर महावृष्टि और शुक्रसे आगे बुधके होनेपर अल्पवृष्टि एव इन दोनोंके मध्य में सूर्य या अन्य ग्रह आ जावें तो वर्षा नही होती है। उदय या अस्त होता हुआ बुध यदि शुक्रके आगे स्थित हो तो शीघ्र ही वर्षा होती है। जलानाडीमें बुध या शुक्रके आनेसे अधिक वर्षा होनेकी सूचना मिलती है और फसल भी अच्छी उत्पन्न होती है।

शुक्रके आगे मगलके रहनेपर उत्तरापथमें वर्षाका अभाव रहता है और बिजलीका प्रकोप, रजो वर्षा एव अग्निदाहका भय रहता है शुक्रके आगे बृहस्पतिके रहनेपर मेघ आकाशमे स्थित रहते हैं पर वर्षा नही होती है। अथवा पूर्व दिशामें ओले गिरते हैं और देशमें अशान्ति व्याप्त रहती है।

बृहस्पति और मगल चन्द्रमाके साथ हो तो वर्षाका अच्छा योग होता है। शुक्रसे आगे बुध और इसके पश्चात् सूर्य हो तो अन्नकी महँगाई होती है। शुक्र और बुधके मध्यमें सूर्यका स्थित होना अनावृष्टिका

सूचक है। शुक्र और शनिके पीछे बुधके रहनेसे धन-धान्यकी समृद्धि रहती है। यदि सूर्य व चन्द्रमाके आगे मगल हो तो हिमपात होता है। आगे बुध, मध्यमे सूर्य और पीछेके भागमें शुक्र हो तो वर्षाका अभाव होता है। पर यदि आगे शुक्र हो मध्यमे सूर्य हो और पृष्ठ भागमें बृहस्पति हो तो खूब वर्षा होती है।

आगे सूर्य, मध्यमे बुध और पृष्ठमें मगल हो तो सुभिक्ष होता है। इसी तरह आगे शुक्र, मध्यमे शनि और पृष्ठमें बुध हो तो सुभिक्ष होता है। बुध, बृहस्पति और शुक्र ये तीनो एक ही राशिपर स्थित हो और क्रूर ग्रहोसे अदृष्ट और अयुत हो तो इनसे महावृष्टिकी सूचना मिलती है। गुरुसे दृष्ट, शनि मगल और शुक्र ये तीनो एक राशिपर स्थित हो तो निस्सन्देह वर्षा होती है। सूर्य, शुक्र और बुधके एक राशिपर स्थित होनेसे अल्प वृष्टि एवं सूर्य, शुक्र और गुरु के एक राशिपर स्थित होनेसे अतिवृष्टि होती है।

गुरुसे दृष्ट शनि, शुक्र और मगलके एकत्र स्थित रहनेसे अच्छी वर्षा होती है। शनि, राहू और मगल यदि एक स्थानपर स्थित हो तो युद्ध और अनावृष्टि होती है। देशमें नाना प्रकारके उपद्रव उत्पन्न होते हैं। मवेशियोको अनेक प्रकारमे कष्ट उठाना पडता है। शनि, मगल और राहुका एक ही राशिपर स्थित होना वर्षाभावका सूचक है। शुक्र, मंगल, शनि और गुरुके एक राशिमें स्थित होनेसे वर्षाभावकी सूचना मिलती है। किन्तु शुक्र, राहु और शनि और गुरुके एक राशिमें स्थित होनेसे श्रावण और भाद्रपदमें अच्छी वर्षा होती है। किन्तु आश्विन मासमें वर्षाका अभाव हो जाता है।

मगल, बुध, गुरु और शुक्र एक राशिमें स्थित हो तो धूलभरी आँधियाँ आती हैं। कही-कही वर्षाके छीटे पडते हैं तथा फसलमें नाना प्रकारके कीडे लगते है। मगल, शुक्र, शनि और राहूका एक राशिमें स्थित होना दुर्भिक्षका सूचक है। मगल, वृहस्पति, शुक्र और शनि यदि ये चारो ग्रह एक ही स्थानमें स्थित हो तो वर्षाभावकी सूचना मिलती है और दुर्भिक्ष होता है। चार या पाँच ग्रहोके एक स्थानमें स्थित होनेसे सम्पूर्ण पृथ्वी जलसे प्लावित हो जाती है और नदियोंमें बाढ आती है। धानकी फसलकी अपेक्षा गेहूँ अच्छी पैदा होती है।

सूर्य, बुध, वृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमाके एक स्थानमें रहनेसे नैर्ऋत्य दिशाकी प्रजाको कष्ट होता है तथा दुर्भिक्ष होता है। बुध, गुरु, शनि, राहु और सूर्य इन ग्रहोके एक राशिपर स्थित होनेसे सुभिक्ष, कुशलता, आरोग्यता और सर्वत्र सुख प्राप्त होता है। शुक्र, शनि, मगल, बुध और गुरु एक राशिपर स्थित हो तो अनावृष्टिका योग बनता है। सूर्य, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति और शुक्र इन ग्रहोंके आगे मगल न हो और ये ग्रह एक ही राशिपर स्थित हो तो वर्षा अधिक होती है। जब सभी ग्रह सूर्यके पीछे या आगे रहते हैं तो महावृष्टिका योग बनता है।

मेष राशिपर शुक्र और राहुका साथमें रहना दुर्भिक्षका सूचक है। वृष राशिपर सूर्य मगल और शनिके स्थित रहनेसे अनावृष्टिकी सूचना मिलती है। मिथुन राशिपर शनि और राहुका होना भी दुर्भिक्षका सूचक है। मीन और धनुपर शनि, मगल और राहुके होनेसे दुर्भिक्षकी सूचना मिलती है। मकर या कुम्भ राशिपर बुधके होनेसे पर्याप्त वर्षा होती है। बुधके क्षेत्रमें सूर्य और चन्द्रमाके रहनेसे सुभिक्ष होता है और वर्षा होती है।

परिशिष्ट २

यात्राकालीन

ब्राह्मण, घोडा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गौ, सरसों, कमल, वस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर, पपैया, नेवला, बंधा हुआ पशु, मास, श्रेष्ठ वाक्य, फूल, ऊख, भरा कलश, छाता, मृत्तिका, कन्या, रत्न, पगडी, बिना बँधा हुआ सफेद बैल, मदिरा, पुत्रवती स्त्री, जलती हुई अग्नि और मछली आदि पदार्थ यात्राके लिए गमन करते हुए दिखलाई पडे तो शुभ शकुन समझना चाहिए। सीसा, काजल, धुला वस्त्र, अथवा धोये हुए वस्त्र लिए हुए धोबी, मछली, घृत, सिंहासन, रोदनरहित मुर्दा, ध्वजा, शहद, मेढा, धनुष, गोरोचन, भरद्वाज पक्षी पालकी, वेदध्वनि, श्रेष्ठ स्तोत्रपाठकी ध्वनि, मागलिक गायन और अंकुश ये पदार्थ यात्राके समय सम्मुख आवें और बिना जलका घडा लिये हुए आदमी पीछे जाता हो तो अत्युत्तम है।

बाँझ स्त्री, चमडा, धानकी भूसी, हाड, सर्प, लवण, अङ्गार, इन्धन, हिजडा, विष्ठा लिये हुए पुरुष, तैल, पागल व्यक्ति, चर्बी, औषध, शत्रु, जटावाला व्यक्ति, सन्यासी, तृण, रोगी, मुनि और बालकके अतिरिक्त अन्य नगा व्यक्ति, तेल लगाकर बिना स्नान किये हुए, छूटे केश, जातिसे पतित, कान-नाक कटा व्यक्ति, भूखा रुधिर, रजस्वला स्त्री, गिरगिट, निज घरका जलना, बिलावोका लडना और सम्मुख छींक यात्रामें अशुभ है। गेरूसे रगा कपडा या इस प्रकारके वस्त्रोको धारण करनेवाला व्यक्ति, गुड, छाछ, कीचड, विधवा स्त्री, कुबडा व्यक्ति, लडाई, शरीरसे वस्त्र गिर जाना, भैंसोंकी लडाई, काला अन्न, रूई, वमन, दाहिनी ओर गर्दभ शब्द, अति क्रोध, गर्भवती, शिरमुण्डा, गीले वस्त्रवाला, दुष्ट वचन बोलनेवाला, अन्धा और बहिरा ये सब यात्रा समयमें सम्मुख आवें तो अति निन्दित हैं।

गोहा, जाहा, शूकर, सर्प और खरगोशका शब्द शुभ होता है। निज या परके मुखसे इनका नाम लेना शुभ है, परन्तु इनका शब्द या दर्शन शुभ नही है। रीछ और वानर नाम लेना और सुनना अशुभ है, पर शब्द सुनना शुभ होता है। नदीमे तैरना, भयकार्य, गृह प्रवेश और नष्ट वस्तुका देखना साधारण शुभ है। कोयल, छिपकली, पोतकी, शूकरी, रता, पिंगला, छछुन्दरि, सियारिन, कपोत, खञ्जन, तीतर इत्यादि पक्षी यदि राजाकी यात्राके समय वाम भागमें हो तो शुभ हैं। छिक्कर, पपीहा, श्रीकण्ठ, वानर और रूरुमृग यात्रा समय दक्षिण भागमें हो तो शुभ हैं। दाहिनी ओर आये हुए मृग और पक्षी यात्रामें शुभ होते हैं। विषम सख्यक मृग अर्थात् तीन, पांच, सात, नौ, ग्यारह, तेरह, पन्द्रह, सत्रह, उन्नीस, इक्कीस आदि सख्यामें मृगों-का झुण्ड चलते हुए साथ दे तो शुभ है। यात्रा समय बायी ओर गदहेका शब्द शुभ है। यदि सिरके ऊपर दहीकी हाडी रखे हुए कोई ग्वालिन जा रही हो और दहीके कण गिरते हुए दिखलाई पडें तो यह शकुन यात्राके लिए अत्यन्त शुभ है। यदि दहीकी हण्डी काले रगकी हो और वह काले रगके वस्त्रसे आच्छादित हो तो यात्रामें आधी सफलता मिलती है। श्वेत रगकी हण्डी श्वेतवस्त्रसे आच्छादित हो तो पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। यदि रक्त वस्त्रसे आच्छादित हो तो यश प्राप्त होता है, पर यात्रामें कठिनाइयाँ अवश्य सहन करनी पडती हैं। पीतवर्णके वस्त्रसे आच्छादित होनेपर धन लाभ होता है तथा यात्रा भी सफलतापूर्वक निर्विघ्न हो जाती है। हरे-रगका वस्त्र विजयकी सूचना देता है तथा यात्रा करनेवालेकी मनोकामना सिद्ध होनेकी ओर सङ्केत करता है। यदि यात्रा करनेके समय कोई व्यक्ति खाली घडा लेकर सामने आवे और तत्काल भरकर साथ-साथ वापस चले तो यह शकुन यात्राकी सिद्धिके लिए अत्यन्त शुभकारक है। यदि कोई व्यक्ति भरा घडा लेकर सामने आवे और तत्काल पानी गिराकर खाली घडा लेकर चले तो यह शकुन अशुभ है। यात्रा-की कठिनाइयोके साथ धनहानिकी सूचना देता है।

यात्रा समयमे काकका विचार—यदि यात्राके समय काक वाणी बोलता हुआ वाम भागमें गमन करे तो सभी प्रकारके मनोरथोंकी सिद्धि होती है। यदि काक मार्गमे प्रदक्षिणा करता हुआ बाये हाथ आ जावे तो कार्यकी सिद्धि, क्षेम, कुशल तथा मनोरथोंकी सिद्धि होती है। यदि पीठ पीछे काक मन्द रूपमें मधुर शब्द करता हुआ गमन करे अथवा शब्द करता हुआ उसी ओर मार्गमें आगे बढे, जिधर यात्राके लिए जाना है, अथवा शब्द करता हुआ काक आगे हरे वृक्षकी हरी डालीपर स्थित हो और अपने परसे मस्तकको खुजला रहा हो तो यात्रामे अभीष्ट फलकी सिद्धि होती है। यदि गमन कालमें काक हाथीके ऊपर बैठा दिखलाई पडे या हाथीपर बजते हुए बाजोपर बैठा हुआ दिखलाई पडे तो यात्रामें सफलता मिलती है, साथ ही धन-धान्य, सवारी, भूमि आदिका लाभ होता है। यदि काक घोडेके ऊपर स्थित दिखलाई पडे तो भूमि-लाभ, मित्र-लाभ एव धन-लाभ करता है। देव-मन्दिर, ध्वजा, ऊँचे महल, धान्यकी राशि, अन्नके ढेर एव उन्नत भूमिपर बैठा हुआ काक मुँहमे सूखी घास लेकर चबा रहा हो तो निश्चय ही यात्रामें अर्थ लाभ होता है। इस प्रकारकी यात्रा-मे सभी प्रकारके सुख साधन प्रस्तुत रहते है। यह यात्रा अत्यन्त सुखकर मानी जाती है। आगे-पीछे काक गोबरके ढेरपर बैठा हो या दूधवाले—बड, पीपल आदिपर स्थित होकर बीट कर रहा हो अथवा मुँहमें अन्न, फल, मूल, पुष्प आदि हो तो अनायास ही यात्राकी सिद्धि होती है। यदि कोई स्त्री जलका भरा हुआ कलश लेकर आवे और उसपर काक स्थित होकर शब्द करने लगे तथा जलके भरे हुए घडेपर स्थित हो काक शब्द करे तो स्त्री और धनकी प्राप्ति होती है। यदि शैय्याके ऊपर स्थित होकर काक शब्द करे तो आप्त जनोकी प्राप्ति होती है। गायकी पीठपर बैठकर या दूर्वापर बैठकर अथवा गोबरपर बैठकर काक चोच घिसता हो तो अनेक प्रकारके भोज्य पदार्थोकी प्राप्ति होती है। धान्य, दूब, दही, मनोहर अकुर, पत्र, पुष्प, फल, हरे-भरे वृक्षपर स्थित होकर काक बोलता जाय तो सभी प्रकारके इच्छित कार्य सिद्ध होते हैं। वृक्षोके ऊपर स्थित होकर काक शान्त बोले तो स्त्री प्रसङ्ग हो, धन-धान्यपर स्थित होकर शान्त शब्द करे तो धन-धान्यका लाभ हो एव गायकी पीठपर स्थिर होकर शब्द करे तो स्त्री, धन, यश और उत्तम भोजनकी प्राप्ति होती है। ऊँटकी पीठपर स्थित होकर शान्त शब्द करे, गदहेकी पीठपर स्थित होकर शान्त शब्द करे तो धन लाभ और सुखकी प्राप्त होती हैं। यदि शूकर, बैल, खाली घडा, मुर्दा मनुष्य या मुर्दा पशु, पाषाण और सूखे वृक्षकी डालीपर स्थित होकर काक शब्द करे तो यात्रामें ज्वर, अर्थहानि, चोरो द्वारा धनका अपहरण एव यात्रामें अनेक प्रकारके कष्ट होते है। यदि काक दक्षिणकी ओर गमन करे, दक्षिणकी ओर ही शब्द करे, पीछेसे सम्मुख आवे, कोलाहल करता हो और प्रतिलोम गति करके पीठ पीछेकी ओर चला आवे तो यात्रामें चोट लगती है, रक्तपात होता है तथा और भी अनेक प्रकारके कष्ट होते है। बलि भोजन करता हुआ काक बायी ओर शब्द करता हो और वहाँसे दक्षिणकी ओर चला आवे एवं वाम प्रदेशमे प्रतिलोम गमन करता हो तो यात्रामे अनेक प्रकारके विघ्न होते है। आर्थिक हानि भी होती है। यदि गमनकालमें काक दक्षिण बोलकर पीठ पीछेकी ओर चला जाय तो किसीकी हत्या सुनाई पडती है। गायकी पूँछ या सर्पके बिलपर बैठा हुआ काक दिखाई पडे तो मार्गमे सर्प दर्शन, नाना तरहके सघर्ष और भय होते है। यदि काक आगे कठोर शब्द करता हुआ स्थित हो तो हानि, रोग, पीठ पीछे स्थित हो कठोर शब्द करे तो मृत्यु एव खाली बैठकर शब्द कर रहा हो तो यात्रा सदा निन्दित है। सूखे काठके टूकको तोडकर चोचके अग्र भागमे दबाकर रखा हो और बाये भागमे स्थित हो तो मृत्यु, नाना प्रकारके कष्ट होते है। यदि चोचमे काक हड्डी दबाये हो तो अशुभ फल होता है। वाम भागमे सूखे वृक्षपर काक स्थित हो तो अतिरोग, खाली या तीखे वृक्षपर बैठा हो तो यात्रामें कलह और कार्य नाश एवं काँटेदार वृक्षपर स्थित होकर रूखा शब्द करे तो यात्रामें मृत्यु होती है।

भग्न तरुशाखके वृक्षपर स्थित काक कठोर शब्द करता हो तो यात्रामें धनक्षय, कुटुम्बी-मरण एव नाना

तरहसे अशुभ होता है। यदि छनपर बैठकर काक बोलता हो तो यात्रा नही करनी चाहिए। इस शकुनके होनेपर यात्रा करनेसे वज्रपात–बिजली गिरती है। यदि कूडेके ढेरपर या राख–भस्मके ढेरपर स्थित होकर काक शब्द करे तो कार्यका नाश होता है। अपयश, धनक्षय एव नाना तरहके कष्ट यात्रामें उठाने पडते हैं। लता, रस्सी, केश, सूखी लकडी, चमडा, हड्डी, फटे पुराने जियडे, वृक्षोकी छाल, रुधिरयुक्त वस्तु, जलती लकडी एव कीचड काककी चोचमें दिखलाई पडे तो यात्रामे पाप युक्त कार्य करने पडते हैं, यात्रामें कष्ट होता है, धनक्षय, या धनकी चोरी, अचानक दुर्घटनाएँ आदि घटित होती है। छाया, आयुध, छत्र, घडा, हड्डी, वाहन, काष्ठ एव पाषाण चोचमें रखे हुए काक दिखलाई पडे तो यात्रा करनेवाले-की मृत्यु होती है। एक पाँव समेटकर चञ्चल चित्त होकर जोर-जोरसे कठोर शब्द करता हो तो काक युद्ध, झगडे, मार-पीट आदिकी सूचना देता है। यदि यात्रा करते समय काक अपनी बीट यात्रा करनेवालेके मस्तक-पर गिरा दे तो यात्रामें विपत्ति आती है। नदीतट या मार्गमें काक तीव्र स्वर बोले तो अत्यन्त विपत्तिकी सूचना समझ लेनी चाहिए। यात्राके समयमें यदि काक रथ, हाथी, घोडा और मनुष्यके मस्तकपर बैठा दीख पडे तो पराजय, कष्ट, चोरी और झगडेकी सूचना समझनी चाहिए। शास्त्र, ध्वजा, छत्रपर स्थित होकर काक आकाशकी ओर देख रहा हो तो यात्रामें सफलता समझनी चाहिए।

यात्रामे उल्लूका विचार—यदि यात्राकालमें उल्लू बाई ओर दिखलाई पडे तथा उल्लू अपना भोजन भी साथमें लिये हो तो यात्रा सफल होती है। यदि उल्लू वृक्षपर स्थित होकर अपना भोजन सञ्चय करता हुआ दिखलाई पडे तो यात्रा करनेवाला इस यात्रामें अवश्य धनलाभ कर लौटता है। यदि गमन करनेवाले पुरुषके वाम भागमे उल्लूका प्रशान्तमय शब्द हो और दक्षिण भागमें असम शब्द हो तो यात्रामें सफलता मिलती है। किसी भी प्रकारकी बाधा नही आती है। यदि यात्रीके वामभागमें उल्लू शब्द करता हुआ दिखलाई पडे अथवा बाई ओरसे उल्लूका शब्द सुनाई पडे तो यात्रा प्रशस्त होती है। यदि पृथ्वीपर स्थित होकर उल्लू शब्द कर रहा हो तो धनहानि, आकाशमें स्थित होकर शब्द कर रहा हो तो कलह, दक्षिण भागमें स्थित होकर शब्द कर रहा हो तो कलह या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। यदि उल्लूका शब्द तैजस् और पवनयुक्त हो तो निश्चयत यात्रा करनेवालेकी मृत्यु होती है। यदि उल्लू पहले बायी ओर शब्द करे, पश्चात् दक्षिणकी ओर शब्द करे तो यात्रामें पहले समृद्धि, सुख और शान्ति, पश्चात् कष्ट होता है। इस प्रकारके शकुनमें यात्रा करनेसे कभी-कभी मृत्यु तुल्य भी कष्ट भोगना पडता है।

नीलकण्ठ विचार—यदि यात्राकालमें नीलकण्ठ स्वस्तिक गतिमें भक्ष्य पदार्थोंको ग्रहणकर प्रदक्षिणा करता हुआ दिखलाई पडे तो सभी प्रकारके मनोरथोंकी सिद्धि होती है। यदि दक्षिण—दाहिनी ओर नीलकण्ठ गमन समयमें दिखलाई पडे तो विजय, धन, यश और पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। यदि नीलकण्ठ काकको पराजित करता हुआ सामने दिखलाई पडे तो निर्विघ्न यात्राकी सिद्धि करता है। यदि वनमध्यमें रुदन करता हुआ नीलकण्ठ सामने आवे अथवा भयङ्कर शब्द करता हुआ या घबडाकर शब्द करता हुआ आगे आवे तो यात्रामें विघ्न आते हैं। धन चोरी चला जाता है और जिस कार्यकी सिद्धिके लिए यात्रा की जाती है वह सफल नही होता। यदि यात्राकालमें नीलकण्ठ मयूरके समान शब्द करे तो यशप्राप्ति, धनलाभ, विजय एव निर्विघ्न यात्रा सिद्ध होती है। गमन करनेवाले व्यक्तिके आगे-आगे कुछ दूरतक नीलकण्ठके दर्शन हों तो यात्रा सफल होती है। धन, विजय और यश प्राप्त होता है। शत्रु भी यात्रामें मित्र बन जाते हैं तथा वे भी सभी तरहके सहायता करते हैं।

खञ्जन विचार—यदि यात्राकालमें खञ्जन पक्षी हरे पत्र, पुष्प और फलयुक्त वृक्षपर स्थित दिख-लाई पडें तो यात्रा सफल होती है, मित्रोसे मिलन, शुभ कार्योंकी सिद्धि एव लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है। हाथी,

घोडेके बाँधनेके स्थानमें, उपवन, घरके समीप, देवमन्दिर, राजमहल आदिके शिखरपर खञ्जन वैठा हो और शब्द करता हुआ दिखलाई पडे तो यात्रा सफल होती है। दही, दूध, घृत आदिको मुखमें लिये हुए खञ्जन पक्षी दिखलाई पडे तो नियमत लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है। यात्रामें इसप्रकारके शुभ शकुन मिलते हैं, जिनसे चित्त प्रसन्न रहता है तथा बिना किसी प्रकारके कष्टके यात्रा सिद्ध हो जाती है। सहस्रो व्यक्ति सहायक मिल जाते हैं। छाया सहित, सुन्दर, फल-पुष्पयुक्त वृक्षपर खञ्जन पक्षो दिखलाई पडे तो लक्ष्मीकी प्राप्तिके साथ विजय, यश और अधिकारोकी प्राप्ति होती है। खञ्जनका दर्शन यात्राकालमें बहुत ही उत्तम माना जाता है। गधा, ऊँट, श्वानकी पीठपर खञ्जन पक्षी दिखलाई पडे अथवा अशुचि और गन्दे स्थानोपर वैठा हुआ खञ्जन दिखलाई पडे तो यात्रामें बाधाएँ आती हैं, धनहानि होती है और पराजय भी होता है।

तोता विचार—यदि गमन समयमें दाहिनी ओर या सम्मुख तोता दिखलाई पडे तथा यह मधुर शब्द कर रहा हो, बन्धन मुक्त हो तो यात्रामे सभी प्रकारसे सफलता प्राप्त होती है। यदि तोता मुखमें फल दबाये और बाये पैरसे अपनी गर्दन खुजला रहा हो तो यात्रामें धन-धान्यकी प्राप्ति होती है। हरित फल, पुष्प और पत्तोंसे युक्त वृक्षके ऊपर तोता स्थित हो तो यात्रामें विजय, सफलता, धन और यशकी प्राप्ति समझनी चाहिए। किसी विशेष व्यक्तिसे मिलनेके लिए यदि यात्रा की जाय और यात्राके आरम्भमें तोता जयनाद करता हुआ दिखलाई पडे तो यात्रा पूर्ण सफल होती है। यदि गमनकालमें तोता बाईं ओरसे दाहिनी ओर चला आवे और प्रदक्षिणा करता हुआ-सा प्रतीत हो तो यात्रामें सभी प्रकारकी सफलता समझनी चाहिए। यदि तोता शरीरको कँपाता हुआ इधरसे उधर घूमता जाय अथवा निन्दित, दूषित और घृणित स्थलोपर जाकर स्थित हो जाय तो यात्राकी सिद्धिमें कठिनाई होती है। मुक्त विचरण करनेवाला तोता यदि सामने फल या पुष्पको कुरेदता हुआ दिखलाई पडे तो धन प्राप्तिका योग समझना चाहिए। यदि तोता रुदन करता हुआ या किसी प्रकारके शोक शब्दको करता हुआ सामने आवे तो यात्रा अत्यन्त अशुभ होती है। इसप्रकारके शकुनमें यात्रा करनेसे प्राणघातका भी भय रहता है।

चिडिया विचार—यदि छोटी लाल मुनैया सामने दिखलाई पडे तो विजय, पीठ पीछे शब्द करे तो कष्ट, दाहिनी ओर शब्द करती हुई दिखलाई पडे तो हर्ष एव बाईं ओर धनक्षय, रोग या अनेक प्रकारकी आपत्तियोकी सूचना देती है। जिस चिडियाके सिरपर कलगी हो, यदि वह सामने या दाहिनी ओर दिखलाई पडे तो शुभ, बाईं ओर और पीठ पीछे उसका रहना अशुभ होता है। मुँहमें चारा लिये हुए दिखलाई पडे तो यात्रामें सभी प्रकारकी सिद्धि, धन-धान्यकी प्राप्ति, सासारिक सुखोका लाभ एव अभीष्ट मनोरथोकी सिद्धि होती है। यदि किसी भी प्रकारकी चिडियाँ आपसमें लडती हुई सामने गिर जायँ तो यात्रामें कलह, विवाद, झगडाके साथ मृत्यु भी प्राप्त होती है। चिडियाके परोका टूटकर सामने गिरना यात्रीको विपत्तिकी सूचना देता है। चिडियाका लगडाकर चलना और धूलमें स्नान करना यात्रामें कष्टोकी सूचना देता है।

मयूर विचार—यात्रामें मयूरका नृत्य करते हुए देखना अत्यन्त शुभ होता है। मधुर शब्द करते एव नृत्य करते हुए मयूर यदि यात्रा करते समय दिखलाई पडे तो यह शकुन अत्यन्त उत्तम है। इसके द्वारा धन-धान्यकी प्राप्ति, विजय प्राप्ति, सुख एव सभी प्रकारके अभीष्ठ मनोरथोकी सिद्धि समझ लेनी चाहिए। मयूरका एक ही झटकेमें उडकर सूखे वृक्षपर बैठ जाना यात्रामें विपत्तिकी सूचना देता है।

हाथी विचार—यदि प्रस्थान कालमे हाथी सूँडको ऊपर किये हुए दिखलाई पडे तो यात्रामें इच्छाओ-की पूर्ति होती है। यदि यात्रा करते समय हाथीका दाँत ही टूटा हुआ दिखलाई पडे तो भय, कष्ट और मृत्यु होती है। गर्जना करता हुआ मदोन्मत्त हाथी यदि सामने आता हुआ दिखलाई पडे तो यात्रा सफल होती

है। जो हाथी पीलवानको गिराकर आगे दौडता हुआ आवे तो यात्रामें कष्ट, पराजय, आर्थिक क्षति आदि फलोकी प्राप्ति होती है।

अश्व-विचार—यदि प्रस्थानकालमें घोडा हिनहिनाता हुआ दाहिने पैरसे पृथ्वीको खोद रहा हो और दाहिने अगको खुजला रहा हो तो वह यात्रामें पूर्ण सफलता दिलाता है तथा पदवृद्धिकी सूचना देता है। घोडेका दाहिनी ओर हिनहिनाते हुए निकल जाना, पूँछको फटकारते हुए चलना एव दाना खाते हुए दिखलाई पडना शुभ है। घोडेका लेटें हुए दिखलाई पडना, कानोको फटफटाना, मल-मूत्र त्याग करते हुए दिखलाई पडना यात्राके लिए अशुभ होता है।

गधा-विचार—वामभागमें स्थित गर्दभ अतिदीर्घ शब्द करता हुआ यात्रामें शुभ होता है। आगे या पीछे स्थित होकर गधा शब्द करे तो भी यात्राकी सिद्धि होती है। यदि प्रयाणकालमे गधा अपने दाँतोसे अपने कन्धेको खुजलाता हो तो धनकी प्राप्ति, सफल मनोरथ और यात्रामे किसी भी प्रकारका कष्ट नही होता है। यदि सम्भोग करता हुआ गधा दिखलाई पडे तो स्त्रीलाभ, युद्ध करता हुआ दिखलाई पडे तो वध-बन्धन एव देह या कानको फटफटाता हुआ दिखलाई पडे तो कार्य नाश होता है। खच्चरका विचार भी गधेके विचारके समान ही है।

वृषभ-विचार—प्रयाणकालमें वृषभ बाई ओर शब्द करे तो हानि, दाहिनी ओर शब्द करे और सीगोसे पृथ्वीको खोदे तो शुभ, घोर शब्द करता हुआ साथ-साथ चले तो विजय एव दक्षिणकी ओर गमन करता हुआ दिखलाई पडे तो मनोरथ सिद्धि होती है। बैल या साँड बाईं ओर आकर बाये सीगसे पृथ्वीको खोदे, बाईं करवट लेता हुआ दिखलाई पडे तो अशुभ होता हैं। यात्राकालमें बैल या साँडका बाईं ओर आना भी अशुभ कहा गया है।

महिष-विचार—दो महिष सामने लडते हुए दिखलाई पडें तो अशुभ, विवाद, कलह और युद्धकी सूचना देते हैं। महिषका दाहिनी ओर रहना, दाहिने सीगसे या दाहिनी ओर स्थित होकर दोनो सीगोसे मिट्टीका खोदना यात्रामें विजयकारक है। बैल और महिष दोनोकी छीक यात्रामें वर्जित है।

गाय-विचार—गर्भिणी गाय, गर्भिणी भैंस और गर्भिणी बकरीका यात्राकालमें सम्मुख या दाहिनी ओर आना शुभ है। रम्भाती हुई गाय सामने आवे और बच्चेको दूध पिला रही हो तो यात्राकालमें अत्यधिक शुभ माना जाता है। जिस गायका दूध दुहा जा रहा हो, वह भी यात्राकालमें शुभ होती है। रम्भाती हुई, बच्चेको देखनेके लिए उत्सुक, हर्षयुक्त गायका प्रयाणकालमें दिखलाई पडना शुभ होता है।

विडाल-विचार—यात्राकालमें बिल्ली रोती हुई, लडती हुई, छीकती हुई दिखलाई पडे तो यात्रामे नाना प्रकारके कष्ट होते हैं। बिल्लीका रास्ता काटना भी यात्रामे सकट पैदा कराता है। यदि अकस्मात् बिल्ली दाहिनी ओरसे बाई ओर आवे तो किञ्चित् शुभ और बाई ओरसे दाहिनी ओर आवे तो अत्यन्त अशुभ होता है। इस प्रकारका बिल्लीका आना यात्रामें सकटोकी सूचना देता है। यदि बिल्ली चूहेको मुखमें दबाये सामने आ जाय तो कष्ट, रोटीका टुकडा दबाकर सामने आवे तो यात्रामे लाभ एव दही या दूध पीकर सामने आवे तो साधारणत यात्रा सफल होती हैं। बिल्लीका रुदन यात्राकालमें अत्यन्त वर्जित है, इससे यात्रामें मृत्यु या तत्तुल्य कष्ट होता है।

कुत्ता-विचार—यात्राकालमें कुत्ता दक्षिण भागसे वाम भागमें गमन करे तो शुभ और कुत्तिया वाम भागमे दक्षिण भागकी ओर आवे तो शुभ, सुन्दर वस्तुको मुखमे लेकर यदि कुत्ता सामने दिखलाई पडे तो यात्रामें लाभ होता है। व्यापारके निमित्त की गयी यात्रा अत्यन्त सफल होती है। यदि कुत्ता थोडी-सी दूर

, पुन पीछेकी ओर लौट आवे तो यात्रा करनेवालेको सुख, प्रसन्न क्रीडा करता हुआ कुत्ता के उपरान्त पीछेकी ओर लौट जाय तो यात्रा करने वालेको धन-धान्यकी प्राप्ति होती है। इस कुनसे यात्रामे विजय, सुख और शान्ति रहती है। यदि श्वान ऊँचे स्थानसे उतर कर नीचे भागमें था यह दाहिनी ओर आ जावे तो शुभ कारक होता है। निर्विघ्न यात्राकी सिद्धि तो होती ही है, यात्रा करने वालेको अत्यधिक सम्मानकी प्राप्ति होती है। हाथीके बांधनेके स्थान, घोडाके स्थान ासन, हरी घास, छत्र, ध्वजा, उत्तम वृक्ष, घडा, ईटोके ढेर, चमर, ऊँची भूमि आदि स्थानो पर के कुत्ता यदि मनुष्यके आगे गमन करे तो अभीष्ट कार्योंकी सिद्धि होती है। यात्रा सभी प्रकारसे ोती है। सन्तुष्ट, पुष्ट, प्रसन्न, रोगरहित, आनन्दयुक्त, लीलासहित एव क्रीडासहित कुत्ता सम्मुख ो अभीष्ट कार्योंकी सिद्धि होती है। नवीन अन्न, घृत, विष्ठा, गोवर—इनको मुखमें धारण कर । ओर और बाई ओर देखता हुआ श्वान सामने आवे तो सभी प्रकारसे यात्रा सफल होती है। यदि आगे पृथ्वीको खोदता हुआ यात्रा करने वालेको आकर सूँघे, अनुलोम गतिसे आगे बढ़े, पैरसे मस्तकको ावे तो यात्रा सफल होती है। श्वान गमनकर्ताके साथ साथ बाई ओर चले तो सुन्दर रमणी, धन और ी प्राप्ति कराता है। श्वान जूता मुँहमें लेकर सामने आवे या साथ-साथ चले, हड्डी लेकर सामने आवे साथ साथ चले, केश, वल्कल, पाषाण, जीर्ण वस्त्र, अगार, भस्म, इधन, ठीकरा इन पदार्थोंको मुँहमें लेकर ान सामने आवे तो यात्रामें रोग, कष्ट, मरण, धन-हानि आदि फल प्राप्त होते है। काष्ठ, पाषाणको कुत्ता मे लेकर यात्रा करने वालेके सामने आवे, पूँछ कान और शरीरको यात्रा करने वालेके सामने हिलावे तो ात्रामे धन हरण, कष्ट एव रोग आदि होते हैं। यदि यात्रा करने वाला कुत्ताको जल, वृक्षकी लकडी, ग्नि, भस्म, केश, हड्डी, काष्ठ, सीग, श्मशान, भूसा, अगार, शूल, पाषाण, विष्ठा, चमडा आदिपर मूत्र करते हुए देखे तो यात्रामें नाना प्रकारके कष्ट होते हैं।

शृगाल विचार—जिस दिशामें यात्रा की जा रही हो, उसी दिशामें शृगाल या शृगालीका शब्द सुनाई पडे तो यात्रामें सफलता प्राप्त होती है। यदि पूर्व दिशाकी यात्रा करने वाले व्यक्तिके समक्ष शृगाल या शृगाली आ जाय और वह शब्द भी कर रही हो तो यात्रा करने वालेको महान् सकटकी सूचना देती है। यदि सूर्य सम्मुख देखती हुई शृगाली बाई ओर बोले तो भय, दाहिनी ओर बोले तो अर्थनाश और पीठ पीछे बोले तो कार्य-हानि फल होता है। दक्षिणदिशाको यात्रा करने वाले व्यक्तिके दाहिनी ओर शृगाली शब्द करे तो यात्रामें सफलताकी सूचना देती है। इसी दिशाके यात्रीके आगे सूर्यकी ओर मुँह कर शृगाली बोले तो मृत्युकी प्राप्ति होती है। पश्चिम दिशाको गमन करने वालेके सम्मुख शृगाली बोले तो किञ्चित् हानि और सूर्यकी ओर मुँह करके बोले तो अत्यन्त सकटकी सूचना देती है। यदि पश्चिम दिशाके यात्रीके पीठ पीछे शृगाली शब्द करती हुई चले तो अर्थनाश, किन्तु बाईं ओर शब्द करे तो अर्थागम होता है। उत्तरदिशा को गमन करने वाले व्यक्तिके पीठ पीछे शृगाली सूर्यकी ओर मुँह करके बोले तो यात्रामें अर्थहानि और मरण होता है। यदि यात्रा-कालमे शृगाली दाहिनी ओरसे निकलकर बाई ओर चली जाय और वही पर शब्द करे तो यात्रामें सफलताकी सूचना समझनी चाहिए। शृगालीके शब्दकी कर्कशता और मधुरताके अनुसार फलमें ही अनाधिकता हो जाती है।

यात्रामे छीक-विचार—छीक होने पर सभी प्रकारके कार्योंको बन्द कर देना चाहिए। गमन कालमें छीक होनेसे प्राणोकी हानि होती है। सामने छीक होने पर कार्यका नाश, दाहिने नेत्रके पास छीक हो तो कार्यका निषेध, दाहिने कानके पास छीक हो तो धनका क्षय, दक्षिण कानके पृष्ठ भागमें छीक हो तो शत्रुओकी वृद्धि, बायें कानके पास छीक हो तो जय, बाये कानके पृष्ठ भागकी ओर छीक हो तो भोगोकी प्राप्ति, बाये

नेत्रके आगे छीक हो तो धन लाभ होता है। प्रयाण कालमें सम्मुख छीक अत्यन्त अशुभकारक है और दाहिनी छीक धन नाश करने वाली है। अपनी छीक अत्यन्त अशुभ कारक होती है। ऊँचे स्थानकी छीक मृत्युभय है, पीठ पीछेकी छीक भी शुभ होती है। छीकका विचार 'डाक'ने निम्न प्रकार किया है—

दक्षिन छीकै धन लै दीजै, नैरित कोन सिंहासन दीजै।।
पच्छिम छीकै मिठ भोजाना, गेलो पलटै वायव कोना।।
उत्तर छीकै मान समान, सर्व सिद्ध लै कोन ईशान।।
पूरब छीक्का मृत्यु हकार, अग्नि कोनमे दुखके भार।।
सबके छिक्का कहिगेल 'डाक' अपने छिक्का नहि कस काज।।
आकाशक छिक्के जे नर जाय, पलटि अन्न मन्दिर नहि खाय।।

अर्थात्—दक्षिण दिशासे होने वाली छीक धन हानि करती है, नैऋत्य कोणकी छीक सिंहासन दिलाती है। पश्चिम दिशाकी छीक मीठा भोजन और वायव्य कोणकी छीक द्वारा गया हुआ व्यक्ति सकुशल वापस लौट आता है। उत्तरकी छीक मान-सम्मान दिलाती है, ईशान कोणकी छीक समस्त मनोरथकी सिद्धि करती है। पूर्वकी छीक मृत्यु और अग्निकोणकी दुख देती है। यह अन्य लोगोंकी छीकका फल है। अपनी छीक तो सभी कार्योंको नष्ट करने वाली होती है। अत अपनी छीकका सदा त्याग करना चाहिए। ऊँचे स्थानकी छीकमें जो व्यक्ति यात्राके लिए जाता है, वह पुन वापस नही लौटता है। नीचे स्थानकी छीक विजय देती है।

'वसन्तराज शाकुन'में दशो दिशाओकी अपेक्षा छीकके इस भेद वतलाये गये हैं। पूर्व दिशामें छीक होनेसे मृत्यु, अग्निकोणमे शोक, दक्षिणमे हानि, नैऋत्यमें प्रियसगम, पश्चिममे मिष्ट आहार, वायव्यमें श्री-सम्पदा, उत्तरमे कलह, ईशानमें धनागम, ऊपरकी छीकमे सहार और नीचेकी छीकमें सम्पत्तिकी प्राप्ति होती है। नीचे आठो दिशाओमें प्रहर-प्रहरके अनुसार छीकका शुभाशुभत्व दिखलाया जाता है।

आठो दिशाओमें प्रहरानुसार छीकफल वोधक चक्र

ईशान	पूर्व	आग्नेय
१ हर्ष	१ लाभ	१ लाभ
२ नाश	२ धन-लाभ	२ मित्र-दर्शन
३ व्याधि	३ मित्र-लाभ	३ शुभ-वार्त्ता
४ मित्र-सङ्गम	४ अग्नि-भय	४ अग्नि-भय
उत्तर		**दक्षिण**
१ शत्रु-भय		१ लाभ
२ रिपु-सङ्ग	यात्रा	२ मृत्यु-भय
३ लाभ		३ नाश
४ भोजन		४ काल
वायव्य कोण	**पश्चिम**	**नैऋत्य**
१ स्त्री-लाभ	१॰ दूर गमन	१ लाभ
२ लाभ	२ हर्ष	२ मित्र भेट
३ मित्र-लाभ	३ कलह	३ शुभ वार्त्ता
४ दूर गमन	४ चोर	४ लाभ

परिशिष्ट ३

उत्पात-विचार

स्वभावके विपरीत होना उत्पात है। ये उत्पात तीन प्रकारके होते है—दिव्य, अन्तरिक्ष और भौम। देव-प्रतिमाओ द्वारा जिन उत्पातोकी सूचना मिलती है, वे दिव्य कहलाते हैं। नक्षत्रोका विचार, उल्का, निर्घात, पवन, विद्युत्पात, गन्धर्वपुर एव इन्द्रधनुषादि अन्तरिक्ष उत्पात हैं। इस भूमिपर चल एव स्थिर पदार्थोंका विपरीत रूपमे दिखलायी पडना भौम उत्पात है। आचार्य ऋषिपुत्रने दिव्य उत्पातोका वर्णन करते हुए बतलाया है कि तीर्थङ्कर प्रतिमाका छत्रभङ्ग होना, हाथ पाँव, मस्तक, भामण्डलका भग होना अशुभ सूचक है। जिस देश या नगरमें प्रतिमाजी स्थिर या चलित भग ही जायँ तो उस देश या नगरमें अशुभ होता है। छत्रभग होनेसे प्रशासक या अन्य किसी नेताकी मृत्यु, रथ टूटनेसे राजाका मरण, तथा जिस नगरमें रथ टूटता है, उस नगरमें छ महीनेके पश्चात् अशुभ फलकी प्राप्ति होती है। शहरमें महामारी, चोरी, डकैती या अन्य अशुभ कार्य छ महीनो के भीतर होता है। भामण्डलके भग होनेसे तीसरे या पाँचवे महीनेमें आपत्ति आती है। उस प्रदेशके शासक या शासन परिवारमें किसीकी मृत्यु होती है। नगरमें धन-जनकी हानि होती है। प्रतिमाके हाथ भग होनेसे तीसरे महीनेमें कष्ट और पाँव भग होनेसे सातवे महीनेमें कष्ट होता है। हाथ और पाँवके भग होनेका फल नगरके प्रशासक मुखिया एव पञ्चायतके प्रमुखको भी भोगना पडता है। प्रतिमाका अचानक भग होना अत्यन्त अशुभ है। यदि रखी हुई प्रतिमा स्वयमेव ही मध्याह्न या प्रात कालमें भंग हो जाय तो उस नगरमें तीन महीनेके उपरान्त महान् रोग या सक्रामक रोग फैलते है। विशेष रूपसे हैजा, प्लेग एव इनफ्लुएँजाकी उत्पत्ति होती है। पशुओमें भी रोग उत्पन्न होता है।

यदि स्थिर प्रतिमा अपने स्थानसे हटकर दूसरी जगह पहुँच जाय या चलती हुई मालूम पडे तो तीसरे महीने अचानक विपत्ति आती है। उस नगर या प्रदेशके प्रमुख अधिकारीको मालूम पडे तो तीसरे महीने अचानक विपत्ति आती है उस नगर या प्रदेशके प्रमुख अधिकारीको मृत्यु तुल्य कष्ट भोगना पडता है जनसाधारणको भी आधि-व्याधिजन्य कष्ट उठाना पडता है। यदि प्रतिमा सिंहासनसे नीचे उतर आवे अथवा सिंहासनसे नीचे गिर जाये तो उस प्रदेशके प्रमुखकी मृत्यु होती है। उस प्रदेशमें अकाल, महामारी और वर्षाभाव रहता है। यदि उपर्युक्त उत्पात लगातार सात दिन या पन्द्रह दिन तक हो तो निश्चयत प्रतिपादित फलकी प्राप्ति होती है। यदि एकाध दिन उत्पात होकर शान्त हो जाय तो पूर्ण फल प्राप्त नही होता है। यदि प्रतिमा जीभ निकाल कर कई दिनोतक रोती हुई दिखलाई पडे तो जिस नगरमें यह घटना घटती है, उस नगरमें अत्यन्त उपद्रव होता है। प्रशासक और प्रशास्योंमें झगडा होता है, धन-धान्यकी क्षति होती है। चोर और डाकुओका उपद्रव अधिक बढता है। सग्राम, मारकाट, एव सघर्षकी स्थिति बढती जाती है। प्रतिमाका रोना, राजा, मन्त्री या किसी महान नेताकी मृत्युका सूचक, हँसना पारस्परिक विद्वेष, सघर्ष एव कलहका सूचक, चलना और काँपना बीमारी, सघर्ष, कलह, विषाद, आपसी फूट एव गोलाकार चक्कर काटना भय, विद्वेष, सम्मानहानि तथा देशकी धन-जन-हानिका सूचक हैं। प्रतिमाका हिलना, रग बदलना अनिष्ट सूचक एव तीन महीनोमें नाना-प्रकारके कष्टोंका सूचक अवगत करना चाहिए। प्रतिमाका पसीजना अग्निभय, चोरभय एव महामारीका सूचक है। धुँआ सहित प्रतिमासे पसीना निकले तो जिस प्रदेशमे यह घटना घटित होती है, उससे सौ कोशकी दूरीमें चारो ओर धन-जनकी क्षति होती है। अतिवृष्टि या अनावृष्टिके कारण जनताको महान् कष्ट होता है।

तीर्थङ्करकी प्रतिमासे पसीना निकला धार्मिक विद्वेष एव सघर्षकी सूचना देता है। मुनि और श्रावक

दोनोंपर किसी प्रकारकी विपत्ति आती है तथा दोनोंको विधर्मियो द्वारा उपसर्ग सहन करना पडता है। अकाल और अवर्षणकी स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है। यदि शिवकी प्रतिमासे पसीना निकले तो ब्राह्मणोको कष्ट, कुवेरकी प्रतिमासे पसीना निकलेतो वैश्योंको कष्ट, कामदेवकी प्रतिमासे पसीना निकले तो आगमकी हानि कृष्णकी प्रतिमासे पसीना निकले तो सभी जातियोको कष्ट, सिद्ध और बौद्ध प्रतिमाओंसे धुंआ सहित पसीना निकले तो उस प्रदेशके ऊपर महान् कष्ट, चण्डिका देवीकी प्रतिमामेंसे पसीना निकले तो स्त्रियोको कष्ट, वाराही देवीकी प्रतिमासे पसीना निकले तो हाथियोका ध्वस, नागिनी देवीकी प्रतिमासे धुंआ सहित पसीना निकले तो गर्भनाश, रामकी प्रतिमासे पसीसा निकले तो देशमें महान् उपद्रव, लूट-पाट, धननाश, सीता या पार्वतीकी प्रतिमासे पसीना निकले तो नारी समाजको महान् कष्ट एव सूर्यकी प्रतिमासे पसीना निकले तो ससारको अत्यधिक कष्ट और उपद्रव सहन करने पडते हैं। यदि तीर्थङ्करकी प्रतिमा भग्न हो और उससे अग्निकी लपट या रक्तकी धारा निकलती हुई दिखलाई पडे तो ससारमें मार-काट निश्चय होती है। आपसमें मार-काट हुए विना किसीको भी शान्ति नही मिलती है। किसीभी देवकी प्रतिमाका भङ्ग होना, फूटना या हँसना, चलना आदि अशुभकारक हैं। उक्त क्रियाएँ एक सप्ताह तक लगातार होती हो तो निश्चय तीन महीनेके भीतर अनिष्टकारक फल प्राप्त होता है। ग्रहोंकी प्रतिमाएँ, चौवीस शासन देवो वा शासन देवियोकी प्रतिवाएँ, क्षेत्रपाल और दिक्पालोकी प्रतिमाओमें उक्त प्रकारकी विकृति होनेसे व्याधि, धनहानि, मरण एवं अनेक प्रकारकी व्याधियां उत्पन्न होती हैं। देवकुमार, देवकुमारी, देववनिता एव देवदूतोके जो विकार उत्पन्न होते हैं, वे समाजमें अनेक प्रकारकी हानि पहुँचाते हैं। देवोंके प्रासाद, भवन, चैत्यालय, वेदिका, तोरण, केतु आदिके जलने या विजली द्वारा अग्नि प्राप्त होनेसे उस प्रदेशमें अत्यन्त अनिष्टकर कियाएँ होती हैं। उक्त क्रियाओका फल छ महीनेमें प्राप्त होता है। भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और कल्पवासी देवोंके प्रकृति विपर्यय लोगों के नानाप्रकारके कष्टोका सामना करना पडता है।

आकाशमें असमयमें इन्द्रधनुष दिखलायी पडे तो प्रजाको कष्ट, वर्षाभाव और धन-हानि होती हैं। इन्द्रधनुषका वर्षा ऋतुमें होना ही शुभ सूचक माना जाता है। अन्य ऋतुमें अशुभ सूचक कहा गया है। आकाश से रुधिर, मास, अस्थि और चर्बीकी वर्षा होनेसे सग्राम, जनताको भय, महामारी एव प्रशासकोमे मतभेद होता है। धान्य, सुवर्ण, वल्कल, पुष्प और फलकी वर्षा हो तो उस नगरका विनाश होता है, जिसमें यह घटना घटती है। जिस नगरमें कोयले और धूलिकी वर्षा होती है, उस नगरका सर्वनाश होता है। विना वादलके आकाशसे ओलोका गिरना, विजलीका तडपना तथा विना गर्जनके अकस्मात विजलीका गिरना उस प्रदेशके लिए भयोत्पादक तथा नाना प्रकारकी हानियाँ होती हैं। किसी भी व्यक्तिको शान्ति नहीं मिल सकती है। निर्मल सूर्यमें छाया दिखलायी न दे अथवा विकृत छाया दिखलायी दे तो देशमें महाभय होता है। जव दिन या रातमें मेघहीन आकाशमें पूर्व या पश्चिम दिशामे इन्द्रधनुष दिखलायी देता है, तव उस प्रदेशमें घोर दुर्भिक्ष पडता है। जव आकाशमें प्रतिध्वनि हो, तूर्य-तुरईकी ध्वनि सुनाई दे एव आकाशमे घण्टा, झालरका शब्द सुनाई पडे तो दो महीने तक महाध्वनिसे प्रजा पीडित रहती है। अकाशमे किसी भी प्रकारका अन्य उत्पात दिखलायी पडे तो जनताको कष्ट, व्याधि, मृत्यु एव सघर्ष जन्य दु ख उठाना पडता है।

दिनमे धूलिका वरसना, रात्रिके समय मेघ विहीन आकाशमे नक्षत्रोका नाश या दिनमे नक्षत्रोंका दर्शन होना सघर्ष, मरण, भय और धन-धान्यका विनाश-सूचक है। आकाशका विना वादलोका रग-विरग होना, विकृति आकृति और सस्थानका होना भी अशुभ सूचक है। जहाँ छ महीनो तक लगातार हर महीने उल्का दिखलाई देती रहे, वहाँ मनुष्यका मरण होता है। सफेद और धूसर रगकी उल्काएँ पुण्यात्मा कहे जाने वाले व्यक्तियोको कष्ट पहुँचाती है। पञ्चरगी उल्का महामारी और इधर-उधर टकराकर नष्ट होने वाली उल्का

देशमे उपद्रव उत्पन्न करती है। अन्तरिक्ष निमित्तोका विचार करते समय पूर्वोक्त विद्युत्पात, उल्कापात आदिका विचार अवश्य कर लेना चाहिए।

भूमि पर प्रकृति विपर्यय—उत्पात दिखलाई पडे तो अनिष्ट समझना चाहिए। ये उत्पात जिस स्थानमे दिखलायी देते हैं, अनिष्ट फल उसी जगह घटित होता है। अस्त्र-शस्त्रोका जलना, उनके शब्द होना, जलते समय अग्निमे शब्द होना तथा ईन्धनके बिना जलाये अग्निका जल जाना अनिष्ट सूचक है। इस प्रकारके उत्पातमे किसी आत्मीयकी मृत्यु होती है। असमयमें वृक्षोमे फल-फूलका आना, वृक्षोका हँसना, रोना, दूध निकलना आदि उत्पात धनक्षय, शिशुओमें रोग तथा आपसमें झगडा होनेकी सूचना देते हैं। वृक्षोसे मद्य निकले तो वाहनोका नाश, रुधिर निकलनेसे सग्राम, शहद निकलनेसे रोग, तेल निकलनेसे दुर्भिक्ष, जल निकलनेसे भय और दुर्गन्धित पदार्थ निकलनेसे पशु क्षय होता है। अङ्कुर सूख जानेसे वीर्य और अन्नका नाश, रोगहीन वृक्ष अकारण सूख जाँय तो सेनाका विनाश और अन्न क्षय, आपही वृक्ष खडे होकर उठ बैठे तो देवका भय, कुसमयमे फल-फूलोका आना, प्रशासक और नेताओका विनाश, वृक्षोंसे ज्वाला और धुँआ निकले तो मनुष्योका क्षय होता है। वृक्षोंसे मनुष्यके जैसा शब्द निकलता हुआ सुनाई पडे तो अत्यन्त अशुभकारी होता है। इससे मनुष्योमें अनेक प्रकारकी बीमारियाँ फैलती हैं, जनतामे अनेक प्रकारसे अशान्ति आती है।

कमल आदिके एक कालमे दो या तीन बालकी उत्पत्ति हो अथवा दो फूल या फल दिखलायी पडे तो जिस जगह यह घटना घटित होती हैं, वहाँके प्रशासकका मरण होता है। जिस किसानके खेतमे यह निमित्त दिखलायी पडता है, उसकी भी मृत्यु होती है। जिस गाँवमें यह उत्पात दिखलायी पडता है, उस गाँवमे धन-धान्यके विनाशके साथ अनेक प्रकारके उपद्रव होते है। फल-फूलोमें विकारका दिखलायी पडना, प्रकृति विरुद्ध फल-फूलोका दृष्टिगोचर होना ही उस स्थानकी शान्तिको नष्ट करने वाला तथा आपसमे संघर्ष उत्पन्न करने वाला है। शीत और ग्रीष्ममे परिवर्तन हो जानेसे अर्थात् शीत ऋतुमे गर्मी और ग्रीष्म ऋतुमें शीत पडनेसे अथवा सभी ऋतुओमें परस्पर परिवर्तन हो जानेसे दैवभय, राजभय, रोगभय, और नाना प्रकारके कष्ट होते हैं। यदि नदियाँ नगरके निकटवर्ती स्थानको छोडकर दूर हटकर बहने लगे तो उन नगरोकी आबादी घट जाती है, वहाँ अनेक प्रकारके रोग फैलते है। यदि नदियोका जल विकृत हो जाय, वह रुधिर, तैल, घी, शहद आदिकी गन्ध और आकृतिके समान बहता हुआ दिखलायी पडे तो भय, अशान्ति और धन-क्षय होता है। कुओंसे धूम निकलता हुआ दिखायी पडे, कुओका जल स्वय ही खौलने लगे, रोने और गानेका शब्द जलमें निकले तो महामारी फैलती है। जलका रूप, रस, गन्ध और स्पर्श परिवर्तित हो जाय तो भी महामारीकी सूचना समझनी चाहिए।

स्त्रियोका प्रसव-विकार होना, उनके एक साथ तीन-चार बच्चोका पैदा करना, उत्पन्न हुए बच्चोकी आकृति पशुओ और पक्षियोके समान हो तो, जिस कुलमें यह घटना घटित होती है, उस कुलका विनाश, जिस गाँव या नगरमे घटना घटित होती है, उस गाँव या नगरमे महामारी, अवर्षण और अशान्ति रहती है। इस प्रकारके उत्पातका फल छ महीनेसे लेकर एक वर्ष तक प्राप्त होता है। घोडी, ऊँटनी, भैस, गाय और हथिनी एक साथ दो बच्चे पैदा करे तो उनकी मृत्यु हो जाती है तथा उस नगरमे मारकाट होती है। एक जातिका पशु दूसरे जातिके पशुके साथ मैथुन करे तो अमङ्गल होता है, दो बैल परस्परमे स्तनपान करे तथा कुत्ता गायके बछडेका स्तनपान करे तो महान् अमङ्गल होता है। पशुओके विपरीत आचरणसे भी अनिष्टकी आशङ्का समझनी चाहिए। यदि दो भिन्न जातिके प्राणी आपसमें मैथुन करे तो भय, स्तनपान अकारण करें तो हानि, दुर्भिक्ष एव धन-विनाश होता है।

रथ, मोटर, बहली आदिकी सवारी बिना चलाये चलने लगे और बिना किसी सवारीके चलाने पर

भी न चले तथा सवारियाँ चलाने पर भूमिमें गड जाँय तो अशुभ होता है । विना वजाये तुरहीका शब्द होने लगे और वजाने पर विना किसी प्रकारकी खराबीके तुरही शब्द न करे तो इससे परचक्रका आगमन होता है अथवा शासकका परिवर्तन होता है । नेताओंमें मतभेद होता है और वे आपसमें झगडते है । यदि पवन स्वय ही साँय सायकी विकृत ध्वनि करता हुआ चले तथा पवनसे घोर दुर्गन्ध आती हो तो भय होता है, प्रजाका विनाश होता है तथा दुर्भिक्ष भी होता है । घरके पालतू पक्षीगण वन-गमन करे और वनैले पक्षी निर्भय होकर पुरमें प्रवेश करे, दिनमें चरने वाले रात्रिमें अथवा रात्रिके चरने वाले दिनमें प्रवेश करें तथा दोनो सन्ध्याओंमें मृग और पक्षी मण्डल वाँध कर एकत्रित हो तो भय, मरण, महामारी एव धान्यका विनाश होता है । सूर्यकी ओर मुँह करके गीदड रोवे, कवूतर या उल्लू दिनमें राजभवनमें प्रवेश करे, प्रदोषके समय मुर्गा शब्द करे, हेमन्त आदि ऋतुओंमें कोयल वोले, आकाशमें वाज आदि पक्षियोंका प्रतिलोम मण्डल विचरण करे तो भयदायी होता है । घर, चैत्यालय और द्वारपर अकारण ही पक्षियोंका झुण्ड गिरे तो उस घर या चैत्यालयका विनाश होता है । यदि कुत्ता हड्डी लेकर घरमें प्रवेश करे तो रोग उत्पन्न होनेकी सूचना देता है । पशुओंकी आवाज मनुष्योंके समान मालूम पडती हो तथा वे पशु मनुष्योंके समान आचरण भी करें तो उस स्थान पर घोर सङ्कट उपस्थित होता है । रातमें पश्चिम दिशाकी ओरसे कुत्ता शब्द करे और उसके उत्तरमें शृगाल शब्द करे अर्थात् पहले कुत्ता वोले, पश्चात् शृगाल अनन्तर पुन कुत्ता, पश्चात् शृगाल इस प्रकार शब्द करे तो उस नगरका विनाश छ महीनेके वाद होने लगता है और तीन वर्षों तक उस नगरपर आपत्ति आती रहती है । भूकम्प हुए विना पृथ्वी फट जाय, विना अग्निके धुँआ दिखलायी पडे और वालक-गण मार-पीटका खेल खेलते हुए कहें—मार डालो, पीटो, इसका विनाश कर दो तो उस प्रदेशमें भूकम्प होनेकी सूचना समझनी चाहिए । विना वनाये किसी व्यक्तिके घरकी दीवालो पर गेरूके लाल चिह्न या कोयलेसे काले चित्र वन जाये तो उस घरका पाँच महीनेके वाद विनाश होता है । जिस घरमें अधिक मकडियाँ जाला वनाती है, उस घरमें कलह होती है । गाँव या नगरके वाहर दिनमें शृङ्गाल और उल्लू शब्द करें तो उस गाँवके विनाशकी सूचना समझनी चाहिए । वर्षाकालमें पृथ्वीका काँपना, भूकम्प होना, वादलोकी आकृतिका वदल जाना, पर्वत और घरोका चलायमान होना, भयङ्कर शब्दोका चारो दिशाओंसे सुनायी पडना, सूखे हुए वृक्षोमें अङ्कुरका निकल आना, इन्द्रधनुषका काले रूपमें दिखलायी पडना एव श्यामवर्णकी विद्युतका गिरना, भय, मृत्यु और अनावृष्टिका सूचक है । जव वर्षाऋतुमें अधिक वर्षा होनेपर भी पृथ्वी सूखी दिखलायी पडे तो उस वर्ष दुर्भिक्षकी स्थिति समझनी चाहिए । ग्रीष्मऋतुमें आकाशमें वादल दिखलायी पडे, विजली कडके और चारो ओर वर्षाऋतुकी वहार दिखलायी पडे तो भय तथा महामारी होती है । वर्षाऋतुमें तेज हवा चले और त्रिकोण या चौकोर ओले गिरे तो उस वर्ष अकालकी आशङ्का समझनी चाहिए । यदि गाय, वकरी घोडी, हथिनी और स्त्रीके विपरीत गर्भकी स्थित हो तथा विपरीत सन्तान प्रसव करें तो राजा और प्रजा दोनोंके लिए अत्यन्त कष्ट होता है । ऋतुओंमे अस्वाभाविक विकार दिखलायी पडे तो जगत्में पीडा, भय, सघर्ष आदि होते है । यदि आकाशमें धूलि, अग्नि और धुँआकी अधिकता दिखलायी पडे तो दुर्भिक्ष, चोरोंका उपद्रव एव जनतामें अशान्ति होती है ।

रोग सूचक उत्पात—चन्द्रमा कृष्ण वर्णका दिखलायी दे तथा ताराएँ विभिन्न वर्णकी टूटती हुई मालूम पडें तो, सूर्य उदयकालमें कई दिनो तक लगातार काला और रोता हुआ दिखलायी पडे तो दो महीने उप-रान्त महामारीका प्रकोप होता है । विल्ली तीन वार रोकर चुप हो जाय तथा नगरके भीतर आकर शृगाल-सियार तीन वार रोकर चुप हो जाय तो उस नगरमें भयकर हैजा फैलता है । उल्कापात हरे वर्ण का हो, चन्द्रमा भी हरे वर्णका दिखलायी पडे तो सामूहिक रूपमें ज्वरका प्रकोप होता है । यदि सूखे वृक्ष अचानक

हरे हो जाँय तो उस नगरमे सात महीनेके भीतर महामारी फैलती है। चूहोका समूह-सेना बनाकर नगरसे बाहर जाता हुआ दिखलाई पडे तो प्लेगका प्रकोप समझना चाहिए। पीपल वृक्ष और वट वृक्षमें असमयमे फल-पुष्प आवें तो नगर या गाँवमे पाँच महीनोके भीतर सक्रामक रोग फैलता है, जिससे सभी प्राणियोको कष्ट होता है। गोघा, मेढक और मोर रात्रिमे भ्रमण करे तथा श्वेत काक एव गृद्ध घरोमे घुस आवे तो उस नगर या गाँवमे तीन महीनेके भीतर बीमारी फैलती है। काक मैथुन देखनेसे छ. मासमे मृत्यु होती है।

धन-धान्यनाश सूचक उत्पात—वर्षाऋतुमें लगातार सात दिनो तक जिस प्रदेशमें ओले बरसते है, उस प्रदेशके धन-धान्यका नाश हो जाता है। रात या दिन उल्लू किसीके घरमें प्रविष्ट होकर बोलने लगे तो उस व्यक्तिकी सम्पत्ति छ महीनेमें विलीन हो जाती है। घरके द्वार पर स्थित वृक्ष रोने लगें तो उस घरकी सम्पत्ति विलीन होती है, घरमे रोग एव कष्ट फैलते हैं। अचानक घरकी छतके ऊपर स्थित होकर श्वेत काक पाँच बार जोर-जोरसे काँव-काँव करे, पुन चुप होकर तीन बार धीरे-धीरे काँव-काँव करे तो उस घरकी सम्पत्ति एक वर्षमें विलीन हो जाती है। यदि यह घटना नगरके बाहर पश्चिमी द्वार पर घटित हो तो नगरकी सम्पत्ति विलीन हो जाती है। नगरके मध्यमें किसी व्यन्तरकी बाधा या व्यन्तरका दर्शन लगातार कई दिनो तक हो तो भी नगरकी श्री विलीन हो जाती है। यदि आकाशसे दिन भर धूल बरसती रहे, तेज वायु चले और दिन भयङ्कर मालूम हो तो उस नगरकी सम्पत्ति नष्ट होती है, जिस नगरमें यह घटना घटती है। जङ्गलमें गयी हुयी गाये यदि मध्याह्नमें ही रम्भाती हुई लौट आवे और वे अपने बछडोको दूध न पिलावें तो सम्पत्तिका विनाश समझना चाहिए। किसी भी नगरमें कई दिनो तक संघर्ष होता रहे, वहाँके निवासियोमें मेल-मिलाप न हो तो पाँच महीनोमें समस्त सम्पत्तिका विनाश हो जाता है। वरुण नक्षत्रका केतु दक्षिणमें उदय हो तो भी सम्पत्तिका विनाश समझना चाहिए। यदि लगातार तीन दिनों तक प्रात सन्ध्या काली, मध्याह्न सन्ध्या नीली और साय सन्ध्या मिश्रित वर्णकी दिखलायी पडे तो भय और आतङ्कके साथ द्रव्य विनाशकी भी सूचना मिलती है। रातको निरभ्र आकाशमें तारोका अभाव दिखलायी पडे या ताराएँ टूटती हुई मालूम हो तो रोग और धन नाश दोनो फल प्राप्त होते हैं। यदि ताराओका रङ्ग भस्मके समान मालूम हो, दक्षिण दिशा रुदन करती हुई और उत्तर दिशा हँसती हुई-सी दिखलायी पडे तो धन-धान्यका विनाश होता है। पशुओकी वाणी यदि मनुष्यके समान मालूम हो तो धन-धान्यके विनाशके साथ सग्रामकी सूचना भी मिलती है। कबूतर अपने पंखोंको पटकता हुआ जिस घरमें उल्टा गिरता है और अकारण ही मृत जैसा हो जाता है, उस घरकी सम्पत्तिका विनाश हो जाता है। यदि गाँव या नगरके बीस-पच्चीस बच्चे जो नग्न होकर धूलिमे खेल रहे हो, वे अकस्मात् 'नष्ट हो गया' 'नष्ट हो गया' इस शब्दका व्यवहार करें तो उस नगरसे सम्पत्ति रूठकर चली जाती है। रथ, मोटर, इक्का, रिक्सा, साइकिल आदिकी सवारी पर चढते ही कोई व्यक्ति पानी गिराते हुए दिखलायी पडे तो भी धनका नाश होता है। दक्षिण दिशाकी ओरसे शृगालका रोते हुए नगरमें प्रवेश करना धन-हानिका सूचक है।

वर्षाभाव-सूचक उत्पात—ग्रीष्म ऋतुमें आकाशमें इन्द्रधनुष दिखलायी पडे, माघ-मासमें गर्मी पडे तो उस वर्ष वर्षा नही होती है। वर्षा ऋतुके आगमनमें कुहासा छा जावे तो उस वर्ष वर्षाका अभाव जानना चाहिए। आषाढ महीनेके प्रारम्भमें इन्द्रधनुषका दिखलायी पडना भी वर्षा भावका सूचक है। सर्पको छोडकर अन्य जातिके प्राणी सन्तानका भक्षण करे तो वर्षाभाव और घोर दुर्भिक्षकी सूचना समझनी चाहिए। यदि चूहे लडते हुए दिखलायी पडे, रातके समय श्वेत धनुप दिखलायी दे, सूर्यमें छेद मालूम पडें, चन्द्रमा टूटा हुआ-सा दिखलायी पडे, धूलिमें चिडियाँ स्नान करें और सूर्यके अस्त होते समय सूर्यके पास ही दूसरा उद्योत वाला सूर्य दिखलायी दे तो वर्षाभाव होता है तथा प्रजाको कष्ट उठाना पडता है।

हिस्सा फडकनेसे कष्ट, मृत्यु अपनी या किसी आत्मीयकी अथवा अन्य किसी भी प्रकारकी अशुभ सूचना मिलती है। साधारणतया स्त्रीकी बायी आँखका फडकना और पुरुषकी दाहिनी आँखका फडकना शुभ माना जाता है, पर विशेष जाननेके लिए दोनो ही नेत्रोंके पृथक्-पृथक् भागोंके फडकनेका विचार करना चाहिए।

अङ्गस्फुरण फल—अङ्ग फडकनेका फल

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक स्फुरण	पृथ्वी लाभ	नासिका स्फुरण	प्रीति सुख	वृषण स्फुरण	पुत्र प्राप्ति
ललाट स्फुरण	स्थान लाभ	हस्त स्फुरण	सद् द्रव्य लाभ	ओष्ठ स्फुरण	प्रियवस्तु लाभ
कन्धा स्फुरण	भोग समृद्धि	वक्ष स्फुरण	विजय	हनु स्फुरण	भय
भ्रूमध्य	सुख प्राप्ति	हृदय स्फुरण	वाछित सिद्धि	कण्ठ स्फुरण	ऐश्वर्य लाभ
भ्रूयुग्म	महान् सुख	कटि स्फुरण	प्रमोद-बल	ग्रीवा स्फुरण	रिपु भय
कपाल स्फुरण	शुभ	कटि पार्श्व	प्रीति	पृष्ठ स्फुरण	युद्ध, पराजय
नेत्र स्फुरण	धन प्राप्ति	नाभि स्फुरण	स्त्री नाश	कपोल स्फुरण	वरागना प्राप्ति
नेत्रकोण स्फुरण	लक्ष्मी लाभ	आन्त्रक स्फुरण	कोश वृद्धि	मुख स्फुरण	मित्र प्राप्ति
नेत्र समीप	प्रिय समागम	भग स्फुरण	पति प्राप्ति	बाहु स्फुरण	मधुर भोजन
नेत्रपक्ष स्फुरण	सफलता, राज-सम्मान	कुक्षि स्फुरण	सुप्रीति लाभ	बाहु मध्य	धनागम
नेत्रपक्ष-पलक स्फुरण	मुकदमेमें विजय	उदर स्फुरण	कोश प्राप्ति	वस्ति देश स्फुरण	अभ्युदय
नेत्रकोपाङ्ग-देश स्फुरण	कलत्र लाभ	लिङ्ग स्फुरण	स्त्री लाभ	उर स्फुरण	वस्त्र लाभ
		गुदा स्फुरण	वाहन प्राप्ति	जानु स्फुरण	शत्रु वृद्धि
जघा स्फुरण	स्वामि-प्राप्ति	पादोपरि स्फुरण	स्थान लाभ	पादतल स्फुरण	नृपत्व
पाद स्फुरण	अलाभ				

पल्लीपतन और गिरगिट आरोहण फलबोधक चक्र

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
शिर	लाभ	ललाट	बन्धुदर्शन	भ्रूमध्य	राज्य सम्बन्ध
नासाग्र	व्याधि	दक्षिण कं०	आयुवृद्धि	वाम कर्ण	बहुलाभ
वाम-भुजा	राजभय	कण्ठ	शत्रु नाश	स्तन द्वय	दुर्भाग्य
जानुद्वय	शुभागम	जघा	शुभ	हस्त द्वय	वस्त्रलाभ
कटि भाग	सवारी लाभ	दक्षिण मणिवन्ध	कष्ट, धन-नाश	वाम मणिवन्ध	कीर्तिनाश
गुल्फ	बन्धन	केशान्त	मरण	दक्षिण पाद	गमन
उत्तरोष्ठ	धननाश	नेत्र	धन प्राप्ति	उदर	भूषण लाभ
स्कन्ध	विजय	हृदय	धन लाभ	वामपाद	नाश
अधरोष्ठ	नवतुल्यता	द० भुज	बुद्धि नाश	पृष्ठ देश	बहुधन-प्राप्ति
नासिका	मिष्टान्न भोजन	मुख	स्त्री नाश	पादमध्य	मरण

पैर, जघा, घुटने, गुदा और कमर पर छिपकली गिरनेसे बुरा फल होता है, अन्यत्र प्राय शुभ फल होता है। पुरुषोंके बायें अङ्गका जो फल बतलाया गया है, उसे स्त्रियोके दाहिने भागका तथा पुरुषोके दाहिने अङ्गके फलादेशको स्त्रियोके बायें भागका फल जानना चाहिए। छिपकलीके गिरनेसे और गिरगिटके ऊपर चढ़नेसे बराबर ही फल होता है। सक्षेपमें बतलाया गया है—

यदि पतति च पल्ली दक्षिणाङ्गे नराणा, स्वजनजनविरोधो वामभागे च लाभम् ।
उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठभागे च मृत्यु, करचरणहृदिस्थे सर्वसौख्य मनुष्य ॥

अर्थात् दाहिने अङ्गपर पल्ली पतन हो तो आत्मीय लोगोमें विरोध हो और वाम अङ्गपर पल्ली गिरनेसे लाभ होता है। पेट, सिर, कण्ठ, पीठ पर पल्लीके गिरनेसे मृत्यु तथा हाथ, पाँव और छातीप गिरनेसे सब सुख प्राप्त होते हैं।

गणित द्वारा पल्ली पतनके प्रश्नका उत्तर

'तिथिप्रहरसयुक्ता तारकावारमिश्रिता । नवभिस्तु हरेद् भाग शेष ज्ञेय फलाफलम् ॥
घात नाश तथा लाभ कल्याण जयमङ्गले । उत्साहहानी मृत्युञ्च छिक्का पल्ली च जाम्बुक ।

अर्थात्—जिस दिन जिस प्रहरमें पल्ली पतन हुआ हो—छिपकली गिरी हो उस दिनकी तिथि शुक्ल प्रतिपदासे गिनकर लेना, प्रात कालसे प्रहर और अश्विनीसे पतनके नक्षत्र तक लेना अर्थात् तिथि सख्या, नक्षत्र सख्या, और प्रहर सख्याको योग कर देना, इस योगमें नौ का भाग देनेपर एक शेषमें घात, दोमें नाश, तीनमे लाभ, चारमे कल्याण, पाँचमे जय, छ मे मङ्गल, सातवेंमें उत्साह, आठमे हानि और नौ शेषमें मृत्यु फल कहना चाहिए। उदाहरण—रामलालके ऊपर चैत्र कृष्णकी द्वादशीको अनुराधा नक्षत्रमें दिनमें १० बजे छिपकली गिरी है। इसका गणित द्वारा विचार करना है। अत तिथि सख्या २७ (फाल्गुन शुक्ला १ से चैत्र कृष्णा द्वादशी तक), नक्षत्र सख्या १७ (अश्विनीसे अनुराधा तक), प्रहर सख्या २ (प्रात काल सूर्योदयसे तीन-तीन घण्टेका एक-एक प्रहर लेना चाहिए)। अत २७ + १७ + २ = ४६ − ९ = ५ ल० शेष १। यहाँ उदाहरणमें एक शेष रहा है। अत इसका फल घात होता है। किसी दुर्घटनाका शिकार यह व्यक्ति होगा।

पल्ली-पतनका फलादेश इस प्रकार भी मिलता है कि प्रात कालसे लेकर मध्याह्नकाल तक पल्ली पतन होनेसे विशेष अनिष्ट, मध्याह्नसे सायकाल तक पल्लीपतन होनेसे साधारण अनिष्ट और सन्ध्याकालके उपरान्त पल्ली-पतन होनेसे फलाभाव होता है। किसी-किसीका यह भी मत है कि तीनो कालोकी सन्ध्याओमें पल्ली-पतन होनेसे अधिक अनिष्ट होता है। इसका फल किसी न किसी प्रकारकी अशुभ घटनाका घटित होना है। दिनमें सोमवारको पल्ली-पतन होनेसे साधारण फल, मङ्गलवारको पल्लीपतनका विशेष फल, बुधवारको पल्लीपतन होनेसे शुभ फलकी वृद्धि तथा अशुभ फलकी हानि, गुरुवारको पल्लीपन होनेसे शुभ फलका अधिक प्रभाव तथा अशुभ फल साधारण, शुक्रवारको पल्लीपतन होनेसे सामान्य फलादेश, शनिवारको पल्लीपतन होनेसे अशुभ फलकी वृद्धि और शुभ फलकी हानि एव रविवारको पल्लीपतन होनेसे शुभ फल भी अशुभ फलके रूपमें परिणत हो जाता है। पल्लीपतनका अनिष्ट फल तभी विशेष होता है, जब शनि या रविवारको भरणी या अश्लेषा नक्षत्रमें चतुर्थी या नवमी तिथिको सन्ध्याकालमें पल्ली—छिपकली गिरती है। इसका फल मृत्युकी सूचना या किसी आत्मीयकी मृत्यु-सूचना अथवा किसी मुकदमेकी पराजयकी सूचना समझनी चाहिए।

परिशिष्ट ४

गाथानुक्रमणिका